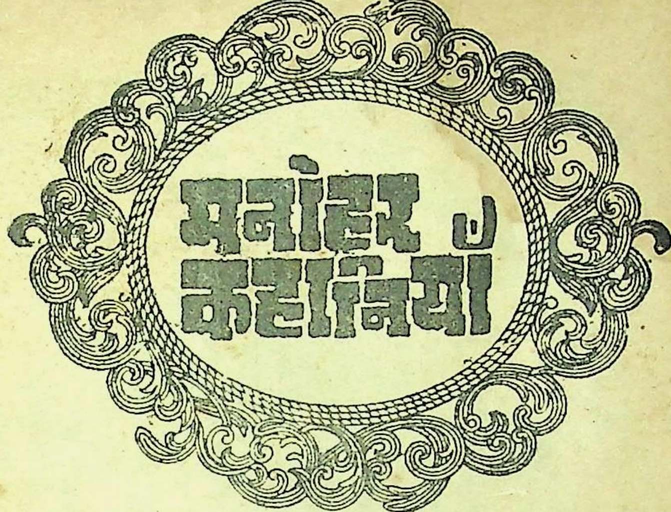
सत्यकथा

मनोहर कहानियाँ

नववर्षांक

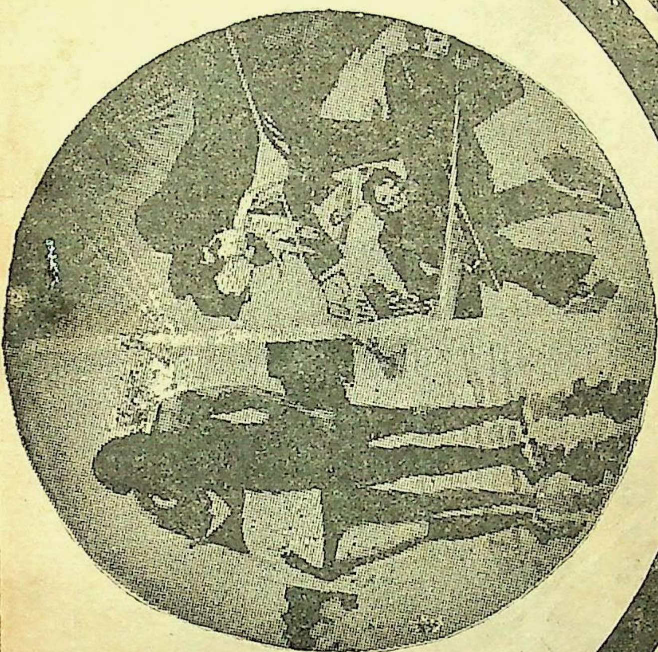


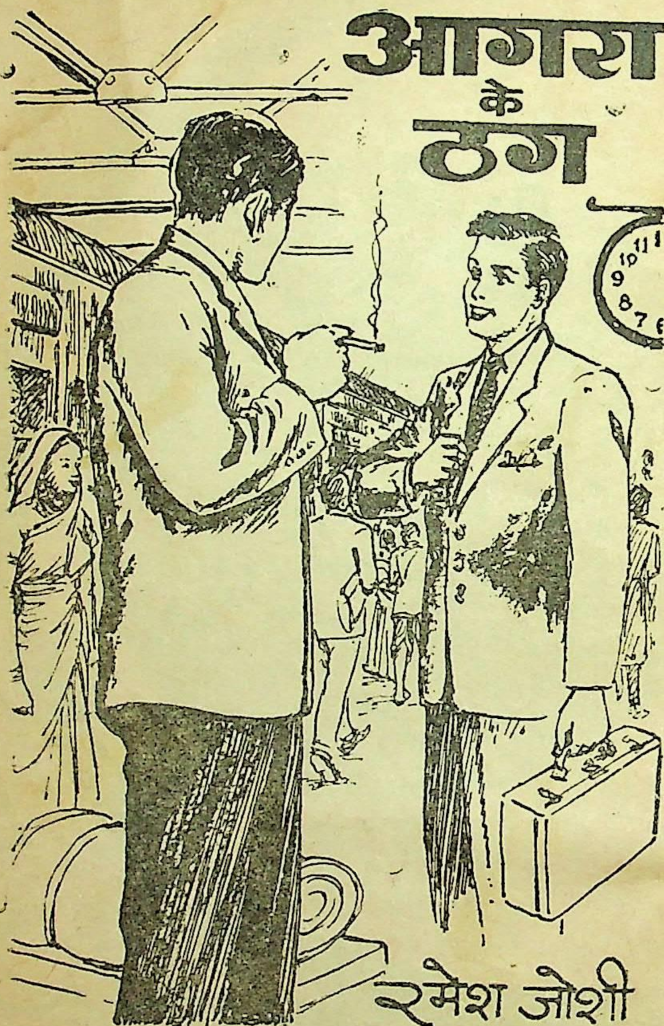


सत्यकथा नववर्षांक • अतिरिक्त अंक

सत्यकथाएँ

अन्य कथाएँ




आगरा के ठग
रमेश जोशी

मई, १९६३ में रेवेनशा कालेज, कटक, उड़ीसा के एक पोस्ट-ग्रेजुएट छात्र, जोगेन्द्रनाथ दास को भारत सरकार के वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक मामलों के मंत्रालय द्वारा इन्टरव्यू के लिए दिल्ली बुलाया गया था। इन्टरव्यू उन उम्मीदवारों के चुनाव का था, जो कि पीपुल्स फ्रेंडशिप लुलुम्बा युनिवर्सिटी मास्को अध्ययन के लिए भेजे जाने वाले थे। दास का इन्टरव्यू ८ मई को था। इसलिए वह ४ मई को कटक से रवाना हुआ और ६ मई को दिल्ली पहुँच गया। वह



दिल्ली में इन्टरव्यू के लिये गया हुआ उड़ीसा का छात्र जे० एन० दास जब वापस नहीं आया तो पुलिस बड़ी सरगरमी से इस मामले का पता लगाने लगी। सचमुच यह एक ऐसा भयंकर रहस्य था, जिसका उद्‌घाटन करते समय अधिकारियों के दाँत खट्टे हो गये।



क्वीन्स गार्डन, दिल्ली के मेवा होटल में कमरा नम्बर ३८ में ठहरा।

८ मई को दास का इन्टरव्यू हुआ। उसके साथ अन्य ४३ उम्मीदवारों का भी इन्टरव्यू था। उसी दिन शाम को दास ने होटल छोड़ दिया, लेकिन फिर वह कभी भी कटक-स्थित अपने कालेज में नहीं पहुँचा।

इस बात को कई दिन गुजर गए। दास अपने होस्टल नहीं लौटा था। उसके दोस्तों ने कालेज के प्रिंसिपल और पुलिस को सूचित किया। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, ने दास के कालेज के पते पर यह सूचित किया था कि उसे लुलुम्बा विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के लिए चुन लिया गया है। कालेज के प्रिंसिपल ने यह सूचना मिलने पर मंत्रालय को सूचित किया कि जोगेन्द्रनाथ दास लापता है। वह इन्टरव्यू देने के

बाद कटक लौटा ही नहीं। प्रश्न यह था कि जोगेन्द्रनाथ दास कहाँ गया ?

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के सचिव श्री कश्यप ने आई० जी० पुलिस, दिल्ली से अनुरोध किया कि श्री दास के बारे में व्यापक जाँच कर पता लगाया जाय कि वह कहाँ लापता हो गया है, ताकि सरकार रूस सरकार से उसके (दास के) केस पर अन्तिम निर्णय ले सके। उड़ीसा पुलिस ने भी दिल्ली पुलिस से सम्पर्क स्थापित किया और दास की खोज का मामला क्राइम ब्राँच, सी० आई० डी० दिल्ली को सौंप दिया गया।

जब कि दिल्ली पुलिस अभी दास के बारे में पूछताछ कर ही रही थी कि फतेहपुर सीकरी, जिला आगरा के एक विद्यालय के पंडित गिरिराज किशोर पाराशर नामक अध्यापक ने जे० एन० दास, २६ पोस्ट ग्रेजुएट होस्टल, रेवेनशा कालेज, कटक के पते पर एक पोस्ट-कार्ड भेजा। पोस्ट-कार्ड में सूचित किया गया कि उक्त सज्जन को दास के सार्टिफिकेट मिले हैं। पूछा गया था कि उन्हें किस प्रकार श्री दास तक भेजा जाय। यह पोस्टकार्ड कालेज के अधिकारियों ने सी० आई० डी० उड़ीसा को सौंप दिया। उड़ीसा के सी० आई० डी० अधिकारियों ने दिल्ली सी० आई० डी० को इस पोस्टकार्ड के मिलने की सूचना दी और उसके मजमून के बारे में भी बताया। आगरा पुलिस से भी कहा गया कि वह पंडित गिरिराज किशोर के बारे में और पता लगाये।

विद्यालय के अधिकारियों ने पुलिस को सूचित किया कि बारात पार्टी मथुरा से फतेहपुर सीकरी आई थी और २५ जून से २७ जून तक अग्रवाल पंचायती धर्मशाला में ठहरी थी। बारात पार्टी के एक सदस्य को दीवार पर बने एक ताख में यह सार्टिफिकेट मिले। यह एक लिफाफे में बंद थे। इनमें हाईस्कूल, इन्टरमीडिएट के सार्टिफिकेट, बी० एस० सी० (आनर्स) की डिग्री और जोगेन्द्रनाथ दास के नाम का इन्टरव्यू पत्र था। इसी पत्र के आधार पर दास दिल्ली गया था। उस लिफाफे को उस बारात पार्टी के सदस्य ने विद्यालय के अधिकारी को दे दिया था, ताकि जिन सज्जन के यह सार्टिफिकेट हों, उन्हें वापस भेज दिए जायँ।

दिल्ली सी० आई० डी० का एक अधिकारी फतेहपुर सीकरी गया और उसने उस बारात पार्टी के सदस्यों से पूछताछ की, लेकिन उसे जे० एन० दास के लापता हो जाने के बारे में कोई भी क्लू का पता नहीं चला। इसलिए यह मामला उड़ीसा पुलिस की सिफारिश के आधार पर उत्तर प्रदेश सी० आई० डी० क्राइम ब्रांच को सौंप दिया गया और सी० आई० डी० विभाग ने इसे बी० आर० मलिक, सी० आई० डी० इन्सपेक्टर को सौंपा।

जोगेन्द्रनाथ सेवा होटल, दिल्ली में कमरा नम्बर ३८ में ठहरा था। ८ मई, १९६३ को उस होटल की काउन्टर फाइल में पाँच रुपया रोज के हिसाब से दो रोज के दस रुपये किराए की रसीद कटी थी। उसने होटल में भोजन या नाश्ता नहीं लिया था। ६ मई को उसने संध्या समय पौने सात बजे कमरा किराए पर लिया था, क्योंकि तूफान एक्सप्रेस दिल्ली ६–१५ पर पहुँचती है, और होटल के रजिस्टर में उसके दस्तखत मौजूद थे। राजेन्द्र अस्थाना नामक आर्यनगर, कानपुर का इसी इन्टरव्यू का उम्मीदवार छात्र भी इसी होटल में कमरा नम्बर ४० में ठहरा था। वह ७ मई को साढ़े नौ बजे होटल में आया था और उसी दिन १ बजे दोपहर बाद होटल से चला गया था।

दास ८ मई को इन्टरव्यू स्थल पर बी० एस-सी० आनर्स, कटक के अपने क्लासफैलो किशोरचन्द त्रिपाठी से भी मिला था, जो कि इन्टरव्यू के लिए बुलाया गया था। त्रिपाठी दिल्ली विश्वविद्यालय में एम० एस-सी० कर रहा था और होस्टल में रहता था। उन दोनों मित्रों की वहाँ बातें भी हुईं। त्रिपाठी ने दास को आमंत्रित किया कि वह १० मई तक उसी के साथ होस्टल में ठहरे, क्योंकि गर्मियों की छुट्टियों में वह भी १० मई को उड़ीसा जाने का इरादा रखता है। साथ-साथ चले चलेंगे। इस पर दास ने अपनी असमर्थता प्रकट की कि उसके पास रुपया नहीं है और उसे लौट कर परीक्षा की तैयारी भी करनी है। दास ने त्रिपाठी से कहा कि वह ८ मई को ही वापस जा रहा है।

दिल्ली जंकशन स्टेशन पर पूछताछ से मालूम पड़ा कि आठ मई की संध्या को रेलवे बुकिंग क्लर्क लोकनाथ ने एक तीसरे दर्जे का ३०० मील से अधिक की यात्रा का टिकट जारी किया था। टिकट ३८ रुपये ३५ पैसे का था। लेकिन यात्री उस टिकट को एक बार खरीद कर लोकनाथ की ही ड्यूटी के समय वापस कर गया था, क्योंकि उसकी ड्यूटी ३ बजे से ११ बजे रात तक थी। जोगेन्द्रनाथ दास का फोटोग्राफ दिखलाये जाने पर बुकिंग क्लर्क ठीक-ठीक नहीं बता सका कि टिकट वापस करने वाला व्यक्ति यही था या कोई अन्य था।

दास के पिता ने शिक्षा मंत्रालय को लिखा था कि उसे विश्वस्त सूत्र से यह पता चला है कि भास्कर भानु उपाध्याय नामक एक उम्मीदवार छात्र ने, जो कि बंगाल का है, उसके लड़के के साथ लौटते हुए, साथ-साथ यात्रा की थी। और उसे संदेह है कि भास्कर भानु ने कहीं उसके लड़के के साथ कोई हरकत न की हो। दिल्ली-स्थित मंत्रालय द्वारा सूचित किए जाने पर सी० आई० डी० की ओर से बाँकुरा पुलिस से अनुरोध किया गया कि वह इस तथ्य की जाँच करे। लेकिन तब तक भास्कर भानु उपाध्याय, जो कि दास के स्थान पर चुन लिया गया था, मास्को चला गया था।

दिल्ली पुलिस को एक ऐसे ही केस का पता था, जिसमें एक ए० एस० आई० का लड़का एक इन्टरव्यू में चुन लिया गया और एक दूसरे उम्मीदवार ने, जिसका इन्टरव्यू में इस चुने गए उम्मीदवार के बाद दूसरा स्थान था, उस लड़के को यमुना में डुबो कर इसलिए मार डाला था कि उसको वह स्थान मिल जायगा। पुलिस की जाँच से पता चला कि यहाँ ऐसी कोई संभावना नहीं थी, क्योंकि इन्टरव्यू का परिणाम उसी दिन इन्टरव्यू के बाद घोषित नहीं किया गया था। राजेन्द्र अस्थाना, त्रिपाठी या उपाध्याय में से किसी के द्वारा दास की हत्या कर दिये जाने की संभावनाओं को जाँच-पड़ताल के बाद रद्द कर दिया गया।

दास का आगरा और फतेहपुर सीकरी जाना वहाँ पाये गए उसके सार्टिफिकेटों से सिद्ध होता था। जाँच अधिकारी का ध्यान अब आगरा

के ठगों की ओर गया, क्योंकि दास का आगरा के ऐतिहासिक स्थानों को देखने के लिए वहाँ रुक जाना संभव था। आगरा के सभी होटलों, धर्मशालों, सरायों और पर्यटक विश्राम-गृह के रजिस्टरों की जाँच करने के बाद, जब कि दास का कहीं भी पता नहीं चल रहा था, जाँच अधिकारी श्री मलिक को कुछ निराशा हो चली थी। उसने निश्चय किया कि आगरा के सभी रेलवे स्टेशनों के क्लोक-रूम एक बार जाँच लिए जायँ, शायद कोई आशा की किरण दिखाई दे।

आगरा कैंट के क्लोक-रूम के रजिस्टर की जाँच करने पर उसे आशा की एक हल्की किरण दिखाई दी। उसने पाया कि दास ने ९ मई को आगरा कैंट के क्लोक-रूम में ८ बजे सुबह अपना बेंडिंग और सूटकेस रखवाया था, लेकिन उसी दिन रात को १० बजकर ५० मिनट पर वह अपना सामान ले गया था। और आश्चर्य यह था कि फिर आधे घंटे के बाद, उसी रात जे० एन० दास अपना सूटकेस क्लोकरूम में जमा करा गया, जिसे वह १० मई की सुबह साढ़े चार बजे ले गया। क्लोक-रूम के टिकट पर जे० एन० दास ने अपना सही पता, २६ पी० जी० होस्टल, कटक—३ दिया था। अब यह निश्चित हो गया कि दास ने अपनी यात्रा आगरा में ब्रेक की थी और इन्टरव्यू में आये हुए किसी भी अन्य उम्मीद-वार ने क्लोकरूम में अपना लगेज जमा नहीं कराया था।

जनवरी, १९६४ के दूसरे सप्ताह में हमारे सी० आई० डी० इन्सपेक्टर को मालूम हुआ कि आगरा के अपराधी टूरिस्टों या गाइडों के रूप में आगरा के विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर उतरने वाले टूरिस्टों से मिलते हैं, उन्हें ऐतिहासिक स्थानों या होटलों तक ले जाते हैं और मौका पाकर उन्हें जहर दे देते हैं। जब टूरिस्ट बेहोश हो जाता तो वे उसका माल-मत्ता और रुपया-पैसा लूट कर गायब हो जाते हैं। कुछ यात्री जहर दिए जाने से मरे भी हैं। जाँच अधिकारी ने इस पहलू से पूछ-ताछ शुरू कर दी कि जे० एन० दास की हुलिया का कोई व्यक्ति उन मरने वालों में नहीं था। जे० एन० दास की हुलिया का कोई भी शव वहाँ रहा,

ऐसा पता नहीं चल पाया। अस्पताल के रेकार्ड की जाँच करने से जाँच अधिकारी को मालूम हुआ कि १० मई को सुबह १० बजकर १० मिनट पर एक अज्ञात, बेहोश व्यक्ति सरोजिनी अस्पताल के इमरजेन्सी वार्ड में लाया गया था। उसे धतूरा खिलाया गया था और बेहोशी की हालत में ही उस दिन १०-२५ पर उसकी मृत्यु हो गई।

डा० आर० जी० बंसल ने इस अज्ञात मरीज को देखा था, और उसके पास से एक सूटकेस की चाभी, मेवा होटल का एक कार्ड और श्री जोगेन्द्रनाथ दास के नाम पर होम अफेयर्स मिनिस्ट्री का एक दैनिक पास नं० ८७२१०, दो पुड़िया, एक लाल रूमाल, एक-एक रुपये का नोट, एक चश्मे का खाली कवर और मेवा होटल, दिल्ली का दस रुपये का कैश-मेमो मिले थे। कैश-मेमो पर ८ मई १९६३ की तारीख पड़ी थी। कोतवाली पुलिस के एस० आई० जोगराल सिंह ने पंचनामा किया था। और उस लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेजा था। मृत व्यक्ति का फोटोग्राफ और उसकी अँगुलियों की छाप एस० आई० के लिखने के बावजूद नहीं लिए गए थे।

जाँच अधिकारी को लगा कि यही व्यक्ति जोगेन्द्रनाथ दास था, जिसके लिए वह इतने दिनों से भटक रहा है। फिर भी दिल्ली पुलिस से मृत व्यक्ति का पूर्व परिचय जानना जरूरी था। दिल्ली पुलिस को एक रेडियोग्राम भेज कर अनुरोध किया गया कि वह होटल से मालूम कर मृत व्यक्ति के बारे में विवरण आगरा भेजे। इस रेडियोग्राम की जाँच पुलिस स्टेशन, लाहौरी गेट के एक हेडकानस्टेबल ने की। लेकिन, दुर्भाग्य से, रेडियोग्राम में 'मेवा होटल' के स्थान पर 'मेमो होटल' लिखा गया था। दिल्ली से यह लिख कर वह रेडियोग्राम वापस आगरा भेजा गया कि कोई 'मेमो होटल' दिल्ली में नहीं है। पुलिस ने सही पता माँगा था, लेकिन फिर आगरा पुलिस ने यह जरूरत नहीं उठाई।

आगरा पुलिस ने इस मृत व्यक्ति के बारे में अपनी जाँच एक ही दिन में खत्म कर डाली थी। उसने इसे एक आत्महत्या का मामला दर्ज कर

केस डायरी मजिस्ट्रेट के पास भेज दी थी और मजिस्ट्रेट ने उसे स्वीकार कर लिया था। यहाँ तक कि स्थानीय पुलिस ने जोगेन्द्रनाथ दास की मृत्यु का केस ही दर्ज नहीं किया था। यह पुलिस की कार्यक्षमता का एक बढ़िया नमूना था।

खैर, जाँच अधिकारी ने पुलिस स्टेशन कोतवाली, जिला आगरा में धारा ३०२, ३२८।३७९ के अन्तर्गत जहर देकर जोगेन्द्रनाथ दास की हत्या किए जाने का केस दर्ज कराया। जिस मजिस्ट्रेट ने पहले पुलिस की जाँच की रिपोर्ट के परिणाम को मंजूर किया था, उसके पास जाकर मामला समझाया गया और मजिस्ट्रेट ने इस केस में नये सिरे से जाँच का आदेश दिया।

जाँच करने वाले इन्सपेक्टर ने आगरा पुलिस स्टेशनों के रेकार्डों की सूक्ष्म जाँच आरंभ कर दी। पता चला कि इस दौरान जहर दिए जाने की घटनाओं से ८ व्यक्तियों की मृत्यु हुई, लेकिन किसी भी मामले में अपराधियों का पता नहीं चला। इसलिए इन्सपेक्टर ने इन हत्याओं के अपराधियों को खोज निकालने की ओर अपनी समस्त शक्ति लगा दी। उसने धैर्य के साथ होटलों के रजिस्टरों का मुआयना शुरू कर दिया और उसने कुछ नामों को अधिक छानबीन के लिए छांटा। इन नामों में तो कोई विशेषता नहीं थी, लेकिन इन लोगों में सभी का पेशा आश्चर्य-जनक रूप से पेन्टर का दर्शाया गया था। सी० आई० डी० इन्सपेक्टर को ऐसा आभास हुआ कि विभिन्न नामों से, विभिन्न होटलों में ठहरने वाले इन लोगों में से कुछ का गिरोह होगा।

एक व्यक्ति १ मई '६३ को राजकुमार वल्द दीवानचंद के नाम से एक अन्य व्यक्ति के साथ अम्बिका होटल में ठहरा था। उसने अपना पता कांगड़ा, तहसील कैराना, पोस्ट बाक्स नम्बर ३१३५ दिया था और पेशे के स्थान पर लिखा था 'पेन्टर'। दो व्यक्ति शंकर होटल में इसी नाम और पेशे के २ मई १९६३ को ठहरे थे, लेकिन उनका पता मेरठ का था। एक व्यक्ति बलदेव नाम से ७ मई से ९ मई तक मद्रास होटल

में, कृष्णलाल के नाम से वेस्ट एण्ड होटल में १० मई से ११ मई तक और रामचन्द्र के नाम से ११ मई से १३ मई तक ताज होटल में टिका था। इन तीनों नामों के अलग-अलग होने के बावजूद पता समान था--गाँधी नगर, दिल्ली। एक व्यक्ति अख्तर वल्द छेदा, निवासी सदर बाजार, दिल्ली के पते से १५ जून से १६ जून तक सराय मुबारिक में ठहरा था और उसका पेशा भी पेन्टर का था। एक अन्य व्यक्ति महाराजा होटल में २६ जून को श्याम सिंह वल्द बल्देव राज के नाम से ठहरा था। उसका पता मकान नम्बर ३१३५ था और पेशा पेन्टर का था। शमसुद्दीन वल्द बदरुल इस्लाम के नाम से ६ नवम्बर १९६३ से ७ नवम्बर '६३ तक ठहरने वाले व्यक्ति का मकान नम्बर ३१३५ दरियागंज, दिल्ली था और सराय मुबारिक में अख्तर हुसेन वल्द मोहम्मद नियाज, निवासी दरियागंज के नाम से ९ जनवरी से १३ जनवरी १९३४ तक ठहरने वाला भी पेंटर ही था।

विभिन्न नामों से विभिन्न होटलों में ठहरने वाले इन व्यक्तियों का पेशा और मकान नम्बर एक ही होने के अलावा विभिन्न होटलों के रजिस्टरों में लिखी गई इबारत भी इन्हीं व्यक्तियों के द्वारा लिखी गई प्रतीत होती थी। हस्ताक्षर भी मिलते थे। इन तारीखों में जब यह लोग विभिन्न होटलों में ठहरे थे, ठगी, विष दिए जाने और हत्या के अपराधों की सूचना पुलिस को दी गई थी। जाँच अधिकारी ने इन होटल मालिकों को आगाह किया कि इन व्यक्तियों में से किसी के भी होटल में ठहरने पर सूचना फौरन पुलिस को दी जाय।

राजकुमार वल्द बल्देव राज का पता लगाते-लगाते जाँच अधिकारी मोहल्ला मानला में अपराधी के चाचा श्री ऐजाज तक पहुँचा। ऐजाज ने बताया कि उसका भतीजा बदरुल इस्लाम वल्द मोहम्मद इस्लाम, निवासी हुजरा कस्बाखाना, जिला मुजफ्फरनगर में रहता है। मुजफ्फरनगर में पता चला कि बदरुल इस्लाम १२ वर्ष की आयु से घर से लापता है और दिल्ली पुलिस ने १९५५ में उसे जहर देकर हत्या के

एक मामले में पकड़ा था, लेकिन यह व्यक्ति पुलिस के चंगुल से भाग निकला। यही बदरुल इस्लाम अब अपने को राजकुमार वल्द बल्देव राज बताता है।

५ मई, १९६४ को काशीनाथ वल्द जयनारायण निवासी जिला बलिया इस ठग-हत्यारे बदरुल इस्लाम के चंगुल में फँसा था। इस अपराधी काशीनाथ का विश्वास प्राप्त कर उसका लगेज आगरा फोर्ट में रेलवे क्लोक-रूम में अपने लगेज के साथ-साथ अपने नाम से जमा करा दिया था और संध्या समय एतमादुद्दौला के पास काशीनाथ को धतूरा खिला दिया। सौभाग्य से काशीनाथ मरा नहीं और बेहोशी दूर होने पर जब वह क्लोक-रूम में अपना सामान लेने गया तो उसे मालूम पड़ा कि सामान तो पहले ही राजकुमार ले गया है। काशीनाथ ने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई। क्लोक-रूम की जाँच करने पर पाया गया कि बदरुल इस्लाम उर्फ राजकुमार इस केस के लिए उत्तरदायी है।

जोगेन्द्रनाथ दास के केस में भी समानता के संदेह में आगरा कैंट के क्लोक-रूम के रेकार्डों की पुनः जाँच की गई। यह पाया गया कि पंजाब रेजीमेंट सेन्टर, मेरठ के एक बल्देव राज ने एक सूट-केस और एक बेडिंग १० मई '६३ को सुबह ६.५० पर जमा कराया था और उसे उसी दिन सुबह ९ बजकर ८ मिनट पर ले गया था। क्लोक रूम के रेकार्डों से यह भी मालूम हुआ कि यह बल्देव राज वही बल्देव राज था, जो कि ९ मई, १९६३ को शंकर होटल आगरा की एक हत्या के लिए उत्तरदायी था। ९ मई को आगरा में उसकी उपस्थिति की पुष्टि मद्रास होटल के रजिस्टर से होती थी।

यह मालूम किया गया कि राजकुमार के ऊपरी जबड़े के दाँतों के बीच एक छोटा दाँत बाहर निकला हुआ है। अब आगरा के सभी रेलवे स्टेशनों पर राजकुमार का इन्तजार किया जाने लगा। ३ जून, १९६४ को आगरा कैंट रेलवे स्टेशन पर राजकुमार अपने दाँतों की विशेषता के

कारण पहचान लिया गया और पुलिस ने सतर्कता से उसे हिरासत में ले लिया। उसके व्यक्तिगत सामान की तलाशी लिए जाने पर उसके पास बलिया के काशीनाथ का चुराया गया सामान और कुछ धतूरे का चूर्ण बरामद हुआ। राजकुमार ने देखा कि उसका खेल खत्म हो गया है और उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। जोगेन्द्रनाथ दास की हत्या के बारे में पूछे जाने पर उसने कहा कि यह हत्या उसने नहीं बल्देव ने की है। उसने बल्देव राज का मौजूदा पता भी पुलिस को दे दिया।

९ जून १९६४ को बल्देव राज गुम्मा गाँव, जिला हिमांशु, हिमाचल प्रदेश में गिरफ्तार कर लिया गया। जोगेन्द्रनाथ दास का सूटकेस, एक पायजामा और एक पिलो कवर तथा अन्य ठगी के केसों की घड़ी, कैमरा आदि उसके घर से बरामद हुए। जोगेन्द्रनाथ दास की एटैची की विशेषता यह थी कि क्लोक-रूम की एक चिट उस पर लगी हुई थी। आगरा के होटलों के कैश मेमो और फतेहपुर सीकरी से आगरा तक के बस के टिकट भी उसके पास से बरामद हुए। राजकुमार उर्फ बदरुल इस्लाम का फोटोग्राफ और राजकुमार द्वारा उसे भेजे गए खत भी बल्देव राज के घर से बरामद हुए।

बल्देव राज ने अपना अपराध स्वीकार किया और उसने बताया कि "मैं १ मई को मैं राजकुमार के साथ आगरा गया हुआ था। उस दिन राजकुमार ने एक लड़के का सूटकेस चुराया था और एक रिक्शा से भाग निकला था। राजकुमार अम्बिका होटल में रह रहा था, जब कि मैं राजा की मंडी रेलवे स्टेशन पर ठहरा था। जब मुझे राजकुमार अम्बिका होटल में नहीं मिला तो मैं रेलवे स्टेशन से शंकर होटल में आ गया। मुझे २ मई को राजकुमार मिला और मैं उसे शंकर होटल में एक बड़े कमरे में अपने साथ ले आया। ४ मई को राजकुमार आगरा फोर्ट स्टेशन से एक व्यक्ति को होटल में ले आया और हम लोगों ने उसे भोजन के साथ धतूरा खिला दिया। जब वह आदमी बेहोश हो गया तो हम लोगों ने उसकी घड़ी उतार ली और उसका माल-असबाब लेकर

उसे बेहोशी की हालत में ही कमरे में छोड़ा। वहाँ ताला लगा कर हम लोग ग्वालियर चले गए। ग्वालियर में हम लोग तीन दिन लश्कर होटल में रहे। ७ मई को वहाँ एक दूसरे कमरे में ठहरे हुए मुसाफिर को हमने धतूरा दिया और उसका भी सामान साफ किया। उसी दिन हम आगरा लौट आये और मद्रास होटल में ठहरे। ९ मई को हम लोगों ने मद्रास होटल छोड़ा। मैं दिल्ली जाना चाहता था, इसलिए आगरा कैंट स्टेशन आया। स्टेशन पर मैंने देखा कि एक युवक अपना बिस्तर खोल रहा था। मैं ने पूछा तो मालूम हुआ कि वह कटक जा रहा है। मैंने उससे मित्रता कर ली और कहा कि मैं आर्मी में हूँ और कलकत्ता जा रहा हूँ।

"अगले दिन सवेरे मैंने अपना बैग जोगेन्द्रनाथ दास के बेडिंग में लपेट दिया और दास का बेडिंग तथा सूटकेस क्लोक रूम में अपने नाम पर जमा कर दिया। क्लोक-रूम का टिकट मैंने जे० एन० दास को दे दिया। हम लोगों में प्रोग्राम बना था कि कुछ देर आगरा घूमघाम कर तूफान से चल देंगे। हमने एक रिक्शा लिया और शहर में आ गए। नाश्ते के साथ मैंने उसे कुछ धतूरा खिला दिया। जब जोगेन्द्रनाथ की हालत बिगड़ने लगी तो मैं उसे करीब के एक वैद्य के पास ले गया। मैंने वैद्य से कहा कि इसे चक्कर आ रहे हैं, कुछ दवा दे दीजिए। वैद्य ने तीन पुड़िया दवाई दी। एक दास को वहीं पर खिला दी और दो पुड़िया बाद में खिलाने को कहा।

मैंने उसकी घड़ी, नकद रुपया और क्लोक-रूम का टिकट अपनी जेब के हवाले किया और उसकी हालत बिगड़ते देख कर उसे सरोजिनी अस्पताल ले गया। वहाँ से मैं आगरा कैंट स्टेशन आया और क्लोक-रूम से सामान निकलवा कर रोडवेज की बस से फतेहपुर सीकरी चला गया। फतेहपुर सीकरी में मैं पंचायती धर्मशाला में ठहरा और जे० एन० दास की एटैची को तोड़ कर उसके सार्टिफिकेट वगैरह मैंने ताख पर फेंक दिए। उसी दिन १० मई को मैं आगरा लौट आया। मैंने जे० एन०

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

सर कटी लाश

कमलेश भाटिया



इस समय दोपहर के दो बजे थे। गर्मियों के दिन थे। तेज धूप के कारण सड़कों पर निकलना मुश्किल था। परंतु मकानों के अंदर कुछ आराम था। अशोक दादा अपने खुले और सजे-सँवरे ड्राइंग-रूम में फर्श पर बिछी दरी पर एक मोटे तकिये के सहारे लेटा था। यह कमरा काफी ठंडा था। अशोक दादा केवल अंडरवियर पहने था। उसकी चौड़ी छाती पर सरोज अपना सर रखे लेटी हुई थी। वह ब्रेसरी और अंडरवियर पहने थी। उन दोनों के पास ही



डिफेन्स मिनिस्ट्री के एक उच्चाधिकारी की पुत्री नीता का जब
कत्ल हुआ तो यह समझा गया कि इसमें उसके प्रेमी का हाथ
है। लेकिन जब एक दिन उस प्रेमी का भी कटा सिर
एक कूड़ेदान में मिला तो सम्पूर्ण मामला
अत्यधिक रहस्यमय हो उठा।
विदेशी जासूसों का एक
भीषण षड्यन्त्र और
काले कारनामे।



दो लम्बे गिलासों में ठंडी बियर पड़ी थी, और एक प्लेट में बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़े रखे थे। कमरा हलके देशी व विदेशी संगीत से लहरा रहा था। अशोक दादा और सरोज आपस में बातें करते और मुस्कराते जाते थे और साथ ही बियर के छोटे-छोटे घूँट भरते जाते थे।

इसी समय एक किनारे की मेज पर रखे लाल रंग के टेलीफोन की घंटी बजी थी। अशोक दादा सरोज को परे हटा कर उठ खड़ा हुआ। बियर का गिलास उसके हाथ में था। यह लाल रंग वाला

टेलीफोन अशोक दादा के प्राइवेट नम्बर का था, इसलिये वह जान था कि टेलीफोन करने वाला कौन होगा। परंतु इस बात से आश्चर्य अवश्य हो रहा था कि जब सारा कार्यक्रम तय हो चुका है उसे सब बातें समझा दी गई हैं, फिर दोबारा उसे बुलाने का मतलब हो सकता है। या शायद यह सम्भव है कि कोई अन्य विशे बात हो गई हो।

उसने रिसीवर उठाया तो दूसरी तरफ इंटेलिजेन्स चीफ मिस्ट सूरी ही थे।

मिस्टर सूरी ने कहा, "अशोक, तुम मेरे पास तुरंत आ सकते हो?

अशोक दादा ने केवल इतना ही कहा, "मैं अभी बीस मिनट अंदर उपस्थित होता हूँ।"

रिसीवर रख कर अशोक दादा सरोज के पास आ गया अपना बियर का गिलास खाली करते हुये उसने सरोज से कह "सरोज डियर, मुझे एक आवश्यक काम से कहीं जाना है, इसलिये तुम भी कपड़े पहन लो, मैं रास्ते में तुम्हारे घर पर तुम्हें छोड़ दूँ या अगर तुम्हें कहीं और जाना हो तो टैक्सी ले लो।"

सरोज ने भी अपना बियर का गिलास खाली किया और उठ अपने कपड़े पहनने लगी।

अशोक दादा अपने कपड़े पहनते हुए यह सोच रहा था कि जब दो घंटे बाद उसका जहाज जाने वाला है, जिसमें उसकी सीट बुक तब चीफ ने उसे क्यों बुलाया है। क्या उसका तेहरान वाला कार्यक्र कैन्सिल किया जा रहा है? फिर उसने सोचा कि संभव है तेहरा वाले केस के सम्बंध में उसे कुछ और बातें बताई जाना बाकी हों, क्यों हो सकता है इस बीच में कोई नई और महत्वपूर्ण बात उभर आ हो। परंतु तब क्या वह चार बजे वाला प्लेन पकड़ पायेगा?

तैयार हो कर दोनों कमरे से बाहर आ गये। नौकर गैरेज से का निकाल लाया।

ड्राइविंग-सीट पर बैठते हुए अशोक दादा ने नौकर को कुछ समझाया और फिर कार स्टार्ट करके बंगले से बाहर आ गया। सरोज उसके साथ ही अगली सीट पर बैठी थी।

अशोक दादा की आयु लगभग इकत्तीस-बत्तीस साल की थी। छः फुट का क़द, गोरा रंग, पतले ओंठ, लम्बी-तीखी नाक, बड़ी-बड़ी सुँदर आँखें, चौड़ा माथा, भरे हुए गाल, स्वस्थ और मजबूत शरीर, चौड़ी छाती। अशोक दादा जैसा शरीर लाखों में एक ही होता है।

अशोक दादा से लोग थर-थर काँपते थे। आज से छः वर्ष पहले अशोक दादा उस महानगर का सब से बड़ा गुन्डा और बदमाश था। उसके एक ही इशारे से कई कत्ल हो जाते थे, बाजार लूट लिये जाते थे, और वह जिस तरफ क्रोध से देख लेता, उधर आग-सी लग जाती थी। अपनी योग्यता, बहादुरी और होशियारी के कारण ही इतनी छोटी आयु में वह महानगर के कई दादाओं का दादा बन चुका था। महानगर कि तमाम बड़े-बड़े धनी-सेठ उससे डरते-काँपते थे। यहाँ तक कि वह पुलिस को भी कुछ न समझता था। इस महानगर में इससे पहले इतना रोब-दबदबा और किसी दादा का न था। छोटे और बड़े सब लोग उसे अशोक दादा कहने लगे थे, और फिर उसका यही नाम प्रसिद्ध हो गया। अशोक दादा के उसी साहस, योग्यता और बहादुरी को देख कर इंटेलिजेंस का एक इंस्पेक्टर प्रकाश शर्मा उसकी ओर आकर्षित हुआ। प्रकाश शर्मा का यह विचार था कि यदि इंटेलिजेंस विभाग में अशोक दादा जैसा व्यक्ति आ जाये तो इससे विभाग को बहुत लाभ होगा। इसलिये प्रकाश शर्मा ने एक दिन अशोक दादा के सामने यह पेशकश रखी, और दो-ढाई घंटे के वाद-विवाद के बाद अंत में अशोक दादा ने हाँ कर दी। उसके पश्चात अशोक दादा को एक वर्ष तक इंटेलिजेंस से सम्बंधित चीजों के बारे में आवश्यक ट्रेनिंग दी गई, और उसके बाद उसे काम पर भेजा जाने लगा। अशोक दादा इन सब कामों को बड़ी सफलता से करने लगा। वह हर केस को इतनी योग्यता और होशियारी

से हल करता कि विभाग के बड़े अधिकारी उसके इन प्रारम्भि
कारनामों से बड़े प्रसन्न हुए। विभाग के अधिकारियों को अपनी इ
'खोज' पर बड़ा गर्व होने लगा। तब अशोक दादा को और भी अधि
कठिन केस दिये जाने लगे। परंतु अशोक दादा अपने काम में इत
लीन रहता और अपने काम को ऐसे शानदार ढंग से करता कि ज
उसके लिये दुनिया का कोई भी काम मुश्किल न हो। उसकी इ
सफलताओं के कारण उसके इंटेलिजेंस ब्यूरो में आने के तीन वर्ष ब
ही डायरेक्टर सूरी ने उसे अपनी स्पेशल-फोर्स में ले लिया। इस स्पेश
फोर्स में केवल चार व्यक्ति थे और डायरेक्टर सूरी देश और वि
के बेहद उलझे मामलों में इन्हीं चार व्यक्तियों को भेजा करते थे। इ
स्पेशल-फोर्स में यह अच्छाई थी कि यह काम एक तरह का सीक्रेट-स
जैसा काम था। स्पेशल-फोर्स के चारों लोगों का विभाग के अ
लोगों से कोई विशेष सम्बंध न रह गया था, हालाँकि विभाग से
चारों व्यक्ति जब और जैसा काम चाहें ले सकते थे। परंतु ये च
व्यक्ति सीधे डायरेक्टर सूरी से सम्बंधित थे और उन्हीं के आर्डर मा
थे। इस स्पेशल फोर्स को ब्लैक-फोर्स भी कहा जाता था, क्योंकि इ
बारे में अन्य कोई व्यक्ति कुछ भी न जानता था। अशोक दादा
इसीलिये हर समय किसी-न-किसी मेक-अप में रहना पड़ता था।
कई तरह के और बेहद उलझे हुए काम करने पड़ते थे, और
हिदायत थी कि कोई उसे पहचानने न पाये। परंतु इस स्पेशल-फोर
काफी विशेष सुविधायें भी उपलब्ध थीं, इसलिये अशोक दादा अ
इस काम से बहुत प्रसन्न था। अशोक दादा ने अब वह अपना प
वाला अड्डा छोड़ कर फ्रेंड्स कॉलोनी में एक बंगला ले लिया।
पुराने मित्रों ने इस परिवर्तन को देख कर यह समझा था कि अश
दादा ने कई वर्षों की गुन्डागर्दी से काफी धन इकट्ठा किया है और
वह आराम का जीवन बिताना चाहता है। परंतु पुराने मित्रों या अ
शिष्यों से कभी-कभी ऐसे ही या काम के सिलसिले में मिलने पर

अभी भी पहले जैसा ही मान मिलता था। क्योंकि उसकी बड़ी-बड़ी सुन्दर आँखें अभी भी उतनी ही डरावनी थीं, और लोग समझते थे कि वह कभी भी पुराने धंधे पर लौट सकता है। यह चीज़ अशोक दादा के लिये 'कवर' का काम भी देती थी।

अशोक दादा ने सरोज को रीगल पर उतार दिया और फिर अपनी कॉर पार्लियामेंट स्ट्रीट की ओर मोड़ ली।

अशोक दादा ने जब डायरेक्टर सूरी के बड़े कमरे में प्रवेश किया तो वहाँ पर डायरेक्टर सूरी के अतिरिक्त उनकी पी० ए० मिस ममता भी बैठी थी।

अशोक ने चीफ को मुस्करा कर देखा, और फिर चीफ का संकेत पा कर एक कुर्सी पर बैठ गया।

चीफ ने उसके बैठते ही कहा, "तुम्हारा तेहरान वाला कार्यक्रम कैंसिल किया जा रहा है। वहाँ हम दूसरा आदमी भेज रहे हैं।"

अशोक चुप रहा।

चीफ ने फिर कहा, "तुमने कल का पेपर देखा था?"

"जी।"

"उसमें तुमने एक लड़की के कत्ल के बारे में पढ़ा होगा।"

"वही कत्ल जो शिमला में हुआ है, और हत्यारा या हत्यारे उस लड़की का सर उतार कर ले गये हैं?"

चीफ ने कुर्सी पर आगे झुकते हुये कहा, "हाँ वही। और अब तुम्हें इस कत्ल के बारे में पता करना है।"

अशोक ने कहा, "परंतु यह तो साधारण कत्ल का मामला लगता है, जिसकी छानबीन लोकल सी० आई० डी० को करनी चाहिए। यह केस हमारे विभाग में कैसे आ गया?"

चीफ ने एक सिगरेट अशोक की तरफ बढ़ाकर दूसरा सिगरेट खुद भी ले लिया और दोनों सिगरेट जला दिये। अशोक दादा ने देखा मिस ममता इस बातचीत के नोट्स लेने में व्यस्त है।

मुँह से सिगरेट का बहुत सारा धुआँ निकालते हुए चीफ ने कहा "इस केस में कोई बात विशेष अवश्य होगी। डिफेन्स मिनिस्ट्री के सेक्रेटरी ने इस केस की छानबीन के बारे में मुझे अभी एक घंटा पहले फोन किया था। उन्होंने यह भी कहा था कि इस केस की छानबीन निहायत गुप्त ढंग से होनी चाहिए।"

अशोक दादा ने कहा, "इसका मतलब है कि अभी तक आपको भी इस कत्ल के सम्बंध में किसी और विशेष बात का पता नहीं होगा?"

"मुझे केवल इतना ही पता चला है कि वह लड़की, जिसका कत्ल हुआ है, डिफेन्स के एक बड़े अफसर की बेटी है।"

"ओह!" अशोक ने केवल इतना ही कहा।

कुछ क्षण बाद अशोक ने फिर पूछा, "क्या पुलिस को उस लाश का सर मिल गया?"

"अभी नहीं।"

"तब उस लड़की को पहचाना कैसे गया?"

"लड़की की लाश यहाँ आ चुकी है। उसके बाप का विचार है कि यह उन्हीं की बेटी है।"

अशोक ने संदेह से कहा, "यह केवल उनका विचार है?"

"हाँ। और शिमला के जिस होटल में वह ठहरी थी, उसके मैनेजर ने भी उसे पहचान लिया, क्योंकि जब वह बाहर गई थी तो उसने उसे जाते हुये देखा था, वह उसके कपड़ों से उसे पहचान गया और फिर कत्ल के बाद वह अपने कमरे में लौटी भी नहीं, जिससे विश्वास हो गया कि यह वही है।"

"इसका मतलब यह हुआ कि मुझे अपना काम शिमला से शुरू करना होगा।"

चीफ ने मुस्कराते हुए कहा, "जैसे तुम बेहतर समझो। शिमला के उस होटल का कमरा, जिसमें नीता ठहरी हुई थी, उसे सील करवा

दिया गया है। तुम उसे देख चुको तो फिर उसे खोल दिया जायेगा।"

अशोक दादा ने कहा, "जी, ठीक है।" फिर एक क्षण बाद कहा, "इसके अतिरिक्त आप कुछ और बता सकते हैं?"

"कुछ नहीं।"

अशोक दादा ने कहा, "मुझे तो लगता है कि यह एक फिजूल का केस है। ऐसे कत्ल तो होते ही रहते हैं। परंतु आपने पता नहीं क्यों इसे अपने हाथ में ले लिया। मुझे लगता है कि क्योंकि नीता के पिता डिफेन्स मिनिस्ट्री में आफीसर हैं, इसी लिये उन्होंने सेक्रेट्री से प्रार्थना की होगी कि उनकी बेटी के हत्यारे को ढूँढ़ा जाये। यह काम गुप्त रूप से वे इसलिये करवाना चाहते होंगे ताकि उनकी बदनामी न हो।"

चीफ ने मुस्कराते हुए कहा, "अब भई, कुछ भी हो, मैंने वादा कर लिया है तो यह काम करना ही होगा, और इसे अब तुम्हें ही करना है।"

अशोक दादा ने समझ लिया कि यह आर्डर है। वह 'ओ० के० सर' कहता हुआ उठ खड़ा हुआ।

चीफ ने कहा, "शिमला के उस होटल का नाम क्लार्क है।"

"जी, मैंने पेपर में कल देखा था।"

इतना कहते ही अशोक दादा बाहर जाने के लिये मुड़ा। इसी समय फोन की घंटी बजी। चीफ रिसीवर उठा कर बात करने लगे। अशोक दरवाजे तक जा पहुँचा था। चीफ ने आवाज दे कर उसे लौटने को कहा। अशोक आकर फिर कुर्सी पर बैठ गया। चीफ जब बात कर चुके तो रिसीवर रखते हुए उन्होंने कहा, "एक नई बात यह पता चली है कि नीता तीन महीने से गर्भवती थी।"

यह सुन कर अशोक दादा मुस्करा दिया, "तब तो सर, यह कोई प्रेम-व्रेम का मामला लगता है। बाई दि वे, यह किस का फोन था?"

"डिफेन्स मिनिस्ट्री के सेक्रेट्री का।"

अशोक दादा फिर मुस्करा दिया।

चीफ ने उसके उठने पर कहा, "एयर-फोर्स के प्लेन में तुम्हारे चंडीगढ़ जाने तक का प्रबंध कर दिया गया है। यह प्लेन साढ़े चार बजे जायेगा। वहाँ से तुम कार से या मिलेट्री के हेलीकाप्टर से शिमला जा सकते हो।"

बाहर जाने से पहले अशोक दादा ने चीफ से कहा, "एक काम आप यह करवा दें कि नीता की लाश को अभी नष्ट न किया जाये।" और फिर वह बाहर आ गया।

कर्जन रोड से गुजरते हुये उसने एक पब्लिक टेलीफोन बूथ के सामने कॉर रोक दी, और बूथ के अंदर जाकर राजेश के नम्बर मिलाने लगा।

राजेश एक अँग्रेजी दैनिक में रिपोर्टर था। अन्य समाचारों के अतिरिक्त वह क्राईम-रिपोर्टिंग का काम भी करता था। अपने काम में वह बहुत होशियार था। अशोक दादा का वह विशेष मित्र था। अशोक दादा की पहले भी कई बार उसने सहायता की थी।

फोन पर जब राजेश मिल गया तो अशोक दादा ने कहा, "हेलो राजेश, मैं दादा बोल रहा हूँ। मुझे तुमसे एक अर्जेन्ट काम लेना है, क्या तुम काम करने के मूड में हो?"

उधर से आवाज आई, "दादा, मैं हर समय काम के मूड में रहता हूँ, और फिर तुम्हारा काम तो मैं सब से पहले करना चाहूँगा, तुम काम बताओ।"

अशोक ने कहा, "कल के पेपर में जिस कत्ल के बारे में छपा है...।"

"शिमला वाली लड़की के बारे में?"

"हाँ-हाँ, वही। मैं यह चाहता हूँ कि तुम उसके पिछले जीवन के बारे में कुछ ढूँढ़ निकालो, जैसे उसके लव-अफेयर के बारे में, यदि कोई हो। और इसके अतिरिक्त दूसरी सम्बंधित बातें जिनका तुम जल्दी

से पता चला सको।'

उधर से आवाज आई, "कुछ बातें तो मैं तुम्हें अभी बता सकता हूँ, कि नीता अभी यूनिवर्सिटी में पढ़ रही थी। उसका पिता डिफेन्स मिनिस्ट्री के सेक्रेटरी का असिस्टेंट है, और उनका बंगला इंद्रपुरी में है।"

अशोक ने कहा, "यह विशेष बातें नहीं हैं। तुम कुछ महत्वपूर्ण चीज़ ढूंढ़ निकालो, तभी फायदा है। और सुनो, मैं अभी बाहर जा रहा हूँ, कल किसी समय लौटूंगा, तब तक...गुड बाई।"

लगभग साढ़े सात बजे अशोक दादा शिमला में क्लार्क होटल के मैनेजर के सामने बैठा हुआ था।

कुछ देर की बातचीत के बाद मैनेजर ने अशोक से कहा, "आप यदि चाहें तो छत्तीस नम्बर के कमरे को देख सकते हैं, मिस नीता इसी कमरे में ठहरी थीं। परंतु इस कमरे की चाबी पुलिस के पास है।"

अशोक दादा ने कहा, "मुझे जब आवयश्कता होगी, मैं चाबी मँगवा लूँगा।" दो-तीन क्षण बाद उसने फिर कहा, "आप क्या यह बता सकते हैं कि नीता यहाँ पर किसी के साथ मिलती-जुलती थी या नहीं, मेरा मतलब है क्या आपने उसे किसी मित्र के साथ कभी देखा था?"

मैनेजर ने कहा, "सर, मैं इस सम्बन्ध में अधिक कुछ नहीं कह सकता। होटल का यह अच्छा सीजन है, इसलिये मुझे किसी की तरफ ध्यान देने की फुर्सत ही नहीं मिलती है।"

अशोक दादा ने समझ लिया कि मैनेजर से कुछ विशेष पता नहीं चल सकता। उसने फोन का रिसीवर उठाया और सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस के नम्बर डायल करने लगा। कुछ देर बाद करते रहने के बाद उसने कहा, "मुझे कमरे की चाबी अभी चाहिए...आपका आदमी यहाँ कब तक पहुँच जायेगा... ठीक है, मैं बीस मिनट तक प्रतीक्षा करूँगा।" उसने रिसीवर रख दिया। फिर मैनेजर से यह कह कर कि "मैं छत्तीस नम्बर के सामने खड़ा हूँ।" वह उठ खड़ा हुआ।

छत्तीस नम्बर का कमरा दूसरी मंजिल पर था। जब वह वहाँ पहुँचा तो छत्तीस नम्बर के कमरे को छोड़ कर शेष सब कमरों की बत्तियाँ जल रही थीं। वह छत्तीस नम्बर के कमरे के सामने जा कर खड़ा हो गया। और उसने एक सिगरेट सुलगा ली और लम्बे लम्बे कश खींचने लगा।

लगभग एक मिनट बाद ही उसे एक वेटर वहाँ से गुजरता दिखाई दिया। वेटर जब सीढ़ियों के पास पहुँच गया तो उसने उसे आवाज दे कर रुकने के लिए कहा, और खुद तेजी से उसके पास पहुँच गया।

वेटर ने उससे पूछा, "क्या हुक्म है साब?"

अशोक दादा ने उसे पहले तीखी नजर से देखा, फिर मुस्कराते हुये कहा, "तुम क्या इस तीसरी मंजिल पर सर्व करते हो?"

वेटर ने कहा, "जी हाँ, हुक्म दीजिये।"

अशोक ने अपनी जेब से दस-दस के पाँच नोट निकाल कर वेटर के हाथ में दे दिये और बिना बात किये मुस्कराने लगा।

वेटर ने पूछा, "साब, क्या लाऊँ।"

अशोक ने मुस्कराते हुये ही कहा, "लाना कुछ नहीं है, यह पैसे तुम अपने पास रखो।"

वेटर आश्चर्य और संकोच में पड़ गया।

अशोक ने कहा, "मुझे तुम से एक बात पूछनी है।"

"पूछिये साब।" वेटर अब तक उन नोटों को अपनी जेब में डाल चुका था।

"तुम छत्तीस नम्बर में रहने वाली मिस नीता के बारे में जानते होगे जिनका कत्ल हो गया है?"

"जी हाँ। वे सचमुच बहुत अच्छी थीं, मुझे काफी टिप देती थीं।"

अशोक ने देखा कि वेटर अब कुछ सतर्क होकर बात कर रहा है, शायद इसलिये कि नीता का कत्ल हो गया है।

अशोक ने कहा, "मैं दरअसल यह जानना चाहता हूँ कि क्या नीता

से यहाँ कोई मिलने आता था, कोई मित्र या कोई और व्यक्ति ?"

वेटर तुरंत बोला, "जी हाँ, यहीं इकतालीस नम्बर में एक व्यक्ति पहले रहते थे, वह इन मिस साहिबा से खूब मिलते-जुलते थे। मिस साहिबा और वह व्यक्ति अपना अधिकतर समय इकट्ठे ही बिताते थे। ऐसा लगता था, जैसे उन दोनों की पहले की जान-पहचान थी।"

अशोक दादा के लिये यह सूचना बहुत महत्वपूर्ण थी। उसने वेटर से फिर पूछा, "उस व्यक्ति के अतिरिक्त और भी कोई मिस नीता से कभी मिला था ?"

"मैंने और किसी को नहीं देखा।"

अशोक ने पूछा, "उस व्यक्ति की आयु तुम्हारे ख्याल में कितनी होगी ?"

वेटर मुस्करा दिया। उसने मुस्कराते हुये ही कहा, "आप शायद उस व्यक्ति का पूरा हुलिया जानना चाहते हैं ?"

अशोक ने भी मुस्कराते हुये कहा, "हाँ।"

"साब, उस व्यक्ति की आयु तीस साल से अधिक न थी। उनके चेहरे पर हल्की-हल्की दाढ़ी थी। माथा चौड़ा, गोरा रंग, नाक तीखी, आँखें न अधिक बड़ी न छोटी, कद आप से दो-तीन इंच छोटा होगा, स्वास्थ्य भी आप से तो कम ही था परंतु वे अच्छे-खासे लगते थे।"

उसके चुप हो जाने पर अशोक ने पूछा, "तुम क्या यह बता सकते हो कि मिस नीता और वह व्यक्ति यहाँ पर इकट्ठे ही आये थे या अलग-अलग ?"

"जी, वह व्यक्ति एक दिन पहले आये थे।"

"और जिस दिन मिस नीता का कत्ल हुआ उस दिन क्या वह व्यक्ति यहीं पर था ?"

"वे इस कमरे को एक दिन पहले छोड़ गये थे। मिस साहिबा का कत्ल पच्चीस तारीख को हुआ था, और वे चौबीस की दोपहर को यह होटल छोड़ गए थे।"

"और उनके जाने के बाद मिस नीता से मिलने कोई अन्य व्यक्ति आया था ?"

"जी, जहाँ तक मेरा ख्याल है कोई नहीं आया।"

अशोक ने मुस्कराते हुये कहा, "अच्छा यह बताओ, तुम्हें इन दोनों के बारे में सारी बातें इतनी अच्छी तरह से कैसे याद हैं ?"

वेटर इस प्रश्न से घबराया नहीं। उसने कहा, "जी, मेरा तो काम यही है। आप इस मंजिल में रहने वाले किसी भी व्यक्ति के बारे में पूछ सकते हैं।"

अशोक एक क्षण कुछ सोचता रहा, फिर कहा, "इकतालीस नम्बर में उस व्यक्ति के जाने के बाद कोई और रह रहा है या नहीं ?"

"साब, उसी दिन ही दो लोग उसमें आ गये। आजकल सीजन है न, कमरा खाली मिलना बहुत मुश्किल है।"

अशोक ने सोचा कि यदि वह कमरा खाली रहता तो वहाँ की चीजों से उस व्यक्ति के फिंगर-प्रिंट्स लिये जा सकते थे।

इसके बाद अशोक ने वेटर से पूछा, "यदि वह व्यक्ति तुम्हारे सामने दोबारा आये तो तुम उसे पहचान लोगे ?"

"जी, अच्छी तरह से।"

"अच्छा, अब तुम जाओ।" अशोक ने देख लिया था, सीढ़ियों पर सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस, एक इंसपेक्टर और एक कांस्टेबल ऊपर आ रहे थे। वेटर वहाँ से चला गया।

अशोक ने सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस से कहा, "हेलो। परंतु आपने खुद तकलीफ क्यों की ?"

सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस ने संकेत से सैलूट किया और चाबी उसके हाथ में देते हुए कहा, "यह मेरी ड्यूटी है, सर।"

अशोक ने चाबी को उलट-पलट कर देखते हुए कहा, "आप लोग थोड़ी देर नीचे प्रतीक्षा करेंगे ? मैं इस कमरे को अकेले में देखना चाहता हूँ।" फिर कहा, "कमरे में से कोई चीज हटाई तो नहीं गई है ?"

"जी नहीं। फिंगर-प्रिन्ट्स अवश्य लिये गये थे। परंतु उससे भी कुछ विशेष लाभ नहीं हुआ। पूरे कमरे में केवल मिस नीता के फिंगर-प्रिन्ट्स ही मिले।" एस० पी० यह कहता हुआ अपने दोनों साथियों के साथ नीचे उतर गया।

अशोक दादा ने छत्तीस नम्बर का दरवाजा खोला और अंदर चला गया। दरवाजे के बगल में लगे बटन को दबा कर उसने बत्ती जला दी। बिजली की रोशनी में कमरा जगमगा रहा था। कमरे में सब चीजें बड़े ढंग से पड़ी हुई थीं। कपड़े, क्रीम-पाऊडर, दो अटैची, और इसी प्रकार का दूसरा सामान। अशोक ने बारी-बारी से हर चीज़ को देखना शुरू किया। वह सोच रहा था कि संभव है उसे कोई पत्र, डायरी या ऐसी ही कोई दूसरी चीज मिल जाये जिससे आगे की छानबीन में कोई सहायता मिल सके। उसने दोनों अटैची, शृंगार-मेज की दराजें और कपड़ों की जेबें देख लीं, बाथरूम में भी देखा। परंतु उसे कोई काम की चीज न मिली। मिस नीता के सारे सामान को देख कर अशोक ने यह अवश्य सोचा कि यह सारा सामान काफी कीमती है, परंतु वह जानता था कि नीता एक बड़े अफसर की लड़की थी।

आधे घंटे की छानबीन के बाद वह नीचे आ गया, जहाँ एस० पी० उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसने एस० पी० को चाबी लौटाते हुए कहा, "आप मिस नीता के सामान को उसके घर भेजने का प्रबंध कर दें, उस कमरे की अब हमें आवश्यकता न पड़ेगी।"

एस० पी० ने केवल इतना कहा, "जी।"

फिर कुछ सेकंड बाद एस० पी० बोला, "हम लोग तो इस केस को साधारण ही समझे हुए थे।"

अशोक ने जल्दी से कहा, "केस तो बिलकुल ही साधारण है। परंतु मिस नीता मेरे एक मित्र की लड़की थी। इसीलिये मैं—" फिर उसने पूछा, "क्या लाश का सर मिल गया कि नहीं?"

"जी, नहीं मिल पाया। वैसे हमारे आदमी अभी भी तलाश में लगे

हुए हैं।" थोड़ा रुक कर एस० पी० ने फिर कहा, "क्या आप उस स्थान पर चलना चाहेंगे जहाँ मिस नीता की लाश मिली थी ?"

"वहाँ जाने की आवश्यकता नहीं है। परंतु क्या वह स्थान शहर के अंदर ही है ?"

"जी, वह लाश एक मकान के पिछले भाग में अंधेरे स्थान पर पड़ी मिली थी। हमारे एक आदमी ने गश्त के दौरान उसे वहाँ देखा।"

अशोक दादा ने कहा, "तो ठीक है। आप मिस नीता का सामान भिजवा दीजिएगा। मैं अब वापस जा रहा हूँ। आपके सहयोग के लिये धन्यवाद।" उसने एस० पी० से हाथ मिलाया और होटल के बाहर खड़ी अपनी कार में आ कर बैठ गया।

काफी आगे जा कर एक रेस्ट्रां के सामने अशोक ने अपनी कार रोक ली। फिर आधे मिनट पश्चात ही रेस्ट्राँ के अंदर से वह क्लार्क होटल के नौकर को फोन कर रहा था। मैनेजर के लाईन पर आ जाने पर पहले उसने उसे अपना परिचय दिया, फिर पूछा, "आपके होटल के इकतालीस नम्बर के कमरे में एक व्यक्ति रह रहा था, उसने वह कमरा चौबीस तारीख को छोड़ा है, मैं उस व्यक्ति का नाम जानना चाहता हूँ।"

मैनेजर ने उधर से कहा, "एक मिनट होल्ड कीजिये, मैं अभी बताता हूँ।"

अशोक वहाँ पर एस० पी० के सामने यह बात मैनेजर से नहीं पूछना चाहता था, इसीलिये उसने यहाँ से फोन किया था। उसका अब यह पक्का विचार था कि यह व्यक्ति चौबीस तारीख को क्लार्क होटल छोड़ कर किसी दूसरे होटल में शिफ्ट कर गया होगा। हालांकि इस बात की पूरी संभावना है कि दूसरे होटल में वह अपने इसी नाम से नहीं रहा होगा। परंतु अशोक के पास अब उसके हुलिये की पूरी जानकारी थी। इसीलिये वह चाहता था कि अन्य होटलों में भी वह इस सम्बंध में पूछताछ कर ले। पता नहीं अशोक को ऐसा क्यों लग

रहा था कि मिस नीता का कत्ल इसी व्यक्ति ने किया है।

उसे मैनेजर की आवाज सुनाई दी, "हलो, उस व्यक्ति का नाम गुलशन था, और पता बम्बई का था।"

अशोक ने 'थैंक्स' कह कर रिसीवर रख दिया।

रेस्ट्राँ से बाहर आ कर वह अपनी कार में बैठ गया, और फिर उसने अन्य होटलों के चक्कर लगाने शुरू कर दिये।

लगभग डेढ़ घंटे के परिश्रम और छः सात होटलों में घूमने के बाद एक छोटे से होटल में उसे उस हुलिये के एक व्यक्ति के बारे में पता चला।

उस छोटे होटल के मालिक ने उसे बताया, "मुझे वह व्यक्ति इसलिये अधिक याद रह गया कि जिस दिन वह व्यक्ति इस होटल में आया था, उसी रात वह कहीं से बहुत अधिक शराब पी कर आया और होटल में आते ही उसने गालियाँ बकनी शुरू कर दीं और हमारे एक दूसरे कस्टमर से उसने हाथापाई भी शुरू कर दी।"

अशोक ने पूछा, "क्या उसके साथ कोई और भी था?"

"जी नहीं।"

"उसने आपका होटल कब छोड़ा?"

"छब्बीस की सुबह को।"

कत्ल पच्चीस की रात को हुआ था। अशोक समझ गया कि अब उस व्यक्ति को ढूँढ़ना बहुत कठिन होगा। उस व्यक्ति ने तुरंत ही शहर छोड़ दिया होगा और उस व्यक्ति का पूरा हुलिया मालूम होने के बावजूद भी अब यह संभव है कि उसने अपनी दाढ़ी कटवा दी हो। तब तो उसे ढूँढ़ पाना और भी कठिन होगा। अशोक ने यह समझ लिया कि उसका शिमला में आना व्यर्थ ही सिद्ध हुआ है। उसे यहाँ पर कोई भी ऐसी चीज़ नहीं मिल पाई जिससे इस केस पर आगे बढ़ने में सहायता मिलती।

उस होटल के मालिक से पूछने पर पता चला कि वह व्यक्ति यहाँ

पर कृपाल सिंह के नाम से रह रहा था। होटल के मालिक को धन्यवा कह कर वह फिर बाहर आ कर अपनी कार में बैठ गया। यहीं पर आ कर उसे अचानक महसूस हुआ, जैसे कोई लगातार उसे देख रहा है औ उसका पीछा कर रहा है। हालांकि यह उसका भ्रम भी हो सकता था परंतु पता नहीं उसे ऐसा क्यों महसूस हुआ था। वह बड़े तरीके से इधर-उधर देखने लगा। वह सोच रहा था कि संभव है उसी से कुछ ऐसा रास्ता निकल आये, जिससे वह हत्यारे को पकड़ने में सफल हो सके। परंतु उसके बाद एक घंटे की भाग-दौड़ के बावजूद भी उसे य पक्का पता न चल सका कि कोई उसके पीछे है भी या यह केवल उसक भ्रम है। वह किसी को स्पष्ट रूप से न देख पाया था। फिर उसने निर्णय लिया कि यह सब उसका भ्रम ही है, कोई उसके पीछे नहीं है। परंतु एक बात वह समझ गया कि उसका यहाँ शिमला आना एकदम व्यर्थ सिद्ध हुआ है। उसे यहाँ कुछ भी विशेष पता नहीं चल पाया। केवल उसे एक व्यक्ति की जानकारी मिल गई, जिसे ढूँढ़ना अब बेहद कठिन होगा।

अगले दिन दिल्ली लौट आने पर अशोक ने अपने रिपोर्टर मित्र राजेश को फोन किया। राजेश अपने कार्यालय में ही था।

राजेश ने बताया, "दो बातें विशेष पता चली हैं। एक तो यह कि नीता अपने कालेज के एक लड़के राजेन्द्र से प्रेम करती थी। दूसरी बात यह कि नीता पिछले साल से बेहद खर्चीली हो गई थी, अक्सर सैर-सपाटे पर जाया करती थी, और साथ ही वह नशीली चीजों का प्रयोग भी करने लगी थी। एक बार तो नशे की हालत में कालेज में उसने काफी शोर मचाया था। यदि वह एक बड़े अफसर की लड़की न होती तो कालेज से निकाल दी गई होती।"

अशोक ने पूछा, "क्या राजेन्द्र के अतिरिक्त भी उसे किसी के साथ देखा गया था?"

"ऐसी किसी बात का पता नहीं चल पाया।"

"खैर, इतनी बातें भी काफी हैं। धन्यवाद। राजेन्द्र का घर का पता क्या है?"

राजेश ने पता बता दिया।

रिसीवर रख कर अशोक जल्दी से पन्तनगर की ओर चल पड़ा। वह राजेन्द्र से तुरंत मिलना चाहता था।

राजेन्द्र उसे घर पर ही मिल गया। वह काफी आकर्षक और सुंदर युवक था।

अशोक ने उसे देखते ही उसके चेहरे को वेटर के बताये हुलिये से मिलाने की चेष्टा की। परंतु राजेन्द्र का चेहरा एकदम अलग था।

राजेन्द्र अशोक दादा को अपने कमरे में ले गया, और फिर पूछा, 'आप किस सिलसिले में आये हैं?"

अशोक ने कहा, "नीता की मत्यु हो गई है, मैं उसी सम्बंध में पूछ-ताछ कर रहा हूँ।"

अशोक ने देखा राजेन्द्र के चेहरे पर दुःख के कुछ चिन्ह प्रकट हो गये हैं। उसे राजेन्द्र का चेहरा बड़ा भोला और मासूम लगा।

राजेन्द्र ने कहा, "मैंने नीता के कत्ल की खबर पेपर में पढ़ी थी।"

अशोक ने पूछा, "जिस दिन नीता का कत्ल हुआ, आप उस दिन कहाँ थे? क्षमा कीजियेगा, मैं आप पर संदेह नहीं कर रहा, परंतु कार्रवाई पूरी करने के लिये आप से भी पूछना आवश्यक है।"

राजेन्द्र ने कहा, "नीता का कत्ल पच्चीस को हुआ था, मैं अपने मामा के यहाँ लखनऊ गया हुआ था, चौबीस को वहाँ से लौटा था, तब से यहीं घर पर ही हूँ।"

अशोक ने पूछा, "आप नीता से प्रेम करते थे, यह मुझे पता चला है..."

राजेन्द्र ने बात काट कर कहा, "यह एक वर्ष पहले की बात है, हम दोनों आपस में प्रेम करते थे—परंतु उसके बाद पता नहीं क्या हुआ, नीता मुझसे एकदम से अलग हो गई।"

"क्या वह किसी दूसरे युवक की ओर आकर्षित हो गई थी ?"

"न, ऐसा नहीं देखा गया। बल्कि यूँ कह लीजिये कि उसका पूरा करैक्टर एकदम से बदल गया। मैंने उसे समझाने की चेष्टा की, परंतु उसने मेरी बात नहीं सुनी। वह अब इधर-उधर बहुत घूमने लगी थी और नशे का प्रयोग भी करने लगी थी। इसलिये जब वह नहीं मानी तो मैं खुद ही उसके रास्ते से हट गया . . . ।"

अशोक ने धीमे स्वर में कहा, "एक व्यक्तिगत प्रश्न मैं आप से करना चाहता हूँ, जो कि अक्सर किसी से पूछना नहीं चाहिए, परंतु क्योंकि इससे हमें काफी सहायतया मिलेगी, इसीलिये . . . ।" उसने अपना वाक्य अधूरा छोड़ दिया।

राजेन्द्र ने कहा, "आप पूछिये, मुझे यदि किसी बात का पता होगा तो मैं अवश्य बताऊँगा।"

तब अशोक ने कहा, "जिन दिनों आप दोनों आपस में प्रेम करते थे उस बीच में क्या आप कहीं आपस में इकट्ठे सोये थे ?"

राजेन्द्र ने बिना झिझक के कहा, "जी, चार-पाँच बार ऐसा अवसर मिला था।"

अशोक ने कहा, "क्योंकि नीता की लाश बिना सर के मिली है इसलिये मैं अभी तक यह तय नहीं कर पाया कि वह लाश नीता की ही है या नहीं। आपसे यह प्रश्न करने का यह मतलब था कि यदि आप इकट्ठे सोये हैं तो आपने नीता के शरीर को अच्छी प्रकार से देखा होगा और संभव है नीता के शरीर पर कोई ऐसा चिन्ह आप ने देखा हो जिससे आप उसे पहचान जायें—"

राजेन्द्र तुरंत बोला, "जी, मैं उसे पहचान सकता हूँ। नीता की एक जाँघ पर घुटने से थोड़ा ऊपर दो तिल एक साथ हैं, दाईं जाँघ पर—"

अशोक को यह सुन कर काफी तसल्ली हुई। उसने कहा, "क्या आप मेरे साथ अभी चल कर नीता की लाश को देखना चाहेंगे।"

राजेन्द्र तैयार हो गया।

नीता की बिना सर की लाश को देखते ही राजेन्द्र का चेहरा दुःख भर गया। उसकी आँखों में पानी छलछला आया।

अशोक ने लाश पर से चादर हटा दी। राजेन्द्र नीता के मृत शरीर ो उस प्रकार वस्त्रहीन देख कर एक बार तो डर गया। फिर वह सकी जाँघों पर झुक गया। दाईं जाँघ पर दो काले तिल के निशान । यह बिना सर की लाश नीता की ही थी, अब यह पक्का पता चल या था।

अशोक ने लाश पर चादर डालते हुये पास खड़े डाक्टर से कहा, अब आप उसे इसके घर वालों के हवाले कर सकते हैं।" फिर कमरे से हर आते हुये उसने राजेन्द्र से कहा, "क्या आप तीन-चार महीने हले भी नीता से मिले थे ?"

"नहीं। पिछले एक वर्ष से उससे नहीं मिला था।"

"तब क्या आप जानते हैं नीता से मिलने वाला दूसरा व्यक्ति कौन सकता है ?"

राजेन्द्र ने कहा, "मैं ऐसे किसी व्यक्ति को नहीं जानता। परंतु सा पूछने का क्या आपका कोई विशेष मतलब है ?"

अशोक ने हल्के स्वर में कहा, "हाँ। नीता तीन महीने के गर्भ से ।"

राजेन्द्र को बड़ा आश्चर्य हुआ। परंतु इसके बाद वह कुछ बोला हीं, एकदम से चुप हो गया, जैसे उसे यह सुन कर भारी दुःख पहुँचा ।

अशोक की समझ में यह केस अभी बिलकुल न आया था। वह अभी क अँधेरे में ही था। परंतु इसके बावजूद वह समझ रहा था कि कहीं छ गड़बड़ है अवश्य। क्योंकि नीता की लाश का बिना सर के लना, नीता का पिछले एक वर्ष से अत्यधिक खर्चीला हो जाना, और सके नशे की चीजों का प्रयोग करना। साथ ही, शिमला के क्लार्क

होटल में उस दाढ़ी वाले व्यक्ति का पाया जाना, नीता के कत्ल एक दिन पहले उसका क्लार्क होटल छोड़ कर दूसरे होटल में च जाना। नीता का उससे क्या सम्बंध था ? वेटर ने बताया था कि वे अ अधिकांश समय इकट्ठे ही बिताते थे। क्या वे आपस में प्रेम करते थे यदि प्रेम करते थे तो उस व्यक्ति का आचरण इतना रहस्यमय क्यों और फिर उसने नीता को कत्ल क्यों कर दिया? और यदि कत्ल किया तो उसके सर को उतार कर छिपाने की क्या आवश्यकता थं क्या पुलिस को गलत रास्ते पर डालने के लिए ? पुलिस को गलत रा पर डालने की आवश्यकता क्यों पड़ी ? यह सारी बातें ऐसी थीं अशोक के मस्तिष्क में बराबर चक्कर काट रही थीं। उसे अभी ऐसा कोई सूत्र नहीं मिल पाया था, जिसके सहारे वह तथ्यों तक प सकता। अब तो वह यह भी सोच रहा था कि अपनी अगली कार्र कहाँ से शुरू करे। क्योंकि, या तो उसे नीता के कपड़ों में कोई ऐ चीज मिल गई होती, या उसे यह भी पता चल पाया होता कि पि एक साल से नीता किन लोगों में उठती-बैठती थी, या गुलशन नाम इस व्यक्ति का ही कोई संकेत मिला होता। अब भला वह उस व्यि को कहाँ ढूँढ़ सकता था, यह बहुत कठिन था। अशोक अब यह स रहा था कि या तो कोई और घटना घटे, या पूछताछ के दौरान उ पर कोई आक्रमण हो, तभी आगे कुछ किया जा सकता है। वैसे उसको निश्चित था कि नीता का कत्ल उसी व्यक्ति ने किया परंतु उसने ऐसा क्यों किया, यह तभी पता चल सकता है, जब वह उस व्यक्ति को पकड़ने में सफल हो जाये। और उस व्यक्ति त पहुँचने का फिलहाल उसके पास कोई रास्ता न था।

यही सोच कर वह परेशानी महसूस कर रहा था। यह पहला के था, जिसके सूत्र उसके हाथ से निकले थे और वह कुछ भी कर पाने असमर्थ था।

पिछले दो घंटों से वह अपने ड्राइंग-रूम में बियर पीता हुआ बा

ार उन्हीं प्रश्नों के बारे में सोचे जा रहा था।

उसी समय उसे ख्याल आया कि यह संभव है, नीता कुछ ऐसे लोगों ं फँस गई हो, जो बेहद अमीर हों, और वे लोग उसे खूब पैसा दे र अपनी वासना-तृप्ति में लगे हों। क्योंकि डाक्टर की रिपोर्ट के नुसार उसे तीन महीने का गर्भ भी था। यह बात कुछ समझ में आने ाली थी। उन्हीं लोगों ने उसे नशे की आदत भी डाली होगी। यह ी संभव है कि कुछ व्यक्ति न होकर केवल वही एक व्यक्ति गुलशन स सब के पीछ हो। गुलशन इस केस की एक महत्वपूर्ण कड़ी था, ौर यही कड़ी अशोक के हाथ में न आ रही थी। अब ऐसा लगता है कि शमला में अपनी गर्भावस्था के कारण नीता ने गुलशन से शादी करने ; लिए कहा हो और उसने यह न चाहते हुये उससे छुटकारा पाने के लिये उसे कत्ल कर दिया हो, और पुलिस को गलत रास्ते पर डालने ; लिए उसका सर उतार कर कहीं छिपा दिया हो। यह बात बिलकुल टीक बैठती थी। परंतु यह एक कत्ल का मामला था, और इसीलिये ुलशन को ढ़ूँढ़ना अत्यधिक आवश्यक था।

इसी समय डिफेंस मिनिस्ट्री के सेक्रेटरी मिस्टर रामनाथन का उसे ख्याल आ गया। उन्होंने इंटलिजेंस विभाग से इस केस की पूछताछ ; लिये कहा। क्या केवल इसलिये कि यह उनके असिस्टेंट की लड़की का मामला था, या इसके पीछे कोई दूसरी बात भी थी? अशोक ने सोचा कि मिस्टर रामनाथन से इस बारे में पूछा जाना चाहिए, क्योंकि संभव है तब इस केस पर आगे काम करने में कुछ सहायता मिले।

उसने घड़ी में समय देखा। सवा पाँच बज रहे थे। उसका मतलब था कि मिस्टर रामनाथन दफ्तर से उठ गये होंगे। उसने सोचा कि वह वहाँ से छः बजे निकलेगा और सीधा उसके घर पर चला जायेगा। उनका बंगला पृथ्वीराज रोड पर था।

उसने नौकर को बुला कर बियर की एक बोतल और बर्फ के लिये

कह दिया।

जब वह बियर की बोतल खोल ही रहा था, उसी समय फोन। घंटी बजी। यह लाल फोन की घंटी थी।

रिसीवर उठाते हुये उसने कहा, "यस चीफ।"

दूसरी तरफ से इंटलिजेंस चीफ मिस्टर सूरी की आवाज आ "इस लाश का कटा हुआ सर आज मिल गया है। उसके पिता को उ पहचानने के लिये बुलाया गया था। उन्होंने उसे पहचान लिया है

अशोक ने पूछा, "यह सर कहाँ से मिला?"

"मिंटो रोड के एक कूड़ेदान से। कार्पोरेशन के एक जमादार ने उ वहाँ देखा। और अशोक, साथ ही एक सर और मिला है।"

अशोक ने जल्दी से पूछा, "किसका?"

और चीफ ने उस सर का जो हुलिया बताया, उसे सुन कर अशो का सारा उत्साह समाप्त हो गया। यह सर उसी गुलशन नाम व्यक्ति का था।

अब वह सोचने लगा कि केस की जो महत्वपूर्ण कड़ी उसके हा में थी, वह भी जाती रही। परंतु इतना वह अब समझ गया कि इ केस को जिस रुख से वह देख रहा था, यथार्थ में इसमें वह बात नह है। गुलशन का कटा सर मिलने से अब यह स्पष्ट हो गया था कि इ केस में कोई दूसरा या कुछ दूसरे व्यक्ति भी शामिल हैं। अब वह यह भ सोच रहा था कि शिमला के उस छोटे होटल में से निकलने के बा उसे जो अपना पीछा किये जाने का भ्रम हुआ था, वह यथार्थ में भ्र नहीं था। निश्चय ही कोई उसके पीछे लगा हुआ था, और उस व्यक्ति ने यह जान कर कि मैं गुलशन की तलाश कर रहा हूँ, उसने गुलशन को ही समाप्त कर दिया।

दूसरी तरफ से चीफ सूरी की आवाज आई, "हेलो, अशोक, तुम क्या सोचने लगे?"

अशोक ने कहा, "सर, यह जिस व्यक्ति का हुलिया आपने अभी

बताया, मुझे इसी की तलाश थी। यही व्यक्ति शिमला में नीता के साथ देखा गया था। परंतु इस व्यक्ति की मृत्यु के बाद अब मुझे लगता है कि यह केस दिलचस्प है, और मैं इस केस के बारे में जो सोच रहा था, वह बात उसमें नहीं है। अब यह भी समझ में आता है कि डिफेन्स मिनिस्ट्री के सेक्रेटरी ने उसकी गुप्त रूप से छाबीन के लिये क्यों कहा था।"

"तो क्या तुम्हें कुछ पता चला ?"

"जी, मेरे हाथ में यही एक व्यक्ति एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में था, जिसकी अभी मृत्यु हो गई है। अब मैं दूसरी तरह से इस केस को देखूँगा।"

"ठीक है, परंतु तुम अपना सर बचाये रखना।"

दूसरी तरफ से चीफ की हँसी की आवाज सुनाई दी और कनेक्शन कट गया।

उसने रिसीवर रख दिया।

बियर का घूँट भरते हुए उसने तय किया कि अब मिस्टर रामनाथन् के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। अब सबसे पहले यह जरूरी है कि नीता के पिता के घर जा कर नीता के कपड़ों और दूसरी चीजों की तलाशी ली जाये। संभव है इससे किसी बात का पता चले। इसके अतिरिक्त वह नीता के पिता से भी कुछ बातें पूछना चाहता था।

वह लगभग साढ़े छः बजे इंद्रपुरी पहुँचा, जहाँ नीता के पिता मिस्टर मलिक का बँगला था। वे घर पर ही थे। अशोक ने उन्हें अपना परिचय दिया और फिर कहा, "यदि आपको ऐतराज न हो तो मैं नीता के कपड़े और उसकी दूरी सभी चीजें देखना चाहूँगा। इससे संभव है नीता के हत्यारे तक पहुँचने में कुछ सहायता मिले।"

मिस्टर मलिक उसे चुपचाप नीता के कमरे में ले गये और उसे वहाँ छोड़ कर लौट आये। उनका चेहरा काफी बुझा हुआ लग रहा था।

शायद नीता की मृत्यु से उन्हें भारी दुःख पहुँचा था।

यह एक काफी खुला और खूब सजा हुआ कमरा था। फर्श प कालीन था। दीवारों पर एक-दो माडर्न पेंटिंग्ज़ टँगी थीं। एक दिवा के साथ बिस्तर था, साथ ही तीन कुर्सियाँ और एक मेज पड़ी थी। अशोक ने यह सब पहली ही दृष्टि में देख लिया, और फि उसने एक-एक करके हर चीज़ को ध्यान से देखना शुरू किया। किताबें, कपड़े, शृंगार-मेज की दराजें, बिस्तर, कालीन---उसने धीरे धीरे सब चीजें देख डालीं। परंतु उसे एक बार फिर निराशा हुई। वह चाहता था कि उसे कोई ऐसी चीज मिल जाये, जिससे नीता के दूसरे सम्बंधों या हरकतों पर रोशनी पड़ सके। कोई पत्र, कोई डायरी या ऐसी ही दूसरी कोई चीज़, या कोई और ऐसा संकेत, जिससे उसके किसी गुट से सम्बंधित होने का पता चले। परंतु बीस-पच्चीस मिनट की तलाश के बावजूद भी उसके हाथ कुछ न लगा। वैसे यह चीज़ उसने जरूर नोट की थी कि नीता के कमरे में पड़े उसके कपड़े आदि अत्यधिक कीमती थे।

अशोक वहाँ से निकल कर ड्राइंग-रूम में आ गया। वहाँ मिस्टर मलिक बैठे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उसके कुर्सी पर बैठते ही मिस्टर मलिक ने कहा, "आप क्या लेना पसंद करेंगे, काफी, स्क्वैश या ड्रिंक्स ? मेरे ख्याल में बियर लीजिये।"

अशोक ने कहा, "जी शुक्रिया। मैं दरअसल जल्दी में हूँ। मैं कुछ नहीं लूँगा।" दो क्षण रुक कर उसने सिर कहा, "मैं जानता हूँ बेटी की मृत्यु से आप बहुत दुखी होंगे, परंतु क्योंकि आप एक जिम्मेदार आफीसर हैं, इसलिये मुझे आशा है इस केस को हल करने में आप मेरी सहायता करेंगे।"

मिस्टर मलिक ने कहा, "मिस्टर अशोक, आप जो पूछना चाहते हैं पूछिये। परंतु सच ही में मुझे नीता की मृत्यु से बहुत दुःख हुआ है। वह मेरी अकेली संतान थी। उसकी मा की मृत्यु भी आज से तीन वर्ष

पूर्व हो गई थी। अब इस संसार में मैं अकेला हूँ। आप महसूस कर सकते हैं—"

अशोक ने कहा, "मिस्टर मलिक, आज आप मिस नीता का कटा हुआ सर देखने गये थे। क्या आपने उसके साथ ही एक दूसरा कटा हुआ सर भी देखा था, एक युवक का. . . ?"

"जी।"

"क्या आप उस युवक को पहचानते हैं?"

"हाँ, वह सुधीर था।"

"क्या वह यहीं का रहने वाला था?"

"इस बारे में मैं कुछ नहीं जानता। वह नीता के साथ यहाँ घर पर आता था। परंतु मैंने नीता की बातों में कभी दखल देने की चेष्टा नहीं की।"

"क्या नीता के साथ कभी कोई और व्यक्ति भी यहाँ घर पर आया था?"

"ऐसा मैंने कभी नहीं देखा।"

"क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं, जो इन दोनों का शत्रु हो?"

"नहीं, मुझे इस बारे में कुछ पता नहीं।"

अशोक ने एक-दो क्षण रुक कर कहा, "अच्छा यह बताइये, क्या आपको यह पता था कि मिस नीता पिछले एक वर्ष से बहुत खर्च करने लगी थीं?"

"हाँ, मैंने यह महसूस किया था।"

"क्या वह सारा खर्च आप बर्दाश्त करते थे?"

"जैसा कि मैंने पहले बताया, नीता मेरी इकलौती संतान थी, मैंने उसके लिये अपना हाथ कभी नहीं रोका।"

"क्या आपको यह भी पता था कि मिस नीता नशीली चीजों का प्रयोग करती थीं?"

"हाँ।"

"आप ने उन्हें कभी रोका नहीं ?"

"सच तो यह है कि मैंने उसके रास्ते में कभी आने की चेष्टा नहीं की। और फिर आजकल के युवक-युवतियों में तो यह एक साधारण बात है।"

अशोक ने महसूस किया कि मिस्टर मलिक के उत्तर सीधे और स्पष्ट थे और वे अपनी तरफ से बड़ी ईमानदारी से सारी बातें बता रहे थे। उन्होंने गुलशन का नाम सुधीर बताया था, इससे पता चलता था कि उसका असली नाम सुधीर ही था, और वह शिमला के क्लार्क होटल में भी अपना नाम बदल कर रह रहा था। इसका मतलब था कि उसके चरित्र में निश्चय ही कुछ गड़बड़ थी। वैसे उसका सारा कार्यक्रम ही रहस्यमय था, जैसे शिमला के होटल में अलग कमरे में रहना और फिर होटल बदलना। हालांकि अशोक यह महसूस कर रहा था कि उस केस में कहीं घपला अवश्य है, परंतु अभी मिस्टर मलिक से बात कर लेने पर भी उसके हाथ में कोई नया सूत्र न लगा था, और वह अभी तक अपने को अँधेरे में ही पा रहा था। परंतु यह निश्चित था कि कोई तीसरा हाथ इस सब झंझट के पीछे है, मगर वह यह तय नहीं कर पा रहा था कि अब अपनी अगली कार्रवाई कैसे और कहाँ से शुरू करे।

उसने कुर्सी पर से उठते-उठते मिस्टर मलिक से एक अंतिम प्रश्न किया, "मिस्टर मलिक, पिछले कुछ महीनों में क्या आपने मिस नीता के स्वभाव में कुछ अजीब-सा परिवर्तन महसूस किया था, जैसे वे कुछ डरी हुई हों या—"

मिस्टर मलिक ने कहा, "नहीं मिस्टर अशोक, मैंने तो ऐसा कोई परिवर्तन नीता में नहीं देखा।"

तब अशोक ने कहा, "अच्छा तो मिस्टर मलिक , इजाजत दीजिये। मैं क्षमा चाहता हूँ आपका बहुत समय लिया।"

इसी समय बाहर का दरवाजा खोल कर एक काफी सुदर युवती अंदर आ गई। उसकी आयु पच्चीस-छब्बीस से अधिक न थी।

उस युवती को देखते ही मिस्टर मलिक ने कहा, "आ जाओ प्रिया, यह मिस्टर बलवंत हैं, इंटेलिजेंस ब्यूरो से सम्बंधित। यह नीता की मृत्यु के सम्बंध में पुछताछ कर रहे हैं, और मिस्टर बलवंत, यह नीता की सहेली है, प्रिया—"

अशोक ने प्रिया को ध्यान से देखा। उसका चेहरा काफी आकर्षक था।

प्रिया ने कहा, "अंकल, मैं बाहर गई थी, आज ही लौटी हूँ। नीता के बारे में सुना तो बहुत ही दुःख हुआ, पता नहीं किस बदमाश ने उसके साथ ऐसा किया।"

अशोक ने कहा, "मिस्टर मलिक, आप लोग बातें करें, मैं चल र रहा हूँ।"

वह बाहर आ गया।

अशोक लगभग डेढ़-दो मील आगे निकल आया होगा, परंतु उसके मस्तिष्क में अभी तक प्रिया का चेहरा नाच रहा था। पता नहीं उसे ऐसा लगा रहा था कि उसने प्रिया को पहले कहीं देखा है। इसीलिये वह अब उसके बारे में पूरी चेष्टा से सोच रहा था। और फिर पाँच-छः मिनट बाद ही उसे सब कुछ याद आ गया। और वह आश्चर्य में डूब गया। प्रिया को उसने एक केस के सिलसिले में कलकत्ता में देखा था। वह वहाँ की मशहूर डांसर थी और उसका असली नाम मिस जूली था। वह अब यहाँ क्या कर रही है? और मिस्टर मलिक ने उसका नाम उसे गलत क्यों बताया?

उसे मिस्टर मलिक के बारे में सोच कर आश्चर्य हुआ। उसने सोचा कि मिस जूली का उनके पास आने का कार्यक्रम तय होगा, परंतु क्योंकि वह खुद उनके बंगले पर बिना पूर्व-सूचना के पहुँच गया, इसलिये वे मिस जूली को वहाँ आने से रोक नहीं पाये थे। परंतु मिस जूली

का उनके पास क्या काम है? और उन्होंने मिस जूली के बारे में झूठ क्यों बोला?

उसे अचानक लगा कि इस पूरे केस में खुद मिस्टर मलिक किसी-न-किसी रूप में शामिल हैं।

मिस जूली के बारे में सोचते-सोचते अचानक एक दूसरा चेहरा अशोक के मस्तिष्क में उभरा। यह एक युवक का चेहरा था, जिसका असली नाम अरविंद था और वह कलकत्ता में मिस जूली का साथी था। अशोक ने सोचा कि संभव है सुधीर या गुलशन यही अरविंद ही हो। इस विचार से उसे खुशी हुई। अब वह चाहता था कि उस दूसरे कटे हुये सर को वह खुद जल्दी से जल्दी देख ले। इसी विचार के साथ उसने सड़क के किनारे के एक पब्लिक टेलीफोन बूथ के पास गाड़ी रोकी और उसमें से उतर पड़ा। जब वह बूथ के अंदर जा ही रहा था, उसी समय एक गोली उसकी बाईं बाँह को चीरती हुई निकल गई। वह वहीं गिर गया। उसने देखा एक कार बहुत तेजी से उसके सामने से निकल गई है। इस समय वह बाल-बाल बचा था। गोली उसकी बाँह में लगने की बजाये उसके पेट में भी लग सकती थी। गोली बाँह में रुकी नहीं थी, बल्कि दूसरी तरफ से बाहर निकल गई थी और अब वहाँ से काफी खून बह रहा था। उसने अपनी जेब से रूमाल निकाल कर उस जगह पर कस कर बाँध दिया। वह सोच रहा था कि लगता है मिस जूली ने भी उसके मेकअप और गलत नाम के बावजूद उसे पहचान लिया, और उसका यह आक्रमण एक अच्छी और दिलचस्प शुरुआत है।

बूथ के अंदर जा कर उसने नम्बर डायल किये। दूसरी तरफ से 'हलो' की आवाज पर उसने कहा, "वह जो दो कटे सर आज मिले हैं, उन्हें नष्ट तो नहीं किया गया?"

"जी नहीं।"

"ठीक है, मैं अभी आ रहा हूँ।" उसने रिसीवर रख दिया।

कलकत्ता में अरविंद का चेहरा उसने बिना दाढ़ी के देखा था।

परंतु जब उसने गुलशन का कटा हुआ सर देखा तो दाढ़ी के अतिरिक्त शेष सब चीजें अरविंद से मिलती थीं। उसने डाक्टर से कहा कि इस चेहरे की दाढ़ी कटवाने का प्रबंध किया जाये।

और पाँच-सात मिनट बाब जब गुलशन का बिना दाढ़ी का कटा हुआ सिर अशोक के सामने आया तो वह उसे पहचान गया। यह अरविंद का सर ही था।

अब संदेह की कोई गुँजाइश नहीं थी। उसे डिफेन्स मिनिस्ट्री के सेक्रेटरी मिस्टर रामनाथन के शब्द याद आ रहे थे कि इस केस की गुप्त रूप से छानबीन की जाये। लगता है कि उन्हें कुछ बातों का पता था।

उसने फोन के पास जा कर मिस्टर रामनाथन के नम्बर मिलाये। मिस्टर रामनाथन घर पर ही थे। अशोक ने बताया कि वह उनसे इसी समय मिलना चाहता है, केवल दो-तीन मिनट के लिये। मिस्टर रामानाथन ने कहा, "आप आ जाइये।"

मिस्टर रामनाथन का बंगला पृथ्वीराज रोड पर था। अशोक को वहाँ पहुँचने में पंद्रह-सोलह मिनट लगे।

अशोक ने कुर्सी पर बैठते हुये कहा, "मिस्टर रामनाथन, जब आपने हमारे विभाग को नीता के कत्ल के सम्बंध में गुप्त रूप से छानबीन के लिए कहा था, तो तब क्या आप किसी पर संदेह कर रहे थे, या आपके मस्तिष्क में कोई दूसरी बात थी?"

"आपका यह पूछने से क्या मतलब है, मैं समझा नहीं।" मिस्टर रामनाथन ने कहा।

अशोक ने कहा, "दरअसल नीता का कत्ल कोई इतनी असाधारण बात नहीं थी। तब मैं यह नहीं समझ पा रहा था कि आपने इंटलिजेंस विभाग से उसकी छानबीन के लिये क्यों कहा था, जब कि यह काम लोकल पुलिस भी चाहती तो कर सकती थी।"

मिस्टर रामनाथन ने कुछ आश्चर्य से और कुछ बुझ स्वर से कहा,

"तो क्या यह साधारण कत्ल का मामला ही था। कोई विशेष बात न थी?"

अशोक ने कहा, "मिस्टर रामनाथन, मैं आपसे निवेदन करूँगा कि आप मुझे पूरी बात बतायें, और कोई चीज छिपायें नहीं।"

मिस्टर रामनाथन ने दस-पंद्रह सेकंड तक अशोक की आँखों में घूर कर देखा, फिर कहने लगे, "दरअसल हमारे विभाग की कुछ टॉप-सीक्रेट की बात अचानक एक दूसरे देश को पता लगना शुरू हो गई थीं। हमें इस बात का काफी दिनों बाद पता चला। अब आप ही सोचिये, सब चीजों की जिम्मेवारी मेरे सर पर ही है। और जब मिलेट्री-इंटलिजेंस की एक रिपोर्ट के अनुसार इस बात की हमें खबर लगी तो मेरे तो होश उड़ गये। मैं उसी दिन से हर चीज को बड़ी बारीकी और बड़े संदेह से देखने लगा। अब नीता का कत्ल ही ले लीजिये, यदि वह मेरे असिस्टेंट की लड़की न होती, तो मैं उसकी छानबीन के लिये कभी न कहता। मैं तब भी न कहता यदि नीता का सर काट कर गुम न किया होता, यह मुझे बहुत अजीब लगा था—"

"तो क्या आप मिस्टर मलिक पर संदेह कर रहे थे?"

"न। मैं किसी पर संदेह नहीं कर रहा था। बल्कि अपनी बौखलाहट दूर करने के लिये मैंने कुछ चीजों के बारे में ऐसे ही गुप्त रूप से छानबीन के लिये मिस्टर सूरी से कहा था। परंतु किसी के बारे में भी सफलता नहीं मिल पाई। अब लगता है कि मुझे यह केस तथ्यों सहित बाकायदा मिस्टर सूरी को भेजना पड़ेगा।"

अशोक ने सोचा, कि संभव है कल सुबह तक यह केस हल हो जाये। यह संयोग ही था कि मिस जूली उसे मिस्टर मलिक के घर पर अचानक मिल गई थी। यदि वह उसे वहाँ न मिली होती तो अभी तक वह अँधेरे में ही भटक रहा होता। उसने सोचा कि उसे अब केवल एक चीज और चेक करनी है। और उसके लिये आज रात को उसे मिस्टर

मलिक के घर की चोरी से तलाशी लेनी होगी। उसने सोचा कि हालांकि वह इस पूरे केस को समझ चुका है, परंतु उसे प्रमाण की भी आवश्यकता थी। और उसका अंदाजा था कि प्रमाण उसे मिस्टर मलिक के घर पर ही मिलेगा।

उसने मिस्टर रामनाथन से पूछा, "क्या आपके विभाग के लोग दफ्तर की फाइल घर ले जा सकते हैं ?"

"सब लोग तो नहीं, परंतु कुछ बड़े आफीसर या मेरे असिस्टेंट ऐसा कर सकते हैं।"

एक-दो मिनट की और बातचीत के बाद उसने मिस्टर रामनाथन से इजाजत ली और बँगले से बाहर आ गया। इस समय रात के दस बज रहे थ।

लगभग डेढ़ बजे अशोक मिस्टर मलिक के बँगले के बाहर खड़ा था। इस समय चारों ओर सन्नाटा था। वैसे दूर-दूर से कुत्तों के भौंकने की आवाज आ रही थी।

उसने बँगले के बाहर का फाटक खोला और अंदर चला गया। फिर धीरे-धीरे चलता हुआ वह बँगले के सामने के दरवाजे पर पहुँचा। दरवाजा अंदर से बंद था। उसने उसे खोलने की चेष्टा नहीं की, बल्कि उसने सोचा कि बँगले को पहले चारों ओर से घुम कर देख लेना चाहिए। शायद कोई खिड़की खुली मिल जायं। जब वह बँगले की पिछली तरफ पहुँचा तो उसे बाहर ही कोई चारपाई पर सोया दिखाई दिया। उसने समझा कि यह बँगले का नौकर होगा। उसने चारपाई के पास से गुजर कर बगल के एक दरवाजे को देखा, जिसमें साँकल लगी थी। अब उसका काम आसान था। उसने सोचा कि वह अब आराम से बँगले की तलाशी ले सकता है।

उसने धीरे से साँकल खोली और अपने हाथ की टार्च जला कर अंदर चला गया। दाईं तरफ एक दरवाजा था। वह उसमें चला गया। पहले वह मिस्टर मलिक का कमरा देखना चाहता था, जहाँ वे इस समय सो

रहे होंगे। उनके कमरे की तलाश में अचानक उसने देखा एक कमरे में मद्धिम-सी रोशनी हो रही थी। यह कमरा उसके दाईं ओर था। वह वहीं पर खड़ा हो गया और उसने किसी आवाज को सुनने की चेष्टा की। जब तीन-चार मिनट तक उसे कुछ सुनाई न दिया तो उसने अनुमान लगाया कि संभव है यही कमरा मिस्टर मलिक का हो और उन्हें बेड लाईट जला कर सोने की आदत हो।

वह धीरे कदमों से आगे बढ़ा। एक शीशे में से उसने उस कमरे में झाँक कर देखा। वहाँ बिस्तर बिछा हुआ था परंतु वह खाली था। फिर वह बारी-बारी से कमरे की हर चीज को ध्यान से देखने लगा। और तभी अचानक फर्श पर उसकी दृष्टि चली गई। फर्श पर कोई गिरा पड़ा था। उसने पहचाना, यह मिस्टर मलिक ही थे, और उनकी हालत को देख कर लगता था कि वे जीवित नहीं हैं।

अशोक जल्दी से दरवाजा खोल कर उस कमरे में चला गया। उसने मिस्टर मलिक की बाँह पकड़ कर देखा, वे समाप्त हो चुके थे।

इसी समय मिस्टर मलिक के निकट ही फर्श पर पड़े एक कागज पर उसकी दृष्टि चली गई। उसने उसे उठाया और टार्च की रोशनी में उसे पढ़ने लगा।

यह कागज मिस्टर मलिक का लिखा हुआ ही था, जिसमें उन्होंने इस बात को स्वीकारा था कि वे आत्म-हत्या कर रहे हैं।

उन्होंने अपने अपराध को भी स्वीकार किया था। उन्होंने लिखा था कि उनकी बेटी नीता सुधीर नाम के एक युवक के प्रति आकर्षित हो उठी थी, जिसने पहले तो केवल प्रेम-प्रदर्शन किया, परंतु बाद में वह युवक खुल कर सामने आया। सुधीर ने और प्रिया ने मिल कर उन्हें धमकी दी थी कि वे डिफेन्स की टॉप-सीक्रेट की फाइलें घर पर लायें, जहाँ से वे लोग उनके फोटो उतार लेंगे। उन्हें यह सख्ती से बता दिया गया था कि यदि वे ऐसा नहीं करेंगे तो नीता को कत्ल कर दिया जायेगा। वह मेरी इकलौती संतान थी, मैं उसके लिये मजबूर

ो गया। परंतु उन लोगों ने फिर भी मेरी बेटी को नहीं छोड़ा। मैं हीं जानता उसे क्यों कत्ल किया गया। शायद नीता ने इन लोगों ा रहस्य जान लेने पर पुलिस को बता देने की धमकी दी होगी। ं यह भी नहीं जानता कि ये लोग मुझसे टाप-सीक्रेट की रिपोर्ट ले कर कस देश को भेजते थे। इन लोगों ने कई बार मुझको भारी-भारी रकमें श करने की चेष्टा भी की, परंतु मुझे पैसे का लालच कभी नहीं रहा। ं समझता हूँ कि मैंने यह बहुत बड़ा अपराध किया है, मैं किसी को पना मुँह दिखाने के योग्य नहीं हूँ, इसीलिये मैं अपनी जान दे रहा । मैं इस बात की रिपोर्ट पहले ही पुलिस या इंटेलिजेंस में कर चुका ोता, परंतु मुझे अपनी बेटी का डर था कि वे लोग उसे मार देंगे। अब ं यह अवश्य चाहूँगा कि पुलिस प्रिया नाम की इस लड़की और उसके न्य साथियों को अवश्य पकड़े। मैं मिस्टर रामनाथन से व्यक्तिगत र से क्षमा चाहूँगा कि मेरे कारण उन्हें काफी परेशानी उठानी पड़ी।"

अशोक ने यह पत्र अपनी जेब में डाल लिया और फिर मकान की लाशी लिये बिना बाहर आ गया। इस बात से वह प्रसन्न था कि उसका ंदाजा सही निकला, परंतु इतना वह नहीं सोच पाया था कि मिस्टर लिक इतनी मजबूरी की हालत में यह काम करते होंगे।

मिस्टर मलिक की मृत्यु की सूचना समाचारपत्रों में नहीं दी गई थी। ौर जब दो दिन बाद अशोक मिस जूली उर्फ प्रिया को पकड़ने में फल हो गया तब मिस्टर मलिक की मृत्यु की सूचना समाचार-पत्रों ी दी गई। मिस जूली के साथ चार लोग और भी पकड़े गये थे, नमें से एक अमरीकी था।

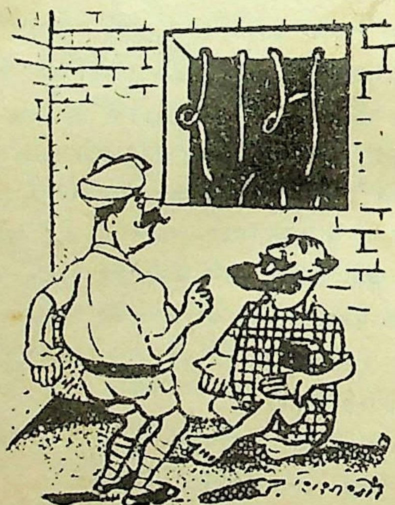
डायरेक्टर सूरी को अपनी रिपोर्ट पेश करने के बाद अशोक ने गरेट सुलगाया और एक लम्बा कश खींचा।

तभी डायरेक्टर सूरी ने कहा, "यदि मिस्टर मलिक ने अपने पत्र सब बातें सच लिखी है, तो यह समझ में नहीं आता कि तब नीता के त्ल के तुरंत बाद उन्होंने मिस जूली के बारे में रिपोर्ट क्यों नहीं की?

४

इसके बारे में मेरी समझ में यही बात आती है कि शायद उन्होंने सोच कि अब मिस जूली खुद ही उनका पीछा छोड़ दे। परंतु उस दि जब मिस जूली फिर उनके पास आई तो तुम्हारे वहाँ से चले जाने बाद मेरे ख्याल में उन्होंने स्पष्ट रूप से जूली से कहा होगा कि अब वे य काम किसी हालत में नहीं करेंगे, और तब ममिस जूली ने उन्हें धमक दी होगी कि यदि वे काम नहीं करेंगे तो उनके पिछले कामों के बारे सब को बता दिया जायेगा। मेरे ख्याल में मिस्टर मलिक को अब दोन तरफ से मुसीबत दिखाई दी होगी, कि यदि वे आगे से ऐसा काम नह करते हैं तो रहस्य प्रकट हो जाने पर उनकी भारी बदनामी होगी और यदि वे खुद मिस जूली की रिपोर्ट करते हैं तब भी उनकी बेहिसा बदनामी होगी। मतलब कि दोनों सूरतों में वे किसी को अपना मुं दिखाने के योग्य न रह गये थे, इसीलिये उन्होंने आत्महत्या कर ली।

अशोक दादा ने सिगरेट का कश खींचते हुये कहा, "जी, आप ठीक समझा।"



मैं ठहरा भगत आदमी। लोहे के छड़ किसी बुरे इरादे से तोड़ने वाला कैसे कह सकते हैं आप मुझे ?"

— आगरा के ठग —

(पृष्ठ १५ से आगे)

दास की घड़ी रोडवेज के एक ड्राइवर को बेच दी और शेष कपड़े तथा बेडिंग आगरा की एक चाय की दूकान वाले को बेच दिए।

अभियुक्त बल्देव राज ने अपना यह जुर्म दो महीना पुलिस की हिरासत में रहने के बाद आगरा के फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट के सामने कबूल किया। उसके पहने हुए कपड़ों को जे० एन० दास के एक मित्र ने सही-सही शिनाख्त किया कि वह कपड़े जे० एन० दास के थे। एक घड़ी, जो कि शंकर होटल हत्याकांड से सम्बन्धित थी और जो २ मई को रोजर्स वाच कंपनी, बम्बई से खरीदी गई थी, वह भी अभियुक्त के पास से मिली। जे० एन० दास वाली घड़ी की बिक्री की रसीद भी उत्तर प्रदेश रोडवेज के शेरसिंह नामक ड्राइवर ने दी, क्योंकि उसने बल्देव राज से जो घड़ी १० मई को खरीदी थी, वह खराब थी, इसलिए उसे बल्देव राज को लौटा कर शेरसिंह ड्राइवर ने १४ मई को दूसरी घड़ी ली थी।

जे० एन० दास की घड़ी भी बरामद हो गई। घड़ी की बिक्री की रसीद से तुलसी रिक्शावाले का पता चला। तुलसी रिक्शावाले ने ओमप्रकाश वैद्य की दूकान बताई, जहाँ वैद्य ने बताया कि एक मिलिट्री के आदमी के कहने पर उसने मरीज को दवा दी थी। शेरसिंह, तुलसी, ओमप्रकाश वैद्य और घड़ी की रसीद लिखने वाले इन्तिजार नामक व्यक्तियों ने जेल में बल्देव राज की शिनाख्त की। क्लोक रूम रजिस्टर में और होटल के रजिस्टर में बल्देव के हस्ताक्षर भी हैण्डराइटिंग एक्सपर्ट ने शिनाख्त किए।

जोगेन्द्रनाथ की हत्या की सफल खोज के बाद शंकर होटल हत्याकांड तथा चार अन्य हत्या के मामले अदालत में भेजे गए। अतिरिक्त दौरा जज आगरा ने बल्देव राज को आजन्म कारावास की सजा दी। अन्य केशों में भी बल्देव राज और राजकुमार को लम्बी अवधि की कैद की सजायें दी गईं। इस गिरोह का पता लगने से आगरा जैसे पर्यटन-स्थल से अपराध खत्म हो गए। पता चला कि बल्देव राज १३ बार जेल की सैर कर चुका था। ●●

रेलवे कैश चेस्ट की चोरी



दीवानचन्द

धुर दक्षिण भारत के मनियाची और त्रिचन्नापल्ली रेलवे स्टेशनों के बीच चलती रेलगाड़ी मे रेलवे कैश चेस्ट के लापता हो जाने की रिपोर्ट त्रिचन्नापल्ली मद्रास के सुपरिन्टेन्डेन्ट, गवर्नमेंट रेलवे पुलिस को ११ नवम्बर १९६५ को मिली। एक संक्षिप्त रिपोर्ट डिवीजनल कर्मशियल सुपरिन्टेन्डेन्ट, सदर्न रेलवे की ओर से कैश चेस्ट गायब हो जाने के आठ दिन बाद मिली थी। इस कैश चेस्ट में सदर्न रेलवे के उक्त दो बड़े जंकशन स्टेशनों के बीच पड़ने वाले सभी छोटे-बड़े स्टेशनों का ७० हजार से अधिक रुपया जमा बताया जाता था।



रेलवे कैश-चेस्ट की चोरी कोई साधारण बात नहीं थी, लेकिन
इस देश में ऐसे-ऐसे जीव है, जो हाथी भी गायब
कर दें। पढ़िये दक्षिण भारत की एक
सनसनीखेज सच्ची कहानी!



ब्रिटिश रेलवे कंपनियों के जमाने से यह नियम चला आ रहा है कि विभिन्न रेलवे स्टेशनों में इकट्ठा किया गया रेलवे की नकदी इस विशेष प्रकार की बनी लोहे की चेस्ट में डाल कर किसी बड़े शहर में या बीच के सुविधाजनक फाइनेंसियल एण्ड एकाउन्टस अफसर के कार्यालय में पहुँचा दिया जाता है। यह चेस्ट इतने वजनी होते हैं कि उन्हें उठाना एक अकेले व्यक्ति के बूते की बात नहीं है। चेस्ट ड्रम के आकार-प्रकार के मोटे इस्पात के बने होते हैं और उनके ऊपरी सिरे से मेकेनिकल लीवर को गोलाकार घुमाने से उसका मुँह इस प्रकार खुल जाता है कि विभिन्न स्टेशनों पर इकट्ठा चमड़े के कैश वाले बैग, उसमें डाल दिये जाते हैं और वे चेस्ट के पेट में बने खानों में चले जाते हैं। उस चेस्ट को रिसीविंग स्टेशन पर ही उपलब्ध चाबियों से खोल कर

उससे कैश के थैले निकाल लिए जाते हैं। इस केस में उस चेस्ट। त्रिचन्नापल्ली-स्थित फाइनेंसियल एण्ड एकाउन्ट्स अफसर के दफ्तर। खोला जाना था।

रेलवे अधिकारी इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते थे, कि समू कैश चेस्ट ही लापता हो जायेगा, जो कि ट्रेन के साथ चल रहे एक-वे बाद-एक तीन गार्डों के रेकार्डों में यह बात दर्ज थी कि चेस्ट। त्रिचन्नापल्ली तक पहुँचाया गया है। लेकिन चेस्ट त्रिचन्नापल्ली न पहुँची थी। उन गार्डों ने इस बात पर सहज भाव से यह कह दिया। चेस्ट ट्रेन चालू होने वाले स्टेशन पर ही छूट गई हो या गलती से कि बीच के स्टेशन पर ही रोक ली कई हो या निर्धारित स्टेशन से और आ चली गई हो। बहरहाल, उन्हें ठीक-ठीक पता नहीं था। तमाम ज तार खटखटाये गए। तूतीकोरन से त्रिचन्नापल्ली तक के लम्बे रेलप के सभी स्टेशनों में तलाश की गई। एक सप्ताह से भी ज्यादा सम बीत जाने पर जब उस कैश चेस्ट का कहीं नामोनिशान नहीं मिल तब समझा गया कि कहीं उस चेस्ट को गायब कर दिया गया है, औ पुलिस को उसके चोरी चले जाने की सूचना दी गई।

आठ दिनों के बाद पुलिस को सूचना मिलने से यह जाहिर था। जो भी संभावित सूत्र पुलिस को तत्काल सूचना मिलने पर पाये जाने उम्मीद की जा सकती थी, वे सभी मिट चुके थे। एक विशेष जाँ टीम इस कार्य के लिए नियुक्त की गई और उसने अविलम्ब अप काम आरंभ कर दिया। प्रारंभ में यह विश्वास किया जाता था। इस लापता कैश चेस्ट के सूत्र मनियाची जंकशन स्टेशन से ही उपल हो सकते हैं। यहाँ यह लापता चेस्ट तूतीकोरन से दूसरी ट्रेन से ल गई थी और जंकशन पर उसे उतार कर त्रिचन्नापल्ली जाने वाली ट्रे में चढ़ाया गया था। यह भी संभव था कि यहाँ कोई गड़बड़ी हुई हो।

जाँच करने वाले अधिकारियों की टीम यहाँ मनियाची जंकश स्टेशन पर दो दिनों तक डेरा डाले पड़ी रही। हर प्रकार की उपलब्

सूचना यहाँ प्राप्त करने का प्रयास किया गया और चेस्ट को एक ट्रेन से दूसरी ट्रेन में चढ़ाने उतारने से सम्बन्धित रेलवे स्टाफ के प्रत्येक कर्मचारी और प्रत्येक कुली से इसके बारे में पूछताछ की गई। एक संभावना वहाँ यह भी समझी गई कि ट्रेन में तेज झटके लगने से ब्रेकवान में रखी कैश-चेस्ट चलती ट्रेन से कहीं बाहर न लुढ़क गई हो या किसी अपराधी ने उसे बाहर न धकेला हो, क्योंकि रेलवे गार्डों से पूछताछ करने पर यह पता चला था कि ब्रेकवान में ताला नहीं लगा था और याद उस चेस्ट को, रेलवे के नियमों के अनुसार ट्रेन में चढ़ाने के बाद लोहे की चेन से ट्रेन के फर्श के साथ भी नहीं बाँधा गया था। मनियाची जंकशन से पूर्व और उत्तर की ओर २० मील लम्बे रेलपथ की खोज की गई। रेलपथ के मार्ग में पड़ने वाले विभिन्न गाँवों से सम्पर्क स्थापित किया गया और चेस्ट देखे जाने या उसे किसी व्यक्ति द्वारा लारी या बैलगाड़ी से ढोये जाने की किसी प्रकार की सूचना प्राप्त करने की कोशिश होने लगी। स्थानीय अधिकारी वर्ग का भी सहयोग प्राप्त किया गया।

लेकिन जाँच करने वाली टीम के १० दिनों के इस अनवरत परिश्रम और खोजबीन का परिणाम कुछ भी नहीं निकला। जाँच अधिकारी वहीं थे, जहाँ से वे १० दिन पहले चले थे। एकमात्र ठोस उपलब्धि उन्हें इस दर्मियान यह हो पाई थी कि कैश चेस्ट में विभिन्न चमड़े के बैगों में रखे गए नोटों के सीरियल नम्बर उन्हें विभिन्न स्टेशनों से प्राप्त हो गए थे। सभी रेलवे स्टेशनों के स्टेशन-मास्टरों को यह स्थायी निर्देश रहते हैं कि वे कैश चेस्ट में भेजे जा रहे करेंसी नोटों के सीरियल नम्बर दर्ज कर लें। यह इसलिए जरूरी समझा जाता है कि अगर किसी भी स्टेशन मास्टर ने जाली या बहुत सड़े-गले नोट स्वीकार किए हों, तो उस धनराशि का दायित्व उन पर आ जाये। नोटों को क्रम से सौ, दस, पाँच, दो, एक––अलग-अलग दर्ज किया जाता है और डुप्लिकेट स्टेशन-मास्टर के पास रहता है।

मद्रास राज्य भर में इस प्रकार चलती ट्रेन से कैश-चेस्ट जैसे हाथी

के गायब हो जाने की यह पहली वारदात थी। इससे पहले इस प्र की चोरी हुई ही नहीं थी। चोरी हुई है, यह निर्विवाद था, क्यो चेस्ट गायब था। चोर, जो भी था, उसका कहीं भी कोई सुराग मिलने पर पुराने रेकार्ड टटोले गए कि रेलवे में पहले भी इस तरह रहस्यमय चोरियाँ इस इलाके हुई में या नहीं। अगर हुई हैं तो कौन था ?

संदेह की एक हल्की-सी किरण रेलवे के दक्षिणी जिलों में अप के रेकार्डों की जाँच करते समय महाराज पिल्लई नामक एक अपरा के रेकार्ड से उभरी। यह महाराज पिल्लई नौकरी से निकाला रेलवे का एक कुली था और १९५७ में इस सजायाफ्ता कुली मदुराई और त्रिचनापल्ली स्टेशनों के बीच चलती हुई ट्रेनों में पार्सल वानों से, एक बार नहीं तीन बार चोरियाँ की थीं। सजायाफ लोगो के जनरल रजिस्टर में इसके नाम की एक इन्ट्री के अलावा व्यक्ति के बारे में और कोई भी सूचना नहीं थी। यह इन्ट्री भी एक के उपरान्त निकाल दी जाने वाली थी, क्योंकि भूतपूर्व अपराधी पिल द्वारा तब से कोई जुर्म किए जाने की कोई सूचना रेलवे को नहीं थी

चोरी चले गए करेन्सी नोटों के नम्बरों की व्यापक पब्लिसि की गई। इन नम्बरों की हजारों प्रतियाँ प्रिंट कर जनता के बीच बां गईं। रेलवे की ओर से ५०० रुपये का इनाम उस व्यक्ति को दिए जा का ऐलान किया गया. जो कि इस केस को सुलझाने की दिशा में सह सही सूत्र पुलिस को बतलायेगा।

दो महीने का समय और बीत गया। पुलिस को चेस्ट की चोरी कोई भी सूत्र नहीं मिल पाया। करीब अढ़ाई तीन मन की वज चेस्ट कोई ऐसी चीज तो थी नहीं कि कोई व्यक्ति, अपने घर पर छिपा रख सके और पड़ोसियों को उसका पता ही न चले। फिर पाँच सौ रुपय पारितोषिक दिए जाने का लोभ भी रलवे की ओर से दिया गया था जगह-जगह पुलिस के मुखबिर छूटे हुए थे कि वे चोरी गए नोटों में

सौ-सौ रुपये के नोटों के नम्बरों पर विशेष ध्यान रखें।

८ जनवरी, १९६६ को, चेस्ट के चोरी चले जाने के दो महीने बाद, पुलिस को उसके एक जासूस ने सूचित किया कि उन चोरी गए नोटों में से कुछ सौ-सौ रुपये के नोट, किसी व्यक्ति के द्वारा मदुरई के पास एक कपड़े के दूकानदार को दिए गए हैं। उस जासूस ने जाँच टीम को सूचित किया था कि वह पोंगल के त्यौहार के लिए कपड़ा खरीदने उक्त दूकान में गया और दूकानदार के साथ बातचीत में उसने सौ रुपये का नोट दिखाया। उसका नम्बर चोरी गए नोटों में से एक से मिलता है।

किसी प्रकार की उत्सुकता और संदेह प्रदर्शित किए बगैर एक सब-इन्सपेक्टर को इस सम्बन्ध में अधिक पूछताछ के लिए उस दूकानदार के पास भेजा गया। सब-इन्सपेक्टर इस बात में कामयाब रहा कि वह सौ रुपया देने वाले व्यक्ति का नाम जान सके। महाराजन नामक एक व्यक्ति ने उस दूकान से पोंगल के त्यौहार के लिए कपड़ा खरीदा था और सौ रुपये का नोट दिया था। दूकानदार ने उस नोट पर पेंसिल से उस व्यक्ति के दस्तखत करवा लिए थे। पहले यह नियम था कि सौ रुपये और हजार रुपये के नोटों पर बैंक दस्तखत करवा लेता था, लेकिन बैंक की ओर से अब यह प्रणाली बंद कर दी गई है। फिर भी छोटी जगहों में, छोटे दूकानदारों में यह चलता था कि वे एहतियात के रूप में दस्तखत करा लेते थे।

तत्काल पुलिस दो-दो चार का हिसाब लगाने बैठ गई। यह नाम भूतपूर्व अपराधी महाराज के नाम और उसके द्वारा १९५७ में की गई चोरियों के रंग-ढंग से मिल रहा था। तब क्या यह वही पुराना पापी महाराज तो नहीं है? पुलिस को नया उत्साह और नई प्रेरणा मिली कि वह अपनी जाँच-पड़ताल का रुख उस महाराज पिल्लई की ओर मोड़े, जिसका पता लगाने में उसने अब तक ढील छोड़ रखी थी। महाराज पिल्लई के गाँव में उसके बारे में पूछे जाने पर पता चला कि

पिछले दो महीनों से वह गाँव से गायब हो गया था; लेकिन पिछले दि वह अपने दो मित्रों को लेकर चोरी-छिपे गाँव में आया था। उस इन दोस्तों में से एक की मदुरई में लांड्री है और महाराज पिल्लई उ दूकान में काम करता है और आर्थिक दृष्टि से उसका परिवार म में है।

मदुरई में उस लांड्री का पता लगाना पुलिस के लिए कोई मुश्कि काम नहीं था। वहाँ जाँच अधिकारी को महाराज पिल्लई भी मि गया। महाराज पिल्लई को जाँच अधिकारी ने जब यह बताया उसके द्वारा चोरी किए गए रुपयों में से सौ रुपये का नोट कपड़े दूकानदार को दिए जाने का पता पुलिस को चल गया है और व नोट अब पुलिस के कब्जे में है, तो पिल्लई को समझाया कि अगर व सभी बातें साफ-साफ बतायेगा तो शायद उसके अपराध की सजा कुछ कमी हो जाए, वर्ना देर-सबेर पुलिस पता लगा ही लेगी। पुलिस क पकड़ में आ जाने के कारण पिल्लई भी समझ गया कि अब वह झूठ नहीं बोल सकता, इसलिए उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया औ स्वेच्छा से सब-कुछ बताने को तैयार हो गया।

महाराज पिल्लई ने जो कुछ बताया, वह इस अपराधी की अपरा बुद्धि की सूझ-बूझ का परिचायक था। पिल्लई ने कहा कि वह कई दिनों से एक ही दिन में धनी बनने के सपने देख रहा था और इस बार उसके दिमाग में यह योजना आई कि क्यों न रेलवे की कैश चेस्ट उड़ा दी जाय। फिर वह पिछले कुछ महीनों से सोचता रहा कि कैसे उसे पार किया जाय।

फिर एक दिन जब वह ट्रेन में बैठा तो उसे इस डकैती के लिए वहाँ हर प्रकार की सुविधा नजर आई, जिसे कि वह महीनों से मन में संजोये हुए था। जिस ब्रेकवान में कैश-चेस्ट ले जाया जा रहा था, वह खुला था, उस पर ताला नहीं लगा था। वह प्लेटफार्म की पर ली ओर के दरवाजे से ब्रेकवान में घुस गया। उसने यह भी देखा कि वहाँ तीन कैश

चेस्ट रखे हुए थे, लेकिन रेलवे के नियमों के अनुसार एक भी फर्श से जंजीरों के सहारे बाँधा नहीं गया था। उसे सबसे बड़ी सुविधा इस वजह से थी कि वहाँ ब्रेकवॉन में कोई लाइट नहीं थी और गार्ड भी उस कम्पार्टमेंट से यात्रा नहीं कर रहा था, अन्यथा वह अपने कमरे के विशेष सुराख से चेस्ट देख सकता था।

रेलवे में काम कर चुकने के लम्बे अनुभव से महाराजन पिल्लई जानता था, कि अधिकतर इसी प्रकार की स्थिति यहाँ रेलों में चलती है और रेलवे में काम करने वाले सैकड़ों कर्मचारी एक दूसरे पर विश्वास रखते हुए ट्रेनें और अपने मामले चलाते हैं। हर काम यह समझ लिया जाता है कि अगले व्यक्ति ने कर दिया होगा। इसी तरह गाड़ी चलती रहती है। इसलिए महाराजन् के लिए यह सुनहरा मौका था।

उसने देखा कि वहाँ तीन कैश चेस्ट रखी हुई थी। उसने दरवाजे के करीब की चेस्ट को अपने लिए छाँटा। एक तो वह दरवाजे के करीब थी और दूसरे पुराने टाइप की थी। जब ट्रेन पारवई के पानी से घिरे इलाके में पहुँची तो महाराजन ने उस कैश चेस्ट को वॉन के दरवाजे से बाहर धकेल दिया। जब ट्रेन अगले स्टेशन के करीब पहुँची और उसकी चाल धीमी पड़ी तो वह आहिस्ता से पटरियों की ओर उतर गया। वह पैदल ही पटरी-पटरी उस स्थान तक लौटा। उसने देखा कि जो कैश उसने पानी में धकेला था, वह पानी वाली जगह पर मिट्टी में गिरा हुआ है। किसी भी व्यक्ति ने उसे वहाँ नहीं देखा था। उसने उसे और आगे की ओर पानी में धकेल दिया, ताकि किसी भी गुजरने वाले व्यक्ति की निगाह में वह न पड़े।

आधी रात के बाद वह अपने एक मित्र से दुहरे बैलों वाली एक बैलगाड़ी और उस बैलगाड़ी में पुआल भर कर उस स्थान पर ले आया था। सभी लोग रात्रि में सोये हुए थे। उसने बैलगाड़ी में उस कैश चेस्ट को लादा और ऊपर से उसे पुआल से ढक दिया। इस चेस्ट को

बैगाई नदी के उत्तरी घाट तक ले जाया गया, जो कि वहाँ से
मील दूर था।

रेलवे की विशेष जानकारी होने की वजह से वह जानता था
इन चेस्टों के टेम्पर-प्रूफ होने और बगैर चाबी के न खोले जा सके
का दावा झूठा है। वह जानता था कि किस तरह चेस्ट को एक बगल
लिटा कर वह ऊपर लीवर से अपना हाथ भीतर डाल पुरानी चेस्ट
से थैले एक-एक कर निकाल सकता है। निःसंदेह उसके साथ उसका
मित्र भी था, जिसने उसे चेस्ट उठा कर बैलगाड़ी में रखने में मदद
की थी और उसकी सहायता से अब उसने थैले भी एक-एक कर निकाल
लिए। उन्होंने रेलवे वाउचर तो वहीं फेंक दिए और चेस्ट को नदी
किनारे रेती में गाड़ दिया।

पानी में पड़े होने के कारण कुछ करेंसी नोट भींग चुके थे।
के एक मुन्सिफ का लड़का पिल्लई का दोस्त था। अब पिल्लई
उसका दोस्त मुन्सिफ के लड़के के पास पहुँचे और उन गीले नोटों
को बिजली के पंखे की हवा में सुखा लिया गया। मुन्सिफ का
लड़का इस बात पर भी सहमत हो गया कि जब तक यह मामला
नहीं हो जाता, वह उस चुराये गए माल को अपने संरक्षण में छिपा
रखेगा।

महाराजन पिल्लई ने बताया कि वह तीनों ही मित्र इस चोरी की
प्रतिक्रिया का इन्तजार करने लगे। पहले दस दिन तक तो कुछ भी नहीं
हुआ। तब स्थानीय दैनिक पत्रों में बड़ी-बड़ी सुर्खियों में इस चोरी की
खबर छपी। यह तीनों ही दोस्त इस चोरी की चर्चा करने वाली जनता
में मिल कर चोरी का पता लगाने में पुलिस की कार्य-क्षमता की तारीफ
किया करते थे और आशा व्यक्त करते थे कि पुलिस इसका जल्द
पता लगा लेगी। कुछ ही दिनों के बाद इन मित्रों को यह भी पता चला
कि पुलिस ने करेंसी नोटों के नम्बरों का व्यापक प्रचार किया है। इससे
वह सोचने लगे कि अब क्या किया जाय? उन्होंने बड़ी चतुराई से

ी रुपये के नोटों को भुना लेने या उनसे मुक्ति पा जाने की योजना नाई।

गाँव के मुन्सिफ के लड़के ने इस दिशा में प्रमुख भूमिका निभाई। ह गाँव का प्रभावशाली व्यक्ति भी था और धनी-मानी भी। वह अपने र के जेवर मदुरई ले गया और ऊँचे ब्याज की दर पर उसने सोने के वज में रुपया क़र्ज देने वाले एक जाने-पहचाने महजान के पास उन वरों को गिरवी रख दिया। दो महीने बाद मुन्सिफ का लड़का महाजन पास गया और कैश चेस्ट से चोरी किए गए नोट उस महाजन को मय याज देकर ऋणमुक्त हो गया और नोट महाजन की तिजोरी में चले ए।

यह इसलिए किया गया था कि यह लोग जानते थे कि यह लेन-देन रने वाले महाजन अपना नकद रुपया बैंक में नहीं रखते। यह लोग अपनी तजोरी में ही उसे रखते हैं और जब कोई अन्य ग्राहक आता है तो उसे देते हैं। उद्देश्य यह था कि कम-से-कम दो-तीन महीने के लिए चोरी नोट महाजन की तिजोरी में बंद रहेंगे, फिर किसे याद रहती है कि ह नोट चोरी का है या नहीं।

जब सभी बड़ी रकमों के नोट इस प्रकार निकल गए तो महाराजन् अपने मित्र से रकम वापस ले ली और उसकी सेवाओं के बदले में ुन्सिफ के लड़के को भी ५ हजार रुपया दिया। अब वह अपने को रक्षित महसूस करने लगा था और उसने समस्त धनराशि एक चाँदी बक्स में बंद कर अपने घर के भीतर जमीन में गाड़ दी।

पोंगल का त्योहार करीब आ रहा था। महाराजन् ने महसूस किया क उसने इस वर्ष बेहतरीन काम किया है और उसका कर्त्तव्य हो जाता कि वह अपनी माँ तथा पत्नी के लिए नये कपड़े खरीदे। यह उसका र्भाग्य ही था कि एक सौ रुपये का नोट, जो उसने दूकानदार को कपड़ों ी कीमत के रूप में चुकाया, उसे धोखा दे गया। उसने सोचा था कि

(शेष पृष्ठ ७३ पर)



ब्रेन वाशिंग

• यश राम •

इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ होगा, जब सैनिकों को आदेश दिया जाय कि वे स्वेच्छा से अपने आपको शत्रुओं को सौंप दें। सन् १९५० में अस्ट्रेलिया के एक सेनाधिकारी को ऐसा ही आदेश दिया गया था। इस आदेश से वह ऐसा कार्य कर बैठा कि उसके सच्चे साहस और उसकी सहन-शक्ति के उदाहरण इतिहास के पन्ने पलटने पर भी शायद नहीं मिलेंगे।

बात यह थी कोरिया युद्ध में पकड़े गये राष्ट्रसंघ के सैनिकों पर तरह-तरह के दबाव डाल कर उनका 'ब्रेन वाशिंग' किया जाता था और



ब्रेन-वाशिंग के दौरान चीनी लोग क्या-क्या जुल्म ढाते थे, यह
जानने के लिये कोरिया में युद्धरत अमेरिकी सैन्य कमान
बहुत परेशान था। अन्त में उन्होंने कैसी गहरी
चाल चली और कैसे रहस्य का पता लगाया,
इसकी अत्यधिक रोचक कथा पढ़कर
आप अचम्भे के सागर में
डुबकी लगाने लगेंगे।



उन्हें जबरदस्ती साम्यवादी बनाया जाता था। ऐसे ब्रेन वाशिंग में चीनी क्या करते हैं, यह एक भी व्यक्ति को पता न था। यह एक बड़ी ट्रेजेडी थी।

राष्ट्रसंघ के सर्वोच्च सैनिक कमान को इस सम्बन्ध में संपूर्ण जानकारी प्राप्त करनी थी। इसलिये उसने दृढ़ मनोबल वाले कुछ वीर सैनिक पसन्द किये। इन सैनिकों को बताया गया कि चीनियों का कैदी बनना कोई बच्चों का खेल नहीं है। चीनियों द्वारा दिये जाने वाले अमानुषिक त्रास सहन करने की जिसमें शक्ति हो तथा जिसका दिमाग

अत्यंत संतुलित हो, वही आगे बढ़े। ऐसे साहसिक कार्य में जान का खतरा हो सकता है।

फिर भी तीस सैनिक आगे आये। उनमें से सिर्फ दो ही चुने गये एक था आस्ट्रेलिया की नौसेना का कैप्टन विक्टर ब्रैडले, सितम्बर में यहाँ आया था। और दूसरा था जलसेना का कमिश्नर मास्टर सर्जेंट निकोलस ओटाँ जैरार्टी। इस कमिश्नर का आज तक पता नहीं लगा, भगवान जाने उसका क्या हुआ होगा।

कैप्टेन ब्रैडले उनतीस वर्षीय नौजवान था। द्वितीय विश्वयुद्ध दरम्यान वह मोरचे का अनुभव पा चुका था। उसके पास जो कागज़ात थे उससे ऐसा साबित होता था, कि वह अमेरिकी सेना से संबंधित है। ऐसा इसलिये किया गया था कि अमेरिकी नागरिक समझ कर उसकी ब्रेन वाशिंग (मानसिक चिकित्सा) अधिक मात्रा में करें।

उसे जो आदेश दिया गया था, वह अत्यन्त संक्षिप्त था। उसे साम्यवादियो की उन सभी मनोवैज्ञानिक प्रणालियों का अभ्यास करना जिनके द्वारा वे कैदियों को अपने सिद्धान्तों से प्रभावित करते हैं। यह अभ्यास संपूर्ण होते ही फौरन वहाँ से भाग निकलना था और हेडक्वार्टर पर अपने आगमन की खबर करनी थी।

ब्रैडले को सूचना दी गई कि वह जल्दी-से-जल्दी चीनियों का कैदी बन जाय। तीन नवम्बर को कैदी बनने की ब्रैडले को आज्ञा मिल गई जब राष्ट्रसंघ की एक टुकडी को, जिसमें अस्ट्रेलिया की बटालियन के लोग भी थे, तार्कथोन से लौट कर उत्तर में याँगकाँग नदी के आसपास हमला करने का आदेश मिला, तो उस वक्त चीनियों ने पैदल बढ़ती राष्ट्रसंघ की सेना का पीछा किया। ब्रैडले जान-बूझकर पीछे रह गया। इसके साथ ही आगे बढ़ने चीनी ब्रैडले के करीब आ गये। वह चाहता तो भाग कर अपने साथियों से मिल सकता था, लेकिन ब्रैडले को गिरफ्तार होना था।

ब्रैडले का सोचना [illegible] उचित था। गिरफ्तार होना इतना सरल न था।

एक चीनी अफसर उसके पास पहुँचा और उसका कंधा हिलाता बोला, "अपने साथियों के साथ चला जा।" यह सुन कर ब्रैडले को आश्चर्य हुआ। एक बार ऐसा हुआ था, कि बारह चीनियों ने एक आस्ट्रेलियन अफसर तथा चार सैनिकों को दस दिन की कैद के बाद छोड़ दिया था।

अपनी इच्छा के विरुद्ध ब्रैडले को राष्ट्रसंघ की सेना के साथ हो जाने के लिये आगे बढ़ना ही पड़ा। वह चीनियों की कतार में होकर आगे बढ़ा और अंत में आधे घंटे में गिरफ्तार हो गया।

उस दिन तापमान शून्य डिग्री से भी दो अंश कम था। भयंकर सर्दी थी। ब्रैडले परेशान हो गया। चीनियों ने उसकी सारी वस्तुएं जब्त कर लीं। दो दिन बाद वहाँ से उसे हटाया गया। बाद में अंग्रेजी जानने वाले एक चीनी असफर के साथ उसे ट्रेन द्वारा ताकचोन से सौ मील दूर चूसान ले जाया गया। चीनी अफसर का ब्रैडले के साथ मैत्रीपूर्ण बर्ताव था। उसने ब्रैडले से कहा, कि उसके साथ अच्छा संबंध रखा जायेगा।

ट्रेन जब ताकचोन से गुजर रही थी, तो एक अमरिकी युद्ध पोत ने उस पर बमवर्षा की। ब्रैडले तथा उसके पहरेदारों ने नीचे छिपकर जान बचाई। ट्रेन को काफी नुकसान पहुँचा। येन-केन-प्रकारेण वे लोग चूसान पहुँचे। तब मध्यरात्रि का समय था। ब्रैडले को एक पत्थर के मकान में ले जाया गया, उसे बढ़िया खाना दिया गया। उसे जिस कमरे में कैद किया गया था, वह कमरा गर्म तथा आरामदायक था। एक सजीला पलंग भी था।

शुरू के कुछ सप्ताह उसके साथ काफी अच्छा बर्ताव किया गया। उसे पढ़ने के लिये किताबें दी गईं। दिन में दो वक्त कुछ अफसर उसके साथ बातचीत करने आते थे।

उन्होंने अत्यन्त चतुराई से ब्रैडले से उसके पकड़े जाने का हेतु जानने का प्रयास किया। वह अमरिकी सैनिकों के साथ क्यों है, यह जानने के लिये वे लोग बड़े उत्सुक थे। वे लोग ब्रैडले के समक्ष अमरीकियों की

बुद्धि तथा भावनाओं की प्रशंसा करते रहे ।

ब्रैडले कई बार उसके आसपास राइफिलों की आवाजें सुनता था इसके बारे में जब उसने चीनियों से पूछा, तो उत्तर में उन लोगों बताया, कि अनावश्यक व्यक्तियों का ऐसे ही नाश किया जाता है।

तीसरे सप्ताह के बाद चीनियों ने ब्रैडले के समक्ष ऐसी इच्छा व्यक्त की, कि वह एक दस्तावेज पर हस्ताक्षर कर दे जिसमें लिखा था, 'उत्तर कोरिया के लोगों पर आक्रमण करने के लिये मैं गुनहगार और राष्ट्रसंघ सैन्य युद्ध में कीटाणु तथा विषैले गैस इस्तेमाल कर की तरकीबें सोच रहा है।' ब्रैडले ने हस्ताक्षर करने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। उस वक्त चीनियों ने भी हस्ताक्षर के लिये ज्यादा आग्रह नहीं किया ।

ब्रैडले जानता था, कि साम्यवाद में श्रद्धा होने का ढोंग यदि व करता रहे, तो उसका कैदी जीवन सहज-सरल हो सकता है। लेकिन वह ऐसा करे तो उसका हेतु कैसे पूरा होगा ? अतः वह क्रुद्ध हो गया उसने कहा, 'मुझे अन्य कैदियों के साथ रखो।' और उसने साम्यवाद की हँसी उड़ाई ।

ब्रैडले का ऐसा मिजाज देखकर चीनियों का वर्ताव उसके प्रति बदल गया। अब खाना खराब आने लगा। पलंग पर से गद्दी उठा ली गई। कमरे की बत्ती दिन रात जलती रखी गई। उसे देर तक सीधा बैठे रहने की, घंटों साम्यवाद के गुण और पूँजीवाद के अवगुण सुनने की सजा मिली ।

जनवरी १९५१ की शुरुआत में ब्रैडले को चीनियों की निर्दयता की पहचान हुई। उसे मकान के बाहर एक बक्स में कैद किया गया। यह बक्स करीब पाँच फीट ऊँचा, पाँच फीट लंबा तथा पाँच फीच चौड़ा था। उसमें छोटा-सा द्वार था। छः इंच ऊँची एक खिड़की थी। दो कम्बल उसमें रखे गये थे। ब्रैडले को इस बक्स में रह कर दिन बिताना पड़ता। सिर्फ मलत्याग के समय उसे इस बक्स में से बाहर निकाला

जाता और वह भी सिर्फ दस मिनट के लिये।

शून्य डिग्री सेन्टीग्रेड से भी नीचे तापमान में ब्रैडले को बक्स में रहना पड़ता था। कई बार तो आधा बक्स बर्फ में पट जाता था। न तो वह बक्स में सो सकता था, न सीधा खड़ा रह सकता था। भोजन में अधिकतर चावल तथा सोयाबीन की भाजी दी जाती; और वह भी नियमित एक ही समय पर नहीं, हमेशा अलग-अलग वक्त पर। न तो उसे नहाने की इजाजत थी न शेव करने की। इसके अतिरिक्त एक चीनी अफसर हरदम खिड़की में से साम्यवाद के विषय पर भाषण सुनाया करता था।

चौकीदार बार-बार बक्स पर राइफिल का पिछला भाग ठोका करता था। एक अफसर ने ब्रैडले से कहा था, "तेरा बक्स अभी बड़ा है, अन्य कैदियों के बक्स तो इससे भी छोटे थे।"

जब मार्च के अंतिम दिनों में उसे बक्स में से छोड़ा गया तो उसके शरीर पर सिर्फ हड्डी-चमड़ी ही रही थी। उसके स्नायु बर्फ के कारण जकड़ गये थे। उसका शरीर अत्यन्त गंदा हो गया था। और एक किस्म की बदबू उसके शरीर में से आती थी।

उसकी ऐसी तबियत देख कर, वह कहीं मर न जाय, ऐसे भय से उसे फिर आरामदायी कमरे में पहुँचाया गया। वहाँ उसे गरम पानी से नहलाया गया, हजामत कराई गयी तथा बिस्तर वाले पलंग में सोने दिया गया। कई दिनों की थकान दूर करने वह पलंग में चैन से सो गया।

जब वह जागा तो अंधेरा हो गया था। तीव्र इत्र की खुशबू कमरे में फैली थी। तुरन्त ही प्रकाश किया गया। उजाले में उसने देखा, कि एक चीनी महिला सेनाधिकारी उसके पलंग के एक कोने पर बैठी थी। २५ वर्षीय वह युवती अत्यंत सुंदर थी। वह पूरे वस्त्रों में सज्ज थी, लेकिन कमीज के पहले तीन बटन खुले थे। वह मंद-मंद हँसी। अपने परिचय में उसने कहा कि वह एक चीनी महिला सेना की मेजर है

और उसका नाम 'अन्ना' है ।

"कहिये, अच्छा है न अब ?"

"हाँ, बहुत ही अच्छा है । लेकिन मुझे बहुत भूख लगी है।".

"किस चीज की भूख लगी है ? " अन्ना ने पूछा ।

तीन-तीन मास की सख्त परेशानियों से शरीर का प्रत्येक अंग इत बिगड़ गया था, कि इस सांकेतिक प्रश्न का उस पर कोई असर न हुआ । उसने कहा, "मुझे बहुत ही अच्छा खाना दो ।" और अन्ना बढ़िया भोजन मँगा भी दिया ।

कई दिनों का भूखा ब्रैडले ऐसा सुंदर भोजन देख कर टूट पड़ उसके खा लेने के बाद अन्ना ने कहा, "आपको बक्स में कैद किया, हमारी भूल थी । सचमुच वह हमारी बहुत बड़ी भूल थी। भूल के लिये जो अपराधी हैं, उनको कड़ी सजा दी जायेगी । इस के लिये मुझे आपके पास माफी माँगने के लिये भेजा गया है और में मुझे ऐसा भी आदेश दिया गया है, कि आप की तमाम इच्छ मुझे पूरी करनी हैं, आपको जो भी चाहिये मैं दूँगी ।" उसने 'जो चाहिये' पर इतना जोर दिया कि वह एक प्रियतमा के रूप में आई ऐसा स्पष्ट प्रतीत हो गया ।

पहले-पहले तो ब्रैडले को अन्ना की हर बात पर विश्वास आ गय वह अत्यंत थका हुआ था । कुछ दिन ऐसे ही व्यतीत हुए। बाद उसे खयाल आ गया, कि उसके दिमाग पर वास्तव में 'ब्रेन वाशिंग' आ माया जा रहा है । और यह खयाल आते ही वह फिर से जागृत गया ।

अन्ना सचमुच अत्यंत सुंदर थी । वह लगभग पूरा दिन उसके प रहती थी । ब्रैडले जो भी कुछ माँगता था, वह उसके सामने तुरंत हाजिर कर देती । ब्रैडले ने जब डायरी लिखी तो उसमें कम्युनिस्टों यह बात उसे बहुत पसंद आई ।

अप्रैल में ब्रैडले को शेनयांग के एक प्राइमरी स्कूल में भेजा गय

उसको इसका बहुत ही अफसोस था, क्योंकि अन्ना से जुदाई हो गई थी ! अन्ना, जिससे उसने बहुत कुछ सीखा, उससे फिर कभी नहीं मिली।

इस स्कूल में कैदी अफ़सरों तथा अन्य सैनिकों को साम्यवाद पर आधारित शिक्षा दी जाती थी। उनमें अधिकतर अमेरिकी थे। अनिच्छा होने पर भी वे कम्युनिस्टों के भाषण में रस लेते थे।

इन कैदी अफसरों को परस्पर मिलने की छूट न थी। वैसे यहाँ भी काफी आराम था। ब्रैडले दूसरे अफसरों से मिलना चाहता था। कई प्रयत्नों के बाद वह एक-दो से मिल सका। एक दिन भाषण चल रहा था और वह खड़ा हो गया, और चीख कर बोल उठा, "साम्यवाद का नारा बकवाद है।"

यह सुनकर चीनी फिर से पहले की तरह उसके ऊपर सितम ढाने लगे। उसे रात को फिर से अंधियारी कोठरी में कैद किया गया। दूसरे दिन उसे कोड़े मारे गये। बाद के दिन पाँच घंटे तक उसे टाँग रखा गया।

जब थक कर वह सोने का प्रयत्न करता, तो पहरेदार उसे बंदूक की नोक से मारकर जगाते। तीन सप्ताह तक इस तरह चला। इसके बीच उसे अत्यंत कामोत्तेजक फिल्में दिखाई गईं। आखिर में जब वह मृतप्राय स्थिति में पहुँचा तो उसे छोड़ा गया।

गर्मियों का काफ़ी हिस्सा ब्रैडले को सैकड़ों कैदियों के साथ एक बाँध बाँधने में बिताना पड़ा। काम करते जब वे पसीने से तरबतर हो जाते तो दूसरी ओर लाउड स्पीकर द्वारा चीनी भाषा में सतत संगीत बजता रहता।

एक राजनैतिक अधिकारी ने ब्रैडले को अत्यंत शांति से समझाया कि यह काम खुद उसके फायदे में ही किया जाता है। 'तुम समाज के हित में काम कर रहे हो और इसलिये तुम्हें खुश होना चाहिये।'

अगस्त में फिर से उसे उसी दस्तावेज़ पर दस्तखत करने को कहा गया। उसने फिर 'ना' कह दी। फिर से उसे अंधियारी कोठरी में धकेल

दिया गया। और उसे चौबीस घंटे लाउड स्पीकर द्वारा साम्यवादी भाष सुनने के लिये मजबूर किया गया। यह क्रम आठ सप्ताह तक चला इस दरमियान उसको कोई भी इन्सान का दर्शन नहीं हुआ। भोजन भी एक छोटी-सी खिड़की द्वारा पहुँचाया जाता था।

वह अपने कानों पर हाथ रख देता। एक बार तो वह इतना ऊब गया कि रोटी चबाकर उसकी लुगदी कान में ठूस ली। कंबल में वह अपना सर छुपा देता, परंतु फिर भी जब वह सोने का प्रयत्न करता कि तुरंत ही लाउड स्पीकर की भयावह आवाज़ उसे बेचैन बना देती। दिमाग का सन्तुलन खो जाने पर वह चीखने लगता, 'लाउड स्पीकर बंद करो।' कितने दिनों की सतत परेशानियों के बाद लाउड स्पीकर बंद किया गया, लेकिन अब ब्रैडले की ऐसी हालत थी, कि वह स्वयं लाउड स्पीकर में गूँजते वाक्य ज़ोर-ज़ोर से बोलने लगा जिन्हें वह इतने दिनों दरमियान लाउड स्पीकर द्वारा सुन चुका था।

अक्तूबर मास आया। शरद ऋतु समाप्त हो रही थी। अब ब्रैडले को 'ब्रेन वाशिंग' क्या है, इसका संपूर्ण खयाल आ गया था। अब वह किसी भी तरह यहाँ से भाग जाना चाहता था।

अब वह साम्यवाद में काफी दिलचस्पी दिखाने लगा। कुछ पुस्तकें भी मंगवा कर उनका अध्ययन करने लगा। फलस्वरूप उसे कुछ सहूलियतें दी गईं। एक चौकीदार उसे रोज़ नहाने को ले जाता था।

एक दिन चारों ओर अत्यन्त कोहरा फैला हुआ था। ब्रैडले ने उसका लाभ उठाया। स्नानघर में वह पहुँच गया और जब चौकीदार आया तो बराबर मौका देखकर उसे ऐसी ईंट दे मारी कि वह बेहोश हो कर धरती पर गिर पड़ा। ब्रैडले ने तुरंत ही उसके कपड़े उतार कर पहन लिये और बाहर निकल गया।

वह आगे बढ़ गया। कुछ लोगों को जब सामने से आते देखा तो पांक से भरे खेत में वह छिप गया। यहाँ उसे चार-पाँच घंटे तक सर्दी में काँपते बैठे रहना पड़ा। जोरदार ठंडी हवा शरीर को बेध जाती थी।

जब यह ठंडक उससे सही न गई तो उसने एक मकान का दरवाजा खोल दिया। यह कोई सरकारी अफसर का मकान था। वहाँ उसने कुछ बिस्कुट के पैकेट रखे हुए देखे। बिस्कुट खाकर सारी रात वह वहाँ सोता रहा।

सुबह हुई तो लोगों को यहाँ-वहाँ फिरते हुए देख पूरा दिन उस मकान में उसे सोना पड़ा। उसके अच्छे भाग्य थे कि वहाँ कोई आया नहीं। उसने मकान में से देखा कि पास ही ट्रेन की पटरियाँ थीं, जिस पर से उत्तर-दक्षिण दिशा की ओर गाड़ियाँ जाती-आती थीं।

ब्रैडले के पास कोई हथियार न था। यहाँ से उसने दस इंच लंबी, पतली, नुकीली एक वस्तु साथ में ले ली। रात के अंधकार में वह उस जगह पहुँचा, जहाँ से दिन को उसने एक गुड्स ट्रेन शंटिंग करती हुई देखी थी। इस गुड्स ट्रेन के साथ एक इंजिन भी था। वह उसमें चढ़ने के लिये जाने वाला था कि एक चीनी अफसर को उसने अपने पास आते देखा। अफसर चीखने ही वाला था कि ब्रैडले ने पास में जो लंबा, पतला, नुकीला हथियार था, उसको चीनी अफसर के पेट में घुसा दिया। एक ही क्षण में वह खत्म हो गया। काफी जहमत के बाद ब्रैडले ने उसको भी गाड़ी में चढ़ा दिया। उसने उसका रिवाल्वर तथा कागजात अपने हवाले कर लिये। गाड़ी दक्षिण की ओर जा रही थी। गाड़ी जब एक पुल के ऊपर से गुजर रही थी तो अत्यंत सावधानी से उसने अफसर की लाश बाहर धकेल दी।

गुड्स ट्रेन धीमी गति से जा रही थी। छः दिन तक उसने कुछ बिस्कुट और बरसात के पानी से, जो उसने अपनी हैट में बचा रखा था अपना काम चलाया। भूख उसे बेहद सता रही थी। एक जगह जब गाड़ी खड़ी हुई तो गाड़ी में से उतर कर वह रोटी के लिये इधर-उधर घूमने लगा। रेलवे शेड में कुछ सैनिक आग जलाकर खाना तैयार कर रहे थे। वह कुछ पीछे हटा। और भयंकर आवाज़ लगाता हुआ जहाँ खाना पक रहा था, वहाँ धुस गया। घबराकर सैनिक भाग गये थे। अतः वे

उसे नहीं देख सके।

कुछ देर बाद फिर से वह गाड़ी में आ गया। गर्मागर्म भोजन मिल से उसमें कुछ शक्ति आई। दूसरे दिन जहाँ गाड़ी खड़ी रही, वहाँ उत कर एक मजदूर की झोंपड़ी में से खाना चुरा लाया।

गाड़ी जब युद्धग्रस्त क्षेत्र से गुजर रही थी, तो उस शहर को उस पहचान लिया। यहाँ उतर कर वह सड़क पर मजे से घूमने लगा। चीं पोशाक उसकी रक्षा करती थी। परंतु अगर वह पकड़ा गया तो जान हाथ धोना पड़ेगा, ऐसा भय भी उसे लगता था।

वह रास्ते पर आगे बढ़ने लगा। रास्ते में चीनी सैनिकों की ट्र उसके पास से ही जाती थी। चहल-पहल बंद हुई, अतः वह समझ ग कि युद्धस्थल इतने में ही कहीं होना चाहिये।

इतने में एक ट्रक उसके पास आकर रुकी। ड्राइवर ने दाँत भींचक चीनी भाषा में उससे कुछ कहा। चीनी भाषा न जानने से वह घब गया। किंतु यकायक उसे एक आशा बंधी। उसने अपनी रिवाल्व ड्राइवर की ओर ताककर उस ट्रक को दक्षिण दिशा की ओर दौड़ा की आज्ञा दी।

आधे घंटे के बाद मशीनगन में से एक गोली छुटी। धमाका हुआ ड्राइवर मर गया। और एक भयंकर आवाज़ के साथ ट्रक एक बड़े गड्ढे में जा गिरी। ब्रैडले धमाके के कारण उछल कर बाहर उड़ गया।

थोड़ी ही देर में वह राइफलधारी अंग्रेज सैनिकों के बीच घिर गया जब उसने उनसे कहा कि, वह एक आस्ट्रेलियन सैनिक अफसर है, तं उसकी बात पर किसी को विश्वास नहीं आया। उसने आस्ट्रेलिय स्टाइल से अँग्रेजी बोलना शुरू किया। और उस पर जो गुजरी वह क सुनाया। तब उनको विश्वास आया कि वह आस्ट्रेलियन सैनिक ही है

और वह दिन था सन १९५२, सात जनवरी का।

बैडले ने अपना कर्त्तव्य इस दिन पूरा किया।

उसके पास चीनियों द्वारा किया गया 'ब्रेन वाशिंग' की पर्याप्त जानकारी....अनुभवों के साथ।

— रेलवे कैश चेस्ट की चोरी —

(पृष्ठ ६१ से आगे)

यह सौ रुपये का नोट बदले में आया है, लेकिन यहीं उसे धोखा हो गया। अब जब कि तकदीर ही उसका साथ नहीं दे रही, तो उसने पुलिस के सामने अपनी कहानी सही-सही सुना दी।

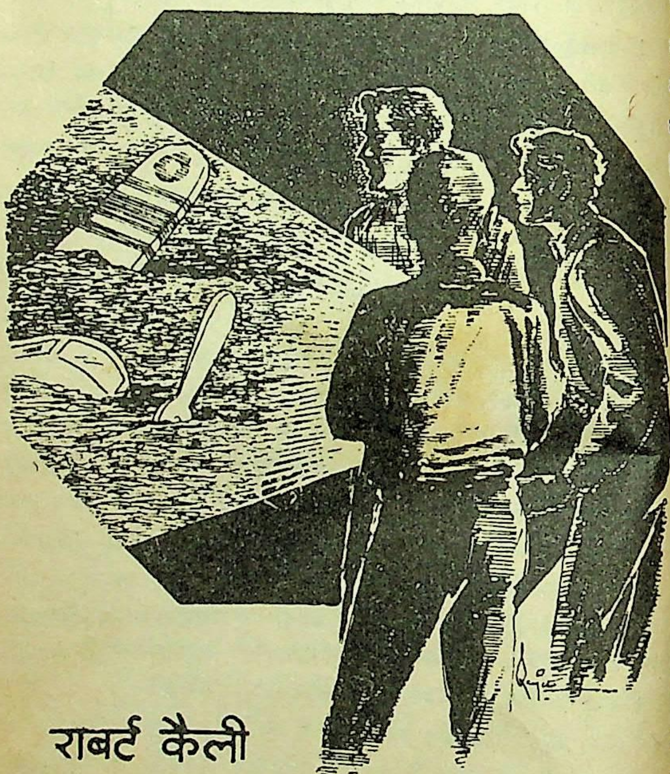
अभियुक्त के कथन के आधार पर जाँच करने वाली पुलिस पार्टी उसी रात वैगाई नदी के उत्तरी तट की ओर भागी। अभियुक्त द्वारा संकेत किए गये स्थान से गड्ढे में दबाई गई कैश-चेस्ट खोद कर बाहर निकाल ली गई। करीब में फेंके दिए गए कैश के वाउचर भी पुलिस को मिल गए। अभियुक्त के घर की कानूनी तलाशी लिये जाने पर जमीन में चाँदी की पेटी में गाड़े गए १५,१५० रुपये और एक कागज की पुड़िया में लपेट कर छत की धरन में खोंसे हुए १६० रुपये बरामद हुए।

अब दो अन्य अभियुक्तों की ओर पुलिस मुखातिब हुई। इस बात की खबर मुन्सिफ के लड़के को लग गई थी। वह पुलिस स्टेशन गया और उसने थाने में आत्म-समर्पण करते हुए अपने हिस्से का कथित ५ हजार रुपया भी पुलिस को सौंप दिया। इसके द्वारा जो धनराशि पुलिस को सौंपी गई, उसमें तीन नोट उस सूची में थे, जिसके नम्बर प्रकाशित किये जा चुके थे। अगले दिन महाराजन पिल्लई का वह दूसरा दोस्त भी पकड़ लिया गया और उसके पास से उसके हिस्से में से बची २४१ रु० ४५ पैसे की रकम मिली। बाकी रकम उसने खर्च कर डाली थी।

जाँच की कार्रवाई मुकम्मिल होने पर उन तीनों ही अभियुक्तों के खिलाफ चार्जशीट दी गई। महाराजन के विरुद्ध भारतीय दण्ड विधान की धारा ३७९ और ७५ के अन्तर्गत और उन दोनों सहयोगियों के विरुद्ध भारतीय दण्ड विधान की धारा ३७९ और ३४ के अन्तर्गत।

इस केस को बचाव पक्ष की ओर से वकीलों की एक टीम द्वारा जोरों से लड़ा गया। अन्त में जिला मजिस्ट्रेट मदुराई ने महारान् को दो वर्ष की कड़ी कैद और कैद की अवधि के बाद तीन वर्ष तक लगातार पुलिस को अपने घर की सूचना देने का फैसला सुनाया। अन्य दो अभियुक्त टेक्निकल ग्राउण्ड पर मुक्त कर दिए गए। ●●

हमें पुनः जीवन मिला



रावर्ट कैली

हमारा विमान 'लुडवग नारपोल' सहारा के विशाल वायुमंडल के सिंहासन पर किसी अल्पायु राजकुमारी की तरह झूल रहा था। विमान यद्यपि सही-सलामत था, पर मेरे शरीर से भय और आतंक के पसीने छूट रहे थे। कल हम लोग इस विमान में क्रेट द्वीप के दक्षिणी तट के तम्पाकीन हवाई अड्डे से उड़ कर लीबिया होते हुए मिस्र के हवाई अड्डे पर पाँच घण्टे के अंदर-अंदर उतर आये थे और आज रात को आठ बजे इस हवाई यात्रा से अपने निर्दिष्ट स्थान पर वापस लौट जाने के लिए हमें साढ़े चार घण्टे हो चुके थे, पर अभी हमें यह पता न था कि हम किस देश में हैं।

●

सहारा के असीम रेतीले क्षेत्र में भटके हुए उस विमान का पेट्रोल भी चुक गया था। उनकी मौत उनकी आँखों के सामने ही नाच रही थी लेकिन उन्होंने विमान को नीचे उतारा। रेत से टकराकर जीवन और मृत्यु का संघर्ष। मानव के अदम्य साहस एवं जीवनाकांक्षा की कहानी।

●

ग्यारह बजे रात से चीफ यानचालक बर्न ने विमान का सारा कंट्रोल यानचालक पीटर से ले लिया था। उसके आदेशानुसार वायरलेस ऑपरेटर जर्गन ने रेडियो ट्रांसमीटर से न जाने कितने सन्देश प्रसारित किये, किन्तु ग्राउंड-कंट्रोल से संबंध स्थापित करने का हर प्रयत्न असफल रहा। अब भी वह वायरलेस-सेट और रेडियो के अन्य यंत्रों से बच्चों की तरह उलझ रहा था। डेढ़ घण्टे की निरन्तर असफल चेष्टा के बाद चीफ ने जर्गन से भर्राई हुई आवाज में कहा—"एस. ओ. एस. भेजो।

हम संमट में हैं केवल पाँच मिनट बाकी हैं। उसके बाद पेट्रोल
हो जायेगा। शायद लुडवग के भाग्य में राख का ढेर बनना है।

चीफ के इस सन्देश को प्रसारित करने का उद्देश्य मुझे अच्छी
पता था। इसका मतलब था कि हमारे प्राण संकट में हैं। 'ल
खतरे में है और हमारे प्राण बचाओ।' एस. ओ. एस. का मतल
यह था कि अब हम दस-बारह मिनट में जली हुई हड्डियों का ढे
जायेंगे।

'एस. ओ. एस.' प्रसारित किया जा चुका था। पाँच मिनट
थे। एक सौ तीस सेकेंड के अंदर हमें अपनी रक्षा के प्रबंध करने

"पैराशूट के द्वारा उतरने की तैयारी करो," बर्न ने दूसरा
दो सेकेंड के बाद दिया। उस आदेश ने मेरे होश-हवाश को बि
के बजाय मेरे मस्तिष्क और दृष्टि को सचेत कर और सजग कर दि
मैंने धरती की ओर नजर दौड़ाई। आकाश पर चमकते हुए सितारे
देखते-देखते मैं उकता चुका था। कब तक इन नक्षत्रों के चक्कर
सहारा लिया जाये। धरती चाँद की सतह की तरह निर्जन और सु
दिखाई दे रही थी। रेत के तोदों और पत्थरों के टुकड़ों के अति
मुझे सहारा की धरती पर कुछ नजर न आया।

अफ्रीका के महान सहारा के स्वभाव को मैं भलीभांति जानता
महान सहारा दृष्टिसीमा तक फैली हुई धोखे और फरेब से भरी
धरती, रात्रि के समय अंगों को शीतल कर देने वाली हवायें—दिन को
में शरारे भर देने वाली आग्नेय लू और लपटें, चारों ओर मरीचिका
मुझे भली-भाँति पता था कि मरूस्थल की रेतीली धरती हजारों
अपितु लाखों यात्रियों का ऐसा विशाल कब्रिस्तान है, जहाँ असंख्य
पर एक भी समाधि नहीं।

मैं इस डर से काँप उठा। एकदम मेरे मुंह से चीख निकल
और मैंने चीफ से निवेदन किया—"हम पैराशूट से उतर कर एक
से सैकड़ों मील दूर हो सकते हैं। हम सब साथ यात्रा कर रहे हैं।

ही मरेंगे। विमान को धरती पर उतारने का प्रयत्न क्यों न किया जाय।"

चीफ ने तुरंत उत्तर दिया—"बिना हवाई-अड्डे के इस रेतीले मैदान में उतरने का मतलब मौत को निमंत्रण देना है।"

"दोनों अवस्थाओं में मौत अनिवार्य है। विमान को उतारने के प्रयत्न में आयी हुई मौत सहारा में अकेले भटक कर मर जाने से कहीं बेतहर है।" मैंने मत दिया।

बर्न ने जाने क्यों मेरी सलाह मान ली। यह सब कुछ एक मिनट में हुआ। पेट्रोल समाप्त होने में अभी चार मिनट शेष थे।

बर्न ने हमें अवगत करते हुए विमान को गोता दिया। हमने अपनी-अपनी कमर से मज़बूती के साथ पेटियाँ बाँध ली थीं। जर्गन ने वायुमंडल में उस विशेष प्रकार के पिस्तौल से दो-तीन हवाई फायर किये, जिनके गहरे सुर्ख धुएँ से दूर-दूर उड़ते हुए जहाज पता लगा सकते थे कि उनकी तरह उड़ने वाले कुछ लोग किस दिशा में मौत का शिकार होने वाले हैं।

बर्न अपनी कला में निपुण था, पर हमारा भाग्य चक्कर में था। विमान बहुत नीचे होता गया। पंखों से रेत उड़ने लगी। एक मिनट के अंदर-अंदर महसूस हुआ कि सारे विमान के अंदर रेत भर गयी है। मैंने अपनी आँखें मूँद लीं और फिर अगले क्षण ही ज़ोरदार धक्के के साथ लुडवग ऊपर की ओर उड़ने लगा। मैंने आँखें खोल लीं। चीफ कह रहा था—"विमान एक चट्टान से टकराने वाला था। इसलिए हम धरती पर नहीं उतर सके और विमान को फिर ऊपर ले गये।"

मैंने फिर हस्तक्षेप किया और बर्न से निवेदन किया कि वह विमान की हेडलाइट बुझा कर विमान को उदार दे। जो कुछ भाग्य में लिखा होगा, देखा जायेगा। और उसने ऐसा ही किया। विमान धरती से पचास मीटर ऊपर था। चीफ ने बत्तियाँ मुझा दीं और पलक झपकते ही विमान रेत के तोदों से टकराता रुआ रुक गया।

पैट्रोल समाप्त हो चुका था। शायद इसी लिए धमाके के साथ

विमान के परखचे उड़ने से बच गया, पर मुझे ज़ोरदार झटके अ
हुए, जैसे धरती की नींवों को हज़ारों भूकम्पों ने हिला दिया हो।

विमान घिसटता हुआ पत्थरों के टुकड़ों से टकराया और एक
फिर रेत के असंख्य कण मेरे मुँह में घुस गये। विद्युत-सी तेज़ी के
हम अपने पैराशूट वहीं छोड़ कर विमान से छलाँग लगा कर बाह
गये और फिर सब अनजानी ओर दौड़ने लगे। विमान किसी भी
धमाके के साथ फट सकता था, पर न जाने क्यों ऐसा न हुआ।
छह मिनट दौड़ने के बाद हम अपनी-अपनी जगह धरती पर औं
गये। पन्द्रह बीस मिनट प्रतीक्षा करने के बाद हम विमान की
वापस लौटे। चारों ओर अंधेरा छाया हुआ था। पास आ कर
तो लुडवग एक ज़ख्मी पक्षी की तरह बिखरा पड़ा था। उसकी दु
चुकी थी। बाज़ू गायब थे। प्लास्टिक के शीशे रेत के कणों में
मिल चुके थे। सामने लगे हुए पंखों की पंखुड़ियाँ चूर-चूर हो चुकी
यह सब कुछ हमने अपनी टार्च के प्रकाश में देखा।

हमें यह नहीं पता था कि हम किस स्थान पर थे--मिस्र
लीबिया में हमारे चारों ओर अँधेरा छाया हुआ था। थोड़
बाद चीफ ने सबको सम्बोधित करके पूछा--"कोई ज़ख्मी हुआ

"कोई नहीं।" हम तीनों ने एक ही स्वर में उत्तर दिया। आ
प्रतिकूल हम लोग मौत के मुँह से बच निकले थे।

मेरी घड़ी इन आघातों से बेपरवाह हमारा साथ दे रही थी।
देखा कि उस समय वह एक बजा रही थी। चीफ ने कहा कि
होने से पहले कुछ सोचना भी फिज़ूल है। विमान से लाइफ-बोट नि
कर दो-दो घण्टों तक दो-दो आदमी उसमें सो लें। जागते हुए आ
सोने वालों की रक्षा करेंगे।

और फिर सूर्य की पहली किरण ने सारे मैदान को प्रकाश से न
दिया।

रात को जब जर्गन और पीटर सो रहे थे, चीफ यानचालक ने

बता कर मेरे रोंगटे खड़े कर दिये कि विमान को उतारते समय अल्टी-मीटर (विमान की ऊँचाई बताने वाला यंत्र) बंद हो गया था, पर उसने पीटर को भी उसकी सूचना न दी। चीफ की सूचना से मैंने तुरंत निष्कर्ष निकाल लिया कि हम समुद्री सतह से काफी ऊँचाई पर थे और यह स्थान पश्चिमी मिस्र का महान सहारा हो सकता है। मैंने बर्न को बताया कि यदि हमारे पास पानी का भंडार हो तो हम इस नरक में ४८ घण्टे तक जीवित रह सकते हैं, पर हमारे साथ कोई अरब निवासी होता तो उसकी सहायता से हम नखलिस्तान और पानी के कुओं तक पहुंच सकते थे। नखलिस्तान और पानी की मौजूदगी तो केवल अरब ही महसूस कर सकते हैं। उनकी यह विशेषता जन्मजात तो नहीं किन्तु पुश्तैनी अवश्य कही जा सकती है।

सूर्य के प्रकाश में हमने अपने वातावरण पर नजर डाली। पत्थरों के टुकड़ों, रेत के कणों, घिसी-पिटी चट्टानों के अतिरिक्त दूर-दूर तक जीवन के कोई चिन्ह दिखाई न दिये।

शीघ्र ही हमने खाने के पैकिट से कुछ नाश्ते के रूप में लिया। बाकी आने वाले दिनों के लिए सावधानी से रख लिया। नक्शे की सहायता से हमने रोम सागर के किनारों की ओर उत्तर में चलने की राह निश्चित की। फिर विमान से रेडियो ट्रांसमिटर, दस्ती कम्पास, बची हुई पानी की बोतलें, टार्च, एक माचिस, एक डबल-रोटी का पैकिट और एक सिगरेट की डिबिया जैसी आवश्यक चीजें निकालीं। शेष चीजों को इकट्ठा करके विमान से जरा दूर ले जा कर जला दिया, ताकि धुएँ से वायुमंडल में उड़ते हुए विमानों को हमारी यात्रा के स्थान का पता चल सके। अधिक सामान ले जाना संभव न था। कहा जाता है कि सहारा में काम करने वाले आठ घण्टे के अंदर आठ किलो वजन से वंचित हो जाते हैं और हमें आठ घण्टों से कहीं अधिक यात्रा करनी थी।

मंजिल की ओर चलने से पूर्व हमने कुछ बातें अनुबंध के रूप में

तय कीं, जिनमें मरते दम ही हमें पानी की कुछ बूँदों से अपने होंठ तर करना और हर दो घंटे की यात्रा के बाद केवल पन्द्रह मिनट आ लेना कुछ शर्तों में से थे ।

चलते समय हमें अच्छी तरह से विश्वास हो चुका था कि प्रसारित किया हुआ एस० एस० ओ० हमारी तरह मंजिल तक से भटक चुका है, इसलिए बर्न ने एक काग़ज़ के पुरजे पर हम नाम और अन्य आवश्यक सूचनाएँ लिख कर उसे यानचालक की से नत्थी कर दिया, ताकि हमारी तलाश में आने वाले हमारे प्रोग्राम से परिचित हो सकें ।

पानी की कुल मात्रा हमारे लिए बिलकुल अपर्याप्त थी। लिटर पानी एक आदमी के लिए कठिनतापूर्वक दो दिन के लिए हो सकता था । पीटर ने इंजन को ठंडा करने वाले पानी को लिए हाथ बढ़ाना चाहा, पर चीफ ने उसे बताया कि अन्य रासा तत्वों की मिलावट के कारण यह पानी इतना विषैला हो जाता उसे पीने वाला जीवित नहीं रह सकता ।

बहरहाल, हर व्यक्ति ने आधा-आधा प्याला पानी पिया और से निराश हो जाने वालों का यह काफिला उत्तर की ओर चल विमान की ओर विदाई नजरें डालते हुए मैंने घड़ी को देखा । सु सात बज रहे थे ।

दो घण्टे चलने के बाद हम उस स्थान पर पहुँचे, जो या आरम्भ से ही हमें दूर उत्तर की ओर दिखाई दे रहा था । कोई पेड़ तो क्या, घास का एक तिनका भी दिखाई न दिया। उगी हुई झाड़ी और लगे हुए खेमे को देखने की आकांक्षा में नजरें पथरा चुकी थीं । सुनसान और वीरान वातावरण । खोखली और कष्टदायक सन्नाटा । हर ओर निस्तब्धता । हर ओर रेत के हुए कण । ऊपर आकाश पर आँखों को धुंधला देने वाली सूर्य की कि उस स्थान पर पन्द्रह मिनट के दौरान हमने रोटी का आधा-आधा

खाया। पानी की बोतल पर अंगूठा रख कर उसे उलटा और उतनी ही तरलता से इस प्रकार सबने अपनी-अपनी जीभ को गीला किया। एक बार हमने वायरलेस सेट खोला। उससे सन्देश प्रसारित किये। कहीं से कोई उत्तर न मिलने के कारण बर्न को बड़ा क्रोध आया और उसने कहा कि अब यह सेट बच्चों का खिलौना बन चुका है। यह केवल एक वजन है। बोझ है, इसे यहीं छोड़ दिया जाये।

पन्द्रह मिनट बाद हम फिर चल पड़े। हमारे साथ सूर्य की यात्रा भी जारी थी। अब धूप की तपिश बढ़ चुकी थी और हवाओं में रात की ओस की तरलता खुश्क हो गयी थी। मैंने अपने भाग की ग्लुकोज़ की टीकिया मुँह में रख ली थी। एक भूखे बच्चे की तरह मैं कभी-कभी उसे चूस लेता। इस प्रकार चीभ की खुश्की में कमी हुई। टिकिया खत्म हो जाने के बाद मेरी साँस भारी हो गयी और जीभ में खुश्की और भारीपन फिर से महसूस होने लगा।

बर्न मस्त हाथी की तरह झूमता हुआ चल रहा था। लगभग घण्टा भर की यात्रा तय करने के बाद उसने खुशी से चीख कर कहा, "वह देखो, सामने पानी की झील भी है और नखलिस्तान भी। कुछ खेमे भी वहाँ लगे हुए दिखाई दे रहे हैं।"

हममें से किसी को उनमें से एक चीज़ भी दिखाई नहीं दी, पर थोड़ी ही देर बाद पीटर को भी पानी और खेमे नज़र आये। मैं जानता था कि यह मरीचिका है। हमें अपनी यात्रा की दिशा को नहीं बदलना चाहिये। निराश होकर जब हम वापस लौटेंगे तो दस-बीस मील की यह यात्रा व्यर्थ सिद्ध होगी। मुझे उस मरीचिका का कटु अनुभव था। रेगिस्तानी क्षेत्रों में झील और खेमे दिखाई देते हैं और छलावे की तरह गायब हो जाते हैं। मैंने साथियों को उस ओर चलने से रोकने की चेष्टा की, पर चीफ़ ने कहा, एक बार परखना आवश्यक है। आशा के अनुकूल परिणाम प्राप्त न होने के बाद हम फिर उस धोखे में हरगिज़ नहीं आयेंगे। सब राजी हो गये। मैंने भी उचित न समझा कि

विरोध करूँ, अतः हम पश्चिम की ओर हो लिये। आधे घण्टे नि यात्रा करने के बाद भी मरीचिका नज़र आती रही और हम उ न पहुँच सके तो चीफ ने खिन्न हो कर कहा--"वापस चलो.. महज़ धोखा है...अब हम इस धोखे में अधिक देर तक फँसे नह सकते।"

भूख और प्यास की तीव्रता के साथ सूर्य की किरणों की निर्मम त लग रहा था कि हम नरक की भट्ठी में कबाबों की तरह भूने थे। कुछ देर बाद हमें पत्थरों का ऐसा ढेर नजर आया, जैसे साम लोग कुओं पर रख देते हैं। हम में से हर व्यक्ति ने उस पर च अंदर की ओर देखा। वस्तुतः वह कभी कुआँ होगा, पर उस समय पत्थरों के टुकड़ों के अतिरिक्त कुछ न था। तीनों साथी उसे दे निराश लौटे। फिर भी न जाने क्यों मेरी छठी संज्ञा ने मुझ प डाला कि मैं भी उस कुएँ के अन्दर झाँक कर देखूँ। परिणाम वही नि निराशा, वंचना। और मैं भी उदासियों को मन में लिये हुए साथियों के पीछे लपक-लपक कर चलने लगा।

तीन बजे के लगभग हमें फिर पत्थरों की ऐसी ही एक दरार आयी। यह एक दीवार-रूपी चीज़ थी, जिसमें छाया अवश्य थ इतना कि केवल एक व्यक्ति ही उसकी छाया में बैठ सकता था, बारी-बारी हर साथी ने पाँच-पाँच मिनट विश्राम लिया। इस मैद जहाँ चारों ओर आग ही आग बरस रही थी, पानी की एक बूंद घास का एक तिनका दूर-दूर तक नज़र नहीं आता था। पीटर की खराब हो चुकी थी। वह हर बार हमसे पीछे रह जाता था, और में वह निर्जीव-सा पड़ा हुआ निराशापूर्ण स्वर में कह रहा था—" कहता है कि हम इस तरह समुद्र के किनारे तक पहुँच जायेंगे। यह झूठ है। बकवास है। हमारी मौत हमारे सामने है। कब तक धोखा दिया जा सकता है! काश, हम हवाई जहाज़ में ही रुक वहाँ की मौत हज़ार गुना बेहतर होती।"

बर्न को उसकी निराशा पर क्रोध आया और उसने कहा—"चलो, अब हम चलें। हमारा काम चलना है, जब तक चल सकें। हम कई बार मौत को धोखा दे चुके हैं। जीवन की मंज़िल हमारी राह देख रही है।"

पीटर ने कहा—"हम हर चीज़ को धोखा दे सकते हैं, पर इस न समाप्त होने वाले रेगिस्तान से बच निकलने का विचार बच्चों जैसी बात है। मुझे पानी दो। केवल इतना कि मैं अपनी जीभ तर कर लूँ। उसके बिना मैं एक कदम आगे नहीं बढ़ सकता।"

चीफ़ के आदेश का पालन करते हुए जर्गन ने बोतल से पानी निकाल कर आधा प्याला भर लिया। बारी-बारी सब ने अपनी पाँचों उंगलियाँ उसमें डुबोईं और उनसे होठों को और जीभ को तर किया। और फिर हमने निश्चित दिशा की ओर चलना आरम्भ कर दिया।

शाम के पाँच बज चुके थे। मंज़िल का कोई पता न था। सब ने निश्चय किया कि थोड़ी देर सो लिया जाये ताकि रात में यात्रा जारी रखी जा सके। पैराशूट से कुछ कपड़ा काट कर हमने सूर्य की गर्मी से बचने के लिए अपने-अपने चेहरों पर सुबह से ही लगा रखा था। उस कपड़े से मुँह ढाँप कर हम सो गये। सहसा जर्गन ने जाग कर हमें उठाया। उसने कहा कि वह विमान के इंजन की आवाज़ सुन रहा है। सबने उस ओर कान लगा दिये। वस्तुतः कुछ ऐसी आवाज़ आ रही थी। फिर हमें दूर वायुमंडल में बादलों के टुकड़ों की तरह दो धब्बे नज़र आये। हमें थोड़ी-सी निश्चितता हुई कि यह विमान शायद हमारी खोज में ही उड़ रहे हैं। चीफ यानचालक के आदेश से पीटर ने हवा में दो-तीन फायर किये, जिनसे हरा और लाल धुआँ निकल कर वायुमंडल में फैल गया। यह फायर और उससे निकला हुआ रंगीन धुआँ उन विमानों के लिए संकेत था कि हम लोग कहाँ हैं। थोड़ी देर में इस विश्राम और वायुमंडल में विमानों की उड़ान ने हमारे हृदयों में नया उत्साह और नया हौसला पैदा कर दिया। हमने फिर सामान बाँधा और आगे बढ़ने लगे। वाक्शक्ति जड़ हो चुकी थी। गले, जीभ और होठों पर खुश्की

छायी हुई थी। बात करने की ताब न थी, न कोई अवसर था। बहरहा
हम चुपचाप लड़खड़ाते, गिरते-पड़ते, संभलते-संभालते चलते ही रहे
घण्टा-दो-घण्टा के बिराम के बाद जर्गन हवा में फायर करता रहा
सहसा एक बार फिर हमने विमान के इंजन की घड़घड़ाहट सुनी औ
थोड़ी देर बाद देखा, कि एक विमान हमारे सिरों पर मंडरा रहा
अतः हमने रूमाल वायुमंडल में लहरा दिये।

विमान ने वायुमंडल में दो-एक बार चक्कर लगाये। जर्गन
तुरंत ही अपने पिस्तौल से दो-तीन फायर किये और वायुमंडल में ह
रंग बिखर गया। थोड़ी देर बाद विमान ऊपर की ओर उठा और उत्त
की ओर उड़ान करता हुआ हमारी नजरों से ओझल हो गया।

जर्गन ने आगे बढ़ने से इनकार करते हुए कहा--"हमें यहीं ठहर
चाहिये। कुछ देर बाद वह इतालवी विमान सहायता ले कर आ
होगा।"

"उस पर भरोसा करना बेकार है," चीफ़ ने कहा--"उसने
देखने का कष्ट नहीं किया। न जाने आजकल के नवयुवक यानचा
किस प्रकार आँख बन्द करके विमान चलाते हैं। हमें अपने कदमों
विश्वास करना चाहिये। चलते रहने से लाभ है। हम चालीस कि
मीटर चल चुके हैं। कल शाम को रोम सागर में स्नान करना चाह
हूँ।"

सूर्य अस्त हो चुका था। अंधकार की परछाईं पंख फैला चुकी थ
कल रात को चाँद तीन बजे के लगभग निकला था। अतः वीरान अं
में भटकी हुई प्रेतात्माओं की तरह हम चलते रहे। तीन-चार घण्टे
बाद चलना दूभर हो गया। हम सब को रह-रह कर उस यानचाल
पर क्रोध आ रहा था, जो हमारे सिरों पर से ऐसे गुजर गया, जैसे ह
इंसान न हों, कोई रेगिस्तानी कीड़े-मकोड़े हों। राह को टटोलते-टटोल
चलते हुए रेत और पत्थरों से टकरा-टकरा कर पैर ज़ख्मी हो चुके थ
अन्त में उस यात्रा में ठहराव जर्गन के औंधे मुँह गिर जाने के कारण

हुआ। उसके घुटनों से बुरी तरह खून बह रहा था। फर्स्ट एड के बक्स से मैंने टिक्चर निकाला और बहते हुए खून पर लगा दिया। बध करते हुए बकरे की तरह उसके मुँह से चीख निकली और जर्गन वहीं ढेर हो कर रह गया। उसने आगे बढ़ने से बिलकुल इनकार कर दिया। हालात का निरीक्षण करते हुए चीफ ने आदेश दिया कि यहीं रैन-बसेरा कर लिया जाये। चाँद के उदय होते ही उसके प्रकाश में फिर आगे बढ़ा जायेगा। दस-बारह मिनट भी न बीते थे कि हम लोग कटे हुए पेड़ों की तरह निर्जीव हो कर सो गये।

तीन बजे के लगभग हम सबको बर्न ने जगा दिया। हमारे शरीर सर्दी के मारे जकड़ चुके थे। बड़ी कठिनाई से हाथ-पाँव हिला कर हमने फिर चलना शुरू कर दिया। पानी की बोतलें खाली हो चुकी थीं, इस-लिए चीफ के आदेश से उनका बोझ भी हलका कर दिया गया। पाँच घण्टे की यात्रा तय करने के बाद हमें एक रेतीला रास्ता दिखाई दिया। बर्न खुशी से झूम उठा। नक्शा निकाल कर उसने अनुमान लगाया कि हम सीवा नामक नगर से पचास किलोमीटर दूर हैं। खुशी की लहर सबके ही शरीर में दौड़ गयी। और उस हर्ष-उत्सव को मनाने के लिए बर्न ने थोड़ी देर विश्राम करने की अनुमति दे दी। अभी कुछ मिनट भी नही बीते थे, कि जर्गन की चीख ने सब को आकृष्ट कर लिया। वह कह रहा था––"देखो, सामने पेट्रोल के कुछ कनस्तर पड़े हुए हैं।"

वस्तुतः ऐसा ही था। हम सब लपक कर वहाँ पहुँचे। उन कनस्तरों पर ओस की बूँदें अब भी मौजूद थीं और बड़ी संख्या में घोंघे उनसे चिपके हुए थे। ओस की कुछ बूँदें और काफी संख्या में घोंघे, जिन्हें कच्चा चबा लेने से भूख और प्यास दोनों का इलाज हो सकता था, पर जर्गन ने घोंघे खाने से इनकार कर दिया। एक-एक करके उसने सभी कनस्तरों को गौर से देखा। उनमें से एक में पानी भरा हुआ था, पर पानी की सतह पर थोड़ा-सा पैट्रोल भी तैरता हुआ दिखाई दिया। चीफ के आदेश से

(शेष पृष्ठ २११ पर)



हीरे का नेकलेस

अनु.- एच. आर. गाँधी

मिस्टर सर्फ़ ने सुर्ख चमड़े का सूटकेस खोलते हुए बड़े उन्मुक्त नेत्रों से नवागंतुक की ओर देखा और एक हल्के-से झटके के साथ सारी चीजें क़ालीन पर उलट दीं--"कहो मैलाय, इनके बारे में तुम्हारी क्या राय है ?"

मैलाय बड़ा होशियार और अनुभवी जासूस था। उसने अपनी तीक्ष्ण आँखों के सामने बिखरे हुए सिगरेट केस, दो रंगे जूतों, सिगरेट लाइटर, चाँदी के चम्मच, सुनहरी टाई-पिन और सब्ज़ पत्थर की बनी



एक साधारण-से-मामले की तहक़ीक़ात के साथ ही हत्याओं का सिलसिला शुरू हुआ। उस नेकलेस का क्या रहस्य था ? अनीता का क़त्ल किसने किया ? इन जघन्य अपराधों के मूल में प्रेम था या ब्लैकमेल का षड्यन्त्र ?



हुई अर्धनग्न औरतों की नन्हीं-मुन्नी प्रतिमाओं का एक सरसरी तौर पर जायजा लिया और कहा--"मेरे ख्याल में जिस व्यक्ति ने यह चीज़ें एकत्र की हैं, वह चोरी के पागलपन से ग्रस्त है, अर्थात् बग़ैर ज़रूरत छोटी-मोटी चीज़ें चुराता है ....।"

"मेरे लिये यह रहस्योद्घाटन अत्यंत कष्टप्रद है। यह चीजें मेरी मौजूदा बीबी अनीता ने एकत्र की हैं। शादी से पहले वह सैनफ्रांसिस्को में माडल गर्ल थी। पहली मुलाकात ही में हम एक-दूसरे से बहुत प्रभावित हुए और तीन सप्ताह बाद हमने गुप्त विवाह कर लिया।"

"बहुत खूब !"

"हाँ, मेरा ख्याल है अनीता को ब्लैकमेल किया जा रहा है। वह हर सप्ताह बैंक से दस हज़ार डालर निकलवाती है, पर न जाने कहाँ ख़र्च करती है।"

"संभव है, किसी को उसके चोरी के पागलपन का पता चल गया हो और वह उसे ब्लैकमेल कर रहा हो। ख़ैर, मैं देख लूँगा। आप निश्चिन्त रहिये।"

मैलाय ने दफ्तर पहुँचते ही अपनी सेक्रेटरी मिस पाँवला को दैनिक काम-काज के बारे में आवश्यक आदेश दिये, फिर अपने साथियों मिस डीना लोईस, बैनी और क्रिमन से मिला और डैना को मिसेज़ सर्फ की गतिविधियों की निगरानी का आदेश दिया।

उसी रात कोई सवादस बजे मिसेज़ सर्फ़ मैलाय के आफिस में प्रविष्ट हुई और आते ही उस पर बरसने लगी—"यह कहाँ की शराफ़त है, तुमने ख़ामख्वाह मेरे पीछे जासूस लगा रखा है। भला कौन है वह लड़की ?"

मैलाय हैरान था, इसे इतनी जल्दी डीना के बारे में कैसे पता चल गया। वह कुछ कहने ही वाला था कि मिसेज़ सर्फ ने एक हज़ार डालर उसके सामने रख दिये और कहा—"मिस्टर सर्फ़ को मेरी रत्तीभर भी परवाह नहीं। बहुत अच्छा, यदि वह तलाक चाहता है, तो मैं भी हर तरह तैयार बैठी हूँ। मगर उसे इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा।"

वह देर तक इसी तरह की बातें करती रही। मैलाय अधिकतर ख़ामोश रहा। अतः वह तंग आकर उठ खड़ी हुई। मैलाय ने जाते वक्त उसे वे एक हजार डालर शुक्रिया के साथ वापस कर दिये।

आधी रात गये पुलिस हेडक्वार्टर से फ़ोन आया कि लिडबेटर नामी कोई व्यक्ति डीना लोईस का हैण्डबेग लाया है। यह बेग उसे दरिया के किनारे पड़ा हुआ मिला, जहाँ ख़ून के बड़े-बड़े धब्बे मौजूद थे। मैलाय तुरन्त पुलिस के साथ दरिया के किनारे पहुँच गया। ज़रा-सी तलाश के बाद डीना की नग्न लाश पास की झाड़ियों में से मिल गयी।

खोपड़ी में गोली का एक बड़ा-सा छिद्र था, जिसमें से ख़ून निकलकर उसके सफ़ेद चेहरे पर जम गया था।

सुबह छः बजे मैलाय पुलिस हेडक्वार्टर से निकला तो थका हुआ था। सीधा मिस पाँवला के यहाँ पहुंचा, जिसे फ़ोन पर इस दुर्घटना की सूचना पहले ही दे चुका था। उसने बताया--"अभी-अभी मैं मिस्टर सर्फ़ से मिल कर आ रही हूं और बैनी डीना लोईस के घर महत्वपूर्ण काग़ज़ों की तलाश में गया है।"

"मिस्टर सर्फ ने क्या कहा ?" मैलाय ने अत्यंत जिज्ञासायुक्त लहजे में पूछा।

"वह तो बड़ा बोदा निकला। कहने लगा, यदि हमने जासूसी का राज प्रकट कर दिया तो वह समझौता तोड़ देगा, बल्कि हमारे विरुद्ध दावा भी दायर कर देगा। मैंने मिसेज़ सर्फ से मिलने की इच्छा प्रकट की तो उसने यह कह कर टाल दिया कि जलवायु में परिवर्तन के लिये शहर से बाहर चली गयी हैं।"

इतने में बैनी भी आ गया। डीना के कमरे से उसके हाथ की लिखी हुई गुप्त रिपोर्ट मिल गयी थी। उसके साथ ही बहुमूल्य हीरों का एक ख़ूबसूरत नेकलेस भी रखा था। ये दोनों चीज़ें बैनी ने मैलाय के सामने रख दीं। नेकलेस देख कर मैलाय चौंक पड़ा। गतरात्रि जब मिसेज़ सर्फ उसके ऑफ़िस में आयी थी, तो यही नेकलेस उसने पहन रखा था। कम से कम बीस हज़ार डालर का होगा। उसने कुछ सोचते हुए नेकलेस सफ़ में बंद कर दिया और फिर डीना की रिपोर्ट को उचटती हुई नज़रों से देखा। उसने मिसेज़ सर्फ का बड़ी सावधानी से पीछा किया था। सौदा-सुल्फ खरीदते वक्त मिसेज़ सर्फ़ ने कोई चीज़ चुराने को कोशिश नहीं की। हाँ, इस बीच में जार्ज बर्कले नामी एक व्यक्ति उसके साथ रहा। वापसी पर उसने एटवायल क्लब के मैनेजर रैल्फ़ बैंटर से मुलाक़ात की और वापस घर पहुँच गयी।

शाम के वक्त मैलाय फ़ैंगटेन रेस्तराँ पहुँचा तो बैनी और क्रिमन

उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। क्रिमन सुबह लेडेटर से मिल आया था। उसने मैलाय को बताया—"मेरा ख्याल है, मिस्टर लेडेटर क़ातिल से परिचित हैं और उसे ब्लैकमेल करने की कोशिश कर रहा है।"

इतने में बैनी एकाएक बोल उठा—"डीना की एक हमसाथी का कहना है कि कल रात कोई सवा ग्यारह बजे एक औरत साथ वाले कमरे में प्रविष्ट हुई थी। उसके नयन-नकश तो उसे याद नहीं, पर इतना जरूर याद है कि उसने भड़कीला लिवास और जगमगाते हीरों का नेकलेस पहन रखा था। मेरे ख्याल में अनीता ने अपना क़ीमती नेकलेस रिश्वत के तौर पर देक डीना से जासूसी का राज़ उगलवा लिया और फिर उसे कत्ल कर दिया। इन दोनों की बातें सुनकर मैलाय ने क्रिमन को आदेश दिया—"मिस्टर क्रिमन, तुरन्त एटवॉयल क्लब जाकर पता लगाओ, आया अनीता गत रात्रि वहाँ मौजूद थी। कुछ अजीब नहीं, वह अब भी वहीं कहीं छुपी हो।"

डीना की रिपोर्ट की रोशनी में बर्कले के वहाँ भी अनीता की मौजूदगी की संभावना थी। अतः बैनी को उधर भेज कर मैलाय घर जाने के लिये उठ खड़ा हुआ।

बैनी ने बर्कले के मकान पर पहुँच कर दोबारा घंटी बजायी, पर अंदर से कोई उत्तर न मिला। पिछली सीढ़ियों का दरवाज़ा खुला था। उनके ज़रिये चढ़ कर चुपकें से ऊपरी मंज़िल पर पहुँच गया और कमरे की तलाशी लेनी शुरू कर दी। कपड़ों की अलमारी में नीले रंग का सूट देख कर उसके शरीर में कँपकँपी दौड़ गयी। क़त्ल की रात डीना ने यही लिवास पहन रखा था। पास ही मेज़ पर अनीता की एक तस्वीर रखी थी, जिस पर लोईस थियेट्रिकल फ़ोटोग्राफर्स सानफ्रांसिस्को की मुहर अंकित थी। अचानक उसे निचली मंज़िल से खड़खड़ाहट सुनायी दी, रोशनदान से झांककर देखा तो एक अधेड़ावस्था का लम्बे कद, चौड़े चकले सीने और तंग पेशानी वाला आदमी दिखायी दिया। वह मेज़ की दराज़ से कागज़ उलट-पलट कर देख रहा था। यह बर्कले था।

बैनी ने स्कर्ट उठाया और अनीता की तस्वीर बगल में दबा कर ख़ामोशी से पिछले दरवाजे से निकल गया।

रेस्तराँ में मैलाय उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। बैनी ने डीना के कपड़े और अनीता की तस्वीर उसके सामने रख दी और बोला—"

"मालूम होता है, बर्कले ही डीना का क़ातिल है, उसने संभव है, उसे घर में क़त्ल कर वे कपड़े उतार लिये हों और फिर नग्न लाश को कार में डाल कर दरिया के किनारे फेंक दिया हो।"

"हाँ, यह भी संभव है।" मैलाय ने सोचते हुए कहा—"पर अभी कोई राय क़तई क़ायम नहीं की जा सकती। बेहतर है, तुम अभी सानफ्रांसिस्को रवाना हो जाओ और वहाँ से अनीता के अतीत के बारे में तमाम जानकारी एकत्र करके मुझे तुरन्त सूचना दो, ताकि आगे कोई और कार्रवाई की जा सके।"

बातों से फ़ारिग़ हो कर दोनों बाहर जाने के लिये खड़े थे कि बैरे ने सूचना दी—"मिस्टर मैलाय, आपका फ़ोन है।"

मैलाय तेज़ी से काउंटर पर पहुँचा। दूसरी ओर से उसकी सेक्रेटरी मिस पाँवला बोल रही थी। उसने बताया कि लिडमेटर को भी किसी ने क़त्ल कर दिया है। मैलाय ने बुरा-सा मुँह बनाकर रिसीवर रख दिया। उसने सोचा, यह कड़ी भी हाथ से जाती रही।

दिन भर की व्यस्तता से फ़ारिग़ होकर रात एटोयल नाइट क़लब पहुँचा तो वहाँ मिस गैली बोल्स से मुलाक़ात हो गयी। एक केस में मैलाय ने उसकी बहुत मदद की थी। उसके बाद दोनों के सम्बन्ध सुदृढ़ हो गये थे, पर पिछले कुछ मास से उनके बीच कोई मुलाकात न हुई थी। इस तरह अचानक मिल बैठने पर दोनों बड़े ख़ुश हुए। हाल में कई जोड़े नृत्य में लीन थे। संगीत की मधुर धुनें उठ रही थीं और शराब के दौर चल रहे थे। बातें करते हुए मैलाय की नज़र सहसा मुख्य द्वार की ओर उठ गयी। मिसेज़ अनीता सर्फ अंदर प्रविष्ट हो रही थीं। वह तुरन्त उसकी ओर लपका। मैलाय को देखते ही वह क्षण भर के लिये

तो स्तब्ध हो कर रह गयीं। फिर अचानक बल खाकर मुड़ी और ऊपर जाने के लिये सीढ़ियाँ चढ़ने लगीं।

"अनीता, मेरी एक बात सुनो।" मैलाय ने आवाज़ दी।

"यहाँ से चले जाओ। मैं तुम्हारी कोई बात सुनना नहीं चाहती।"

"तुमने अपना बहुमूल्य नेकलेस डीना को क्यों दिया था? मुझे केवल इसका उत्तर चाहिये।"

"मैंने किसी को नेकलेस नहीं दिया, वह चोरी हो गया था।"

होटल से निकल कर मैलाय रात गये तक निरुद्देश्य विभिन्न सड़कों पर घूमता रहा। थकन से चूर हो कर वापस घर पहुँचा तो बरामदे की बत्ती रोशन थी। सीढ़ियाँ चढ़ते वक्त उसने बारूद की विषैली दुर्गन्ध महसूस की। कमरे में क़दम रखा तो हक्का-बक्का रह गया। ·४५ का एक रिवाल्वर क़ालीन पर पड़ा था और सामने कौच पर एक सुनहरी बालों वाली औरत सफ़ेद रेशम का ब्लाउज़ और सुर्ख़ पतलून पहने निश्चेष्ट लेटी हुई थी। उसका दायाँ बाज़ू किसी वृक्ष की टूटी हुई शाखा की तरह लटक रहा था और चेहरा ख़ून से लिथड़ा हुआ था। पास पहुँच कर देखा—वह अनीता थी। अकस्मात सामने दीवार पर एक साया दिखायी पड़ा। वह उसे पकड़ने के लिये लपका। उसी क्षण पीछे से किसी ने लोहे की छड़ उसके सिर पर दे मारी और उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा गया।

सुबह आँख खुली तो खासा दिन निकल आया था। उसका सिर मारे दर्द के फटा जा रहा था। उसकी आँखों के सामने वही ख़ून से लिथड़ा हुआ चेहरा था। शायद रात उसने कोई भयानक सपना देखा था, वह सोचने लगा। परन्तु फिर रात की एक-एक घटना याद आ गयी। उसने घर का कोना-कोना छान मारा, पर लाश कहीं भी दिखायी न ी। जिस व्यक्ति की चोट से वह बेहोश हुआ था, संभवतः वही लाश को उठा कर ले गया था। इतने में क्रिमन एक हौलनाक खबर लेकर पहुंच गया। बैनी को सानफ्रांसिस्को में क़त्ल कर दिया गया था और उसकी

लाश एक गंदे नाले में मिली थी।

क्रिमन को साथ लेकर मैलाय ठीक तीन बज कर बीस मिनट पर सानफ्रांसिस्को पहुँच गया। सबसे पहले वे पुलिस हेडक्वार्टर गये। एक अफ़सर उन्हें मुर्दाखाने में ले गया, जहाँ उन्होंने बैनी की लाश शनाख्त कर ली। वहाँ से उठ कर मैलाय ब्रास एल० सर्कस के मालिक से मिला। उस सर्कस में अनीता किसी ज़माने में नर्तकी के तौर पर काम करती थी। सर्कस के मालिक ने विचित्र बातों को प्रकट किया। उसने बताया—"अनीता, ली कैलर नामक एक व्यक्ति की ब्याहता बीबी है। ली कैलर बला का निशानची है। रिवाल्वर को हवा में उछालकर पकड़ता है और गोली दाग देता है। निशाना कभी ज़रा-सा भी नहीं चूकता।" उसने मैलाय को ली कैलर और अनीता के कई फ़ोटो भी दिये। एक फ़ोटो मिस गैली कोल्स का भी था। उसने अपने होंठों में एक सिगरेट पकड़ रखा था। और ली कैलर उस सिगरेट का निशाना बाँध रहा था। मिस गैली बोल्स की ज़िंदगी का यह रुख़ अभी तक मैलाय की नज़रों से ओझल था। देर तक उसके फ़ोटो को खड़ा घूरता रहा। सर्कस के मालिक की बातों से उन्हें मालूम हुआ कि ये सब टो क्रोईस ने खींचे हैं और उसका ली कैलर से गहरा याराना है।

मैलाय और क्रिमन शाम के वक्त फ़ोटोग्राफ़र की दुकान पर पहुँचे, तो वह अकेला था। उन्होंने जाते ही रिवाल्वर की नली उसके सीने पर रख दी और पूछा—"बताओ, बैनी को किसने कत्ल किया है?"

फ़ोटोग्राफ़र ने हाथ जोड़ दिये और कहा—"बैनी को मैंने और मेरे दोस्त ली कैलर ने क़त्ल किया है, क्योंकि वह उसकी बीबी के राज़ मालूम करना चाहता था।"

मैलाय ने वापस आकर क्रिमन को ली कैलर की तलाश और खोज लगाने पर नियुक्त किया। अगली रात कोई सवा नौ बजे का समय होगा कि उसे क्रिमन का संदेश मिला। वह बड़े उत्साहित लहजे में

कह रहा था—"कैलर इस वक्त बैटलो के पास बैठा है। जल्दी पहुंचो ....जल्दी.....।"

बैटलो के व्यक्तित्व और ख्याति से मैलाय भली प्रकार परिचित था। उसका असल पेशा लाशों का विभिन्न मसाले लगाकर सुरक्षित करना था। रात के पौने दो बजे बैटलो के मकान पर चढ़ा और सीढ़ियों के रास्ते नीचे खुले सहन में पहुँच गया। टार्च जलाकर इर्द-गिर्द का जायज़ा लिया। कहीं किसी आदमी का निशान न था। आख़िर एक कमरे में प्रविष्ट हो गया। यहाँ कोई तीन दर्जन ताबूत रखे थे। उसने एक-एक ताबूत का ढकना उठाकर देखा। एक ताबूत में अनीता की लाश ज्यों की त्यों रखी थी। वही ख़ून में लिथड़ा हुआ चेहरा, वही पेशानी में गहरा छिद्र। ज़ालिम ने चेहरा साफ़ करने का भी कष्ट न किया था। अचानक कदमों की तेज़ चाप के साथ दरवाज़ा खुलने की आवाज़ आयी। मैलाय ने टार्च बुझा दी, लेकिन आने वाला उसे देख चुका था। भेड़िये की तरह छलाँग लगा कर उसने मैलाय की गर्दन दबोच ली और उसे दबाने लगा। मैलाय ने बड़ी मुश्किल से अपनी गर्दन उसकी पकड़ से मुक्त करायी और साथ ही उसकी पसलियों में ऐसा ज़ोरदार मुक्का रसीद किया कि हमलावर लड़खड़ा गया। अँधेरे में दोनों के केवल साये नज़र आ रहे थे। मैलाय की कुछ लातें ही काफ़ी सिद्ध हुईं। मैलाय उसे छोड़कर सीढ़ियों की ओर लपका। उसी क्षण ऊपरी मंज़िल से एक के बाद दूसरी, तीन गोलियाँ चलने की आवाज़ आयी। उसके बाद ज़ोर से किसी ने दरवाज़ा बंद किया और साथ ही क़दमों की तेज़ चाप की आवाज़ सुनायी दी। मैलाय दम साध कर ओट में खड़ा रहा। कुछ क्षण बाद जब दोबारा ख़ामोशी छा गयी तो वह दबे पाँव ऊपर कमरे में पहुँचा। बारूद की बदबू फैली हुई थी। टार्च की रोशनी में उसे सामने बिस्तर पर पड़ा हुआ एक आदमी नज़र आया। उसका सारा जिस्म ख़ून से लथपथ था। मैलाय ने तुरन्त पहचान लिया। यह ली कैलर था। उसके वक्ष में दो बड़े-बड़े ज़ख्म थे और तीसरा

पसलियों के बीच ।

"यह कौन था जिसने गोली का निशाना बनाया ?" मैलाय ने बड़े हौले-से पूछा। ली कैलर के होंठ जरा से कँपकँपाए, पर बावजूद कोशिश के वह कुछ कह न सका। बड़ी कठिनाई से उँगली से आलमारी की ओर संकेत किया। मैलाय ने आलमारी के सेल्फ पर ज़ोर से आजमायी शुरू कर दी। कुछ देर बाद उसके नीचे का तख्त जरा-सा खिसक गया और गहरा छिद्र दिखायी दिया। अचानक उसके कानों में आवाज आयी, कोई कह रहा था--"जैक, नीचे तो कोई नहीं, वह ज़रूर ऊपर होगा।"

मैलाय ने जल्दी से छिद्र में हाथ डालकर इधर-उधर कुछ ढूँढ़ने की कोशिश की। जल्दी ही दो काम की चीजें मिल गयीं। एक स्वचालित पिस्तौल, जिसमें नन्ही-सी दूरबीन लगी हुई थी और दूसरी चमड़े में बंधी हुई नोटबुक। ज्योंही उसने दोनों चीजें जेब में डालीं, किसी ने बड़े जोर से दरवाजा खटखटाया--"दरवाजा खोलो, हम पुलिस हेडक्वार्टर से आये हैं।"

उसने ली कैलर की ओर देखा--उसका रंग हल्दी की तरह पीला पड़ चुका था। आँखें खुली थीं, पर दोनों जबड़े आपस में बुरी तरह जुड़ गये थे। मैलाय ने सामने वाले मकान की ढलवान छत पर छलाँग लगा दी और एक पाईप के सहारे गली में उतर गया और फिर थोड़ी देर बाद वह मिस बोल्स के दरवाजे पर खड़ा था। उस वक्त रात के तीन बजे थे। मिस बोल्स उसके इस असमय आगमन पर नाराज़ हुई। जब मैलाय ने बताया कि ली कैलर गोली का निशाना बन चुका है, तो वह खामोश हो गयी।

--"किसने कत्ल किया है ?" कुछ क्षण बाद मिस बोल्स ने पूछा।

"संभवतः उसी व्यक्ति ने, जो डीना, लिडवेटर और अनीता सर्फ को कत्ल कर चुका है।" मैलाय ने उत्तर दिया और फिर जैसे अचानक उसे कोई बात याद आ गयी। मिस बोल्स की ओर मुँह करके बोला--

"तुमने मुझे आज तक यह क्यों नहीं बताया कि अनीता और उसके पहले पति ली कैलर से तुम्हारी पुरानी जान-पहचान थी ?"

"तुमने पूछा ही कब था ? यदि तुम पूछते तो मैं तुम्हें बता देती।" यह कहकर वह मुस्कराती हुई किचन की ओर से थोड़ी देर बाद कॉफी ले आयी।

"अजीब तमाशा है, ली कैलर ने बैनी को कत्ल किया और आज रात स्वयं ही चलता बना।" मैलाय ने कॉफी का घूंट लेते हुए कहा—"मुझे तो ऐसा लगता है, उसने डीना को कत्ल नहीं किया। मगर फिर कातिल कौन है ? कुछ समझ में नहीं आता।" उसने गहरी साँस ली और सोच में डूब गया। धीरे-धीरे वह सोच से उभरा और बोला—"ली कैलर को कातिल का पता था। उसे कत्ल कर दिया गया। लिडवेटर को इस राज की खबर थी। उसे भी मौत के घाट उतार दिया गया। मेरे ख्याल में तुम भी जरूर कातिल को पहचानती हो, इसलिये यही बेहतर है कि मुझे अभी बता दो, क्योंकि अब अवश्य तुम पर वार करेगा।

"तुम्हें कैसे पता चला कि मुझे डीना के कत्ल का राज मालूम है ?" बोल्स ने पूछा।

"अनीता के कत्ल के बाद ली कैलर और तुम में गाढ़ी छनती रहती है। उसने जरूर जिक्र किया होगा।"

"बेचारा मर गया।" बोल्स ने सर्द आह भर कर कहा—"दरअसल मुझे उससे बेतहाशा मोहब्बत थी, लेकिन अनीता ने बीच में आकर सारा मजा किरकिरा कर दिया। मैंने मिस्टर सर्फ को एक गुमनाम खत लिखा कि अनीता अब भी कैलर की ब्याहता बीबी है, क्योंकि उन दोनों में अभी तक बाकायदा तलाक नहीं हुआ।

"अनीता ने सर्फ को अँधेरे में रख कर बर्कले से मोहब्बत की पेंगें बढ़ाना शुरू कीं। जिस रात वह तुम्हें मिलने आयी, सर्फ उसका पीछा कर रहा था, क्योंकि मेरा खत देखकर वह घर से भाग निकली थी। उसे डर था कि कहीं सर्फ उसे कत्ल न कर दे या करवा दे। अतः उसने डीना से

था कि कहीं सर्फ उसे कत्ल न कर दे या करवा दे। अतः उसने डोना से सहायता के लिये प्रार्थना की और कहा कि वह अपना लिबास उसे दे दे, ताकि वह किसी तरह सर्फ से आँख बचाकर एटविल नाइट क्लब पहुँच जाए। इस सिलसिले में उसने नेकलेस दे दिया। डोना उसकी बातों में आ गयी। नेकलेस ले लिया और टैक्सी में सवार होकर दरिया के किनारे पहुँच गयी, जहाँ अनीता ने उससे दोबारा मिलने का वादा किया था। इसी बीच में सर्फ भी उसके पीछे-पीछे पहुँच गया और उसे अनीता समझ कर गोली मार दी। इत्तिफाक से लिडवेटर को इसकी खबर हो गयी। उसने केवल ब्लैकमेल करने की कोशिश की। सर्फ ने विवशतावश उसे भी मौत के घाट उतार दिया।"

"मिस बोल्स, तुम्हें यह सब-कुछ कैसे मालूम हुआ?" मैलाय ने उसकी ओर जिज्ञासा-भरी नजरों से देखते हुए कहा।

"अनीता ने ली कैलर को एटविल क्लब से एक लम्बा खत लिखा था। बाद में उसने सारी घटना जबानी सुनायी। वह चाहती थी, उसके जरिये सर्फ को ब्लैकमेल करे।"

"तो ली कैलर ने क्या कहा?" मैलाय ने सोचते हुए पूछा।

"उसे तो हर वक्त पैसे की जरूरत रहती थी। अतः वह तुरन्त सहमत हो गया। पर न जाने अनीता ने क्यों अपना इरादा बदल दिया।" थोड़ा रुककर वह फिर बोली—"जानते हो डीना का सूट बर्कले की आलमारी में कैसे पहुँचा? उसे बर्कले की आलमारी में छिपाने वाली भी अनीता ही थी। उस रात अनीता वहाँ उसकी अनुपस्थिति में कपड़े तब्दील करने गयी थी। क्लब में तुम्हारे साथ झड़प के बाद मैनेजर ने अनीता को क्लब से निकाल दिया तो वह सीधी तुम्हारे घर पहुँची, शायद नेकलेस के बारे में कुछ पूछने या बताने। दूसरी ओर सर्फ का ख्याल था कि तुम उसके हर राज से परिचित हो गये हो। अतः वह तुम्हें कत्ल करने के इरादे से तुम्हारे यहाँ पहुँचा। वहाँ अनीता बैठी हुई थी, जिसे उसने तुरन्त मौत के घाट उतार दिया। इतने में ली कैलर भी

अनीता की तलाश में वहाँ पहुँच गया और सर्फ से मुठभेड़ हो गयी। हाथापाई में सर्फ का रिवाल्वर गिर गया, पर वह जान बचा कर निकल जाने में सफल हो गया। ली कैलर का ख्याल था कि वह बड़ी आसानी से सर्फ को ब्लैकमेल कर सकेगा, क्योंकि रिवाल्वर पर उसका नाम अंकित था और वह उसके द्वारा डीना, लिडवेटर और अनीता का काम तमाम कर चुका था। इतने में तुम आ गये। ली कैलर ने तुम्हारे सिर पर लौह छड़ मारी और तुम बेहोश हो गये। उसने तुरन्त अनीता की लाश उठाकर कार में रखी और बैटलो के यहाँ पहुँच गया।"

मिस बोल्स बोलते-बोलते थक गयी और साँस लेने के लिये रुकी और फिर कहने लगी—"कैलर ने सर्फ से सम्पर्क स्थापित किया और माँग की कि वह उसे तुरन्त पाँच लाख डालर अदा करे, वरना उसका रिवाल्वर और अनीता की लाश पुलिस के हवाले कर दी जाएगी।"

"तुम्हारा ख्याल है, सर्फ ने ब्लैकमेलर से छुटकारा पाने के लिये उसको बैटलो के चौबारे में कत्ल कर दिया?"

मिस बोल्स ने हाँ में सिर हिलाया और कॉफी गर्म करने किचन की ओर चल दी। मैलाय टहलते-टहलते उसके शयनागार में प्रविष्ट हो गया। मिस बोल्स तुरन्त उसकी ओर झपटी—"यहाँ क्या है?"

"माफ करना, मुझे अचानक किसी के कदमों की चाप सुनाई दी थी, इसी लिये इधर चला आया।"

यह कहकर उसने खिड़की से पर्दा हटा कर बाहर झाँका। सुबह हो चली थी—"देखो मिस बोल्स, केवल हम दोनों को खबर है कि मिस्टर सर्फ ही कातिल हैं, पर तुम्हारे इस किस्से पर विश्वास कौन करेगा?"

"वाक़ई विश्वास करना जरा मुश्किल है। मैं यदि कैलर की जबानी न सुनती तो स्वयं भी विश्वास न करती!"

"मैं नहीं मानता कि यह सब कुछ तुम्हें कैलर ने बताया है। मिस

बोल्स, मेरे साथ बच्चों-सी बातें न करो।. . .जरा अपना बिस्तार देखो, तुम इस पर पल भर के लिये नहीं लेटीं। तुम्हें खबर है, मेरी दस्तक की आवाज सुनकर तुमने जल्दी में अपने कपड़े वहाँ उतार फेंके ? और यह रहा तुम्हारा जूता. . .और यह देखो खून के धब्बे . . .।"

मिस बोल्स की आँखों में कुछ देर के लिये खौफ़ की परछाइयाँ नजर आयीं, पर उसने शीघ्र ही स्वयं पर काबू पा लिया।

"जाने आज तुम कैसी बहकी-बहकी बातें कर रहे हो।" वह मुँह बिसूरती हुई उठी और ड्राइंग रूम में चली गयी। मेलाय उसका जूता हाथ में लिये उसके पीछे-पीछे पहुँच गया—"मिस्टर सर्फ की जगह यदि तुम्हारा नाम लिख दें तो बात बिलकुल साफ हो जाती है। तुमने हीना को अनीता समझ कर कत्ल किया और लिडवेटर को केवल मात्र इसलिये मौत के घाट उतार दिया कि उसने तुम्हें कपड़े बर्कले के यहाँ छुपाते देखकर राज प्रकट करने की धमकी दी। तुमने अनीता को इस लिये जान से मार दिया कि उसने कभी तुम्हारा महबूब ली कैलर छीन लिया था। तुमने आज रात बैटलो के यहाँ जाकर ली कैलर को भी मौत की नींद सुला दिया क्योंकि. . .।"

"क्या तुम यह सब सोच-समझ कर कह रहे हो ?" उसने बड़ी गंभीरता से पूछा।

"मैं तुम्हारी अदाकारी की दाद देता हूँ। तुम्हारे आँसू, तुम्हारी मुस्कान, सर्फ के बारे सब बातें और तुम्हारा शयनागार तक मेरा पीछा करना, ये सब बहुत खूब हैं। लेकिन मिस बोल्स, जरा यह तो बताओ, तुमने आखिर ली कैलर को क्यों कत्ल किया ?"

"मैंने उसे कत्ल नहीं किया। मैं तो अब भी उससे मोहब्बत करती हूँ। यह काम मिस्टर सर्फ का है।"

"यह तुम पहले ही कह चुकी हो। जानती हो ली कैलर ने एक डायरी रख छोड़ी थी, जो उसने मरने से पहले मेरे हवाले कर दी। तुम्हारा बयान उसमें लिखित बातों से कोई मेल नहीं रखता। उसमें

लिखा है कि अनीता तुमसे अत्यंत भयभीत थी और वह जानती थी कि मात्र उसकी वजह से तुम हत्याओं पर उतर आई हो। तुम्हारे जूते की रक्त-रंजित एड़ी इसकी गवाह है। अब साफ-साफ बताओ, तुमने लो कैलर को क्यों कत्ल किया है?"

"अच्छा, उस हरामी ने डायरी रख छोड़ी थी?" मिस बोल्स की आवाज काँप रही थी और रंग फ़क़ हो गया था। उसने स्वयं पर काबू पाने के लिये सिगरेट सुलगाया और लम्बे-लम्बे कश लगा कर धुएं के मरगूले बनाने लगी।

"बताओ भी, आखिर तुमने कैलर को क्यों कत्ल किया?" मैलाय का लहजा ज़रूरत से ज्यादा कठोर था।

मिस बोल्स ने मुस्कराने की कोशिश की, पर ख़ौफ़ की ज्यादती की वजह से उसके सुंदर चेहरे पर तारीकियाँ नाचने लगीं।

"मैंने सोचा, जहाँ इतने कत्ल करके बच निकली हूँ, वहाँ एक और सही। हाँ, डीना का मुझे अत्यंत दुख है। तुम भी उसे चाँदनी रात में अनीता के कपड़े पहने हुए देखते तो ठीक से न पहचान सकते?" बातें करते-करते उसने अचानक हाथ में पकड़ी हुई काफी की प्याली जोर से मैलाय के मुँह पर दे मारी। मैलाय आँखें मलते हुए उसकी ओर लपका तो मिस बोल्स उसका स्वचालित रिवाल्वर तान कर खड़ी हो गयी।

"खबरदार जो कदम आगे बढ़ाया। दीवार की ओर मुँह करके खड़े हो जाओ, वरना तीनों गोलियाँ तुम्हारे वक्ष के पार हो जाएँगी।"

मैलाय ने आदेश का पालन किया। उसका इरादा था, मिस बोल्स को बातों में लगा कर उससे रिवाल्वर छीन लेगा, पर वह भी सावधान थी। मैलाय दम साधे सामने रखे हुए ड्रेसिंग-टेबल के आईने में उसकी तमाम गतिविधियाँ देखता रहा। मिस बोल्स रिवाल्वर ताने उल्टे कदमों से चलती हुई ड्योढ़ी की ओर बढ़ रही थी। अचानक वह एक छोटी-सी मेज से टकरा गयी। मैलाय ने स्वर्ण अवसर जानकर तुरन्त

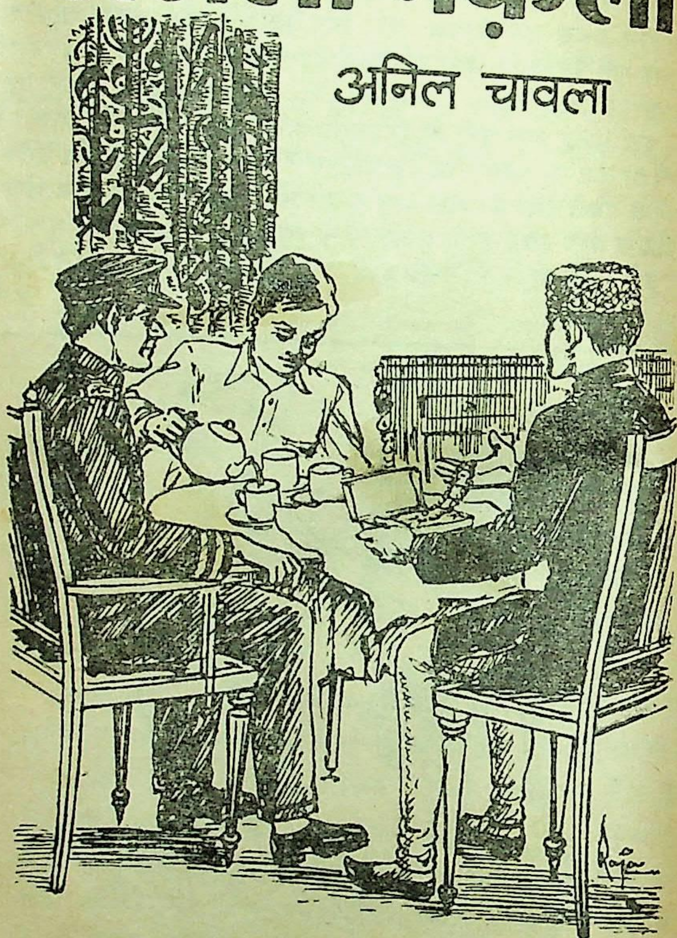
छलाँग लगा दी, पर इतनी देर में वह सँभल चुकी थी। उसने तुरन्त ट्रिगर दबा दिया। धायँ-धायँ-धायँ। तीन आवाजें आयीं। रिवाल्वर की चमक से उसकी आँखें चुँधिया गयीं, पर अप्रत्याशित तौर पर उसे एक गोली भी न लगी। उसके आश्चर्य की कोई सीमा न रही, जब उसने देखा मिस बोल्स धम से फर्श पर गिर पड़ी। उसके वक्ष से खून का फव्वारा फूट निकला। यह परिस्थिति उसकी समझ से परे थी। उसने रिवाल्वर उठाकर देखा। उसकी नली से अभी तक धुआँ निकल रहा था। कुछ मिनट तक गौर से रिवाल्वर का जायजा लेने के बाद वह मामले की तक तह पहुँच गया। रिवाल्वर की बनावट ऐसी थी कि उसको चलाने से गोली पीछे की ओर वार करती थी, जिससे चलाने वाला स्वयं ही मौत के घाट उतर जाता। मैलाथ के खुश्क होंठों पर विषैली मुस्कान प्रकट हुई—ली कैलर ने मरते-मरते उससे कितना गंभीर उपहास किया था। ●●



"झंडा दिवस की आमदनी का हिसाब तो दीजिए"

असली नक़ली

अनिल चावला



प्रोफेसर अब्दुल लतीफ दिल्ली से अलीगढ़ में साहित्यकारों के सम्मेलन में भाग लेने आए थे। सम्मेलन के समाप्त हो जाने पर सभी लोग अपने-अपने नगरों को लौट गए, लेकिन प्रोफेसर लतीफ अपने एक रिश्तेदार के घर में तीन दिन टिके रहे। गाड़ी के इन्तजार में वह अलीगढ़ के स्टेशन पर खड़े थे। घड़ी पर नजर डालने से पता चला कि गाड़ी आने में पन्द्रह-बीस मिनट बाकी थे। उन्होंने अपने सामान के निकट बैठे कुली को सावधान किया और खुद समय काटने के लिए व्हीलर के स्टाल पर चले गए।



प्रोफेसर अब्दुल लतीफ जैसे साहित्यकार किसी हसीन औरत का
कहना मानकर परोपकार के लिये तैयार हो जाते हैं तो
एक षड्यन्त्र की शुरुआत हो जाती है। पढ़िये
एक ऐसे बेशकीमती हार गायब होने की
कहानी, जिसका आज तक पता
नहीं लग सका।



उनकी उम्र बत्तीस वर्ष के लगभग होगी। अभी तक शादी नहीं की थी। दिल्ली यूनिवर्सिटी में लेक्चरर थे, लेकिन लोग उन्हें प्रोफेसर ही कहते थे। साहित्य से उनकी गहरी दिलचस्पी थी, और उनके आलोचनात्मक लेख अक्सर पत्रिकाओं में छपते रहते थे।

एक पत्रिका के पन्ने उलटते-पलटते उन्हें लगा, जैसे एक बुर्कापोश औरत स्टाल के दूसरे सिरे पर खड़ी उनकी ओर देख रही है। शादी से पहले लगभग हर मर्द बड़ा रोमांटिक होता है। प्रोफेसर साहब के मन में भी लड्डू फूटने लगे। चुनांचे वह खिसक कर उस बुर्कापोश के

निकट चले गए। चेहरे पर पड़ी नकाब का कपड़ा इतना बारीक था कि उसमें से हसीन चेहरे की झलक साफ दिखाई दे रही थी।

औरत ने झट से मुँह दूसरी ओर फेर लिया। प्रोफ़ेसर साहब कुछ देर तो ज्यों-के-त्यों खड़े रहे, लेकिन फिर इस विचार से कि कहीं चप्पलबाजी न शुरू हो जाए, वह वहाँ से टल गए।

वह धीरे-धीरे प्लेटफार्म पर टहल रहे थे तो उन्हें महसूस होने लगा कि यह चेहरा वह पहले भी कहीं देख चुके थे। काफी सोच-विचार करने पर भी कुछ याद नहीं आया। निश्चय ही यह उनका वहम है। मर्द को हर हसीन चेहरा जाना-पहचाना सा लगता है।

टहलते-टहलते वह भीड़-भाड़ से कुछ परे निकल गए। सामान के पास कुली बैठा था, इसलिए वह निश्चिन्त थे। इतने में ही उनके कान में आवाज आई 'सुनिए।'

वह चौंक पड़े। आवाज़ जनाना थी। उन्होंने मुड़ कर देखा तो उनके सामने वही बुर्कापोश औरत खड़ी थी। औरत ने नकाब पीछे को उलट दी तो उसके जगमगाते हुस्न से प्रोफ़ेसर साहब की आँखें चौंधिया गईं।

उस चेहरे को बिल्कुल स्पष्ट रूप में देख कर उन्हें विश्वास होने लगा कि निश्चय ही उन्होंने उसे कहीं देखा है।

औरत बोली––"शायद आप मुझे पहचान नहीं पाए।"

"आप ठीक कहती हैं। लेकिन मुझे बार-बार यही ख्याल आ रहा था कि मैंने आपको कहीं पर देखा है।"

"खुदा का शुक्र है कि आप मुझे अजनबी नहीं समझते। अभी एक पल में आपको याद आ जाएगा कि आपने मुझे कहाँ देखा था। आप अलीगढ़ में नवाब रहमत अली की कोठी में तो आ चुके हैं न?"

"जी हाँ।"

"अब जरा ध्यान से सोचिए.. आपने मुझे वहीं देखा था।"

नवाब रहमत अली लखनऊ के रहने वाले थे। नवाबी तो छिन गई

और पहले वाले ठाट-बाट भी न रह गए, तो नवाब साहब ने लखनऊ को छोड़ देना ही उचत समझा। पिछले छः-सात वर्षों से वह अलीगढ़ में थे। धन-सम्पत्ति न रही, लेकिन बोलचाल का अन्दाज नवाबों वाला ही रहा। छः महीने पहले उनका इन्तकाल हो गया। पुराने जमाने के बुजुर्ग थे, और उनकी मृत्यु के साथ वह नवाबी बातें भी खत्म हो गईं। प्रोफेसर साहब के उनसे खानदानी सम्बन्ध थे। उनकी बेगम अभी जिन्दा थी, और यह नौजवान औरत उन्हीं बेगम साहबा की खानदानी कनीज़, अर्थात् दासी थी। कनीज़ होने पर भी उसने शहजादियों जैसा हुस्न पाया था। बूढ़ी बेगम साहबा का व्यवहार उससे नौकरानियों जैसा नहीं था। बल्कि लगभग बेटियों जैसा था।

प्रोफेसर साहब बोले, "हाँ, याद आया। लेकिन यह दो वर्ष पहले की बात है। जभी तो मैं सोच में डूब गया कि तुम्हें आखिर कहाँ देखा था। . . .हाँ तो, कोई खास बात है क्या? कुछ परेशान-सी नजर आती हो।"

"आप ठीक समझे। परेशानी तो है ही। बात यह है कि दिल्ली में बेगम साहबा की बेटी रहती हैं। आज उनकी दस साल की बच्ची का जन्म-दिन है। कल रात बेगम साहबा किसी काम से लखनऊ चली गईं। जाने से पहले उन्होंने अपनी बेटी के नाम एक बन्द लिफाफा और एक छोटा-सा पैकेट दिया। वह दिल्ली में अपनी नतिनी के जन्म दिन पर पहुँच नहीं सकी थीं, इसलिए उन्होंने अपनी बेटी के नाम चिट्ठी लिख दी और नतिनी के लिए एक तोहफा पैकेट में बन्द कर दिया। दरअसल बेगम साहबा का दिल्ली जाने का पक्का इरादा था। अचानक कल रात उन्हें लखनऊ जाना पड़ गया। पार्सल के जरिए यह तोहफा पहुँचने की गुंजाइश नहीं थी। उन्होंने मुझसे कहा कि घर में काम करने वाले बारह साल के लड़के कल्लू को साथ लेकर मैं खुद दिल्ली चली जाऊँ. . ."

"कल्लू कहाँ है?"

"वह स्टेशन के बाहर खड़ा पकौड़ी खा रहा है। आता ही होगा मगर आपने यह नहीं पूछा कि मैंने यह सारी बात आपको सुनाई क्यों?"

प्रोफेसर साहब शर्मा गए, और बोले, "वाकई, यह मेरी भूल थी..."

"क्या बताऊँ, मैं अजीब मुसीबत में फँस गई हूँ।"

प्रोफेसर साहब ने अपने स्वर में ज़रूरत से कुछ ज्यादा सहानुभूति भरते हुए कहा "ओ हो! यह जान कर तो मुझे बड़ा दुःख हुआ है। क्या मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकता हूँ?"

नौजवान औरत की आँखें झुक गईं, और प्रोफेसर साहब को लगा कि मन की बात कहने में उसे कुछ संकोच हो रहा है। उनके दिल में हमदर्दी उभड़ आई, बोले, "अरे! मुझे तो तुम्हारा नाम भी नहीं याद रह गया..."

"ज़रीना!"

"ओह! ज़रीना! अब याद आया।" वस्तवमें प्रोफेसर साहब को कुछ याद नहीं आया था, लेकिन उन्होंने बात बनाने को ये शब्द कह दिए। फिर बोले, "तो ज़रीना, जो बात है, सो साफ-साफ कह दो। ऐसा न हो कि गाड़ी आ जाए और तुम कुछ कह भी न पाओ।"

हसीना ने बड़ी मुश्किल से अपनी पलकें ऊपर उठाते हुए कहा, "मैं उलझन में पड़ गई हूँ, क्योंकि मैं दिल्ली नहीं जा सकती। कोई ऐसी बात हो गई है..."

"आखिर ऐसी क्या बात हो गई है?"

ज़रीना के खूबसूरत गाल और भी सुर्ख हो गए, वह हिचकिचाते हुए बोली, "अचानक ही मेरा मंगेतर यहाँ आ गया है...अगर बेगम साहबा लखनऊ न चली गई होतीं, तो मुझे बड़ी आसानी से छुट्टी मिल जाती। मगर अब..."

"मैं समझ गया। तुम चाहती हो कि यह उपहार मैं दिल्ली ले जाऊं और बेगम साहबा की नतिनी तक पहुँचा दूँ।"

"आपको खुद उनके घर जाने की तकलीफ नहीं उठानी पड़ेगी। आप दिल्ली पहुँच कर अपने बंगले से उनको टेलीफोन कर दीजिएगा। उनका एक पुराना भरोसे का नौकर है, रशीद, वही आपके बँगले पर आकर पैकेट ले जाएगा। दरअसल वह ड्राइवर है, खुद ही कार में चला आएगा।"

प्रोफेसर साहब सारी कहानी अच्छी तरह समझ गए। जरीना जरूर किसी से इश्क करती होगी। मालूम होता है कि उसका प्रेमी उससे मिलने आ गया है। उसने झूठ-मूठ उसे मंगेतर कह दिया है, ताकि मेरे सामने उसकी पोजीशन खराब न होने पाए।

हसीना के प्रति प्रोफेसर साहब के दिल में हमदर्दी पैदा हो जाना स्वाभाविक ही था। बोले, "यह काम तो बड़ी आसानी से हो सकता है।"

यह सुन कर जरीना का चेहरा खिल उठा, और वह पैकेट और लिफाफे में बन्द चिट्ठी प्रोफेसर साहब के हवाले करती हुई बोली, "समझ में नहीं आता कि आपका शुक्रिया कैसे अदा करूँ। मैं स्टेशन तक चली तो आई, लेकिन मन बड़ा बोझिल हो रहा था। आपको देखा तो मुझे यह तरकीब सूझी। बड़ी झिझक हो रही थी। इस बात का भी डर था कि कहीं आप इन्कार न कर दें।"

"वाह! यह भी अच्छी कही। भला इतना-सा काम करने में मुझे क्या एतराज हो सकता है।"

प्रोफेसर साहब ने बन्द लिफाफे पर नजर डाली। उस पर बेगम साहबा की बेटी फातिमा बेगम का नाम लिखा हुआ था। वह बेगम साहबा की लिखावट को भी पहचानते थे। यह देख कर और भी तसल्ली हो गई कि यह बेगम साहबा की ही लिखावट थी।

हसीन ज़रीना बार-बार शुक्रिया अदा किए जा रही थी। प्रोफेसर साहब फातिमा बेगम का टेलीफोन नम्बर डाइरेक्टरी में भी देख सकते थे, लेकिन हसीन ज़रीना को कुछ देर तक और देखने को मन हो रहा था। उन्होंने उससे पूछ कर अपनी डायरी में फातिमा बेगम का

टेलीफोन नम्बर भी लिख लिया।

इतने में रेलगाड़ी आते देख कर प्लेटफार्म पर हलचल-सी मच गई। प्रोफेसर साहब कुली की ओर लपके, और जरीना उनसे आदाब-अर्ज कर स्टेशन के बाहर की ओर चल दी।

रास्ते भर प्रोफेसर साहब की आँखों के आगे जरीना का प्यारा-प्यारा चेहरा घूमता रहा। स्टेशन पर उतर कर वह करोलबाग को चले गए, जहाँ उनका बँगला था। फातिमा बेगम निजामुद्दीन में रहती थी। दोनों जगहों के बीच काफी लम्बा फासला था।

बँगले में पहुँच कर उन्होंने सबसे पहले उस पैकेट को लोहे की आलमारी में रखा, और फिर फातिमा बेगम को टेलीफोन किया। उधर से टेलीफोन किसी लड़की ने उठाया। प्रोफेसर साहब ने पूछा, "हलो! कौन बोल रहा है?"

बारीक-सी आवाज सुनाई दी, "जी, मैं सुरैया बोल रही हूँ।"

"क्या फातिमा बेगम जी घर पर हैं?"

"जी नहीं, वह बाजार गई हैं।"

"क्या तुम उनकी बेटी हो?"

"जी हाँ।"

"तो देखो बेटी, अरे हाँ! यह तो बताओ कि आज तुम्हारे घर में किसका जन्म-दिन मनाया जा रहा है?"

"जी, मेरा।"

"वाह! मुबारक हो!"

"थैंक्यू!"

"देखो बेटी, सुरैया! मैं आज ही अलीगढ़ से आया हूँ। तुम्हारे लिए तुम्हारी नानी जी ने एक तोहफा मेरे हाथ भेजा है।"

सुरैया बीच में ही बात काट कर बोली, "तोहफा! बहुत-बहुत शुक्रिया...तो क्या नानी साहबा नहीं आ रही हैं?"

"वह आने को तैयार थीं, लेकिन ज़रूरी काम की वजह से उन्हें

लखनऊ जाना पड़ा। आज शाम मैं खुद भी तुम्हारे यहाँ नहीं आ सकूँगा। इसलिए बेहतर यह रहेगा कि तुम अपने ड्राइवर को भेज कर अपना तोहफ़ा मँगा लो।"

"बहुत अच्छा जी...शाम छः बजे ड्राइवर आपके यहाँ आ जाएगा।"

"वेरी गुड...एक बार फिर मुबारकबाद।"

"बहुत-बहुत शुक्रिया!"

"अरे, हाँ बेटी, मेरा पता नोट कर लो..."

प्रोफ़ेसर साहब ने टेलीफोन पर बोल कर अपना पता लिखना दिया।

इस काम से फुर्सत पाकर प्रोफ़ेसर साहब पिछले कुछ दिनों की आई हुई डाक को देखने लगे और ज़रूरी पत्रों के उत्तर भी लिखने लगे।

शाम के पाँच बजे प्रोफ़ेसर साहब ने फुर्सत पाई। नौकर उनके सामने टेबिल पर नाश्ता और चाय रख गया। उन्होंने चाय का प्याला बनाया ही था कि खिड़की से अपने फाटक पर उनकी नजर पड़ी। उस समय फाटक में से दो आदमी भीतर आ रहे थे। एक तो मोटा-ताजा और सूटेड-बूटेड था, और दूसरा दुबला-पतला और लम्बा-सा था।

उन्होंने सोचा कि कहीं फातिमा बेगम का ड्राइवर तो नहीं आ पहुँचा। मगर उसे तो छः बजे तक आना था, और अभी पाँच बज कर दस मिनट हुए थे।

इतने में नौकर ने आकर इत्तला दी कि सी० आई० डी० के इंसपेक्टर आए हैं और उनसे फौरन मिलना चाहते हैं।

प्रोफ़ेसर साहब कुछ परेशान-से हो गए, और खुद उठ कर दरवाजे तक गए।

उस मोटे सूटेड-बूटेड आदमी ने अपनी जेब में से अपना आइडेन्टिटी कार्ड यानी 'जान-पहचान' का कार्ड निकाल कर प्रोफ़ेसर साहब को दिखाते हुए कहा, "माफ कीजिए, मैंने आपको बेवक्त परेशान किया।"

"जी, कोई बात नहीं। अन्दर तशरीफ ले आइए।"

मोटा आदमी अपनी पैन्ट की क्रीज़ को चुटकी में थाम कर सोफे में धँस गया। दुबले-पतले आदमी ने अचकन और चूड़ीदार पैजामा पहन रखा था, वह भी टाँग पर टाँग रख कर एक आराम-कुर्सी पर बैठ गाया।

प्रोफेसर साहब ने पूछा, "कहिए, कैसे आना हुआ आपका?"

मोटा आदमी बड़ा ही सभ्य दिखाई देता था, मुस्करा कर बोला, "क्या आप लखनऊ के स्वर्गीय नवाब रहमत अली की विधवा बड़ी बेगम साहबा को जानते है?"

"जी हाँ, जान-पहचान तो है।"

"आप आज ही अलीगढ़ से लौटे हैं?"

प्रोफेसर साहब को बड़ा अजीब लगा कि इन्सपेक्टर बड़ी बेगम से एकदम अलीगढ़ के जिक्र पर उतर आया। जवाब दिया, "जी हाँ, क्या कोई खास बात है?"

अब इन्सपेक्टर ने तीसरा प्रश्न जड़ दिया, "क्या आपको अलीगढ़ के स्टेशन पर किसी नौजवान औरत ने एक पैकेट भी दिया था?"

अब तो प्रोफेसर साहब को कुछ परेशानी होने लगी, "जी हाँ, यह बात भी ठीक है।"

इन्सपेक्टर ने उनके चेहरे पर अपनी छोटी-छोटी आँखें गाड़ते हुए पूछा, "आप जानते हैं कि उस पैकेट में है क्या?"

"मैं तो इतना ही जानता हूँ कि उस पैकेट में बड़ी बेगम साहबा ने अपनी नतिनी सुरैया को उसके जन्म-दिन का तोहफा भेजा है।"

इन्सपेक्टर के होंठों पर अजीब-सी मुस्कराहट फैल गई, सपाट स्वर में बोला, "उसमें तोहफा वगैरह कुछ नहीं है, उसमें बड़ी बेगम का साठ हजार रुपये का हार है।"

"हार!" प्रोफेसर साहब मुँह फाड़ कर बेअख्तियार ही बोल उठे।

"जी हाँ, वह भी चोरी का।"

प्रोफेसर साहब के हाथ-पाँव फूल गए, "मैं आपको यकीन दिलाता हूँ, इन्सपेक्टर साहब, मुझे बिल्कुल भी पता नहीं कि वह हार चोरी का है। मुझे तो यह भी नहीं मालूम था कि उसमें हार है भी या नहीं।"

इन्सपेक्टर ने सिर हिलाते हुए कहा, "मैं आपकी इस बात को स्वीकार करता हूँ। आपको मालूम होना चाहिए कि उस हार में बीस पुखराज हैं। एक पुखराज की कीमत तीन हजार रुपये हैं। मगर बेगम साहबा ने हार सस्ते ज़माने में खरीदा है। आजकल उसकी कीमत दुगुनी हो गई हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।"

"माई गॉड! . . .इसका मतलब यह है कि उस नौकरानी ने ही बड़ी बेगम का हार गायब कर दिया। लेकिन वह तो उनकी खानदानी नौकरानी है। मेरे ख्याल में उसकी माँ भी बड़ी बेगम साहबा के यहाँ ही नौकर थी।"

"यह सब ठीक है, लेकिन मालूम होता है कि यह लड़की, ज़रीना, किसी के प्रेम में फँस गई है। उसी ने इसको चोरी करने को आमादा किया होगा।"

अब तो प्रोफेसर साहब ने आरम्भ से अन्त तक सारी कहानी कह सुनाई, और यह भी बता दिया कि फातिमा बेगम का ड्राइवर रशीद यह पैकेट लेने के लिए छः बजे आने वाला है।

इन्सपेक्टर ने अपने बाएँ हाथ को दाएँ हाथ से दबाते हुए कहा, "लगता है कि यह रशीद भी ज़रीना और उसके प्रेमी के साथ मिला हुआ है। कोई बात नहीं, हम यहीं पर रशीद के आने का इन्तजार करेंगे। वह पुलिस के चंगुल से नहीं बच सकता।

प्रोफेसर साहब सिर हिलाते हुए बोले, "बड़ी अजीब बात है!"

"खैर वह सब तो होता रहेगा। आप जरा वह पैकेट यहाँ ले आइए।"

प्रोफेसर साहब जल्दी से उठे और लोहे की आलमारी से पैकेट लाकर इन्सपेक्टर के सामने तिपाई पर रख दिया, और बोले, "यह लिफाफे

में बंद चिट्ठी है, जो बड़ी बेगम ने अपनी बेटी के नाम लिखी थी। यह पैकेट है, जिसके ऊपर बड़ी बेग ने लिखा है---नन्ही सुरैया को जन्म-दिन मुबारक हो---"

इन्सपेक्टर ने जेब में से आतशी शीशा निकाला, जिससे छोटी चीज बड़ी नजर आने लगती है। उस शीशे के द्वारा उसने लिफाफे और पैकेट पर लिखे अक्षरों का गौर से मुआइना करने के बाद कहा, "प्रोफेसर साहब, मैं बड़ी बेगम साहबा की लिखावट तो नहीं पहचानता, फिर भी इतना मैं दावे से कह सकता हूँ कि यह लिखावट उनकी नहीं है। कारण यह है कि अक्षरों की लकीरें कुछ टेढ़ी-मेढ़ी सी हैं, जैसे लिखने वाले का हाथ लिखते समय काँप रहा हो।"

प्रोफेसर साहब चक्कर में पड़ गए, क्योंकि वह कह चुके थे कि वह बड़ी बेगम साहबा की लिखावट पहचानते हैं।

इन्सपेक्टर ने फिर कहा, "आज सुबह ही बेगम साहबा के हार की चोरी का पता चला। हाँ, आपको यह भी बता दूँ कि बेगम साहबा अलीगढ़ में ही हैं। जरीना का यह कहना बिलकुल गलत है कि वह लखनऊ चली गई है। यह बात भी गलत है कि उन्होंने जरीना के द्वारा अपनी नतिनी को तोहफा भेजा है। वह स्वयं दिल्ली आना चाहती थीं, लेकिन हार चोरी होने के कारण वह इतनी परेशान हुईं कि दिल्ली आने का प्रोग्राम ही स्थगित हो गया। खुफिया पुलिस को जरीना पर शक हुआ, क्योंकि वह सुबह से गायब थी। जब जरीना आपको यह पैकेट दे रही थी तो खुफिया पुलिस का आदमी कुछ दूरी पर खड़ा यह सब कुछ देख रहा था। अगर पुलिस चाहती तो उसी मौके पर हस्पक्षेप कर सकती थी। लेकिन पुलिस यह जानना चाहती थी कि इस साजिश में और कौन-कौन है। सी० आई० डी० के आदमी को यह भी पता चल गया कि आप प्रोफेसर हैं और दिल्ली में रहते हैं। आखिर आप मशहूर आदमी हैं।"

प्रोफेसर साहब का चेहरा पीला पड़ गया, और होंठ सूख गए।

इन्सपेक्टर ने फिर कहना शुरू किया, "अलीगढ़ की खुफिया पुलिस ने दिल्ली की खुफिया पुलिस को फोन किया, और मुझे आपके यहाँ आना पड़ा।"

प्रोफेसर साहब ने भरी हुई आवाज में कहा, "मुझे उम्मीद है कि सी० आई० डी० को कम-से-कम मुझ पर कोई शक नहीं। मैंने तो जो कुछ हुआ, साफ-साफ बता दिया।"

इन्सपेक्टर कुछ नहीं बोला। उसने धीरे-धीरे पैकेट खोल डाला। सचमुच उसमें पुखराज का हार था। इन्सपेक्टर बोल उठा, "देखिए, पैकेट में से हार ही निकला न...बीस दाने होने चाहिए पुखराज के --हाँ, बीस ही तो हैं।"

प्रोफेसर साहब फटी-फटी आँखों से उस कीमती हार को देख रहे थे। कैसे दमकते हुए पुखराज थे।

इन्सपेक्टर ने वह हार अपने साथी की ओर बढ़ाते हुए कहा, "जरा आप इनकी जाँच कीजिए..."

अचकन वाले आदमी ने हार अपने हाथ में लिया तो प्रोफेसर साहब बोले, "इन्सपेक्टर साहब, एक-एक कप चाय पीजिए।"

इन्सपेक्टर के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना प्रोफेसर साहब प्यालों में चाय उँड़ेलने लगे।

एकाएक अचकन वाला आदमी बोला, "इन्सपेक्टर साहब, यह असली हार नहीं है। यह तो केवल काँच के टुकड़े हैं..."

इन्सपेक्टर गला फाड़ कर बोल उठा, "क्या कहते हैं आप?"

"ठीक ही तो कह रहा हूँ। मैंने इनकी अच्छी तरह जाँच कर ली है।"

"तो फिर असली हार कहाँ गया?" यह कहते इन्सपेक्टर ने पल भर को प्रोफेसर साहब पर आँखें गाड़ दीं और पूछा, "आपने इस पैकेट को खोला तो नहीं था?"

प्रोफेसर साहब बौखला उठे, उनके कण्ठ से बड़ा अजीब-सा स्वर

निकला, "भला मुझे इसको खोलने की क्या जरूरत थी। मेरी नजर में तो यह किसी की अमानत थी। मैं अमानत में खयानत नहीं कर सकता था।"

इन्सपेक्टर ने फिर कोई जवाब नहीं दिया और आतशी शीशे से पैकेट को बड़े गौर से देखने लगा।

प्रोफ़ेसर साहब बोले, "यह पैकेट बहुत अच्छी तरह बंद था, और इस पर लाख की मोहरें भी लगी थीं।"

इन्सपेक्टर ने कहा, "लाख वाली मोहरों की बात भी ठीक है, लेकिन इसके साथ यह बात भी ठीक है कि एक बार यह पैकेट जरूर खोला गया था, क्योंकि इस पर पहले की लगी लाख के चिन्ह खुरचने के बाद दूसरी बार लाख की मोहरें लगाई गई हैं।"

अब प्रोफेसर साहब इतने सहम गए कि बेअख्तियार ही बोल उठे, "माफ कीजिए, लगता है कि आप मुझ पर इल्जाम लगा रहे हैं कि इस चोरी में मेरा भी कोई हाथ है। मैं आपको सावधान कर देना चाहता हूँ कि मेरे भी बड़ों-बड़ों से सम्बन्ध हैं। आप मुझे इस तरह घसीट नहीं सकते।"

इंसपेक्टर ने प्रोफेसर साहब की ओर चुभती नजरों से देखते हुए कहा, "आप मुझे एक तरह से धमकी दे रहे हैं। मैं आप से केवल इतना ही कहूँगा कि मैं कानून की सीमा के भीतर रह कर जो आवश्यक होगा, सो निश्चय करूँगा। कानून बड़े-छोटे में तमीज नहीं करता है।"

इधर यह गर्मा-गर्मी हुई, उधर टेलीफोन की घन्टी बजी। प्रोफेसर साहब उठ कर टेलीफोन के पास गए, चोंगा उठाया तो दूसरी ओर से आवाज आई, "यह सी० आई० डी० का बड़ा दफ्तर है। क्या सी० आई० डी० इंसपेक्टर जगमोहन मौजूद हैं? अगर हों तो उन्हें टेलीफोन पर बुला दीजिए।"

प्रोफ़ेसर साहब ने इंसपेक्टर की ओर देखते हुए कहा, "आपका टेलीफोन है।"

इंसपेक्टर दो-तीन मिनट तक टेलीफोन पर बातें करता रहा। जब उसने टेलीफोन बन्द किया तो उसका चेहरा खिल उठा था। बोला, "प्रोफेसर साहब, खुशखबरी सुनिए। अलीगढ़ से खबर आई है कि असली हार मिल गया है। लीजिए झंझट खत्म हुआ।"

यह सुन कर प्रोफेसर साहब के सिर से मानो भारी बोझ उतर गया। मुस्करा कर बोले, "इंसपेक्टर साहब, कम-से-कम चाय का प्याला तो खत्म कर दीजिए।"

"ज़रूर! हाँ तो प्रोफेसर साहब, अब तो फातिमा बेगम जी के ड्राइवर का इन्तजार करने की भी ज़रूरत नहीं है।"

"कहिए तो मैं उन्हें टेलीफोन पर कह दूँ कि वह ड्राइवर न भेजें... लेकिन वह जाली हार?"

"उस हार को तो अभी आप अपने पास ही रखिए। बाद की कार्यवाही में जब हमें हार की ज़रूरत पड़ेगी, हम आपसे ले जायेंगे। रही रशीद की बात, तो जो आप चाहें सो करें।"

जल्दी-जल्दी चाय खत्म करके वे दोनों उठे और प्रोफेसर साहब से विदा हो गए।

उनके जाते ही प्रोफेसर साहब ने फातिमा बेगम का नम्बर मिलाया और बोले, "हलो! क्या फातिमा बेगम जी हैं?"

"मैं ही बोल रही हूँ।"

"मैं अब्दुल लतीफ बोल रहा हूँ। मैंने पहले भी टेलीफोन किया था।"

"जी हाँ, सुरैया ने बताया था।"

"अब मैं यह कहना चाहता हूँ कि आप अपने ड्राइवर रशीद को तोहफा लेने के लिए न भेजिएगा। मेरे पास कोई तोहफा नहीं है। यहाँ तो मामला ही दूसरा है। मेरे पास पुखराज का जाली हार है।"

"क्या कहा? पुखराज का हार तो अम्मी का भी था। उन्होंने टेलीफोन पर आज सुबह ही इत्तला दी थी कि वह हार गुम हो गया है।

"आपको यह जान कर खुशी होगी कि वह हार मिल गया है। मुझे सी० आई० डी० के इंसपेक्टर ने खुद यह बात बताई।"

"ओह! यह तो बहुत अच्छी खुशखबरी सुनाई आपने...लेकिन यह सब हुआ कैसे?"

"जरा लम्बी कहानी है। अगर कल सुबह आपको फुर्सत हो तो मैं खुद आकर सारा किस्सा सुनाऊँ।"

"जरूर आइए। बल्कि कल सुबह का नाश्ता भी यहीं पर कीजिएगा।"

"थैंक्यू।"

टेलीफोन बन्द करके प्रोफेसर साहब ने सोचा कि चलिए अब फातिमा बेगम से भी गहरे ताल्लुकात हो जायेंगे। जब इन्हें मालूम होगा कि इनके वालिद साहब से हमारे नजदीकी सम्बन्ध थे तो यकीनन ही यह खुश होंगी।

दूसरी सुबह ज्योंही प्रोफेसर साहब फातिमा बेगम के यहाँ पहुँचे, त्योंही फातिमा बेगम ने उनसे कहा —"प्रोफेसर साहब, आज सुबह ही अलीगढ़ से अम्मी का टेलीफोन आया, और उन्होंने बताया कि उनका हार अभी तक नहीं मिला। इस पर मैंने यहाँ की पुलिस को टेलीफोन किया। अब इन्क्वायरी के लिए यहाँ का सी० आई० डी० इंसपेक्टर आने वाला है।"

प्रोफेसर साहब चकित रह गए, "माई गॉड! यह मैं क्या सुन रहा हूँ?"

वे इधर-उधर की बातें कर ही रहे थे कि सी० आई० डी० इंसपेक्टर भी पहुँच गया। वह इकहरे बदन का गोरा चिट्टा, दरमयाने क़द का व्यक्ति था। अपना परिचय देते हुए उसने कहा, "मैं सी० आई० डी० इंसपेक्टर जगमोहन हूँ।"

प्रोफ़ेसर साहब बिलकुल हक्का-बक्का रह गए। पहले तो फातिमा बेगम ने इंसपेक्टर को हार के बारे में बताया और इसके बाद प्रोफेसर

साहब ने पिछली शाम की सारी कहानी कह सुनाई।

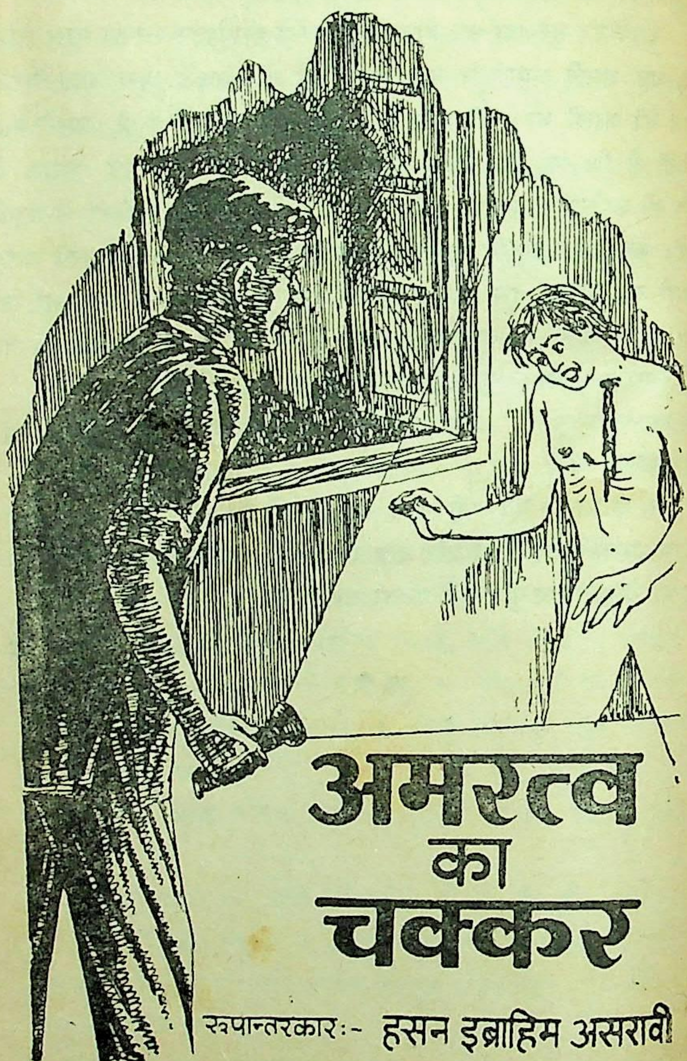
इंसपेक्टर मुस्करा कर बोला, "कल जो इंसपेक्टर आपके पास आया था, वह जाली जगमोहन था, असली मैं हूँ। उसके पास आइडेन्टिटी कार्ड भी जाली था। जो हुलिया आपने उसका बताया है, उससे पता चलता है कि वह देश का मशहूर ठग चतुरलाल है। मेरे ख्याल में आप को जरीना ने असली हार दिया था। ये लोग भी जरीना के साथी होंगे। कल शाम इन्होंने आपसे असली हार ले लिया और उसकी जगह नकली रख दिया। इस फर्जी इंसपेक्टर का यह बयान भी गलत था कि सी० आई० डी० का आदमी अलीगढ़ के रेलवे स्टेशन से ही आपके पीछे लगा हुआ था। यह सब आपको धोखा देने की बातें थीं।"

दस-पन्द्रह मिनट बाद असली इंसपेक्टर जगमोहन यह रिपोर्ट लेकर वापस चला गया।

इस घटना को घटे साढ़े तीन वर्ष हो चुके हैं। अब तक न तो जरीना का, न उसके साथियों का और न हार का पता चल सका है। अलबत्ता उस जाली हार पर पुलिस ने कब्जा जमा रखा है।

—सत्य घटना के आधार पर





अमरत्व का चक्कर

रूपान्तरकार:- हसन इब्राहिम असरावी

उस समय जब मुझे तरक्की देकर विदेश भेजा गया था, बता नहीं सकता कि मैं कितना खुश था. . .लेकिन आज सोचता हूँ कि वह हमारे दुर्भाग्य की महज एक शुरुआत थी। न मैं विदेश जाता, न मेरे भाई की यह हालत होती, जिसके सरपरस्त के रूप में मेरे अलावा संसार में और कोई न था। हमारे माता-पिता का देहान्त बहुत पहले हो चुका था। हम दोनों भाई पूरे संसार में अकेले थे। विदेश जाकर मैंने अपने छोटे भाई अनीस को अपनी सरपरस्ती से भी वंचित कर दिया और वह किसी सही मार्गदर्शक को न पाकर गुमराही के न जाने किस भयंकर अंधेरे में गुम हो गया. . .और दोषी वास्तव में ँ। मेरे विदेश जाने

●

अनीस के लापता होते ही उसके मकान पर रात में काले गिद्धों का
आक्रमण क्यों होता था ? क्या अनीस की प्रेतात्मा ही
इन गिद्धों का नेतृत्व करती थी ? जादू-मन्तर का
चक्कर। भयंकर प्रेतलीला ! रहस्य-रोमांच
की भयावह कहानी !

●

के दो वर्ष बाद शिक्षा पूरी करके अनीस ऐसे खतरनाक रास्ते पर चल पड़ा, जहाँ से वह वापस न आया।

विदेश आए मुझे पाँच बरस गुजर चुके थे ि क एक दिन मुझे अनीस के लापता होने की खबर मिली। पुलिस सम्भव प्रयत्न के बाद भी उसे तलाश न कर सकी थी। मैं फौरन भारत के लिए रवाना हो गया।

भारत पहुँचने के बाद मुझे ज्ञात हुआ कि अनीस का कोई मित्र नहीं था—यहाँ तक कि उसके सहपाठियों से भी उसके सम्बंध केवल कालेज की सीमा तक थे। जिस शहर में वह रहता और पढ़ता था, वहाँ से जब मु ोई विशष बात मालूम न हो सकी तो मैंने अपने गाँव की

राह ली। वहाँ भी निराशा ही मेरे हाथ आई, यद्यपि गाँव का थानेदार मेरा पुराना दोस्त निकला। थानेदार ललित सिंह ने मुझे सिर्फ दो-चार मोटी-मोटी बातें बतलाईं। गायब होने से कुछ दिन पहले अनीस को कस्बे की एक दुकान से चाय के तीन बड़े पैकेट, पाँच किलो चीनी और मछली मारने की कुछ चीजें खरीदते देखा गया था। इन चीजों को खरीदने के तीन दिन बाद जगत नाम का एक बूढ़ा जब मेरे मकान के करीब से गुजरा तो ठिठुरती सर्दी में अपना हाथ गरमाने के लिए उसने मेरे घर का दरवाजा खटखटाया। वास्तव में उस दिन बेहद सर्दी थी, बूढ़े की बात तो दूर रही, नवयुवक भी अपने घरों के बन्द दरवाजों के पीछे दुबके हुए थे। सारे गाँव में शीत का साम्राज्य था। बहुत ज़रूरी ही काम आ पड़े तभी कोई बाहर निकलता था। सत्तर वर्ष के बूढ़े जगत की पोती सख्त बीमार थी। घर में कोई और मर्द न होने के कारण दवा के लिए उसे बाहर निकल कर वैद्य की दुकान तक जाना ज़रूरी हो गया था, जो कि उसके मकान से कोई दो फर्लांग की दूरी पर थी। मेरे मकान तक पहुँचते-पहुँचते इस बूढ़े की हड्डियाँ सर्दी बर्दाश्त करने से जवाब देने लगी थीं, इसलिए कहीं जल्द ही आग के सामने बैठना उसके लिए बहुत जरूरी हो गया था। दरवाजे पर कई बार थपकी देने के बाद भी अंदर से जब कोई जवाब नहीं मिला तो उसने दरवाजे को जरा-सा धकेला और वह फौरन खुल गया। मगर अनीस अन्दर नहीं था। और न ही अँगीठी में आग जल रही थी। अलबत्ता मेज पर एक किताब खुली हुई पड़ी थी। कुछ मिनट बाद मकान से निकल कर जगत अपनी राह चल गया। यही बात दूसरे दिन भी हुई। दूसरे दिन भी सर्दी अपने शबाब पर थी, जब कि जगत को पोती की दवा के लिए घर से निकलना पड़ा था। उस दिन जगत बिना दस्तक दिए ही हमारे घर के अंदर चला गया। दर असल मेरा और जगत का मकान गाँव से काफी फासले पर पड़ता है। पहले मेरा मकान मिलता है, फिर लगभग आध फर्लांग के बाद जगत का इस तरह अपने घर से चलने के बाद उसे सबसे

पहले मेरा मकान मिलता था। जगत यह देखकर विस्मित रह गया कि सारी चीजें ज्यों की त्यों रक्खी हुई थीं। अँगीठी आज भी सर्द थी। किताब मेज पर खुली हुई थी और बिछे हुए साफ बिस्तर पर एक भी शिकन नहीं थी, मानो रात उस पर कोई नहीं सोया।

जगत एक समझदार और अनुभवी बूढ़ा है। उसे स्थिति की गंभीरता का स्पष्ट आभास मिल गया। उसे यह भी ज्ञात था कि गाँव वालों के बीच अनीस को लेकर बड़ी रहस्यपूर्ण बातें प्रचलित हैं और इन बातों के कारण प्रायः सारा गाँव अनीस से दूर रहने की कोशिश करता है।

जगत ने इस बात का जिक्र वैद्य से किया और वैद्य ने तो उसे राय दी कि पुलिस में वह इसकी रिपोर्ट लिखा दे। सूचना मिलते ही सबसे पहले पुलिस ने मकान देखा और उसके बाद अनीस की तलाश की कोशिश शुरू कर दी।

बस यह थी सारी बात, जो मुझे थानेदार ललित सिंह से मालूम हुई। जब मैं घर की चाभी लेकर थाने से चलने लगा तो कुछ याद करके ललित सिंह ने मुझे बताया कि घर और घर के आसपास अनीस के पैरों के निशान भी नहीं दिखाई दिए, सिवाय जगत के पैरों के निशान थे।

जब मैं घर पहुँचा तो दोपहर के दो बजे थे। अपना सामान अंदर रख कर मैं जगत से मिलने चल दिया। रास्ते में मैंने कुछ दूर लोगों से भी मुलाकात की। मेरे जीवन का अधिकांश भाग इन्हीं लोगों के बीच गुजरा था। सब मुझसे अच्छी तरह परिचित थे। उन्हें मालूम था कि एक लंबे अर्से के बाद मैं गाँव लौटा हूँ. . . लेकिन मैं यह अनुभव किए बिना न रह सका कि सभी मुझसे मिलने में झिझक रहे हैं। मैं जिस उत्साह की उनसे उम्मीद रखता था, मुझे उसका सतरंग भी दिखाई न दिया।

लेकिन जगत मुझसे अच्छी तरह मिला। उसके व्यवहार में प्रेम

और शुभचिन्तकों का भाव था, मगर उसकी पत्नी का रुख बिल्कुल उल्टा था। वह नहीं चाहती थी कि उसके यहाँ मैं ज्यादा देर रुकूं। उसके स्वर में कटुता और घृणा घुली हुई थी। मैं नहीं समझ पा रहा था कि मुझमें कहाँ दोष है। जगत ने वही बातें दोहराईं जो मैं ललित सिंह से सुन चुका था। किंतु उसके बाद वह झिझकते हुए बोला, "बेटा, जहाँ तक मेरा विचार है, तुम्हारे भाई के पास जादू-मन्तर की कुछ अच्छी किताबें थीं, जिनके अध्ययन का यह परिणाम है। मुमकिन है कि वह किसी जादूगर के बहकावे में आकर कुछ गलत हरकतें कर बैठा हो...यह मेरा विचार है, भगवान करे गलत हो।"

"दादा, तुम्हारा विचार सही लगता है।" मैंने सहमति केवल इसलिये दी कि उससे कुछ और बातें भी शायद मालूम हो सकें। मेरा विचार था कि गाँव वाले अनीस के बारे में बहुत कुछ जानते हैं, जो न जाने क्यों वे मुझे बतलाना नहीं चाहते।

"मैंने यह राय इसलिए बनाई है कि तुम्हारे घर की एक मेज पर मैंने एक अजीब-सी किताब खुली रक्खी देखी थी। उसके पन्ने मोटे-मोटे और अजीब रंग के थे और बहुत पुराने लगते थे। इसी से मैंने समझा कि वह कोई जादू-मन्तर की किताब है। भगवान उससे तुम्हारी रक्षा करें। तुम घर जाते ही आग में झोंक दो।"

उस सय मेरे मस्तिष्क में जो विचार उभरा था, वह केवल यही था कि ये बूढ़े देहाती, जिन्हें जीवन भर में कुछ धार्मिक पुस्तकों के अलावा किसी भी और पुस्तक से वास्ता नहीं पड़ता, क्या जाने कौन-सी किताब कैसी है। बस, उसके पन्नों का नया रंग और खुरदुरापन देख कर यहाँ तक सोच गए। लेकिन मैंने अपने विचार की प्रतिक्रिया भी चेहरे पर नहीं आने दी।

जगत से विदा लेकर जिस समय मैं अपने मकान के लिए रवाना हुआ, धूप पीली पड़ चुकी थी। सर्दी बहुत तेज थी। हवा की तेज लहरें अभी से ही हड्डी में घुसती हुई महसूस हो रही थीं। इसलिए मैं सीधा

घर आया।

पुराने ढंग के मेरे इस मकान में पाँच कमरे थे। तीन नीचे और दो ऊपर। ऊपर ही एक छोटा-सा रसोईघर था। मेरे बचपन की ढेर-सी यादें इस मकान से जुड़ी हुई थीं। नीचे के कमरे में हमारा बूढ़ा नौकर रहा करता था, दूसरा मेहमानों के लिए था और तीसरे कमरे में घर की फालतू और बेकार चीजें रखी जाती थीं। ऊपर का एक कमरा हम दोनों भाइयों के इस्तेमाल में आता था और दूसरे में माँ और पिता जी सोते थे।

जब मैं मकान में प्रविष्ट हुआ तो नीचे के तीनों कमरे इस तरह वीरान पड़े थे जैसे बरसों से उन्हें किसी ने खोला न हो। फर्श पर धूल की मोटी तह जम चुकी थी। दीवारें गर्द से ढंकी हुई थीं और हर तरफ मकड़ी के जाले दिखाई दे रहे थे। ऊपर के कमरों की हालत बिलकुल विपरीत थी। कमरे की दीवारों पर हलका-सा रंग किया हुआ था और हर चीज साफ-सुथरी और करीने से रखी हुई थी। बिस्तर धुला हुआ था। दूसरे कमरे की, जिसमें हम दोनों भाई सोया करते थे, हालत इतनी अच्छी तो न थी, मगर साफ-सुथरा वह भी था। अनीस ने उसे लायब्रेरी बना रक्खा था। दीवार से लगी हुई आलमारियों में पुस्तकें नम्बर के हिसाब से लगी हुई थीं। मैं समझता था कि उनमें नई-पुरा ी कम-से-कम डेढ़ हजार पुस्तकें मौजूद थीं। एक खाली दीवार के साथ पिताजी के जमाने के लकड़ी के बने हुए बड़े बक्से ऊपर-नीचे रक्खे हुए थे। करीब में ही लकड़ी के कई खाली खोखे पड़े थे। संभवतः ये पुस्तकें अनीस इन्ही खोखों में रख कर शहर से लाया था।

सारे कमरे का निरीक्षण करने के बाद मैं सोने के कमरे में आ गया। आग जला कर चाय के लिए केतली में पानी रखा। आतिशदान के करीब ही लगी हुई आलमारी खोल कर देखा तो उसमें अब तक चाय और चीनी पड़ी हुई थी, जो अनीस कुछ दिन पहले खरीद कर

लाया था। मछली पकड़ने का सामान वहाँ नहीं था। वह तीसरे दिन गोदाम से मिला।

चाय पीने के बाद मैंने मेज पर रक्खी हुई किताब को उलट-पलट कर देखा। मैं उस पुस्तक का एक शब्द भी नहीं पढ़ सका। भगवान जाने किस भाषा में लिखी हुई थी। उसकी जिल्द और पन्ने चमड़े के थे और लिखावट भी हाथ की थी––इससे अन्दाजा लगाया जा सकता था कि यह किताब छापेखाने के अविष्कार से पहले की थी। किताब के आखिरी पन्ने पर अनीस के हाथ का लिखा नोट देख कर पता चला कि यह किताब प्राचीन काल की है। इस नोट में एक दूसरी किताब का हवाला भी दिया गया था। किताब बन्द करके मैंने मेज पर रख दी और सोने के विचार से पलंग पर लेट गया। दिन भर का थका-माँदा लेटते ही नींद आ गई।

मुझे सोए हुए अभी तीन-चार घंटे ही हुए होंगे कि अजीब से शोरगुल से आँख खुल गई। सिरहाने मेज पर रक्खे हुए लैंप को जलाया और उठ कर खिड़की का पर्दा हटा शीशे में से बाहर झाँका। चाँदनी रात में हर तरफ काले रंग के पक्षी मौजूद थे। रंग गहरा स्याह कौवों जैसा मगर डील-डौल में गिद्ध से कुछ बढ़कर ही थे। वही थे जो थोड़े-थोड़े अंतराल पर भयावनी आवाज में चीखने लगते थे। पहले उनमें से एक आवाज निकालता और उसके बाद सब अपनी-अपनी चोंचे खोल कर आकाश की ओर गर्दन उठाते और जोर-जोर से चीखने लगते थे––इतनी तेज आवाज में कि कान के पर्दे फटते महसूस होने लगते थे। मेरे मकान को उन्होंने घेर रक्खा था––छत पर भी मौजूद थे और जब वे चिल्लाते तो उनकी अवाज की गूँज निचली मंजिल से टकरा कर और भी भयानक हो उठती थी। इन मुसीबतों से छुटकारा पाने की युक्ति मुझे नहीं सूझी। मुझे डर था कि अगर मैं घर से बाहर निकला तो ये क्रूर पक्षी मुझ पर हमला भी कर सकते हैं, और मुमकिन है कि अपनी नुकीली चोंचों से नोच-नोच कर मुझे खा जायँ।

शोर प्रति क्षण तेज होता गया और मेरी चिंता भी बढ़ती गई। अंततः मजबूर होकर मैंने अपने कानों में रूई ठोस ली। और बिस्तर पर लेट कर कंबल मुँह तक खींच लिया। नींद तो क्या आती, मगर कुछ सुकून जरूर मिला। रात ढलने के साथ-साथ शोर कम होता गया और बाहर से पक्षियों के उड़ने की आवाजें आने लगी। भोर का उजाला देखकर मैंने भगवान को धन्यवाद दिया कि उन रहस्यमय आफतों से छुटकारा मिला। उसके बाद मैं मजे से ग्यारह बजे तक सोता रहा।

नाश्ता करने के बाद कपड़े बदल कर इस विचार से बाहर निकला कि पड़ोसियों से अनीस के बारे में मालूमात हासिल करूं, लेकिन आज उन सब का रवैया कुछ अजीब था। कोई व्यक्ति मेरी ओर देखना भी गवारा नहीं कर रहा था। निराश होकर मैं वापस आ गया। मेज पर रक्खी हुई किताब को मैं फिर उलट-पलट कर देखने लगा। मुझे दूसरी किताब का विचार आया, जिसका हवाला अनीस ने इस किताब में दिया था। मैंने लायब्रेरी में जाकर देखा। जल्द ही वह पुस्तक भी मिल गई। यह पुस्तक भी काफी पुरानी थी, कागज का रंग बिगड़ कर गहरा पीला हो गया था और इतना भुरभुरा कि हाथ लगाते ही टूट जाता था।

इस किताब की भाषा भी मेरे लिए रहस्यपूर्ण थी। अलबत्ता इसमें दो कागज अनीस के हाथ के लिखे हुए मिले। इन दो कागजों को लेकर मैं सोने के कमरे से आ गया। उन्हें पढ़ने के बाद मालूम हुआ कि मेज पर रक्खी हुई किताब दो हजार वर्ष पुरानी है और इस समय इसकी तीन प्रतियाँ सारी दुनिया में मौजूद हैं। इस किताब का नाम है 'अमर जीवन' और इसका लेखक एक साधु था, जो रहस्यमय शक्तियों पर राज्य करता था। साधु अपनी भौतिक मृत्यु के बाद दोबारा जीवित हो गया है और असीमित काल तक जीवित रहेगा। इस समय उसके तीन सहायक संसार की विभिन्न जगहों पर मौजूद हैं जिनके पास इस पुस्तक का एक-एक प्रतिलिपि है। इस पुस्तक का आवरण और

पृष्ठ मनुष्य की खाल के हैं। साधु के अनुयायी सारे संसार में फैले हुए हैं, जो उन तीनों सहायकों के आधीन कार्य कर रहे हैं। वे स्थिति के अनुसार हर रूप धारण कर सकते हैं।

अनीस के लिखे इस लेख को पढ़ कर मुझे इतना मानसिक कष्ट झेलना पड़ा कि मैं बयान नहीं कर सकता। मैंने किताब को मेज़ से उठा कर ज़मीन पर पटक दिया और दोनों कागज आग में फेंक दिए। तब तक मुझे न तो अमानुषिक रहस्यमय शक्तियों पर विश्वास था और न भूत-प्रेत पर।

आज रात मैं उन काले गिद्धों से लड़ने के लिए अपने आप को पूरी तरह तैयार कर लेना चाहता था। थाने जाकर ललित सिंह से मैंने उसकी निजी दोनाली बन्दूक और कारतूस के दो डिब्बे माँग लिए। मैंने उसे स्थिति से अवगत करा दिया था। अपने रिवाल्वर को भी भर कर मैंने जेब में रख लिया।

सूरज डूबा। अंधेरा गहराता गया।

न जाने क्यों जैसे-जैसे रात आगे बढ़ रही थी, मुझे एक अजीब-सी बढ़ती हुई बेचैनी का अनुभव हो रहा था। मैं कभी मेज के पास पड़ी हुई कुर्सी पर बैठता और कभी उठ कर टहलने लगता। कई बार पर्दा खिसका कर बाहर झाँका, मगर दूर तक फैले हुए सुनसान मैदान के सिवाय कुछ दिखाई न दिया। और फिर दूर पहाड़ियों के बीच से चाँद ने अपना पीला चेहरा निकाला। गाँव के कच्चे मकानों के साये फैले। चाँद ऊँचा उठता गया और मकानों के साये सिमटने लगे।

रात आधी गुजर गई। हर तरफ भयावह सन्नाटा था, जैसे किसी बड़े तूफान के आने से पहले हुआ करता है। स्थिति का गलत अन्दाजा लगा कर मैं सोने की तैयारी करने लगा। पलंग पर लेटकर डिब्बी से आखिरी सिगरेट निकाल कर सुलगाया।

अभी मैंने आधी सिगरेट ही पिया था, कि बाहर से वह मनहूस चीख सुनाई दी. . .और उसके बाद अनगिनत पक्षियों का शोर! मैंने उठ

कर खिड़की से झांका, अनगिनत काले पक्षी जमीन पर बैठे हुए थे और अभी जंगल की ओर से उनके झुंड के झुंड आते दिखाई दे रहे थे। कुछ ही मिनट में मेरा मकान चारों ओर से घिर चुका था, यहाँ तक कि छत पर भी ये मनहूस जीव बैठे चीख रहे थे। कुछ देर तो मैं उनके जाने का इंतजार करता रहा । उसके बाद खिड़की जरा-सा खोलकर दो-तीन हवाई फायर किए। एक क्षण के लिए शोर थम गया। उन्होंने अपनी लंबी गर्दनें घुमा कर इधर-उधर देखा और फिर आकाश की ओर मुँह उठा कर चीखने लगे। फायर का उन पर कोई प्रभाव न देख मुझे बेहद क्रोध आया। और डर-सा महसूस हुआ।

मैंने बाहर देखा और उनमें से एक का निशाना लिया, जो खिड़की के बिल्कुल सामने बैठा अपनी गोल-गोल भयानक आँखों से मुझे घूर रहा था। वह डील-डौल में भी अपने साथियों से बड़ा था। सबसे पहले वही अपनी मनहूस चोंच खोल कर आवाज निकालता था और उसके बाद दूसरे चीखने-चिल्लाने लगते थे। मैंने अनुमान लगाया कि यही उनका मुखिया है। यदि इसे मार दिया जाय तो निश्चय ही बाकी सब डरकर भाग जायेंगे। वह मुझे घरे जा रहा था। मैंने गोली चला दी। एक कलेजा हिला देने वाली इनसानी चीख। मेरा हाथ काँपा और दूसरी गोली चल गई। फिर वही चीख! मेरे रोंगटें खड़े हो गए। काले शैतान अब तक अपनी जगह मौजूद थे। उनका शोर कई गुना बढ़ गया था। फिर अचानक सन्नाटा छा गया। मैंने बाहर झाँका। उनका मुखिया अपनी जगह अब मौजूद नहीं था, लेकिन उसकी जगह खाली थी। किसी ने भी आगे बढ़ कर खाली जगह की पूर्ति नहीं की।

फिर वही दहला देने वाली इनसानी चीख।

मुझे लगा इस बार यह चीख मकान के अन्दर ही कहीं से उभरी है। उस आवाज के बाद बाहर बैठे हुए काले पक्षियों ने चीख-चीख कर आसमान सिर पर उठा लिया। लेकिन इस बार उनके स्वर में परिवर्तन आ गया था। अब ऐसा लगता था जैसे वे सब रो रहे हों। मैंने दीवार से

कान लगा कर सुना। लाइब्रेरी में कोई इन्सान मौजूद था। उसके कराहने की आवाज मैं स्पष्ट सुन सकता था।

वहाँ कौन हो सकता है?

मैं सोच ही रहा था कि लायब्रेरी से इस बार काले पक्षियों की जैसी आवाज उभरी और उत्तर में बाहर बैठे पक्षियों ने फिर शोर बरपा कर दिया। थोड़े-थोड़े अन्तराल पर लायब्रेरी से वैसी ही आवाज उभरती और फिर हल्की-हल्की-सी कराहने की आवाज आने लगती और कभी कभी कोई इनसान भी चीख पड़ा था।

मस्तिष्क पर हथौड़े से चलते अनुभव होने लगे। विचार-शक्ति क्षीण ही पड़ गई . . .और फिर मैं बेहोश होकर जहाँ था वहीं गिर पड़ा।

होश आया तो दिन के दो बजे थे। गिरने से सिर में घाव हो गया था और सिर दर्द से फटा जा रहा। रात की बातें एक-एक करके याद आने लगीं।

धीरे से मैं उठा और सारे कमरे का निरीक्षण करने लगा। सब कुछ अपनी जगह पर ठीक था। दरवाजे पर चटखनी उसी तरह लगी हुई थी। मैं कुछ संतुष्ट हुआ। हलका-सा नाश्ता लेकर कुर्सी पर बैठ कर सिगरेट पीने लगा।

इस मुसीबत से छुटकारा किस तरह पाया जा सकता है?

सोचते-सोचते सहसा मुझे विचार आया कि अनीस की जमा की हुई पुस्तकों से शायद इसका हल मिल सके। और इसके साथ ही मुझे वह पुस्तक याद आई, जिसका नाम 'अमर जीवन' था और जिसे मैंने शाम को मेज से उठाकर फर्श पर पटक दिया था। मैंने चारों ओर नजर दौड़ाई . . .किंतु वह पुस्तक मुझे कहीं दिखाई न दी।

मैंने कमरे का कोना-कोना छान मारा लेकिन मुझे अच्छी तरह याद था कि बेहोशी से कुछ पहले तक मैंने वह किताब फर्श पर पड़ी हुई देखी थी। फिर मुझे बंदूक और कोट में पड़े हुए रिवाल्वर का विचार आया।

दोनों चीजें अपनी-अपनी जगह पर थी। मगर किताब?

लाइब्रेरी में जाना अब मेरे लिए ज़रूरी था। मुझे उस आदमी के बारे में भी जानना था, जिसकी कराहें और चीखें मैंने रात को सुनी थीं।

लायब्रेरी में प्रवेश करते समय मेरी हालत उस आदमी से अलग नहीं थी जो अपनी परछाईं से भी डरता था। कदम उठाते हुए मेरी टाँगें आपस में टकराने लगीं। और दिल जोर-जोर से यूँ धड़कने लगा जैसे सीने को तोड़ कर बाहर आ गिरेगा।

लाइब्रेरी खाली थी। बक्सों और पेटियों के पीछे देखा। वहाँ भी कोई न था। आगे बढ़ा तो दीवार के बीच में खिड़की के सामने कुर्सी दिखाई दी। वह इस तरह रक्खी हुई थी कि कमरे में खड़े हुए वह किसी भी व्यक्ति को दिखाई नहीं दे सकती थी, जब तक कि वह पेटियों के पीछे आकर न देखता। कुर्सी के समीप पहुँचते ही मेरी आँखें विस्मय से फटी की फटी रह गईं।

उस पर अनीस के कपड़े इस तरह ढेर हुए थे जैसे वह यहाँ बैठा रहा हो और बैठे ही बैठे एकदम उसका शरीर शून्य में घुल गया हो। कमीज के कालर पर खून का ताजा गहरा धब्बा था।

यह दृश्य असहनीय था मेरे लिए। बेहद सर्दी होने के बावजूद मेरा सारा शरीर पसीने से नहा गया। यह सब क्या है इन सब बातों के पीछे क्या रहस्य है? मेरा मस्तिष्क जड़ होकर रह गया था। फिर दृष्टि किताबों की आलमारी पर पड़ी। 'अमर जीवन' पुस्तक वहाँ दूसरी किताबों के बीच रक्खी हुई थी। पुस्तक को वहाँ देख कर मुझे अपनी स्मरण-शक्ति पर भी सन्देह होने लगा। कहीं मैं स्वयं तो इसे यहाँ रख कर नहीं भूल गया? मैंने बहुत सोचा, मगर किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सका।

किताब को मैं वहाँ से उठा लाया और सोने के कमरे में रक्खी हुई मेज की दराज में रख कर ताला लगा लिया, ताकि मेरी अनुपस्थिति में भी कोई उसे न ले जा सके।

अब तक की घटनाएँ मेरे मानसिक संतुलन को बिगाड़ देने के

लिए काफी थीं। अब मुझे भूत-प्रेत पर विश्वास होने लगा। निश्चय ही उन काली चुड़ैलों ने मेरे भाई पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया था, जिससे उसे मुक्ति दिलाना मेरा कर्त्तव्य था--चाहे इसके लिए मुझे प्राणों से ही क्यों न हाथ धोना पड़े।

उन दुरात्माओं की संख्या बहुत अधिक थी और बंदूक या छोटी रिवाल्वर से उन्हें खत्म करना असंभव था। मैंने सोचा, मकान के चारों ओर डायनामाइट बिछा कर प्रायः उन सब को खत्म किया जा सकता है।

डायनामाइट के लिए बारूद, बिजली का तार और बैटरी का प्रबन्ध करने के लिए शहर जाना जरूरी था। शहर यद्यपि ज्यादा दूर नहीं था, मगर वहाँ जाकर जरूरी सामान खरीदने और फिर वापस आने के लिए कम-से-कम चार घंटे चाहिए थे--इसके मतलब मैं रात नौ बजे से पहले नहीं लौट सकता था और उस समय मकान के गिर्द डायनामाइट बिछाना असंभव था। मजबूरन मुझे दूसरे दिन का इंतजार करना पड़ता। बारूद और बैटरी प्राप्त कर सकना भी अपने आप में टेढ़ी खीर थी। मेरे पास भरने वाली बंदूक का लाइसेंस था, जिससे बारूद की समस्या तो किसी सीमा तक हल हो सकती थी मगर बैटरी ? इसके लिए मुझे थानेदार ललित सिंह की सहायता लेनी पड़ी। बाहर हाल किसी तरह सारी चीजें प्राप्त कर के जब मैं गाँव लौटा तो दस बज चुके थे।

घर में जाने का साहस नहीं हो रहा था। रात भी गहरी अँधेरी थी। किसी तरह अपने को संभालते हुए मैं सोने के कमरे में पहुँच ही गया और फौरन दरवाजे की चटखनी लगा दी।

गाँव में कोई कुत्ता भी भूंकता तो कनपटी तड़पने लगती। बेचैनी इस कदर बढ़ गई कि मैं बार-बार कलाई की घड़ी देखने लगा।

फिर चाँद निकला। अँधेरा छँटने लगा। भयानक सन्नाटे को पक्षियों की उड़ने की आवाज ने तोड़ दिया। पर्दा सरका कर मैंने

बाहर की ओर देखा। हर तरफ काली-काली चुड़ैलें मौजूद थीं--खामोश, सब की नज़रें मकान की तरफ। कल जिस जगह मैंने उनके मुखिया पर फायर किया था, वह जगह आज खाली थी। कोई भी पक्षी बढ़ कर उस रिक्त स्थान को नहीं भर रहा था।

एक घंटा पूरी शांति से बीता। चाँद आकाश के बीच में आ चुका था।

और फिर किसी इनसान की दहला देने वाली चीख लायब्रेरी से ! कोई वहाँ मौजूद हो चुका था।

इसके बाद बाहर मौन योगी की तरह बैठी हुई काली चुड़ैलों ने भयानक और मर्मान्तिक आवाजों से आकाश सिर पर उठा लिया। वे सब समवेत स्वरों में रो रही थीं--न जाने किस बात का शोक मना रही थीं। मैंने खिड़की से बाहर झाँका और उनका शोर-गुल और बढ़ गया। एक साथ क्रोध और घृणा से भरी हुई अनगिनत आँखें मेरी ओर उठ गई थीं।

दो पक्षी मुझ पर धावा बोलने के लिए मेरी तरफ झपटे। मगर न जाने क्या बात थी जिसने उन्हें ठीक खिड़की से वापस मोड़ दिया। मैंने दूसरे ही क्षण खिड़की बंद कर ली। अब मुझमें खड़े रहने की भी शक्ति नहीं रह गई थी। धम् से करीब की कुर्सी पर बैठ गया।

थोड़ी देर बाद लायब्रेरी से फिर वही इनसानी चीख सुनाई दी। मुझे महसूस हुआ कि यदि कुछ क्षण और मैं इसी तरह बैठा रहा बेहोश हो जाऊँगा। कल तो किसी तरह बच गया था, मगर आज के बाद न जाने क्या हो ? जीवन का लालच भी अपने आप में एक शक्ति होती है। मैं तेजी से सँभलने लगा। मुझे इसी क्षण जाकर लायब्रेरी देखनी चाहिए, मैंने निर्णय किया।

मैं बड़ी तेजी से कदम उठाता हुआ लायब्रेरी तक पहुँचा। दरवाजा खोला। अन्दर घना अँधेरा और रहस्यपूर्ण सन्नाटा था। थोड़ी देर तक दरवाजे पर खड़ा हुआ अँधेरे में घूरता रहा। मेरी आँखें

अँधेरे की अभ्यस्त हो गईं मगर वहाँ कुछ दिखाई न दिया। टार्च जला दबे क़दमों से पेटियों के करीब पहुँचा।...और ठीक उसी क्षण खिड़ खुलने की धीमी चरचराहट सुनाई दी।

मेरे मस्तिष्क में सैकड़ों विचार तेजी से घूमने लगे। मैं फुर्ती से आ बढ़ा कि जो भी आदमी हो, कूदने से पहले ही मैं उसे पकड़ लूँ।

सिर से पाँव तक नग्न उस आदमी के सामने जैसे ही मैं पहुँच उसने घूम कर मेरी ओर देखा वह मेरा भाई था—मेरा छोटा भा अनीस। लेकिन जो होना चाहिए था वह नहीं हुआ। उसे देख कर मैं खुशी से खिला और न 'भाई जान' कहकर वह मेरी ओर बढ़ा। ह बढ़ा वह ज़रूर। खिड़की का पट छोड़ कर पलटा और मेरी ओर बढ़ा भाई के प्रेम और उत्साह की बजाय उसकी जलती हुई आँखों में मे लिए क्रोध और बेपनाह नफ़रत भरी हुई थी। उसका सिर एक ओर झु हुआ था और गर्दन के नीचे एक सूराख था, जिसमें से खून बह रहा था

वह दबे पाँव किसी शिकारी पशु की तरह मेरी ओर बढ़ रहा और मुझे इतना भी होश नहीं था कि वहाँ से हट सकूँ।...मेरे करी पहुँचते ही उसने एक मर्मान्तक चीख मारी और पलट कर पीछे भाग वह खिड़की से कूद चुका था।

मैं भाग कर लाइब्रेरी से निकला और कमरे में जाकर दरवाजे चटखनी लगा ली। मैं बुरी तरह हाँफ रहा था। काश इस दशा में अनी को देखने से बेहतर था कि मैं उसे न देखता।

अब तक मेरी समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि पहले हम करते समय जब वे काले पक्षी मेरी ओर बढ़े थे तो करीब पहुँचते चीखते हुए वे वापस क्यों हो गए थे। अब जब कि अनीस मुझे मारने लिए बढ़ा था और उस समय मुझे आसानी से मार सकता था, तो क्यों वह भी चीखता हुआ वापस पलट गया था? कहीं इसलिये नहीं कि मैं उसका भाई हूँ और उसके मन में अब भी कहीं मेरे प्रेम है?

मैं कोई बात इस बारे में निश्चित नहीं कर सका।

काले पक्षियों के बीच जो जगह थोड़ी देर पहले खाली थी, वहाँ अब उनका सरदार बैठा था—वही ऊँचे डीलडौल वाला, जिसे कल रात मैंने गोली मारी थी। उसकी गर्दन में अब तक गहरा निशान मौजूद था और उसका सिर एक ओर लटका हुआ था।

यह दृश्य मेरे लिए अत्यंत मर्मान्तक था। वह अनीस ही है, मैं समझ चुका था। मेरा भाई ही उन कुआत्माओं का सरदार था।

कलेजा हिला देने वाली आवाजों का सिलसिला सारी रात जारी रहा। मुझे अब इस मकान से डर लगने लगा था। मैं जान गया था कि गाँव वाले क्यों भयभीत थे। उनकी घृणा उचित थी।

मुझे विचार आया कि मुझे उस शैतानी किताब को जला देनी चाहिए। वही इन सारी बातों की जड़ है।

मैंने ताला खोलकर मेज की दराज बाहर खींची। वह खाली थी। किताब एक बार फिर गायब हो चुकी थी।

ऐसी स्थितियों में मेरे लिए लाइब्रेरी जाकर किताब तलाश करना असंभव था। सिवाय इसके कोई चारा नहीं था कि रात यूँ ही गुजार दी जाय। रात गुजारना भी आसान नहीं था। समय जैसे रेंग रहा था। बाहर से आने वाली क्रोध और घृणा से भरी आवाजों पर हर बार हृदय की गति रुकती अनुभव होती थी।

लगभग तीन बजे आवाजें बन्द होने लगीं। उन सब के उड़ते ही मैं बाहर निकला। मैं अपने आप को अत्यंत उत्तेजित अनुभव कर रहा था। सूरज निकलने से पहले ही मैंने मकान के चारों ओर डायनामाइट के तार बिछा दिया था।

उसके बाद मैं थानेदार ललित सिंह से मिलने चल दिया। मेरी सारी बात सुनने के बाद ललित सिंह मुझसे सहमत हो गया। आज उसने बताया कि उन काली चुड़ैलों के बारे में वह पहले ही सुन चुका था। इस बार मैं घर लौटा तो मेरे साथ ललित सिंह था। इसके बावजूद

अन्दर कदम रखते हुए मुझे डर लग रहा था। हमने मिल कर सारे मकान की तलाशी ली लेकिन ऐसा कोई लक्षण दिखाई नहीं दिया, जिससे सोचा जा सकता कि इस मकान में प्रेतों का अड्डा है। मैंने पिता जी की निशानी लकड़ी के बक्स और अपना सामान निकाल लिया, बाकी सारी वस्तुएँ ज्यों-की-त्यों रहने दीं। सारा काम इतना खामोशी से हो गया कि किसी को मालूम नहीं हुआ।

सारा दिन मैंने ललित सिंह के साथ थाने पर गुजारा। ललित सिंह यदि मेरा पुराना मित्र न होता तो निश्चय ही मुझे अपना काम पूरा करने में बड़ी कठिनाइयाँ होतीं।

रात का साया फैलते ही मैं और ललित सिंह मकान के पिछवाड़े ओट में जाकर बैठ गए। ललित ने अपने साथ एक स्टेनगन ले ली थी।

हमें चाँद निकलने का इंतजार था। रात गहराती जा रही थी। सर्दी से बचने के लिए हम दोनों एक ही कम्बल में सिकुड़े हुए थे। मेरी तरह ललित सिंह भी अपना भय मुझसे छिपाने की कोशिश कर हरा था।

चाँद निकला और खिसकता हुआ बीच आकाश में आ गया।

थोड़ी देर बाद घने जंगल की ओर से अनगिनत काली प्रेतात्माएँ पंख फड़फड़ाती हुई प्रकट होने लगीं और फिर मेरे मकान का चारों ओर से घिराव हो चुका था।

एक बार फिर वही दहला देने वाली चीखें और शोर।

ललित सिंह की आँखें फैली की फैली रह गई थीं। मकान की लाइब्रेरी से अनीस की चीख उभरी। ललित सिंह काँप कर रह गया।

वह ज्यादा देर सहन न कर सका। उसने अन्धाधुंध स्टेनगन से आग बरसानी शुरू कर दी। लेकिन उन पर जरा भी असर न हुआ।

और फिर इसके सिवाय कोई चारा नहीं रह गया था कि बैटरी का हैंडिल दबा दूँ। मैंने यही किया। धमाका हुआ। एक, दो और फिर कई लगातार धमाके होने लगे। लगता था मानो भूचाल आ गया हो। पूरी इमारत की धज्जियाँ उड़ गईं।

काले पक्षियों की भयानक आवाजें खत्म हो चुकी थीं और उनकी जगह ले ली थी अनगिनत इन्सानों की चीख-पुकार और रोने की मर्मान्तक गूँज।

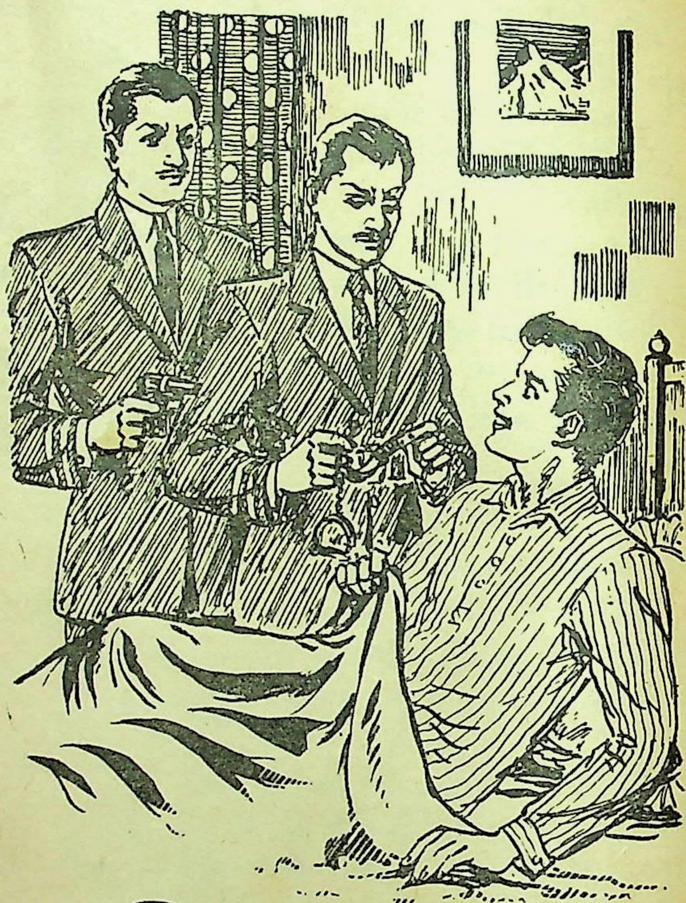
थोड़ी देर बाद खामोशी छा गई।

गाँव वाले दौड़ते हुए हमारी ओर आ रहे थे। उनके हाथ में टार्च या लालटेनें थीं।

मैंने और ललित सिंह ने मकान और इर्द-गिर्द की खाक छान डाली। लेकिन किसी पक्षी या इनसान की लाश मिलनी तो दूर रही, कहीं खून की एक बूँद भी नहीं दिखाई दी।

गाँव वालों की शांति की खातिर मैंने अपना मकान उड़ा दिया था, अपने भाई के अस्तित्व का नाम-निशान मिटा दिया था। न जाने अब वह कहाँ होगा।





आख़िर वह पकड़ा गया

हरपाल कौर

"मेरा नाम रिचर्ड ज़ोरगा है," आने वाले ने टोकियो के जर्मन दूतावास में अपने कागज़ात पेश करते हुए कहा—"मुझे जर्मनी के दैनिक ज़ेटिंग की ओर से टोकियो में रिपोर्टर नियुक्त किया गया है। इसके अतिरिक्त मैं बर्लिन के एक व्यावसायिक मासिक और हालैंड के एक दैनिक का प्रतिनिधित्व भी करता हूँ।"

यह बात सितम्बर, १९३३ की है। उस समय टोकियो के चप्पा-चप्पा पर जापानी पुलिस शिकारी कुत्तों की तरह विदेशी, विशेषतः अमरीकी, रूसी और जर्मनी जासूसों की खोज में गली-गली छान रही थी। यह वह दिन थे, जब जापान और जर्मनी के संबंध बहुत अच्छे थे। दोनों



ज़ोरगा एक होशियार जासूस था। युद्ध के समय उसने ऐसी महत्वपूर्ण सूचनाएँ दीं, जिनसे सोवियत रूस को बहुत ही लाभ हुआ। इन्हीं सेवाओं के कारण रूस में उसके कई स्मारक स्थापित किये गये और उसको सोवियत संघ का हीरो स्वीकार किया गया।



देश अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाने की धुन में पागल हो चुके थ। मित्र-शक्तियाँ इससे अनभिज्ञ नहीं थीं। इसलिए जर्मनी और जापान मित्र-जासूसों पर कड़ी नज़र रख रहे थे।

कागज़ात की पूरी छान-बीन के बाद जर्मन राजदूत ने उसके सभी कागजात को ठीक मान लिया।

उसके बाद सात महीने बीत गये। इस समय में वह जापान से संबंधित राजनीतिक और आर्थिक समाचार अपने अखबारों को भेजता रहा, जिन्हें न केवल अखबारों के पाठकों ने पसन्द किया, बल्कि जापानी सरकार ने भी उनकी प्रशंसा की।

ज़ोरगा रूसी था। वह १८१७ में बाकू में पैदा हुआ। उसकी मां रूसी और पिता जर्मन था। ज़ोरगा के जन्म के तीन वर्ष बाद यह परिवार रूस से जर्मनी के नगर बर्लिन में आ गया। १९१४ के महायुद्ध में ज़ोरगा ने जर्मन सेना के अंदर रह कर अपनी वीरता के कौतुक दिखाये, किन्तु युद्ध के बाद वह मार्क्स के विचारों से प्रभावित हुआ।

कम्यूनिस्ट पार्टी में सम्मिलित होने के बाद उसने गुप्त साधनों से रूसी नागरिकता के अधिकार प्राप्त कर लिये और लाल सेना में प्रवेश के बाद रूसी सरकार ने उसे शंघाई रवाना कर दिया, जहाँ उसने जासूस के कर्त्तव्य बहुत कुशलता से सम्पन्न किये।

१९३३ में उसे टोकिया रवाना कर दिया गया। टोकियो के लिए प्रस्थान करने से पूर्व वह जर्मनी गया, ताकि यहाँ से पत्रकार बन कर टोकियो पहुंचे। टोकियो के बारे में यह प्रसिद्ध था कि वहाँ का हर नागरिक अपने देश का जासूस है। किसी विदेशी, विशेषतः रूसी निवासी का वहाँ रह कर जासूसी करना लगभग असंभव था, पर एक पत्रकार के रूप में उसने यह अधिकार प्राप्त कर लिया था कि जहाँ चाहे जाये। जब तक चाहे गायब रहे, और जिस राजनीतिक व्यक्ति से चाहे, मिले। जिस समय वह टोकियो जाते हुए बर्लिन पहुँचा, हिटलर सत्ता प्राप्त करने के बाद जर्मनी से कम्यूनिस्टों को उखाड़ फेंक रहा था। ज़ोरगा बड़े साहस का आदमी था। दो शब्द 'भय' और 'डर' उसके कोष में थे भी नहीं। उसके मित्रों ने उसे सचेत भी किया कि शायद नाज़ी सीमांत पुलिस के पास उसका फोटो और नाम मौजूद हो और वह जाते हुए या वहाँ से वापस आते हुए गिरफ्तार कर लिया जाये, किन्तु वह अपनी सभी योजनाओं में सफल होकर एक जर्मन नागरिक के रूप में टोकियो पहुँच गया।

टोकियो पहुँचने के एक वर्ष बाद उसने नाज़ी पार्टी की सदस्यता प्राप्त कर ली।

अब जर्मन दूतावास की दृष्टि में उसका महत्व और अधिक बढ़

गया। जर्मनी की सत्तारूढ़ पार्टी की सदस्यता प्राप्त करने के बाद उसने एक कम्यूनिस्ट जर्मन साथी से अपने सभी कागजात सरकारी रिकार्ड से निकलवा कर दरिया में फेंकवा दिये। यदि ज़रा-सी लापरवाही हो जाती, तो जर्मन गेस्टापो के उच्चाधिकारी उसकी बोटी-बोटी काट करके कुत्तों में बाँट देते। बर्लिन से टोकियो रवाना होते समय उसने हिटलर की आत्मकथा और नाज़ी पार्टी के नियम-सिद्धांत को कण्ठस्थ कर लिया था। टोकियो पहुँच कर वह अधिकतर जर्मन निवासियों से मेल-जोल रखता था और उनसे नाजी योजनाओं के बारे में गर्मागर्म बहसें किया करता था।

१९३४ तक उसने एक अच्छी-खासी लाइब्रेरी बना ली थी, जिसमें जापान के बारे में जानकारी की पुस्तकें, और पत्रिकाओं की बहुत बड़ी संख्या थी। उससे उसे समाचारों को सजाने-सँवारने के अलावा जापानी वातावरण का दृश्यांकन करने में सहायता मिलती थी। रूस की ओर से उसे टोकियो में अपना कार्य-क्षेत्र बनाने के लिए दो वर्ष का समय दिया गया था, जिसके अंदर उसे ऐसा बनाना था, जो उसके लिए काम कर सके।

सबसे पहले उसने एक जर्मन निवासी बर्न हार्ट का, जो रेडियो और ट्रांसमीटर का इंजीनियर था, अपना मित्र बना लिया। फिर उसने यूगोस्लाविया के एक नागरिक बरंको से संबंध बढ़ाये, जो एक फ्रांसीसी पत्रिका के फोटोग्राफर के रूप में टोकियो में रह रहा था। तीसरा आदमी यूटोको उसकी प्रार्थना पर हेडक्वार्टर से भेजा गया। यह व्यक्ति जापानी था और १६ वर्ष की आयु में कम्यूनिस्ट पार्टी का सदस्य बन चुका था।

अपने साथियों से मिलने के लिए टोकियो आ कर उसने एक पत्र अखबार में एक जापानी कपड़े के लिए विज्ञापन दिया, जिसका उत्तर हिदायत के अनुसार बरंको ने दिया। मुलाकात के समय यूटोको ने एक डालर का नोट बरंको के सामने पेश किया। बरंको ने उसके नम्बर अपने रिकार्ड से मिलाये और पूरी तरह आश्वस्त होने के बाद उसे

ज़ोरगा से मिला दिया गया। इस प्रकार यूटोको वह तीसरा आदमी था, जो ज़ोरगा के दल में शामिल हो गया।

इस अन्तराल में ज़ोरगा को मास्को से एक सन्देशवाहक के द्वारा दल के व्यय के लिए एक बहुत बड़ी धनराशि प्राप्त हुई। यह धनराशि मिलने के बाद उसने होटल छोड़ कर एक स्थानीय पुलिस-स्टेशन के पास एक मकान किराया पर ले लिया। कुछ दिन बाद उसने एक अन्य साथी को खोज लिया। यह व्यक्ति यद्यपि जापानी था, पर इसकी कम्यूनिस्ट पार्टी के जोशीले हामियों में गणना की जाती थी। ओज़ाकी से ज़ोरगा की मुलाकात शंघाई में हुई थी।

१९३५ में ज़ोरगा को मास्को भेजा गया। टोकियो से मास्को बुलाया गया। टोकियो से मास्को रवाना होने के लिए वह न्यूयार्क पहुचा और यहाँ से रूसी दूतावास के बनाये हुए एक जाली पासपोर्ट के द्वारा हेडक्वार्टर चल पड़ा। मास्को में उसे दो प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने की हिदायत दी गयी।

१—क्या जापान हम पर हमला करने की योजना बना रहा है?

२—यदि यह बात ठीक है, तो उसके पास कौन-से साधन, अस्त्र-शस्त्र हैं, जिनके द्वारा वह अपने उद्देश्य में सफल हो सकता है?

टोकियो वापस आने के बाद उसने बर्न हार्ट को संस्था से पृथक करके वापस मास्को चल दिया। ज़ोरगा ने अनुभव कर लिया था कि उसके साथी के दिल-दिमाग पर भय और आतंक छाया हुआ है। वह सही ढंग पर पूरा सन्देश प्रसारित करने से मजबूर है। हर क्षण उसे गिरफ्तारी का डर रहता था, इसीलिए उसने मदिरापान का उपयोग अधिक कर दिया था। बर्न हार्ट के बजाय उसने एक अन्य जर्मन कम्यूनिस्ट मैक्स क्लासन को इस काम के लिए अपने दल में शामिल कर लिया। यह व्यक्ति अपनी पत्नी के कारण मास्को की नजरों में उतर चुका था, पर उसकी पार्टी से वफ़ादारी सन्देह से परे थी। अब वह दल काम करने

के लिए पूरी तरह तैयार था। २६ फरवरी, १९३६ को जापान के डेढ़ हज़ार सिपाहियों ने विद्रोह की पताका ऊँची करके कई सरकारी इमारतों पर अधिकार कर लिया। विद्रोहियों ने कई अधिकारियों के अलावा जापानी विधानसभा के दो सदस्यों को ठिकाने लगा दिया। प्रधानमंत्री पर चलाई गयी गोली जरा-सी न चूक जाती तो उसका भी अन्त हो जाता। ज़ोरगा के जासूसी दल ने पहली बार इस समाचार को सविस्तार ट्रांसमीटर द्वारा मास्को पहुँचा दिया। सभी विदेशी सरकारें इस विद्रोह के कारणों पर विचार कर रही थीं। विशेषतः जर्मन दूतावास इस विद्रोह से इतना प्रभावित हुआ कि उसने ज़ोरगा के प्रस्ताव पर कई अधिकारियों को अलग-अलग रिपोर्ट देने के लिए नियुक्त किया और जब यह अलग-अलग रिपोर्टें एक स्थान पर की गयीं, तो ज़ोरगा ने सारे गुप्त रिकार्ड की तस्वीरें ले कर निजी संदेशवाहक के द्वारा मास्को पहुँचा दीं। इसके अतिरिक्त इस विद्रोह की तह में जो रहस्य थे, वह यूटोको ने ज़ोरगा को उपलब्ध कर दिये।

कई दिनों के परिश्रम के बाद ज़ोरगा ने मास्को से गुप्त ट्रांसमीटर के प्रसारण के द्वारा संबंध स्थापित करके भेद खोजा कि यह विद्रोह समय से पूर्व होने के कारण असफल हो गया है और अब उसके पुनः होने की संभावनाएं सदा के लिए समाप्त हो गयी हैं।

इस प्रसारण में यूटोको का उपलब्ध किया गया वह महत्वपूर्ण समाचार भी मास्को पहुँचा दिया गया, जिसने सूचना दी थी, कि आने वाली सरकार में समताप्रिय नेता सत्तारूढ़ होंगे और यदि ऐसा हुआ तो रूस को जापान की ओर से कोई संकट नहीं है।

ज़ोरगा ने रूस को भेजी हुई सूचनाओं का सारांश जर्मन राजदूत के सैनिक अटैची कर्नल आट को भी पेश कर दिया, और जब यह समाचार जर्मनी पहुँचे तो हिटलर ने उन्हें बेहद पसन्द किया। इस प्रकार ज़ोरगा ने अपने लिए जर्मनी के दूतावास में एक ऐसा वातावरण पैदा कर लिया, जो उसके लिए बहुत उपयोगी साबित हुआ।

पाँच वर्ष इस प्रकार बीते कि किसी को ज़ोरगा के जासूसी जाल के बारे में कोई सन्देह नहीं हुआ। जापान और जर्मनी दोनों ही हुकूमतें ज़ोरगा को केवल एक महत्वपूर्ण पत्रकार समझती रही और वह बड़ी निश्चितता से अपनी सरकार को महत्वपूर्ण गुप्त रहस्य भेजता रहा।

इस सूचना के बाद मास्को से मैक्स की पत्नी एना को भी रवाना कर दिया गया। एना के आने के बाद मैक्स ने टोकियो के घनी आबादी के क्षेत्र में एक दोमंजिला लकड़ी का मकान किराये पर लिया, ताकि जापानी गुप्त-पुलिस की पकड़ से सुरक्षित रह सके। ज़ोरगा ने ट्रांसमीटर से समाचार प्रसारित करने के लिए अँगरेजी भाषा का उपयोग किया। जर्मन या रूसी भाषाओं में गोपनीय संदेश प्रसारित करना संकट से खाली न था। अँगरेजी भाषा जानने के बावजूद यह टोली गिरफ्तारी के समय भाषा से अज्ञानता प्रकट कर सकती थी। बहरहाल, मैक्स जिस समय अपने सन्देश प्रसारित करता तो एना बालकनी में कुरसी डाल कर बैठ जाती, ताकि किसी आगन्तुक को मकान में प्रवेश करते हुए देखे तो अपने पति को सचेत कर दे, किन्तु ज़ोरगा ने अपनी टोली में अपनी जापानी पत्नी को शामिल नहीं किया, न कभी उसे अपने गुप्त मिशन के बारे में किसी बात से अवगत किया।

जापान के इतिहास में यह वह दिन थे, जब टोकियो में विदेशी जासूसों की खोज जोरों पर हो रही थी। हर दीवार पर पोस्टर लगे हुए थे, जिनमें विदेशी जासूसों से सचेत रहने की हिदायत की गयी थी, पर ज़ोरगा की टोली बड़ी निश्चितता से अपना काम कर रही थी।

इसी अन्तराल में एक दिन ऐसी घटना घटित हुई, जिसने मैक्स को हिला दिया और उसने समझ लिया कि उसका आखिरी समय आ गया है। एक मनोरंजन-स्थान में सैर के समय वह अपना जैकट कहीं रख कर भूल गया और ज़बरदस्त तलाश के बावजूद जब उसका पता न चला तो उसने काँपते हुए और भर्राई हुई आवाज़ में ज़ोरगा से कहा—"मेरा जैकट कहीं खो गया है। उसकी जेबों में मेरे शनाख्ती कार्ड के अतिरिक्त

मास्को भेजने वाली कुछ गुप्त सूचनाओं के बारे में बातें भी थीं। यदि यह जैकेट पुलिस के हत्थे चढ़ गयी तो मेरी मौत निश्चित है।"

ज़ोरगा को अपने सितारों पर विश्वास था। उसने तुरंत पुलिस-स्टेशन फोन करके जैकट के खो जाने की सूचना दी। उसका विचार था कि जैकट मिलने पर यदि पुलिस ने उसकी तलाशी ली और गुप्त भेद बरामद कर लिये तो वह उनसे असंबंधता प्रकट करेगा और फिर मैक्स को चुपचाप सरहद पार करा देगा।

जैकेट खोये हुए महीने-दो-महीने बीत गये और मैक्स फिर मुस्तैदी के साथ अपने काम में लग गया। चूँकि इस समय तक उसका न मिलना इस बात का प्रमाण था कि पाने वाले ने उसमें रखी हुई धनराशि को हड़प करके उसे दरिया में फेंक दिया या जला दिया होगा।

इस दुर्घटना की याद अभी उनके मस्तिष्कों में शेष ही थी कि एक अन्य दुर्घटना हो गयी। ज़ोरगा को मोटर-साइकिल चलाने का शौक जुनून की हद तक था। एक दिन वह शराब के हल्के-से नशे में मोटर-साइकिल चलाता हुआ मैक्स के मकान की ओर जा रहा था कि एक दीवार से बुरी तरह टकरा कर जख्मी हो गया। उसका शरीर तो बच गया, पर सिर पर गहरी चोटें आने के कारण वह कुछ देर के लिए होश-हवास खो बैठा। अस्पताल में उसकी आँख खुली और थोड़ा होश आया तो उसने अपने दिमाग पर ज़ोर देकर याद कर लिया कि उसके कोट की जेबों में मास्को भेजे जाने वाले गुप्त सन्देशों के कागज मौजूद हैं, जिन्हें कोई भी आसानी के साथ पढ़ सकता था। गहरी चोट के सदमे के कारण उसका दिमाग घूम रहा था। आँखों के सामने स्याही छायी हुई थी, लेकिन उसने अपनी संकल्प-शक्ति का साथ नहीं छोड़ा और डाक्टरों से बोझिल आवाज में कहा—"जब तक मैक्स नहीं आयेगा, मैं आपरेशन नहीं करा सकता।"

डाक्टरों ने मैक्स का पता मालूम करके उसे अस्पताल में बुला लिया और जब अस्पताल के उस कमरे में वह पहुँचा, जहाँ ज़ोरगा अपने हवास

पर काबू रखने का प्रयत्न कर रहा था। उसने सारे स्टाफ को कमरे के बाहर निकल जाने का आदेश देकर मैक्स से कहा—"मेरी जेबों को खाली कर दो..."

इससे आगे वह कुछ न बोल सका और उस पर गहरी बेहोशी छा गयी। सप्ताहों बाद जब अस्पताल से छुट्टी मिली तो उसने सदा के लिए मोटर-साइकिल का उपयोग न करने की सौगंध खा ली।

इस वर्ष तीन अन्य घटनाएँ हुईं, जिन्होंने ज़ोरगा का महत्व कई गुणा बढ़ा दिया। इससे पूर्व वह अपने हेडक्वार्टर की अनुमति के बिना ऐसे गुप्त समाचार जर्मनी के दूतावास को उपलब्ध कर देता था, जो रूसी हित के विरुद्ध नहीं होते थे। यह समाचार वह दूतावास के मिलिटरी अटैची लेफ्टीनेंट कर्नल आट को देता था। कर्नल आट अपनी कार्यकुशलता के कारण जनरल बना और अब जर्मनी का राजदूत बन चुका था। ज़ोरगा और आट दोनों एक-दूसरे के और भी समीप आ गये। इसी मित्रता के कारण दूतावास का कोई भेद उससे छुपा नहीं रहता था, बल्कि आट की हिदायत के अनुसार उसे प्रायः हांककांग, शंघाई जाना पड़ता था। उसके यह दौरे दूतावासी स्तर पर होते थे, इसलिए उसके सामान की तलाशी लेने का प्रश्न ही नहीं उठता था। इस प्रकार एक ओर वह जर्मनी का दूतावासी अफसर भी बन चुका था और दूसरी ओर उसे यह सुविधा प्राप्त हो चुकी थी, कि विस्तृत जानकारी का वह रिकार्ड, जिसका प्रसारण किया जाना संभव न था, वह उन नगरों में नियुक्त रूसी अधिकारियों के हवाले कर देता था।

जपान की कृषिक, औद्योगिक, वैज्ञानिक, और अन्य भौगोलिक जानकारी का इतना विशाल भंडार उसके द्वारा मास्को पहुँच चुका था कि एक साधारण आदमी के लिए भी जापानी अवस्था को पूरी तरह समझ लेना सरल था।

जर्मन दूतावास में राजदूत की मित्रता के अतिरिक्त उसका इसलिए भी सम्मान किया जाता था, कि राजनीतिक अवस्था के बारे में उसकी

भविष्यवाणियाँ एक-एक करके सत्य साबित हो रही थीं। उन भविष्यवाणियों के पीछे एक बहुत सचेत इन्सान था। रोज़ा की जापानी हुकूमत के कई अधिकारियों का वह निकटवर्ती मित्र था। इसलिए एक महत्वपूर्ण बात यह थी कि जब चीन पर जुलाई, १९३७ में जापान ने पहला हमला किया तो सबका यही मत था कि यह युद्ध आगे न बढ़ सकेगा, पर ज़ोरगा ने दूतावास के कर्मचारियों पर यह भेद खोला था कि युद्ध के शोले भड़कते रहेंगे। चीन लम्बे समय तक विरोध करता रहेगा। अतः १९३८ में जब जनरल आट ने भूतपूर्व राजदूत से चार्ज लिया तो युद्ध उसी प्रकार जारी था, और आट के कानों में ज़ोरगा के ही शब्द गूँज रहे थे।

दूसरी सूचना जनरल लशकोफ के बारे में थी, जो अपनी कमांड छोड़ कर मंचोको (मंचुरिया) की सीमाओं को पार करके जापानी सेना के हत्थे चढ़ गया था। उसने रूसी सेना की गुप्त भाषा (मिलिटरी कोड) को जापान और जर्मनी पर प्रकट कर दी थी। ज़ोरगा ने यह समाचार रूसी गुप्त-सर्विस को पहुँचा कर अपने देश की इतनी महान सेवा की, जिसका मूल्य का अनुमान लगाना कठिन है। यदि यह समाचार रूसी सेनाओं को समय पर न मिलता, तो वह अपना कोड न बदल सकते और इस प्रकार शत्रुओं के लिए उनकी गुप्त गतिविधि की सूचनाएँ खुली हुई पुस्तक की तरह स्पष्ट हो जातीं।

तीसरी महत्वपूर्ण बात यह थी कि १९३७ के मध्य में प्रिंस कोनोई ने जापान के मंत्रिमंडल का प्रधान-पद संभाला। कोनोई के विदेश-मंत्री का प्राइवेट सेक्रेटरी यूटोको का अंतरंग मित्र था और इस प्रकार यूटोको के द्वारा ज़ोरगा ने जापानी विदेश मंत्रालय के संबंध में बड़े-बड़े राज़ प्राप्त करके मास्को पहुँचा दिये। यह मंत्रिमंडल अठारह महीने कायम रहा और इस दीर्घावधि में यूटोको ने अपने संबंध इतने सुदृढ़ कर लिये कि वह इस मंत्रिमंडल की समाप्ति के बाद भी जापानी सरकार के नेताओं की विशिष्ट सभाओं में सम्मिलित होता था।

सितम्बर, १९३९ में हिटलर ने पोलैंड पर हमला करके सारे यूरोप में तहलका मचा दिया। इस हमले का प्रभाव जापान और रूस पर भी पड़ा। जर्मनी के राजदूत ने जानकारी का भंडार उपलब्ध करने के लिए ज़ोरगा को प्रेस-अटैची का पद पेश किया, जिसे उसने स्वीकार नहीं किया। इस घटना ने दोनों के संबंधों में कटुता पैदा कर दी। इसलिए एक गुप्त संधि के अधीन ज़ोरगा ने जर्मनी के राजदूत को विश्वास दिलाया कि वह अपनी नौकरी के साथ-साथ दूतावास को भी आवश्यक जानकारी उपलब्ध करता रहेगा। इतने महत्वपूर्ण पद की नियुक्ति से इन्कार पर शायद आट को सन्देह हुआ, इसीलिए अक्टूबर के महीने में जापानी पुलिस ने ज़ोरगा का पीछा करना आरंभ कर दिया इस पर सीतो नामक एक गुप्तचर पुलिस के अफसर को लगा दिया। गया। सीतो बहुत तेज़ और चालाक अफसर था। उसने ज़ोरगा का पीछा बहुत होशियारी से किया।

एक दिन ज़ोरगा को मास्को से एक रेडियो-सन्देश मिला—"क्या जापानी सेनाओं में १०६, १०९, ११०, ११४, और १०८ नम्बर के डिवीज़न मौजूद हैं और यदि यह सच है तो उनकी ड्यूटी कहाँ से कहाँ है? तुरंत सूचित किया जाये।"

३ मार्च, १९४० को उपरोक्त सन्देश प्राप्त होने के बाद उसे २ मई को एक अन्य सन्देश प्राप्त हुआ—"जापान के विमानों के कारखानों के स्थानों के साथ-साथ यह सूचना भी दी जाये कि १९३९ के दौरान में वहाँ कितनी राइफिलें, तोपें और मशीनगनें ढाली गयी हैं।"

इन सभी प्रश्नों के उत्तर यथासमय दिये जाते रहे। ज्यों-ज्यों समय बीतता जा रहा था, मास्को से सन्देश प्राप्त होने और उनको पालन करने की रफ्तार बढ़ती जा रही थी। केवल १९३९ में पचास अर्थात् लगभग सप्ताह में एक बार मैक्स को ट्रांसमीटर से सन्देश प्राप्त हुए और उनके उत्तरों के उतनी ही बार उसे गुप्त कांड प्रसारित करने पड़े। मैक्स का स्वास्थ्य भी भय और चिन्ता के कारण गिरता जा रहा

था। उसे हर क्षण गिरफ्तारी की आशंका लगी रहती थी। चार साल से वह ऐसी ही आशा-निराशा की अवस्था में जीवन बिता रहा था, पर अपने कर्तव्य को पूरा करने में वह इतना वफादार रहा कि हृदय के दौरे के दौरान भी वह जोरगा के दिये हुए सन्देश प्रसारित करता रहा। इसी बीमारी के दौरान मास्को ने पूछा—"इस समाचार में क्या सत्यता है कि जापान अपनी रिजर्व सेनाओं को लड़ाई के लिए तैयार कर रहा है ?"

बीमारी की दशा में ही मैक्स ने हेडक्वार्टर को सूचना दी कि वह लापरवाह है।

इस समय में जर्मनी के दूतावास के कुछ अधिकारियों ने बर्लिन में जर्मन चीफ प्रेस अफसर को जोरगा के दोहरे चरित्र के बारे में कुछ शिकायती-पत्र भेजे, अतः बर्लिन से एक होशियार और चालाक अफसर टोकियो भेजा गया कि वह जोरगा पर नजर रखे और अपनी रिपोर्ट भेजे। गेस्टापो के इस गुप्त अफसर मीसनजर ने टोकियो पहुँच अपनी जाँच-रिपोर्ट में जोरगा को संदिग्ध घोषित करने के बजाय की योग्यता और वफादारी का प्रमाण-पत्र दे दिया। जब चीफ प्रेस अफसर को जोरगा के बारे में पता चला कि वह अपनी जीविका कमाने साथ-साथ दूतावास में बिना वेतन के काम कर रहा है, तो उसने निजी सन्देशवाहक को एक पत्र दे कर टोकियो भेजा, ताकि वह जोरगा के हवाले कर दे।

यह बड़ा महत्वपूर्ण पत्र था। यह मई, १९४१ में भेजा गया। उस में स्पष्ट-स्पष्ट लिखा था कि जर्मनी ने रूस पर आक्रमण करने का निश्चय कर लिया है, जिससे तीन लाभ होंगे—

१—यूरोप की सबसे बड़ी गल्ले की मंडी यूक्रेन पर कब्जा हो जायेगा।

२—कम-से-कम दस लाख रूसी बंदी जर्मनी के कारखानों में काम करने के लिए मिल जायेंगे।

३—जर्मनी अपनी पूर्वी सीमाओं की ओर से निश्चिंत हो जायेगा।

हिटलर का विचार था कि जून का महीना इस आक्रमण के लि
सबसे उपयुक्त है, इसलिए आक्रमण में विलम्ब करना जर्मनी के हि
के विरुद्ध होगा। इस पत्र के लाने वालों की बातों से प्रकट होता था
जर्मनी के दो सौ डिवीज़न आधुनिक अस्त्र-शस्त्र और टैंकों से लैस हो
अन्तिम आदेश की प्रतीक्षा में हैं। सबसे पहले मास्को, लैनिनगार्ड
यूक्रेन पर अधिकार किया जायेगा। उसके बाद सर्दियों में साइबेरि
रेलवे के द्वारा जापान से संबंध कायम करने का प्रयत्न किया जायेगा

इतनी महत्वपूर्ण जानकारी मिलने पर ज़ोरगा खुशी से पागल
गया। उसने उसी दिन मैक्स के द्वारा अपने सामने यह सूचना मा
को पहुँचा दी, पर उसका उत्तर प्राप्त होते ही वह क्रोध से पागल
गया। उसके मुँह से झाग निकलने लगी और दुख से पाँव पट
लगा। उपरोक्त सूचना के उत्तर में कहा गया था कि "यह सू
केवल झूठ है।"

स्टालिन ने हिटलर से १९३९ में एक गुप्त संधि की थी, जि
अनुसार दोनों देश एक-दूसरे पर आक्रमण नहीं कर सकते थे और
की विजय के बाद उसके दो भाग रूस और जर्मनी को मिलेंगे।

पर २२ जून को हिटलर ने रूस पर इतना जबरदस्त हमला
कि रूस का अस्तित्व संकट में आ गया। ज़ोरगा की सूचना
निकली। यदि रूसी नेता उसकी बात पर ध्यान देते तो रूस को
भारी जानी और आर्थिक नुकसान न बर्दाश्त करना पड़ता। उस आ
की भविष्यवाणी को गलत करार देने के कारण ज़ोरगा बच्चों की
रोने-बिलखने लगा। उसने दुख भुलाने के लिए बेतहाशा शराब
शुरू कर दिया।

एक ओर उसकी प्रतिष्ठा को धक्का लगा था। दूसरी ओर
जीवन का सिद्धांत साम्यवाद और उसे फैलाने वाली संसार की ए
शक्ति दम तोड़ रही थी।

जर्मनी के इस आक्रमण के कुछ महीने बाद मास्को ने उसे ए

महत्वपूर्ण काम दिया। जोरगा को तुरंत हेडक्वार्टर को इस बात का स्पष्टीकरण करना था कि जर्मनी के इस आक्रमण के बाद क्या जापान भी रूस पर आक्रमण करेगा।

जोरगा ने इस भेद को प्राप्त करने के लिए उज़ाकी और यूटोको से सहायता ली और उसने अपने देश को इतने महत्वपूर्ण समाचार से अवगत कराया, जिसके कारण रूस युद्ध में जर्मन नाज़ियों से निश्चिंतता से लड़ सका। जोरगा की यह सूचना यदि मास्को न पहुंचती, तो लाखों सिपाहियों को अकारण साइबेरिया की जापानी सीमाओं पर अपना समय नष्ट करना पड़ता।

ज़ोरगा ने अपनी सरकार को ४ अक्टूबर, १९४१ को सूचित किया कि जापान साइबेरिया पर आक्रमण नहीं करेगा। वहाँ की जलवायु जापान के निवासियों के लिए अनुकूल नहीं है। उसके बजाय जापान ने तय कर लिया है, कि वह चीन, इंडोनेशिया की ओर बढ़ेगा। जापान सिंगापुर, हांगकांग जैसे महत्वपूर्ण बन्दरगाहों पर अधिकार करना चाहता है। यह वह अन्तिम सूचना थी, जिसके बाद ज़ोरगा की टोली को सन्देश प्रसारित करने का अवसर न मिल सका। ज़ोरगा का भाग्य वर्षों से उसका साथ दे रहा था, पर अब परिस्थितियाँ उसके विरुद्ध हो गयीं। यूटोको को यक्ष्मा का रोग हो चुका था। मैक्स ने कई बार संकटों से साक्षात्कार होने के कारण हृदय का रोग गले लगा लिया था।

एक बार जब वह अपने ट्रांसमीटर से मास्को संदेश प्रसारित कर रहा था कि एक मजदूर ने, जो उसके मकान की मरम्मत के लिए आया था, उसे देख लिया। यह नहीं कहा जा सकता, कि उसने जापानी खुफिया पुलिस को सूचना दी या संयोग था कि एक खुफिया पुलिस का अफसर मैक्स की अनुपस्थिति में उसकी नौकरानी से एक ऐसे फ्रांसीसी के बारे में पूछ-ताछ शुरू कर दी, जो मैक्स के एक पड़ोसी जापानी अफसर की लड़की के पीछे लगा हुआ था।

मैक्स की अनुपस्थिति में ही वह रोज आता और प्रश्न करके

नौकरानी को परेशान कर देता। एक दिन संयोगवश नौकरानी के मुंह से निकल गया कि उसका स्वामी आधी रात को उठ कर एक मशीन से अजनबी भाषा में बातें करता है। इतनी-सी सूचना पुलिस-अफसर अयामा के लिए पर्याप्त थी। इससे पूर्व एक टेली-कम्यूनी कमिशन अफसर ने उससे कहा था कि वह इस क्षेत्र में जाँच करके बताये कि वह कौन-सी इमारत है, जहाँ से शार्ट-वेव पर कुछ प्रसारित होता रहता है।

आयामा को विश्वास हो गया कि वह अपनी मंजिल तक पहुंच गया है, पर उसने सीधे ही तत्काल कदम उठाने से परहेज़ किया।

ज़ोरगा ४ अक्टूबर, १९४१ की शाम को अपनी जापानी पत्नी नहाको के साथ दोहरा मनोविनोद मनाने के लिए एक मदिरालय में पहुँचा। उसी तारीख को उसका ४३वाँ जन्मदिन भी था और नहाको के साथ शादी की छठी बरसी भी। मदिरालय के दौरान में उसने महसूस किया कि दर्जनों अजनबी आँखें उसे देख रही हैं। सादा लिबास में जापानी खुफिया पुलिस उसका घेरा किये हुए है। स्थिति का अच्छी तरह निरीक्षण करके वह अपनी पत्नी की बाँहों में हाथ डाले मदिरालय से बाहर निकल आया और उसे अपने साथ घर ले जाने के बजाय हिदायत दी कि वह अपनी माँ के पास चली जाये। जब हालात अनुकूल होंगे तो वह तार के द्वारा उसे वापस बुला लेगा। नहाको अपने पति की असलियत से अनभिज्ञ थी, किन्तु बिना किसी प्रश्न के विदा हो गयी। यह उसके पति की आखिरी मुलाकात थी।

ज़ोरगा स्पाई रिंग का महत्वपूर्ण सदस्य यूटोको एक स्कूल चलाने वाली स्त्री की सहायता किया करता था। जापानी पुलिस को उस स्त्री पर किसी कारण सन्देह हो गया, तो उसके घर की तलाशी के दौरान अमरीकी करेंसी की बड़ी संख्या उसके घर से बरामद हुई। स्त्री ने बताया कि यह धनराशि उसे यूटोको से मिली है। पुलिस ने यूटोको का रिकार्ड देखा। वह अमरीका में रह चुका था, किन्तु वर्तमान

यक्ष्मा-रोग के कारण घर पड़ा रहता था। बीमार कलाकार के पास इतनी धनराशि कहाँ और कैसे आयी, इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए पुलिस ने सहसा यूटोको के घर पर छापा मारा। इस छापे के बीच में पुलिस ने बड़ी महत्वपूर्ण दस्तावेजें बरामद कीं, जिनके अध्ययन से स्पष्ट प्रकट था कि वह किसी दूसरी हुकूमत का जासूस है।

पुलिस ने यूटोको पर प्रश्नों के बौछार कर दी। यह सिलसिला दो दिन तक जारी रहा, पर पुलिस को उसके अन्य साथियों के बारे में जानकारी न हो सकी। जाँच-पड़ताल तथा पूछ-ताछ के दौरान यूटोको ने अवसर पाकर अपने दो-मंजिला मकान से सिर के बल छलाँग लगा दी। यह संयोग था कि तीस फुट ऊँचाई से सिर के बल गिरने के बाद उसे कोई चोट नहीं आयी। पुलिस उसे गिरफ्तार करके थाने ले गयी। यहाँ आकर यूटोको बिलकुल बदल चुका था। उसने समझ लिया था कि अब अपराध स्वीकार करने के अलावा कोई अन्य उपाय नहीं। अतः उसने अपनी टोली के सभी हालात बयान कर दिये। पुलिस अफसर विस्मय से उसके रहस्योद्घाटन सुनते रहे।

यूटोको से आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के बाद पुलिस ने ऊज़ाकी पर हाथ डाल दिया। उसने यातना और कष्टों के अठारह घण्टे बिताने के बाद जो कुछ कहा, उससे जोरगा, बरंको, और मैवस के असली व्यक्तित्व अपने सही रूप में प्रकट हो गये। पुलिस ने उस खुफिया पुलिस अफसर सीतो को बुला कर साफ-साफ आदेश दिया कि वह जोरगा पर कड़ी नजर रखे, लेकिन उसे गिरफ्तार न करे। उसके साथ-साथ स्पष्ट शब्दों में उसे अवगत कर दिया गया कि उसके फरार होने या आत्महत्या करने का पूरा उत्तरदायित्व सीतो पर आयेगा।

सीतो ने १५ अक्टूबर को एक ऐसा मकान किराये पर लिया, जो जोरगा के घर के सामने था और उसकी गतिविधि पर इस प्रकार निगरानी शुरू कर दी, जैसे एक बिल्ली किसी चूहे के बिल को टकटकी बाँधे देखती रहती है।

१६ अक्टूबर को कुछ मुखबिरों की सूचना पर पुलिस ने मैक्स के मकान पर जोरगा, बरंको और स्वयं अपने दोनों साथियों उज़ाकी और यूटोको की रहस्यपूर्ण गिरफ्तारी पर बहस करते हुए देख लिया, पर इन तीनों को गिरफ्तार नहीं किया गया, यद्यपि वह उनकी सारी बातचीत टेप कर चुकी थी।

इसका कारण स्पष्ट था कि प्रिंस कोनोई के मंत्रिमंडल के दौरान इन विदेशियों को गिरफ्तार करना हितकर न था और उस मंत्रिमंडल की समाप्ति उजले दिन की तरह स्पष्ट थी, अतः उसी दिन १६ अक्टूबर की शाम को जब कोनोई ने प्रधानमंत्री के पद से त्यागपत्र दिया तो जापानी पुलिस ने सबसे पहला काम उसी रात को यह किया कि इन तीनों विदेशियों को उनके बिस्तरों से लगा कर गिरफ्तार कर लिया।

जर्मन राजदूत जनरल आट को जब जोरगा की गिरफ्तारी का समाचार मिला तो वह बिफरे हुए शेर की तरह पुलिस-हेडक्वार्टर पहुँचा। उसे अपने कानों पर विश्वास न था। जर्मनी का ऐसा वफादार आदमी, जिसने गत पाँच-छह वर्षों में अति रहस्यपूर्ण, महत्वपूर्ण और लाभकारी सूचनायें अपने दूतावास को उपलब्ध की थीं, हरगिज रूसी जासूस नहीं हो सकता था, पर जब जोरगा ने अपराधी-पूर्ण लज्जा के साथ उससे इस मामले पर बातचीत करने से इनकार कर दिया तो जनरल आट को स्थिति की नजाकत का अहसास हुआ।

दूतावास वापस पहुँच कर जनरल आट ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया।

ज़ोरगा जेल में भी विलासितापूर्वक रहने लगा। उसके पास लगभग तीस हजार रुपये थे। जापानी हुकूमत के कानून के अनुसार हर बंदी अपनी धनराशि को कारागार में जिस प्रकार चाहे, व्यय कर सकता था। उनकी गिरफ्तारी के लगभग आठ महीने बाद मई, १९४२ में

इन तीन विदेशियों की गिरफ्तारी के समाचार अखबारों में प्रकाशित हुए और १९४३ में उन पर मुकदमा चलाया गया। यूटोको जेल में मुकदमे के दौरान ही वह अपने स्थायी यक्ष्मा-रोग का शिकार हो गया। और बरंको कैद की सज़ा सुनने के डेढ़ साल बाद न्यूमोनिया से मर गया। मैक्स को भी आजीवन कारावास का दण्ड मिला और उसकी पत्नी एना को तीन साल की सजा हुई, किन्तु १९४५ में अमरीकी सैनिकों ने राजनीतिक बंदियों को आम माफी दी, तो दोनों को रिहा कर दिया गया।

उज़ाकी और ज़ोरगा को मृत्यु-दण्ड दिया गया। कुछ दिन तक ज़ोरगा इस आशा में रहा कि उसे भी युद्ध-बंदियों के बदले में रिहा करा लिया जायेगा, पर रूसी सरकार ने यह मानने से इनकार कर दिया कि ज़ोरगा रूसी जासूस था, बल्कि उलटा जापानी सरकार को दोषी करार देते हुए अपने एक वक्तव्य में कहा कि टोकियो में ज़ोरगा-स्पाई-रिंग केवल जापान का आविष्कार है। किसी ऐसी गुप्त सर्विस का रूसी सरकार से सीधे या अन्य ढंग से कोई संबंध नहीं रहा।

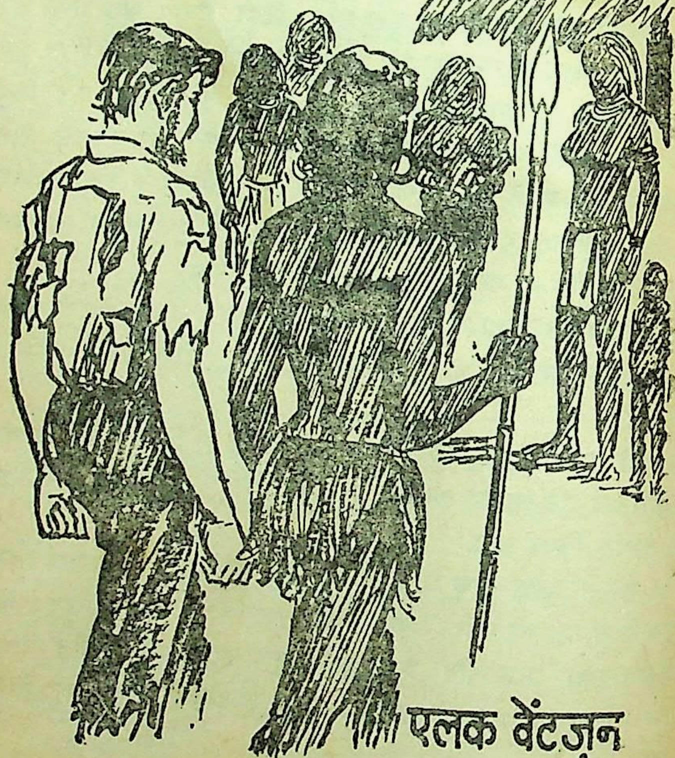
ज़ोरगा की आशाओं पर तुषारपात हो गया। उसका चेहरा मुरझा गया। ७ नवम्बर, १९४४ को उज़ाकी और ज़ोरगा को फाँसी दे दी गयी।

ज़ोरगा की मौत का एक दिलचस्प पक्ष यह है कि २४ वर्ष के बाद रूस में कई ऐसे स्मारक स्थापित किये गये जिन्हें रिचर्ड ज़ोरगा के नाम से सम्बद्ध किया गया।

रूस के प्रदेश बाकू में, जहाँ वह पैदा हुआ था, एक सड़क उसके नाम से सम्बद्ध की गयी। रूसी समुद्री जहाजों में से एक का नाम रिचर्ड ज़ोरगा रखा गया और एक डाक-टिकट पर उसकी तस्वीर छापी गयी और इस प्रकार उसे सोवियत संघ का हीरो स्वीकार कर लिया गया।

●●

मासूम टापू



एलक वेंटज़न

दूसरे महायुद्ध आरंभ होने से दो वर्ष पूर्व तक मेरी फर्म खूब चली थी। छह-सात वर्ष हुए मेरी फर्म छोटी-सी दुकान हुआ करती थी, लेकिन प्रकृति ने मुझे कुछ ऐसी व्यापारिक सूझ-बूझ दी थी, कि मैंने ज़रा-जितनी दुकान को लिमिटेड बना लिया, जिसके बीसियों भागीदार थे। मैंने खूब धन कमाया पर मानवीय प्रकृति में लोभ का जो अंश है, वह नैतिकता और आचरण को पतन की तरफ ले जाता है। मैं भागीदारों को धोखे में रख कर नफे को नुकसान में ज़ाहिर करने लगा! मैं महल जैसे मकान में रहता था। अपनी लांच



उसने एक हत्या की और उसके बाद अपने लांच पर चढ़ कर समुद्र की यात्रा शुरू कर दी। वह किसी एक ऐसे टापू में पहुँचा, जो हर दृष्टि से विभिन्न था। वहाँ क्या हुआ?



थी, जिससे मैं प्रायः समुद्र में दूर तक निकल जाया करता था। मैं जवान भी था। धनी और सुन्दर भी। ऊँची सोसाइटी में मेरा नाम बहुत ऊंचा था। लंदन के अमीरों, वज़ीरों की लड़कियाँ मेरे गिर्द मक्खियों की तरह भिनभिनाती रहती थीं। एक-से-एक सुन्दर, एक-से-एक चंचल थीं। हर लड़की मेरे साथ शादी करने को बेचैन थी। यही कारण था कि मैं न जाने कितने मर्दों का रकीब था। मैं शादी करना चाहता था, लेकिन इतनी सारी लड़कियों में चुनाव करना कठिन था। हद यह कि दो लड़कियों की माएँ भी मेरे साथ शादी करने के लिए अपने पतियों से तलाक लेने पर उतर आयीं थीं। लेकिन मुझे पता न था कि मेरी जीवन-साथिन लंदन की धनी और फैशनपरस्त सोसाइटी में नहीं, बल्कि

जवा-सुमात्रा के झुरमट में एक वीरान सुनसान टापू में जंगलियों की तरह जीवन व्यतीत कर रही है।

मैं शादी तो न कर सका, उच्छृंखल और विलासी अवश्य हो गया। और मेरी दौलत विलासिता में उड़ने लगी। लड़कियों की फरमाइशों ने मुझे कंगाल कर दिया। खर्च आय की अपेक्षा अधिक हो गये। मैं फर्म के नाम पर बैंक से कर्ज़ा ले सकता था, लेकिन मैं बैंक को भी धोखा देने पर तैयार हो गया। यह एक लम्बी कहानी है कि मैंने बैंक को किस तरह धोखा दिया। सारांश यह कि मैंने एक जाली चेक बना कर एक बैंक से बीस हज़ार पौंड और एक अन्य बैंक से तीस हज़ार पौंड निकलवा लिये, लेकिन दोनों बैंकों को मेरे अपराध का तुरंत पता चल गया। संयोगवश दोनों बैंकों के मैनेजिंग डाइरेक्टर भले आदमी थे। दोनों ने मिल कर यह निर्णय किया कि पुलिस में रिपोर्ट करने के बजाय मुझे कहें कि मैं रकम वापस कर दूँ। उनकी शराफत को देखते हुए मुझे ऐसा ही करना चाहिये था, लेकिन मैं अपने आप को रकम वापस करने पर तैयार न कर सका।

कठिनाई पैदा हो गयी कि उन्होंने एक वकील मेरे पास भेजा। यह वकील असभ्य किस्म का आदमी था। उसे तो बात करने की भी तमीज़ नहीं थी। उसने मध्यस्थता करने के वजाय मुझे धमकाना शुरू कर दिया। यदि वह शराफत और अच्छे ढंग से बात करता तो शायद मैं रकम वापस कर देता। निस्संदेह मैंने संगीन अपराध किया था, और मुझे न जाने कितने वर्षों की सज़ा मिल सकती थी, लेकिन जब उस उजड्ड वकील ने मेरे घर में प्रवेश करते ही मुझ से कहा—"अगर तुम तीन दिन के अंदर-अंदर दोनों बैंकों की पूरी रकम लिखित क्षमा-पत्र सहित न दोगे, तो मैं तुम्हें दो अपराधों में पन्द्रह-पन्द्रह वर्ष की सज़ा दिलाऊँगा। फिर मैं देखूंगा कि लंदन की लड़कियाँ किस तरह तुम पर मरती हैं।"

मैं जल उठा। मैंने कहा—"मैं रकम वापस नहीं करूँगा। वह

चैक जाली नहीं थे। न मैं किसी से क्षमा माँगूँगा।"

"क्या तुम साबित कर सकते हो कि चेक जाली नहीं थे?" वकील ने ऐसे स्वर में पूछा जैसे अदालत में मुझ से बहस कर रहा हो।

"मैं तुम्हारे किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दूँगा।" मैंने कर्कशता से कहा।

"तुम्हें मेरी बात का उत्तर देना होगा।" उसने बड़े रोब से कहा और यह भी कहा—"तुम चोर हो। तुम अपराधी हो। तुम्हें अधिकार प्राप्त नहीं कि एक सम्मानित वकील से कर्कशता से बात करो। सारी सोसाइटी जानती है कि तुम चरित्रहीन और विलासी इंसान हो।"

मैं गुस्से से अंधा हो गया। वकील पचास-साठ वर्ष की आयु का कमज़ोर सा आदमी था। मैंने उसके मुँह पर पूरी ताकत से घूँसा मारा वह कुरसी से उठा तो मैंने एक घूँसा उसके पेट पर मारा। वह आगे को झुका। मैंने नीचे से उसकी ठोड़ी पर घूँसा मारा। मैं पागल हो चुका था। मैं ने छलाँग लगायी और उसके पेट पर जा कूदा। फिर मुझे याद है कि वह मरा पड़ा था और उसके मुँह से ख़ून बह रहा था। उस समय मैं अपने में आ गया और उस भयानक अहसास ने मुझे कंपा दिया कि मैंने एक आदमी की हत्या कर दी है। मैं आदी अपराधी था तो नहीं कि मुझे पता होता कि आदमी की हत्या करके लाश को कैसे छुपाया जाता है या क्या किया जाता है। मुझे अपनी रुसवाई ही नहीं, बल्कि अपनी मौत सामने नज़र आ रही थी। दिमाग साथ छोड़ गया। मैं सोफे पर गिर पड़ा और निढाल हो गया। कमरा ख़ून की बू से भरता जा रहा था।

मैंने उठ कर देखा तो वकील की लाश नज़र आयी। उसका चेहरा भयानक था। मैंने घर से भाग जाने का इरादा किया। जितनी नकदी घर में मौजूद थी, वह जेबों में ठूँसी और मैं कमरे में ताला लगा कर बाहर आ गया। मैं चलता चला गया और टेम्स दरिया के किनारे

जा पहुंचा। खुली फिजा और ठंडी हवा से दिमाग ज़रा-ज़रा सोचने लगा। दरिया के प्रवाह को देख कर मुझे अपनी लांच याद आ गयी। इस विचार से मेरा दिमाग-अच्छा-भला होकर मुझे राह दिखाने लगा। मैंने कुछ मिनटों में देश से ही भाग जाने की स्कीम तैयार कर ली।

मैंने टैक्सी ली और लांच के लिए तेल और पैट्रोल के बहुत से कनस्तर भरवा कर टैक्सी में रख लिये। फिर मैं मार्केट में गया और खाने-पीने का असंख्य सामान ले कर टैक्सी में लदवा लिया। इस सामान में फल, दूध, मछली, मक्खन आदि के बंद डिब्बे थे। मैंने एक कनस्तर पानी का भरवा लिया और टैक्सी वाले को बन्दरगाह तक ले गया। सारा सामान अपनी लांच में रखवाया। टैक्सी वाले ने हंस कर पूछा—"आप शायद दुनिया के गिर्द चक्कर लगाने जा रहे हैं ?"

मैंने हँसी का जवाब हँसी से दिया और कहा—"मुझमें इतनी हिम्मत कहाँ ? हम दस-बारह मित्र पिकनिक के लिए कल खुले समुद्र में जा रहे हैं। मछली का शिकार भी खेलेंगे। शायद कुछ दिन समुद्र ही में रहना पड़े।"

टैक्सी चली गयी तो मैं प्रकटतः बेपरवाह-सा हो कर बन्दरगाह पर टहलने लगा ताकि कोई सन्देह न करे कि मैं घबराया हुआ हूँ या मैं भागने की चिन्ता में हूँ। मेरी लांच ज़रा परे बँधी पानी की सतह पर डोल रही थी। मेरी आशाएं भी अब समुद्र पर डोलती नज़र आ रही थीं। समय बहुत धीरे-धीरे बीत रहा था और हर क्षण आशा थी कि कोई जासूस इधर आ निकलेगा और मुझे गिरफ्तार कर लेगा। एक कांस्टेबिल बन्दरगाह पर टहल रहा था। उसने एक दो बार देखा तो मैं यों काँप गया, जैसे उसे पता हो गया है कि मैं धोखेबाज़ी और हत्या का भगौड़ा अपराधी हूँ। मैं आज सूर्य डूबने की प्रतीक्षा में था। यों लगता था जैसे आज का सूर्य कभी न डूबेगा।

आखिर सूर्य डूबने लगा। मैंने बन्दरगाह से लांचों की मरम्मत करने वाले एक मिस्त्री को पकड़ा और उससे कहा कि मेरी लांच में न जाने

क्या नुक्स है कि स्टार्ट नहीं होती। वास्तव में लोगों पर यह साबित करना चाहता था कि मैं लांच की मरम्मत करवा रहा हूँ। मिस्त्री ने आ कर लांच का मुआयना किया और जैसे ही स्टार्ट करने लगा इंजन चल पड़ा। वह तो अच्छा-खासा इंजन था। मिस्त्री ने कहा—"आपको शायद स्टार्ट करने का ढंग नहीं आता।" उसने मुझे लम्बा लेक्चर दे डाला। उसने इंजन बंद किया और कहा कि, अब स्वयं स्टार्ट करो। अतः मैंने इंजन चला लिया। फिर मैंने मिस्त्री से कहा—"आप चलें। मैं ज़रा लांच को दूर ले जा कर टेस्ट कर लूँ। कई बार इंजन चलते-चलते रुक जाता है।"

मिस्त्री लांच से उतर कर करीब बंधी हुई एक लांच पर खड़ा हो गया। सूर्य अस्त हो चुका था। मैंने लांच स्टार्ट की। रुख खुले समुद्र की ओर किया और शाम के अंधेरे में खो गया। बहुत दूर जाकर मैंने सोचना शुरू किया कि कौन-से देश का रुख करूँ। मैं कोई व्यवसायी जहाज़रान तो नहीं था कि सही दिशा का निश्चय कर लेता। मेरे मस्तिष्क में आस्ट्रेलिया आया लेकिन यह विचार आ गया कि वहाँ भी ब्रिटेन का राज्य है। पकड़ा जाऊँगा। फिर भारत का विचार आया तो वहाँ भी ब्रिटेन की सरकार थी। आखिर निश्चय किया कि अफ्रीका के पश्चिमी तट पर पहुँच कर देखूँगा कि कौन-सा उपयुक्त रहेगा। मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार लांच की दिशा अफ्रीका के तट की ओर कर दी।

रात तो बीत गयी, लेकिन सुबह हुई तो दिल पर हौल छाने लगा। समुद्र में इतनी दूर आने का यह पहला अवसर था। मेरे चारों ओर गहरा नीला समुद्र था। तट का निशान तक न था। यों लगता था, जैसे सारी दुनिया केवल पानी है और मैं अकेला इंसान जिंदा हूँ। रात को मैं सो गया था और लांच चलती रही थी। मुझे डर था कि दिशा किसी और तरफ न हो गयी हो। मैंने दिशादर्शक को गौर से देखा। फिर सूर्य को देखा तो पूर्व पश्चिम का पता चल गया। मैंने देखा कि

लांच का इंजन बहुत गर्म हो गया था। मैंने इंजन बंद कर दिया और लांच ज़रा दूर जा कर धीरे-धीरे डोलने लगी।

मेरे करीब से एक लहर उठी और लांच ने बड़े ज़ोर से एक हिचकोला खाया। मैंने देखा कि एक बहुत बड़ी मछली तेजी से करीब से गुज़र गयी थी और आगे जा कर वापस मुड़ रही थी। मुझे तुरंत खयाल आ गया कि मैंने पुस्तकों में शार्क मछलियों के बारे में पढ़ा था, जो बहुत खतरनाक होती हैं। छोटी-छोटी नावों को उलट देती हैं और इंसानों को खा जाती हैं। मेरे रोंगटे खड़े हो गये। मैंने लांच का इंजन फिर चला दिया। इधर लांच ने गति पकड़ी उधर से वह भयानक मछली सीधी लांच के सामने आ गयी। मैंने करीब जा कर लांच को एकदम घुमा दिया और मछली की टक्कर से बच गया। मछली फिर घूम कर पीछे से आयी। अब मैंने उसके खूँख्वार दाँतों को भी देख लिया था। वह बिफरी हुई थी। जब वह करीब आयी तो मैंने फिर लांच को घुमा कर बचा लिया। इस प्रकार कोई घण्टा भर यह मछली हर कोण से लांच पर हमलावर हुई, लेकिन मैंने उसका हर हमला बेकार कर दिया। आखिर मछली थक-हार कर भाग गयी, लेकिन मेरा दम खुश्क हो गया।

वह दिन बीत गया। फिर रात भी बीत गयी। उसके बाद मुझे कुछ याद नहीं कि कितने दिन और कितनी रातें बीत गयीं। लांच की गति कोई तेज नहीं थी। फिर भी इतने दिनों बाद तट नज़र न आया। मेरे पास राशन बहुत था। पानी भी था, जो मैं केवल पीता था। मैंने मितव्ययता के लिए इतने दिनों तक मुँह-हाथ भी नहीं धोया था। दो बार मुझे शार्क मछलियों से वास्ता पड़ा, लेकिन मैं बच गया। अब तो मुझे समुद्र से डर लगने लगा था। हत्या जैसा अपराध अंतःकरण में काँटे की तरह चुभ रहा था। कई बार यों लगता जैसे समुद्र मुझ से हत्या का बदला लेने पर तुला हुआ है।

एक दिन समुद्र की लहरें जोश में नज़र आने लगीं। लांच डोलने लगी। फिर हवा एकदम बंद हो गयी। वातावरण पर सन्नाटा-सा छा

गया। मैं समुद्र की उस निस्तब्धता से भी डरने लगा। मेरी नज़रें समुद्र की विशालता पर भटकने लगीं। एक ओर देखा, तो समुद्र का रंग बदला-बदला सा नज़र आया। मैंने पुस्तकों में इस बारे में भी प्रायः पढ़ा था। मेरा दिल डूबने लगा और आकाश का रंग फीका पड़ते-पड़ते स्याह काला हो गया। समुद्र की निस्तब्धता हवा के तेज़ झोंकों से अस्त-व्यस्त हो गयी और इससे पूर्व कि मैं मानसिक रूप से तूफान के लिए तैयार होता, मैं प्रलयंकारी तूफान की लपेट में आ गया। हर ओर अंधकार छा गया और मेरी लांच जो समुद्र के सीने पर बड़ी खूबी से तैरती रही थी कागज़ की नाव की तरह ऐसे हिचकोले खाने लगी, जैसे किसी क्षण डूब जायेगी। तूफानी मौजों की यह अवस्था थी कि लांच के ऊपर से गुज़र रही थीं। लांच पानी से भरने लगी और मैं पम्प से पानी वापस समुद्र में फेंकने लगा, लेकिन पाँव जमा कर खड़ा होना कठिन था। लांच को मौजे दूर ऊपर उठा ले जातीं और निर्ममता से पटक देतीं थीं। मैंने इंजन को बंद कर दिया, क्योंकि पेट्रोल बह जाने से आग लग जाने का खतरा था। इंजन बंद हुआ तो मैंने अपने आपको और लांच को समुद्र की दया पर छोड़ दिया।

मुझे कुछ याद नहीं कि यह तूफान कितनी देर रहा और लांच अब कौन से स्थान पर थी या किस दिशा में बही जा रही थी। शायद मैं बेहोश भी हो गया था। इतना याद है कि मैं लाइफ-बैलट के भरोसे तैर रहा था और लांच लापता थी। मैं शिथिल हो गया था। ज़रा होश ठिकाने आये तो देखा कि मैं तट से कुछ ही गज़ दूर था। मैंने बची-खुची शक्ति से हाथ-पाँव मारे और तट पर जा पहुंचा। पता नहीं कौन-सा देश था। मैं रेत पर थोड़ी दूर तक चला। फिर टाँगों ने शरीर का बोझ घसीटने से इनकार कर दिया। मैं गिर पड़ा और आँख लग गयी।

मुझे कोई झंझोड़ रहा था। मैं हड़बड़ा कर उठा। चार-पाँच नंग-धड़ंग जंगली आदमी बरछियाँ ताने मुझे घेरे में लिए हुए थे। मैं पहले ही भयभीत और निढाल था। अब इन हवशियों की बरछियों

और चेहरों को देखा तो रही-सही शक्ति भी जवाब दे गयी। मैं फटी-फटी आँखों से उन्हें देख रहा था और सोच रहा था कि इनसे कौन-सी भाषा में बात करूं, लेकिन दुर्बलता ने मुझे खड़ा भी न रहने दिया। मैं घुटनों के बल बैठ गया। दो आदमियों ने मुझे बाँहों से थामा और घसीटने लगे। मैंने चलने की चेष्टा की तो वह मुझे ढकेलते हुए कुछेक झोपड़ियों के करीब ले गये। झोंपड़ियों के बाहर पुरुष भी खड़े थे और स्त्रियाँ भीं। मैंने इनमें अजीब-सा संमिश्रण देखा। कई पुरुष तो बिलकुल हब्शी किस्म के काले रंग के थे और कइयों का रंग अच्छी किस्म का बादामी था। स्त्रियाँ गन्दुमी रंग की थीं, लेकिन शरीर और शक्ल-सूरत से खासी आकर्षक। पुरुष और स्त्रियां कपड़ों से लगभग बेरपरवाह थे। उन्होंने केवल चौड़े पत्तों या कपड़े के जरा जितने टुकड़े से गुप्त अंग ढांपे हुए थे।

सामने एक झोंपड़ी थी। जो बाँसों के ढांचे से बनी हुई थी। उसके सामने एक अर्द्धनग्न आदमी हाथ में पिस्तौल लिए खड़ा था। उसकी शक्ल-सूरत जंगली नहीं थी। वह सभ्य संसार का आदमी लगता था। उसकी उम्र पचास वर्ष भी हो सकती थी और साठ वर्ष भी। मुझे उसके सामने खड़ा कर दिया गया। मैंने अंगरेजी में कहा—"इन लोगों से कहो, मुझे पानी पिलायें।" उसने न जाने किस भाषा में उन्हें कुछ कहा और एक आदमी भाग कर पानी ले आया।

"तुम कौन हो?" उसने मुझसे पूछा—"तुम्हारा नाम क्या है?"

मैंने स्पष्ट रूप से महसूस किया कि उसका स्वर जर्मन था। मैंने उसे बताया—"मैं हवाई जा द्वीप रहा था, लेकिन तूफान में जहाज गर्क हो गया। पता नहीं कितने यात्री बचे हैं। मैं लाइफ-बैलट से तैरता यहाँ तक आ पहुँचा हूँ। आप मुझ पर दया करें। आपके पास नावें होंगी। यदि मुझे एक नाव दे दें तो मैं...."

"अब तुम यहाँ से नहीं जा सकोगे।" उसने कहा—"यदि तुमने

यहां से चोरी-छुपे निकलने की या नाव चुराने की चेष्टा की तो तुम ज़िंदा नहीं रहोगे।"

"यह कौन-सा देश है?" मैंने बेबसी से पूछा—"यह शायद टापू है?"

"यह मेरा देश है।" उसने जर्मन स्वर में अंगरेज़ी में उत्तर दिया—"यहाँ मेरा राज्य है। यहाँ कभी कोई विदेशी नहीं आया। सात वर्ष बीते, दो अजनबी आये थे। मैंने उन्हें भी कहा था कि भागने का प्रयत्न न करना, लेकिन उन्होंने भागने का प्रयत्न किया और मेरी प्रजा के हाथों मारे गये। यही हश्र तुम्हारा होगा। अब तुम यहीं रहोगे और इन लोगों के साथ रोज़मर्रा का काम-काज करोगे। हमें धोखा देने का प्रयत्न न करना। यदि एक वर्ष तक तुम्हारा रवैया विश्वसनीय रहा तो तुम इस टापू में स्वतंत्रता से घूम-फिर सकोगे और जिस लड़की को पसन्द करोगे, उसके साथ तुम्हारी शादी कर दी जायेगी, लेकिन जो स्त्रियाँ मेरे स्वामित्व में हैं, उन पर तुम्हारा कोई अधिकार न होगा।"

मेरे सामने यही एक अवस्था थी कि मैं इस अनोखे राजा की दासता स्वीकार कर लूँ और जब अवसर मिले, भाग निकलूँ। मैंने उसे कहा कि भागने का प्रयत्न नहीं करूंगा, अतः उसने मुझे अपने ही घर के काम-काज में लगा लिया। मैं उसकी झोंपड़ी की सफाई करता था। पानी लाता था और इसी प्रकार के घरेलू काम करता जो मेरे सुपुर्द थे। उसकी झोंपड़ी के पांच छोटे-छोटे कमरे थे और वहाँ आठ स्त्रियाँ थीं। यह सब-की-सब सुन्दर थीं।

मैं निरन्तर छह महीने इसी काम पर लगा रहा। इस अरसे में मैं तट तक भी गया। वहाँ छोटी-बड़ी नावें बंधी हुई थीं, लेकिन मुझे वहाँ से भागने का साहस न हुआ। टापू में पुरुष और स्त्रियाँ इकट्ठे काम करते थे, जिनमें काश्तकारी भी थी। वे सब्जियाँ भी उगाते थे और चावल भी। शुरू में मेरा विचार था कि इन लोगों का आचरण अच्छा नहीं होगा, क्योंकि वह प्रकटतः पिछड़े और जंगली थे। मैं गुमान भी

न कर सकता था कि पुरुष सुन्दर और आकर्षक जवान लड़कियों के साथ अर्द्धनग्न रह कर पवित्र रह सकते हैं, लेकिन मैंने देखा कि कोई पुरुष किसी स्त्री को पाप भरी नज़र से नहीं देखता था। उनके जीवन में पाप, झूठ, और लड़ाई-झगड़े का नाम-निशान नहीं मिलता था। न उनमें झूठी विडम्बना थी, न बनावट। वह ऐसी हमदर्दी के आदी थे, जिसका संबंध भाषा से नहीं दिल से था। यह लोग नंगे और गंवार अवश्य थे, लेकिन उनके जीवन और संस्कृति में जो स्थिरता और मासूमियत-सी थी, उसने मेरे दिल पर गहरा प्रभाव डाला और मेरा दिल लग गया। मैं छह महीनें में अपने देश की सभ्यता, धनिक और फैशनपरस्त सोसाइटी को भूल गया, और मैंने भागने का इरादा छोड़ दिया।

अब मैं सोचने लगा कि शादी के लिए कौन-सी लड़की को चुनूं। मेरी नज़र केवल एक लड़की पर पड़ती थी, जिसे मैं सफेद त्वचा की कह सकता था। वह खासी सुन्दरी थी। बाद में मुझे पता चला कि वह उस टापू के राजा की बेटी है। मैंने एक दिन उससे संबंध स्थापित करने का प्रयत्न किया तो वह मुझ से खुल गयी, लेकिन उसने लज्जा का दामन न छोड़ा। यही उसकी सुन्दरता थी।

ग्यारह महीने बीत गये। इतनी लम्बी अवधि में न मैंने भागने का प्रयत्न किया था, न किसी को मेरे विरुद्ध कोई शिकायत पैदा हुई। राजा मुझसे खिचा-खिचा रहता था, लेकिन उसका रवैया बदलने लगा। एक रात उसने मुझे अपने सामने बिठा लिया। उसकी बेटी करीब ही बैठी हुई थी।

"मेरा नाम म्यूलर है," उसने कहना शुरू किया, "तुम्हारे रवैये को देख कर मैं तुम्हें इस योग्य समझने लगा हूँ, कि तुम्हें सारी बातें बता कर इस टापू का बाकायदा निवासी बना लूँ। मैं जर्मनी का रहने वाला हूं। यह मेरी बेटी एना है। इसकी माँ जावा की रहने वाली थी। वह मर गयी है। मैं यहाँ १९१७ में आया था। बीस-बाईस वर्ष बीत गये। पहले महायुद्ध उत्कर्ष पर था। मैं एक जर्मन जहाज का कप्तान था।

उस आखिरी समुद्री जहाज़ में मेरी पत्नी भी मेरे साथ थी। मेरा जहाज़ शत्रु के घेरे में आ गया। मेरे तोपचियों ने मुकाबला किया और मैं जहाज़ को जाने किस ओर भगा ले जाने का प्रयत्न करता रहा। आखिर मेरा जहाज़ गर्क हो गया। मेरे सभी आदमी डूब गये। केवल मेरी पत्नी और मैं बच सके। हम दोनों के हाथ जहाज़ की छोटी-सी नाव आ गयी थी। हम बहते-बहते इस टापू में आ निकले। मैंने यहाँ के लोगों को देखा तो डर गया। वह वहशी और खूँख्वार नज़र आ रहे थे, लेकिन उनमें ऐसी इंसानी हमदर्दी, प्यार और सहृदयता देखी, तो मुझे किसी देश में नजर नहीं आयी थी। मैंने अपने देश वापस जाने का प्रयत्न ही न किया और यहीं का हो रहा। मैंने उन्हें काश्तकारी के तरीके सिखाये। उन्हें अच्छी किस्म की झोंपड़ियाँ बनाना सिखाईं, लेकिन मैंने अपने धार्मिक मिशनरियों की तरह उन्हें धर्म के बारे में कुछ न कहा। वास्तव में उन लोगों का कोई धर्म नहीं, लेकिन उससे क्या अन्तर पड़ता है? जो चीजें खुदा को प्रिय हैं, वह उनमें मौजूद हैं. . . .

"इन लोगों ने मुझे और मेरी पत्नी को अपनी बिरादरी में शामिल कर लिया। जब उनका सरदार मर गया तो उन्होंने मुझे सरदार बना लिया। फिर यह बच्ची पैदा हुई और मेरी पत्नी मर गयी। मैंने उन लोगों को शिष्टाचार के सिद्धांत सिखाये। यह तो पहले ही मासूम लोग थे। मेरे पथप्रदर्शन ने उन्हें और अधिक मासूम बना दिया। तुमने मेरे पास जो पिस्तौल देखा था, इस टापू में यही एक अस्त्र है और दस गोलियाँ, लेकिन मुझे उसकी कोई जरूरत नहीं और न कभी उसकी जरूरत महसूस होगी। इतना जरूर है कि मैंने इन लोगों को बरछों और तीर-कमानों से युक्त कर रखा है और उन्हें युद्ध प्रशिक्षण भी दे रखा है। बस यह है मेरी कहानी।"

"और मेरी कहानी इतनी-सी है," मैंने कहा, "कि मैं भागा हुआ अपराधी हूँ।"

"कोई बात नहीं," उसने कहा, "तुमने यहाँ कोई अपराध नहीं

किया। दायाँ हाथ ऊपर उठा कर कहो कि मैं एलक रैंटजन को वचन देता हूँ कि इस टापू में शांति कायम रखूँगा और यहाँ के कानून का पूरा-पूरा सम्मान करूँगा और यदि इस टापू पर किसी ने भी हमला किया तो मैं इसकी रक्षा में प्राण न्यौछावर करने से भी नहीं हिचकिचाऊंगा।"

मैंने सच्चे मन से उसके शब्द दुहराये तो उसने मेरे साथ हाथ मिलाया और बोला—"अब तुम इस टापू में जहाँ चाहो, जा सकते हो। तुम यहाँ के स्वतंत्र निवासी हो। यदि तुमने शादी के लिए किसी लड़की को चुना हो तो बता दो, मैं तुम्हारी शादी कर दूँगा?"

"हाँ," मैंने कहा, "मैंने लड़की चुन ली है।" मैंने उसकी बेटी की ओर इशारा करते हुए कहा—"यह लड़की, जिसका नाम एना है।"

मेरा विचार था, कि वह इनकार कर देगा, लेकिन उसने अपनी बेटी से पूछा—"एना! तुम इसे पति के रूप में स्वीकार करती हो?"

एना ने रज़ामंदी में सिर हिलाया और सिर झुका कर धीरे से "हाँ" कहा। म्यूलर उठा और उसने अपनी बेटी का हाथ मेरे हाथ में देकर हमारे सिरों पर हाथ रखे और बोला—"चूँकि तुम एक-दूसरे को स्वीकार करते हो, इसलिए मैं इस टापू के कानून के अनुसार घोषणा करता हूँ कि आज से तुम बाकायदा पति-पत्नी हो।"

जब मैं उस टापू में स्वतंत्रता से घूमने-फिरने लगा तो मुझे यह टापू स्वर्ग की तरह खूबसूरत नज़र आया। एना केवल सुन्दर ही नहीं थी, वह वफादार भी थी। चांदनी रात में टापू के लोग नाचते और गाते थे। कोई किसी को धोखा देने का प्रयत्न नहीं करता था। शादी के संबंध में यहाँ रिवाज यह था कि अगर एक साल तक कोई पत्नी बच्चा पैदा न करे तो उसके पति को दूसरी पत्नी करने की अनुमति होती थी। यदि उसके गर्भ से भी बच्चा पैदा न हो तो वह तीसरी स्त्री के साथ शादी कर सकता था। अगर उससे भी बच्चा न हो तो चौथी शादी की भी इजाज़त होती थी। अगर चौथी शादी का भी एक साल

बिना बच्चा के बीत जाये तो उससे यह समझ लिया जाता था कि बच्चा न होने की जिम्मेदारी पुरुष पर लागू होती है, अतः उस पुरुष को शादी से वंचित कर दिया जाता था और उसकी चारों पत्नियों को टापू के योद्धा जवानों के साथ विवाह दिया जाता था। यदि उनमें से किसी के यहाँ या सब के यहाँ बच्चे पैदा होने लगें तो उनके पहले पति को सज़ा के तौर पर उनके घरों पर जाकर नौकरों की तरह घरेलू काम करने पड़ते थे। इस रिवाज़ का यह लाभ था कि उस समाज में स्त्री को विशिष्ट स्थान प्राप्त था ।

उस टापू में १९४२ तक (अर्थात् पाँच साल के अरसे में) केवल दो अपराध हुए । एक ने कशीद की हुई शराब इतनी अधिक पी ली थी, कि वह बेहूदा हरकतें करने लगा था और फिर एक बार एक आदमी ने एक लड़की पर ज़बरदस्ती की थी । म्यूलर ने दोनों को एक ही जैसी सज़ा दी । सजा यह थी कि अपराधी को पेड़ के तने के साथ बाँध कर इतने ज़ोर से बेंत मारे गये कि उसके शरीर से खून बहने लगा और वह बेहोश हो गया । उसे खोल कर जंगल में फेंक दिया गया, जहाँ अपनी मरहम-पट्टी वह स्वयं करता रहा । दोनों का यही हश्र किया गया । म्यूलर ने बाकायदा अदालत की तरह गवाहियाँ भी सुनी थीं और अपराधियों की सफाई भी सुनी थी ।

हो सकता है कि सभ्य संसार वालों के लिए मेरी कहानी केवल काल्पनिक कहानी हो, लेकिन मैं उस टापू का निवासी रहा हूं और हर बात का साक्षी हूँ। उस समय तक हमें कोई पता न था कि दूसरा महायुद्ध भी शुरू हो चुका है और उस युद्ध का तीसरा वर्ष चल रहा है । हम संसार से बेपरवाह थे । कम से कम मुझे तो इतना भी नहीं पता था कि हमारे करीब कोई अन्य टापू भी है या नहीं। मुझे इतना पता था कि हम जावा के आस-पास के सैकड़ों टापुओं में से एक ऐसे टापू में जीवन व्यतीत कर रहे थे जिससे संसार वालों को कोई दिलचस्पी नहीं थी। उस टापू में रखा ही क्या था कि कोई बियाबान में दिलचस्पी

लेता ? लेकिन एक दिन सहसा युद्ध हमारे मासूम टापू में भी आ पहुंचा।

हुआ यों कि हमारा एक जंगली साथी हाँफता-हाँफता हुआ भागा आया और म्यूलर को बलाया कि तट पर सफेद लोग अजीब-सी फट-फट करती नाव में आये हैं। म्यूलर ने पिस्तौल निकाला। उसमें गोलियां भरीं और अपने योद्धा आदमियों को बुला कर उन्हें उनकी भाषा में हिदायतें दीं। वे बरछियां और तीर उठाये कुछ मिनटों में बन्दरों की तरह कूदते फलाँगते नजरों से ओझल हो गये। म्यूलर ने मुझ से कहा—"वे जानते हैं कि उन्हें क्या करना है। वे बेजिगरी से लड़ेंगे। तुम मेरे साथ आओ। चल कर देखते हैं कि टापू में कौन आया है?"

वह ब्रिटिश नौसेना के दो अफसर और तीन जहाजरान हैं। तट के साथ उनकी गनबोट खड़ी थी। जब हम उनके करीब आ गये तो उन्होंने कहा—"जापान भी युद्ध में शामिल हो गया है। उसकी सेनाएं अन्ध महा सागर के टापुओं को रौंदती बहुत तेजी से बढ़ी आ रही हैं। हम सभी टापुओं में रहने वाले ब्रिटिश और अमरीकी लोगों को सचेत करते फिरते हैं कि अपने बचाव का प्रबन्ध कर लें। अगर आप का अपना कोई प्रबन्ध है तो आप टापू से निकल जायें। अगर नहीं, तो हमारे साथ आ जायें। जापानी सिपाही यूरोप के किसी निवासी को ज़िंदा नहीं छोड़ते।"

"हमारा विचार है कि यह टापू जापान के आक्रमण के राह में नहीं आयेगा।" म्यूलर ने कहा, "उन्हें जावा और सुमात्रा में दिलचस्पी होगी। यहाँ आ कर वे क्या करेंगे।"

ब्रिटिश नौसेना के आदमी हमें सचेत करके चले गये। म्यूलर ने मुझ से कहा—"तुमने अभी युद्ध नहीं देखा। हमें अब सचेत रहना पड़ेगा। अगर जापानी इधर भी आ गये, तो हम लड़ेंगे..." वह चुप हो गया। ज़रा देर सोच कर बोला—"लेकिन अपनी बेटी का खयाल आता है तो समझ में नहीं आता कि क्या करूं?"

उसने हर ओर संतरी नियुक्त कर दिये, जो छिप कर समुद्र पर नज़र

रखने लगे। स्वयं म्यूलर की यह अवस्था थी कि वह पिस्तौल लिए तट के साथ-साथ घूमता रहता था। मैं हैरान था कि दस-बारह गोलियों से वह कितनी देर लड़ेगा। उसी रात हमें हवाई जहाज़ों की गरज सुनाई दी। पता नहीं यह किस के थे। गरजते गूँजते टापू के ऊपर से गुज़र गये।

तीसरे दिन हम दोनों झाड़ियों की ओट में तट के पास खड़े थे कि दूर से हमारे एक संतरी ने आवाज़ दे कर समुद्र की ओर इशारा किया। हमने देखा कि एक जापानी समुद्री जहाज़ हमारे टापू के करीब आ रुका था और उसमें से जापानी उतर रहे थे। मैंने म्यूलर से कहा कि चलो, यहाँ से हट जायें। हो सकता है, कि यह जापानी टापू को देख कर चले जायें। लेकिन म्यूलर ने बहुत क्रोध से कहा--"यह टापू हमारा है। हम यहाँ से नहीं जायेंगे। इस टापू में मेरी इजाज़त के बिना कोई दाखिल नहीं हो सकता।" मैं चुप रहा। उसने कहा--"तुम छिप जाओ। मैं जर्मन हूँ। वह मुझे कुछ नहीं कहेंगे।"

मैं छुपा रहा और म्यूलर जापानियों से मिलने आगे चला गया। मेरा दिल इस डर से धड़क रहा था कि जापानी उसे गिरफ्तार कर लेंगे। लेकिन म्यूलर ने उन्हें न जाने क्या कहा कि उन्होंने उसके साथ हाथ मिलाया और उन्हें साथ लिये अपनी झोंपड़ी में चला गया। मैं छुप कर देखता रहा थोड़ी देर में वह जापानियों के साथ बाहर निकला और उसने बड़े गर्मजोशी से हाथ मिलाया। तीन जापानी तो तट की ओर चले गये, लेकिन अपने आठ साथियों को वहीं छोड़ गये। म्यूलर ने उन्हें यकीन दिलाया था कि वह जर्मन है और जर्मन होने के कारण अंगरेज़ों और अमरीकियों का शत्रु है।

बाकी जापानी तट पर एक बड़ी भारी लांच को छोड़कर जंगी जहाज़ में चले गये और जहाज़ नज़रों से ओझल हो गया। इतने में एना भागी आयी। उसके हाथ में मेरा खाना था। उसने बताया कि जो जापानी पीछे रह गये हैं, वे इस इलाके में वायरलैस स्टेशन बनायेंगे और

यहाँ मीठे पानी का भंडार भी रखेंगे। यह व्यवस्था उन जापानी पनडुब्बियों के लिए की जा रही है, जो इन समुद्रों में अमरीकी और ब्रिटिश समुद्री बेड़े के विरुद्ध लड़ने आया करेंगी। एना ने यह भी बताया कि म्यूलर इन कुछ-एक जापानियों को धोखा देना चाहता है, क्योंकि वह उनकी लांच पर अधिकार करना चाहता है। वास्तव में म्यूलर मुझे और एना को टापू से निकाल कर आस्ट्रेलिया भेजना चाहता था। उसके लिए लांच की आवश्यकता थी। अब उसकी नज़र जापानियों की लांच पर थी।

वह आठ जापानी शाम को वायरलेस-स्टेशन स्थापित करते रहे। रात को म्यूलर ने मुझे बताया कि "एकाध सप्ताह के अंदर यहाँ जापानी फौज की एक पलटन आयेगी। मैं और मेरे योद्धा फौज का मुकाबला कर सकते हैं, लेकिन मैं जापानी नौसेना का मुकाबला नहीं कर सकूँगा। यह कुल आठ जापानी हैं। इनके पास अस्त्र और बारूद भी है, लेकिन मेरे योद्धा इनको आसानी से खत्म कर देंगे। फिर हम इनकी लांच ले कर यहाँ से निकल जायेंगे। जब युद्ध खत्म हो जायेगा तो हम वापस आ जायेंगे। यह टापू हमारा है। हम अवश्य वापस आयेंगे..."

सुबह हो रही थी। म्यूलर ने मुझे जगाया। मैंने देखा कि उसके साथ बारह चुने हुए योद्धा थे। हम सब जापानियों के कैम्प की ओर बढ़े। एक जापानी संतरी खड़ा था। हमारे एक जंगली ने पीछे से दबे पाँव जा कर इतने ज़ोर से बरछी मारी की संतरी के मुँह से हल्की-सी आवाज़ भी न निकलीं सकी। बाकी सात जापानी गहरी नींद सो रहे थे। इससे पूर्व कि वह जागते जंगलियों की बरछियाँ उन्हें सदा के लिए खत्म कर चुकी थीं। हमने उनका राशन-पानी उठाया। उनका अस्त्र-बारूद भी लिया और उन्हीं की लांच में लादने लगे। सूर्य निकलने तक हम लांच में सभी आवश्यक सामान लाद चुके थे। म्यूलर ने मुझे और एना को लांच में बिठाया। अपने आठ योद्धा जंगलियों को भी साथ लिया और स्वयं लांच स्टार्ट कर दी। टापू के शेष निवासियों

ने हमें विदा किया तो म्यूलर ने ऊंची आवाज़ में कहा--"हम शीघ्र ही वापस आ जायेंगे ।" उसकी आँखों में आँसू थे ।

म्यूलर ने आस्ट्रेलिया का रुख कर लिया । अबके समुद्री सफर से मुझे डर नहीं लग रहा था, क्योंकि लांच को एक नौसैनिक बूढ़ा कप्तान चला रहा था । इसके अलावा यह जंगी लांच होने के कारण मज़बूत भी थी और तेज भी । लेकिन खतरा यह था कि यह जापानी लांच थी । कोई भी ब्रिटिश या अमरीकी जहाज दूर से देख कर गोलाबारी कर सकता था । मैंने सफेद झंडा उतार रखा ताकि खतरे के समय लहराया जा सके । तीसरे दिन एक ब्रितानवी जंगी जहाज़ ने हमें रोक लिया । हमने उसके कप्तान को अपनी कहानी सुनाई तो उसने हमें अपने जहाज़ में बिठा कर लांच को डुबो दिया ।

कुछ दिनों बाद उस जहाज ने हमें आस्ट्रेलिया जा उतारा । म्यूलर को समुद्र में ही बुखार आने लगा था । वैसे भी वह बूढ़ा हो गया था । और अपने टापू से चले आने का दुख भी था । उसे उन लोगों का भी दुख था, जिन्हें वह टापू में छोड़ आया था । वह बुखार और सदमे से बच न सका और मर गया । मैं और एना युद्ध खत्म होने तक आस्ट्रेलिया में रहे । टापू के जो जंगली योद्धा हमारे साथ आये थे, उन्हें मैंने बन्दरगाह में नौकरी दिलवा दी ।

युद्ध समाप्त हुआ तो मैंने इंगलैंड जाने का इरादा किया, लेकिन अपने अपराध और अपनी गिरफ्तारी के वारंट के खयाल से यह इरादा छोड़ दिया । जी में एक ही इच्छा उभरती थी कि उसी टापू में फिर वापस चले जाये, लेकिन मुझे अपने होने वाले बच्चे के भविष्य का खयाल आ गया । बच्चे को सभ्य और शिष्टाचार से वंचित रखने का मुझे कोई अधिकार न था । एना बार-बार कहती थी कि जर्मनी चले जायें । उसका बाप उसे प्रायः जर्मनी की बातें सुनाया करता था । अतः वह अपने पुश्तैनी स्वदेश जाने के लिए बेताब थी । मेरा शरण-स्थान जर्मनी ही

(शेष पृष्ठ १८९ पर)



तीर और हवा

नरेन्द्र स्वरूप

मिडिल-ईस्ट एयरवेज का विमान काहिरा के ऊपर उड़ रहा था। छोटी-छोटी इमारतें अब काफी बड़ी दिखाई दे रही थीं। सड़कों पर मोटरगाड़ियाँ भी दौड़ती नजर आ रही थीं। विमान अब काहिरा हवाई अड्डे की ओर धीर-गति से बढ़ रहा था।

विमान में ४८ यात्री थे। उनमें कुछ भारतीय थे और शेष सब अरब निवासी थे, जो बम्बई और बेरूत से आ रहे थे। कुछ लोगों की यात्रा काहिरा में ही समाप्त हो रही थी और कुछ इस विमान में आगे भी जाने वाले थे।



इसरायल के एक जासूस ने मिस्र की सुरक्षा को भयंकर
खतरा उत्पन्न कर दिया था। उसके चकमे में
मिस्र के सर्वोच्च फौजी अधिकारी
भी आ गये थे।



वह अधिक-से-अधिक चौबीस वर्ष की आयु का था। कपड़े अधिक मूल्यवान नहीं थे, किन्तु सब साफ-सुथरे थे। सिर के बाल, जो कभी अवश्य अच्छे होंगे, पर धूप की गरमी ने उसे ताँबे जैसी रंगत में बदल दिया था।

उसके चेहरे से गहरी चिन्ता के चिन्ह प्रकट होते थे, और आँखों से तनिक व्यग्रता स्पष्ट थी। उसने गहरी साँस लेकर अपने बराबर बैठे हुए यात्री से कहा—"धन्यवाद है ईश्वर का.....मैं तो समझा था शायद हम प्रलय के दिन ही काहिरा पहुँच सकेंगे।" वह बहुत सुन्दर अरबी भाषा बोल रहा था। उसके साथ बैठे हुए यात्री ने विस्मय से कहा—"पर हम काहिरा समय के अनुसार पहुँच रहे हैं।"

"मुझे पता है. . . .पर मेरे सिर पर ऐसी ज़िम्मेदारी है, जिसे पूरा करने के लिए एक-एक क्षण मूल्यवान है।"

साथी यात्री ने उसे घूरते हुए प्रश्न किया--"क्या आप व्यवसाय करते हैं।"

"नहीं।" उसने सिर हिलाते हुए कहा--"मैं विद्यार्थी हूँ।"

"अमरीकन विश्वविद्यालय, बेरूत में ?"

"जी हाँ।"

"काहिरा में कुछ संबंधी रहते हैं ?"

नवयुवक ने एक कटु हँसी हँस कर कहा--"मेरा इस संसार में कोई संबंधी नहीं. . ."

"कोई नहीं ?" यात्री ने विस्मय से प्रश्न किया।

"सब मारे गये, शहीद हो गये. . . ." नवयुवक ने दुख-भरे स्वर में उत्तर दिया।

"कब. . .कहाँ ?"

"मेरा वतन फिलस्तीन है। उरदन के दरिया के पश्चिमी किनारे पर मेरा गाँव था। मेरे माँ-बाप और दो छोटे भाई वहाँ रहते हैं। मुझे उच्च शिक्षा के लिए माता-पिता ने बेरूत भेज दिया था। कोई दो साल हुए इस्राइली खूंख्वार कुत्तों ने हमारे गाँव पर हवाई हमला किया और नेपाम बम बरसाये। नतीजे में पूरा गाँव जल कर राख हो गया और एक भी निवासी नहीं बचा। उसके साथ ही मेरा सारा परिवार भी खत्म हो गया। अब मेरा संसार में कोई नहीं. . . ."

"खेद ! मुझे अति खेद है," साथी-यात्री ने कहा--"काहिरा में आप कहाँ ठहरेंगे ?"

"अभी मुझे कुछ पता नहीं।" नवयुवक ने उत्तर दिया।

साथी-यात्री ने अपनी जेब एक कार्ड निकाल कर उसे देते हुए कहा--"मुझे आपकी कहानी सुन कर दुख हुआ। अगर किसी समय मेरी मदद की जरूरत हो तो इस पते पर तशरीफ ले आएँ।"

नवयुवक ने कार्ड ले कर देखा। उस पर लिखा था—

'नामान साऊद, मिलिटरी कांट्रैक्टर,

३४०, शाहराह फारुक, काहिरा।'

कार्ड पढ़ कर नवयुवक की आँखों में तेज़ चमक पैदा हो गयी। उसने कहा—"धन्यवाद। आप मिलिटरी कांट्रैक्टर हैं, इसलिए सुरक्षा विभाग के बहुत-से अफसरों से आपका परिचय होगा।"

"अवश्य है।" मिस्टर नामान ने सिर हिलाया।

"मेरा नाम खालिद रियाज़ है। आप मेरी एक बड़ी महत्वपूर्ण मदद कर सकते हैं।"

"क्या ?"

"मैं किसी उच्च मिलिटरी अफसर से मिलना चाहता हूँ।"

"क्यों ?" नामान ने उसे संदिग्ध नज़रों से देख कर कहा।

"खेद, इस बारे में अभी मैं कुछ नहीं बता सकता, लेकिन मेरा किसी बड़े मिलिटरी अफसर से मिलना परमावश्यक है।"

"बड़े मिलिटरी अफसर किसी आम आदमी से उस समय तक नहीं मिलते, जब तक उन्हें कारण पता न चले।" नामान ने उत्तर दिया।

खालिद रियाज़ कुछ क्षण चुप रहा। फिर उसने कहा—"अगर मैं यह कहूँ कि मुझे इसराइली फौजों के कुछ राज़ का पता है ?"

"क्या सचमुच ऐसा है ?" नामान ने विस्मय से पूछा।

"सॉरी, मिस्टर नामान! मेरे कन्धों पर इतना बड़ा बोझ है कि मैं आपको कुछ बता नहीं सकता, पर अगर आप शीघ्रातिशीघ्र किसी जनरल से मेरी मुलाकात करा दें तो आप मेरी मदद के साथ-साथ अपने देश की सेवा भी करेंगे।"

उसी समय जहाज़ रन-वे पर दौड़ता हुआ एयरपोर्ट की इमारत के सामने जा कर ठहर गया। नामान ने अपनी बेल्ट खोल कर उठते हुए कहा—"ऑल राइट मिस्टर खालिद रियाज़। छह बजे शाम को

आप मुझे अलमशरूब कैफे में मिलिये। क्या आप काहिरा पहले आ चुके हैं?"

"जी नहीं! मैं पहली बार आया हूँ।"

"तो आप टैक्सी वाले को बता दीजिये। अलमशरूब काहिरा का काफी मशहूर कैफे है---खलदून स्क्वायर पर।"

"थैंक्स मिस्टर नासान! मैं अवश्य पहुँच जाऊंगा।" नवयुवक ने उत्तर दिया और अपना छोटा-सा ब्रीफ-केस उठा कर दरवाज़े की ओर चल दिया।

पन्द्रह मिनट प्रतीक्षा के बाद ही कस्टम अफसर की मेज पर उसका अटैची-केस आ गया। कस्टम आफीसर ने उसका पासपोर्ट खोल कर देखा। बेरूत एयरपोर्ट की मोहरों को चेक किया। फिर उकाबी नज़रों से अटैची को इधर-उधर से देखा, नवयुवक खालिद रियाज ने अटैची-केस की चाभी पेश कर दी।

सब से ऊपर एक मोटी-सी दर्शन की पुस्तक रखी थी। एक दरम्यानी किस्म का कैमरा था और जापानी ट्रांजिस्टर था।

कस्टम अफसर ने पुस्तक उठा कर एक ओर रख दी और कैमरा खोल कर देखने लगा। नवयुवक ने पुस्तक हाथ में ले ली। कैमरे में फिल्म नहीं थी। अफसर ने कैमरा बंद करके ट्रांजिस्टर को खोल कर देखा। फिर उसने अटैची के सामान की तलाशी ली। उसमें कपड़ों और रोज़मर्रा के आवश्यक सामान के अलावा कुछ नहीं था। कोई दो सौ मिस्री पौंड के ट्रैवलिंग चैक थे।

अटैची-केस में कोई गुप्त खाना भी नहीं था। कस्टम अफसर ने अटैची-केस बंद करके आश्वस्त अंदाज में सिर हिलाया और उस पर चाक का निशान लगा दिया।

कस्टम अफसर बेवकूफ नहीं था, बल्कि वह मनोवैज्ञानिक फरेब में आ गया था। केमरा, ट्रांजिस्टर और पुस्तक। तीन चीजें एक ही समय उसके सामने थीं। ज़ाहिर बात थी कि मामूली पुस्तक पर

उसे ध्यान देने की आवश्यकता नहीं थी। कैमरे और ट्रांजिस्टर में हीरे आदि छुपाये जा सकते थे।

अगर वह कैमरा और ट्रांजिस्टर के बजाय दर्शन की उस मोटी पुस्तक को खोल कर देख न लेता तो खालिद रियाज़ को यह साबित करना कठिन हो जाता कि उसकी पुस्तक के बीच में कागज़ों की डेढ़ इंच मोटी तह काट कर एक माइक्रो वेव ट्रांसमीटर किसने रख दिया था?

खालिद रियाज़ ने बड़ी निश्चिन्तता से अपना पासपोर्ट जेब में रखा। पुस्तक को लापरवाही से बगल में दबाया और अटैची-केस उठा कर कस्टम आफिस से बाहर आ गया।

ठीक छह बजे टैक्सी कैफे अलमशरूब के सामने आ कर रुकी। खालिद रियाज़ गहरे रंग का सूट पहने टैक्सी से उतर कर कैफे में दाखिल हुआ।

अंदर कैफे भरा हुआ था। हलकी गुलाबी प्रकाश शफक का दृश्य पेश कर रहा था। दरवाज़े के करीब एक टेबल पर नामान एक अधेड़ उम्र की मोटी-सी स्त्री के साथ बैठा था। खालिद को देख कर उसने मुस्करा कर हाथ से इशारा किया। खालिद ने करीब जा कर ऊंची आवाज़ में अभिवादन किया।

नामान ने उत्तर देकर कुरसी पर बैठने का इशारा किया। फिर स्त्री का परिचय कराते हुए बोला—"मेरी बीवी लबना और यह खालिद रियाज़ हैं।" नामान की बीवी ने कुछ रस्मी शब्द कहे। खालिद ने निस्संकोच भाव से उत्तर दिया। खालिद के लिए काफी का आर्डर देने के बाद नामान ने कहा—"मैंने मेजर जनरल तूसी को फोन किया था। वह बहुत व्यस्त आदमी हैं, लेकिन मेरे आग्रह पर वह कुछ मिनट तुम्हें देने को तैयार हैं।"

खालिद की आँखों में तेज़ चमक पैदा हो गयी। उसने उल्लासपूर्ण स्वर में कहा—"क्या सचमुच मिस्टर नामान? ओह! आपने मेरी

एक बहुत बड़ी कठिनाई हल कर दी है। फिर हम जनरल से कब मिल रहे हैं ?"

"दस बजे उन्होंने टाइम दिया है। आज शाम तुम हमारे मेहमान हो। डिनर के बाद मैं तुम्हें स्वयं वहाँ ले चलूँगा।"

"थैंक यू सर! आप अभी अनुमान नहीं लगा सकते कि आप अपने देश की कितनी बड़ी सेवा कर रहे हैं।"

काफी आ जाने के बाद नामान ने पूछा--"क्या आप मुझे इशारे से भी नहीं बता सकते कि आप जनरल से क्यों मिलना चाहते हैं ?"

"अभी नहीं प्लीज। शायद कुछ रोज़ बाद बता सकूँ।"

"आल राइट! अगर आप उचित नहीं समझते तो न सही।"

ठीक दस बजे नामान की खूबसूरत ब्यूक मेजर-जनरल तूसी के बँगले पर रुकी। दरवाज़े पर सशस्त्र सिपाही मौजूद था। वह नामान से परिचित था। उसने कहा--"जनरल आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, मिस्टर नामान।"

नामान ने धन्यवाद किया। वे दोनों जनरल के ड्राइंग-रूम में प्रविष्ट हुए।

जनरल तूसी पचपन साल का हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति था। साँवला रंग था। कनपटियों के बाल सफेद हो चुके थे। नामान ने खालिद रियाज का परिचय कराया। जनरल ने खालिद को सिर से पाँव तक आलोचनात्मक नज़रों से देखते हुए कहा--"कहिये, मिस्टर खालिद। आप मुझसे क्यों मिलना चाहते थे ?"

"क्षमा कीजिये। क्या मैं केवल पाँच मिनट आपसे एकांत में बात कर सकता हूँ ? मुझे विश्वास है, मेरी बात सुन कर आप मेरी इस सावधानी को पसन्द करेंगे।" जनरल ने एक बार नामान की ओर देखा। फिर कन्धों को उचका कर कहा--"ओ० के० नौजवान। 'तुम मेरे साथ आओ। मुझे यकीन है, मिस्टर नामान अन्यथा नहीं लेंगे।

"बिलकुल नहीं।" नामान ने सिर हिला दिया।

...जनरल खालिद को लेकर एक दूसरे कमरे में चला गया और ...राम से बैठने के बाद बोला––"अब तुम मुझे बताओ, क्या किस्सा ...और क्यों इतनी राज़दारी है?"

...खालिद ने जनरल के चेहरे पर नज़रें जमा कर कहा, "जनरल ...अगर मैं यह कहूँ कि अति शीघ्र ही एक खास दिन खास समय पर ...राइली हवाई जहाज मिस्र के मीज़ाइल अड्डों पर बमवर्षा करने वाले ...तो क्या आप विश्वास कर लेंगे?"

"अब हम लोग १९६८ की तरह सोये हुए नहीं हैं, नौजवान। इस... ...यली अब हम पर धोखे से हमला नहीं कर सकते। तुम साफ-साफ ...हो कि क्या कहना चाहते हो, बल्कि पहले यह बताओ कि तुम कौन ...?"

"मैं अमरीकी यूनीवर्सिटी में दर्शन का छात्र हूँ। मेरा पूरा परिवार ...न के पश्चिमी किनारे पर इसराइली हवाई हमले से तबाह हो ...है। यूनीवर्सिटी में कुछ स्थानीय यहूदी छात्र भी पढ़ते हैं। ...में से एक छात्र दायानी मेरा मित्र था।

"यह तीन दिन पहले की बात है। दायानी ने और मैंने एक ...प्रपात पर पिकनिक मनाने का प्रोग्राम बनाया। इस उद्देश्य के ...वह अपने पिता की कार ले आया था। हम दोनों पिकनिक पर ...ना हो गये। दिन भर दायानी शराब पीता रहा। शाम को जब ...वापस चले तो वह काफी नशे में था। मैंने उससे बहुत कहा कि ...मुझे गाड़ी ड्राइव करने दे, लेकिन उसने न माना और स्वयं गाड़ी ...व करने लगा।

"परिणामस्वरूप उसने गाड़ी एक बड़ी चट्टान से टकरा दी। यह ...संयोग था कि मेरी ओर के दरवाज़े का ताला अच्छा न था। ...का लगते ही वह दरवाज़ा खुल गया और मैं गाड़ी से निकल कर ...जा पड़ा।

"कुछ देर बाद जब मुझे होश आया तो मैंने देखा कि दायानी के

सीने में स्टीयरिंग-ह्वील घुस गया था और वह मुरदा था।

"उस सड़क पर ट्रैफिक न होने के बराबर था। मैं यद्यपि सौभाग्य-वश ज़ख्मी भी नहीं हुआ था, लेकिन बेहद भयभीत हो गया था।

"फिर जब मैं गाड़ी के अंदर पानी लेने के लिए थर्मस ढूंढ रहा था तो मैंने एक अजीब चीज़ देखी। शेवरलेट कार के दरम्यानी हिस्से में नीचे की ओर लोहे का बक्स बना हुआ था, जो ऊपर से खुल जाता था, लेकिन दुर्घटना से टूट गया था। उस बक्स में अमरीकी ट्रांजिस्टर रखा था, और कुछ कागज़ात रखे थे। मैंने वह कागजात खोल कर देखे। मैं यद्यपि मिलिटरी नक्शे और कागज़ात देखने का माहिर नहीं हूं, फिर भी उनसे मुझे अनुमान हो गया कि वह बहुत महत्वपूर्ण काग-ज़ात हैं। मुझे तुरंत अनुमान हो गया कि दायानी नहीं, तो उसका बाप अवश्य इसराइली एजेंट हैं। मेरा अनुमान यह था कि इसराइली शीघ्र ही बड़ा आक्रमण करने वाले हैं। मुझे यह मालूम हैं कि नये रूसी मीज़ाइल अड्डों ने इसराइली हवाई हमलों को लगभग असफल कर दिया है। इसराइली जासूस इन अड्डों के सही स्थान जानने के लिए भरसक प्रयत्न कर रहे थे। मेरा अनुमान है कि वे इन अड्डों का पता चला चुके हैं और अब इन्हें समाप्त करने के लिए हवाई हमला करना चाहते हैं।"

"क्या तुम्हारे पास वह नक्शे हैं?"

"जी हां।..." खालिद ने सिर हिला कर भीतरी जेब से कागज़ात निकाल कर जनरल के हवाले कर दिये। जनरल ने कागजात को कुछ देर गौर से देखा। जनरल के चेहरे पर तनाव था और माथे पर बल थे।

नक्शे बिलकुल ठीक थे।

कुछ देर के बाद जनरल ने नक्शे अपनी जेब में रखते हुए कहा—"मुझे यह नक्शे मिलिस्ट्री के अन्य विशेषज्ञों के पास भेजने होंगे। तुमने अच्छा किया कि सीधे मेरे पास चले आये। अगर यह नक्शे

ौर काग़ज़ात ठीक हैं तो सरकार तुम्हारा अहसान कभी नहीं भूलेगी।"

"यह मेरा कोई अहसान नहीं, बल्कि कर्त्तव्य था। अरब कौम इस मय संकट में है और हर अरब का कर्त्तव्य है कि कौम पर अपना ब कुछ कुर्बान कर दे।"

"तुम्हारा आवास कहाँ है ?" जनरल ने प्रश्न किया।

"फिलहाल मैं अलहमरा में ठहरा हुआ हूँ।"

"ओ० के०, वहीं रह कर प्रतीक्षा करो। मैं अभी स्पेशल सन्देश-ाहक के द्वारा यह कागजात विशेषज्ञों के पास भेज दूँगा और जैसे ही ोई सूचना मिलेगी, तुम्हें सन्देश भेज दूँगा।"

"ओ० के० सर !"

"थैंक-यू नौजवान !" जनरल ने उठकर हाथ मिलाया। फिर वह ाहरी कमरे में आये। जनरल ने नासिर से भी कुछ इधर-उधर की ातें कीं। उसके बाद वे दोनों विदा हो गये।

उन दोनों के जाते ही जनरल ने फोन पर एक नम्बर मिला कर हा—"अलहमरा में एक नौजवान खालिद रियाज़ ठहरा हुआ है, स्वयं को अमरीकी यूनीवर्सिटी बैरूत का छात्र बताता है। आज ही ाहिरा से आया है। मैं चाहता हूँ कि उसके बारे में शीघ्रातिशीघ्र ी छानबीन करके मुझे रिपोर्ट भेजी जाये।"

उसके बाद जनरल ने एक विस्तृत पत्र लिखा और खालिद रियाज़ दिये हुए कागजात अपने पत्र के साथ एक लिफाफे में बंद करके लाख ी मोहरें लगा कर एक अधीनस्थ के द्वारा भिजवा दिया।

दूसरे दिन शाम को जनरल के सामने दो रिपोर्टें पड़ी हुई थीं। नमें से एक रिपोर्ट में दर्ज था—

"खालिद रियाज़, दर्शन एम० ए० का छात्र, उम्र चौबीस साल। हरे पर बारीक मूँछें। गन्दुमी रंग। तीन साल से यूनीवर्सिटी का ात्र है। नगर में एक प्राइवेट मकान में रहता है।

"दायानी एक स्थानीय यहूदी नौजवान था। वह भी दर्शन का

छात्र था। दो दिन पहले कार-दुर्घटना में मारा गया। दुर्घटना के बाद कार में आग लग जाने के कारण लाश शनाख्त नहीं हो सकी। केवल उसकी अँगूठी और घड़ी आदि से शनाख्त हो सकी।

"खालिद रियाज़ उसी दिन से गायब है। स्थानीय पुलिस उससे कुछ पूछ-ताछ करने के लिए उसकी तलाश में है।"

दूसरी रिपोर्ट में दर्ज था—

"नक्शे ठीक हैं। कोड आसान थे। इसी सप्ताह में किसी रात इसराइली हवाई हमला का प्रोग्राम है। नक्शे के अनुसार जहाज इसराइली साहिलों से नहीं आयेंगे, बल्कि असूद सागर में किसी जगह विमान-वाहक जहाज से आयेंगे, ताकि मिस्री राडर-सिस्टम को धोखा दे सकें।"

जनरल ने दोनों रिपोर्टें सुरक्षापूर्वक तिजोरी में रख कर तुरंत अलहमरा फोन किया। खालिद उस समय लाउंज में था। एक बैरे ने उसे फोन पर बुला दिया। जनरल ने कहा—"मिस्टर खालिद क्या आप तुरंत आ सकते हैं ?"

"यस सर !"

"मैं गाड़ी भेज रहा हूँ, वहीं प्रतीक्षा कीजिये।"

"थैंक यू सर !" खालिद ने उत्तर दिया।

बीस मिनट बाद ही खालिद जनरल के सामने बैठा था। जनरल ने उसके चेहरे पर नज़रें जमाते हुए पूछा—"तुमने मुझे यह नहीं बताया था कि दायानी की मोटर को आग लग गयी थी और वह जल कर शनाख्त के अयोग्य हो गया था।"

"आग तो मैंने स्वयं लगायी थी, सर।" खालिद ने मुसकराते हुए कहा।

"क्यों ?"

"इसलिए कि मैं नहीं चाहता था कि स्थानीय पुलिस उस ट्रांजिस्टर को देखे। उससे तुरंत दायानी के बाप को गिरफ्तार कर लिया

जाता। इसराइली सरकार सावधान हो जाती। मैंने सोचा, कि अभी इसराइली सरकार बेखबर रहे तो अच्छा है। मैं यह कागजात पाकर यहाँ पहुँचाने के लिए बेताब था, ताकि उनको ज़िम्मेदार हाथों में पहुँचा सकूँ, बल्कि अब मुझे याद आया कि एक बार मैं दायानी के साथ उसके घर पर भी गया था। जब उसका बाप घर पर नहीं होता था, वह मुझे साथ ले जाता था।

"उस रोज़ वह अपने बाप की तिजौरी खोल कर मुझे अपने परिवार का पुराना एलबम दिखा रहा था। सहसा एलबम में से कुछ फोटो नीचे गिर पड़े थे। उस दुर्घटना के बाद मुझे खयाल आया कि वह फोटो मिस्त्री फौज के अफसरों के थे। मैं तीन दिन से लगातार सोच रहा हूँ। दायानी का बाप इसराइली जासूस था। फिर उसकी तिजौरी में मिस्त्री फौजी अफसरों के फोटो कैसे आये? क्या यह मुमकिन है कि यह अफसर सरकार के गद्दार हों और किसी लालच में इसराइली सरकार के लिए काम करते हों?"

"क्या तुम ने वह फोटो गौर से देखे थे?"

"जी हाँ।"

"वे सब अफसर थे ?"

"जी हाँ ?"

"क्या तुम उनको पहचान सकते हो ?"

"शायद...मैं विश्वास से नहीं कह सकता....उनमें से दो के सीनों पर अर्द्धवृत्ताकार तमगे भी थे।"

"अर्द्धवृत्ताकार तमगे..." जनरल ने चौंक कर कहा।

"जी हाँ।"

जनरल कुछ देर चिन्तातुर बैठा रहा। फिर उसने चौंकते हुए कहा—"अच्छा मिस्टर खालिद, आप वापस चले जाइये और चिन्ता न कीजिये। आपके सभी खर्च अब सरकार बर्दाश्त करेगी। कल मैं आपको फिर फोन करूँगा, लेकिन कृपया अब आप कमरे से बाहर नहीं जायेंगे।

अपका जीवन अब हमारे लिए महत्वपूर्ण हो गया है।"

"ओ० के० सर..." उसके बाद खालिद चला गया। एक घंटे के बाद जनरल तूसी सुरक्षा-विभाग की एक महत्त्वपूर्ण कानफ्रेंस में शामिल थे, जिसमें तीन जनरल और डीफेंस सैक्रेटरी भी शामिल थे। डीफेंस सेक्रेटरी कह रहे थे--"जैंटलमेन ! यह कागजात बिलकुल ठीक हैं और आप जानते हैं, अर्द्धवृत्ताकार निशान केवल मीज़ाइल अड्डों के अफसरों को दिये गये हैं। इसराइली इन अड्डों के सही स्थान जानने के लिए बेताब हैं, ताकि बम-वर्षा करके उनको तबाह कर सकें। इन नक्शों से पता चलता है कि उन्हें कुछ अड्डों के बारे में पता चल गया है और इससे साबित होता है, अभी हमारे अफसरों में कुछ गद्दार मौजूद हैं।"

सेक्रेटरी की बात अधूरी रह गयी। फोन की घंटी बजी। डीफेंस-सेक्रेटरी मिस्टर राशदी उठ कर फोन पर गये। कुछ देर बाद वह वापस आये तो उनका चेहरा लटका हुआ था। आकर उन्होंने कहा--"जैंटलमेन ! एक बुरी खबर है। इसराइली जहाज़ों ने वाकई सिकंदरिया के पश्चिमी साहिल की ओर से हमला कर दिया है। जहाज़ पानी की सतह को छूते हुए असूद सागर से किसी जगह से आये थे...

"इत्तफाक से इन काग़ज़ात की रोशनी में सावधानी-स्वरूप हमने सभी साहिली चौकियों को सचेत कर दिया था....फिलहाल हमले को पराजित कर दिया गया। इसराइली जहाज़ कोई नुकसान बिना वापस भाग गये हैं, लेकिन यह हालात खतरे की घंटी है।"

जनरल तूसी ने एक गहरी साँस ले कर कहा---"इसका मतलब है कि खालिद के लाये हुए यह कागज़ात बिलकुल ठीक थे। अब और किसी प्रमाण की ज़रूरत नहीं।"

"फिर भी मेरी एक तजवीज है।"

"क्या तजवीज़ है जनरल ?" डीफेंस सेक्रेटरी ने पूछा।

"हमें खालिद रियाज को सभी मीज़ाइल अड्डों पर घुमाना चाहिये

और उन अड्डों के अफसरों से उसे मिलाना चाहिये। खालिद ने वह फोटो देखे हैं। वह इन गद्दारों को पहचान कर संकेत कर सकता है।"

"उसे अड्डों पर ले जाने की क्या ज़रूरत है," जनरल मुजीब ने कहा—"हम सभी अफसरों के फोटो मँगवा सकते हैं।"

"हमारे पास इतना समय नहीं है। अगर वाकई हमारी फौज में गद्दार अफसर मौजूद हैं, तो उनका अपने पदों पर एक क्षण भी रहना खतरनाक है।"

"लेकिन इस तरह हम खालिद रियाज़ पर अपने अड्डों का राज़ खोल देंगे।"

"खालिद रियाज़ नौजवान उत्साही अरब है। उसने साबित कर दिया है कि वह अरब कौम की बेहतरी के लिए जान तक दे सकता है। हमें उस पर भरोसा करना चाहिये।" जनरल तूसी ने सिफारिश की।

इस विषय पर कुछ देर आपस में बहस होती रही। आखिर एमर-जेंसी हालात को नज़र में रखते हुए सबको जनरल तूसी की बात माननी पड़ी।

डीफेंस सेक्रेटरी की कोठी पर जिस समय यह कानफ्रेंस हो रही थी, उसी समय खालिद रियाज़ अपने कमरे में खिड़की के पास बैठा हुआ प्रकटतः दर्शन की वह पुस्तक पढ़ रहा था, लेकिन वास्तव में कागज़ों की तह में बनायी हुई जगह में रखे हुए ट्रांसमीटर पर वह कह रहा था—

"यस सर, दाना पड़ चुका है। मुझे सफलता की सौ प्रतिशत आशा है। उनके पास अब इसके अलावा कोई उपाय नहीं कि वह मुझे सभी मीज़ाइल अड्डों पर घुमाएं...."

"यस!...एयरफोर्स का हमला यथासमय था। उसका अवश्य प्रभाव पड़ेगा.....।"

छह बजे के करीब खालिद रियाज़ होटल अलहमरा के काफी-लाउंज में दाखिल हुआ तो यह देख कर विस्मित रह गया कि नामान

एक सुंदर लड़की के साथ वहाँ बैठा हुआ है।

"ओह! मिस्टर खालिद...." नामान ने उसे देख कर खुशी का नारा मारा--"आइये! आइये! मेरी भतीजी नाहीला से मिलिये।"

खालिद एक क्षण के लिए झिझका। नाहीला के नयन-नक्श कुछ जाने-पहचाने थे। शायद इसलिए कि वह नामान की भतीजी थी। वह उनकी टेबल पर जा कर बैठ गया। खालिद ने बड़े शिष्टाचार से बातचीत की। नाहीला बेहद आकर्षक लड़की थी। खालिद को महसूस हुआ जैसे वह नाहीला की ओर अपने आप खिंचता जा रहा है। नाहीला के बेज़वी चेहरे पर बड़ी-बड़ी नीली आँखें झील की तरह शफ्फाक और गहराई लिये हुए थीं। एक घंटा वह इधर-उधर की बातें करते रहे और काफी पीते रहे। एक घंटा बाद मिस्टर नामान ने विदा चाही। नाहीला ने खालिद से हाथ मिलाते हुए कहा--"आपके साथ समय इस प्रकार गुज़रा हैं, जैसे हवा को चीरता हुआ तीर गुज़र जाता है।"

"यह अजीब उपमा है," खालिद ने मन में सोचा, लेकिन ऊंची आवाज़ में कहा--"समय फिर आयेगा, मिस नाहीला, हम फिर मिलेंगे।"

उसके बाद वह लोग विदा हो गये।

दो दिन बीत गये। जनरल तूसी की ओर से कोई सन्देश न आया, हालाँकि उसे विश्वास था कि वह उसे मीज़ाइल अड्डों पर तत्काल ले जाने पर मजबूर है।

फिर तीसरे दिन जनरल ने उसे बुलवा लिया और उसके सामने तजवीज़ रखी--

"मिस्टर खालिद! मैं आपसे संक्षिप्त और साफ़ शब्दों में बताना चाहता हूँ कि अर्द्धवृत्ताकार निशान वाले जो तमगे तुमने देखे हैं, वह मीज़ाइल अड्डों के अफ़सरों के खास निशान हैं। हमें सन्देह है कि हमारे कुछ अफसर निश्चय ही गद्दार हैं। तुमने चूँकि वह फोटो देखे हैं, इसलिए हमें तुम्हें सभी मीज़ाइल अड्डों पर घुमा कर अफसरों से मिलाना

चाहते हैं, ताकि तुम उन्हें पहचान सको। क्या तुम इसके लिए तैयार हो?"

"अवश्य ही।" खालिद ने मुसकरा कर कहा—"मैं कह चुका हूँ कि अरब कौम की भलाई के लिए मेरे प्राण तक हाज़िर हैं।"

जीप में कुछ अफसरों के साथ खालिद रियाज़ को सभी मीज़ाइल अड्डों पर घुमाया गया और एक-एक असफर से मिलाया गया। उसने केवल दो अफसरों की ओर संकेत किया।

चार दिन बाद जनरल तूसी और एक बूढ़ा सेक्यूर्टी-अफसर खालिद को साथ लिये वापस काहिरा पहुंचे। जनरल तूसी ने ड्राइवर को हुक्म दिया कि पहले उसकी कोठी पर ही चला जाये।

फौजी गाड़ी जनरल की कोठी पर पहुंच कर रुक गयी। जनरल सेक्यूरिटी अफसर और खालिद रियाज़ गाड़ी से उतर कर अंदर दाखिल हुए।

अंदर ड्राइंग-रूम में चार सशस्त्र फौजी अफसरों और नाहीला को देख कर खालिद रियाज़ को ऐसा महसूस हुआ जैसे किसी ने उसके प्राण निकाल लिये हों।

फौजी अफसरों ने जनरल को सैलूट दिया। जनरल तूसी ने थके-थके अंदाज़ में स्वयं को सोफे पर गिराते हुए कहा—"अब तुम इस जासूस को गिरफ्तार कर सकते हो, कैप्टन।" एक अफसर ने आगे बढ़ कर तुरंत खालिद के हाथ में हथकड़ियाँ डाल दीं।"

"यह क्या मज़ाक है?" खालिद रियाज़ चिल्याया—"क्या मेरी सेवाओं का यही बदला है।"

"यस मिस्टर दायानी," नाहीला ने मुसकरा कर कहा—"गद्दारों की सेवाओं का यही बदला होता है।"

"इसकी तलाशी लो।" जनरल तूसी ने हुक्म दिया।

तलाशी लेने पर खालिद के लिबास की तह से एक पतला कागज़ निकला, जिस पर बहुत से मीज़ाइल अड्डों के सही स्थान दर्ज थे।

नाहीला की गहरी नीली आँखों में तेज़ चमक थी। उसने मुसकरा कर कहा--"अंकल नामान ने जान-बूझ कर मुझे दायानी से मिलाया था, क्योंकि मैं भी १९६९ में यूनीवर्सिटी की छात्रा रह चुकी थी। उस समय सभी अरब छात्र अलफतह और फदायान की तरह एक संस्था बनाना चाहते थे। हमने बाकायदा संस्था बना ली थी और अलफतह गोरिल्लों के लिए गुप्त काम करते थे। उस समय गोरिल्लों से हमारी शनाख्त का एक कोड निश्चित था--'तीर और हवा' जो केवल संस्था के अरब मेम्बरों को पता था।

"मैंने दायानी के सामने वह कोड दुहराया, लेकिन उस पर कोई प्रभाव न पड़ा। इसका मतलब था कि वह मुस्लिम अरब नहीं था। बस यहीं से मुझे सन्देह हुआ कि वह खालिद रियाज़ नहीं है।"

"गलती हमारी ही है," जनरल तूसी ने कहा--"हमें पहले ही उसका फोटो और उंगलियों के निशान भेज कर जाँच करानी चाहिये थी। यह मीज़ाइल अड्डों के नक्शे प्राप्त करने का बहुत उम्दा षड्यंत्र था। दायानी ने असल खालिद रियाज़ की हत्या कर दी और उसकी जगह जाली पासपोर्ट बना कर और वह नकली नक्शे ले कर यहाँ आ गया। वह नक्शे इसराइल सरकार ने इसे सप्लाई किये होंगे और नक्शों की सहायता के तौर पर उन्होंने हवाई जहाज़ भेज कर एक फर्जी हमला भी कर दिया।

"दायानी ने इन तसवीरों और अर्द्धवृत्ताकार निशान का जिक्र जानबूझ कर किया था। उसने मनोवैज्ञानिक रूप से हम लोगों पर प्रभाव डाल कर हमें तैयार कर लिया था कि हम उसे सभी मीज़ाइल अड्डों पर घुमा दें।

"बेटी नाहीला, अगर तुम ऐन समय पर सन्देह प्रकट न करती, तो देश को जबरदस्त नुकसान पहुँचता।

"तुम्हारे कहने के बाद हमने बेरूत को पुनः इस गद्दार के फोटो भेजे। इस समय में हम इसे घुमाते रहे। विश्वास था कि वह हमारे अड्डों

के नक्शे बनाता रहेगा। अन्त में हम उसे प्रमाण-सहित गिरफ्तार कर लेंगे।"

नाहीला ने हँस कर कहा—"शुक्र है कि कोई नुकसान नहीं हुआ, लेकिन इस संबंध में आपको मेरे चाचा की छठी संज्ञा का आभारी होना चाहिये।"

"नामान मेरा मित्र है, और तुम मेरी भी भतीजी हो। मैं अपने देश की ओर से तुम दोनों का आभारी हूँ, बेटी!"

नाहीला केवल मुस्करा कर रह गयी।



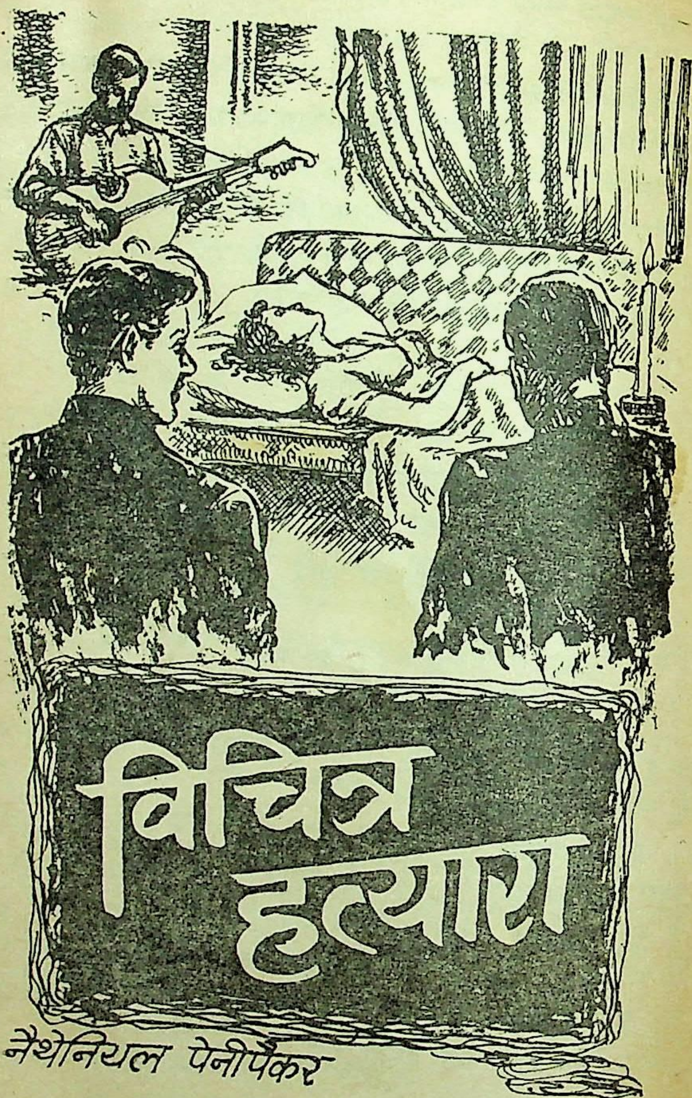
— मासूम टापू —

(पृष्ठ १७१ का शेष)

था। युद्ध के एक साल बाद जब हमारा पहला बच्चा कुछ महीनों का हो गया तो हम जर्मनी चले गये।

एक दीर्घावधि बीत गयी है। मेरे मस्तिष्क से कभी-कभी अपना अपराध निकल जाता है, लेकिन वह मासूम टापू किसी क्षण भी मस्तिष्क से नहीं निकलता। पता नहीं उस टापू के लोग अब कैसे होंगे। होंगे भी या नहीं? युद्ध ने तो संसार ही बदल डाला है। सोचता हूं कि यदि उस टापू में भी यूरोपियन सभ्यता पहुँच गयी है तो वह बहुत बड़ी दुर्घटना है—बहुत बड़ा दुखांत।




विचित्र
हत्यारा
नैथेनियल पेनीपैकर

उन दो पुलिस अफसरों ने जब उस छोटे से फ्लैट के कमरे का दरवाजा खोला, तब उन्हें मोमबत्तियों की रोशनी एक रहस्यपूर्ण ढंग से कमरे में चारों ओर खेलती हुई दिखाई दी। इन धुआँ छोड़ती हुई मोमबत्तियों की शिखाओं का मानो उत्तर दे रही थी उस लम्बे, पतले युवक की आँखों से निकलती हुई चमक, जो दीवान के पास ही पड़ी कुर्सी पर बैठा गिटार पर मृत्यु-संगीत के स्वर निकाल रहा था।

वह युवक पुलिस वालों की उपस्थिति पर कोई ध्यान न देकर उनकी ओर घूरता रहा और उसके होंठ संगीत की उबाने वाली लय के



वह एक अनोखा अपराधी था। उस पर सात हत्याएँ करने का सन्देह किया जाता था। इन सभी हत्याओं का ढंग करीब एक-सा था और इन सबमें अन्त्येष्टि क्रियाएँ करीब एक-सी की गयी थीं।



साथ-साथ बिना कोई शब्द किये हिलते रहे। कमरे में धूपबत्ती की तीखी मिठास वाली गन्ध भरी हुई थी।

जब उनकी आँखें धीरे-धीरे कोच के दोनों सिरों पर जलती मोमबत्तियों की काँपती रोशनी की अभ्यस्त हो गयीं, तब उन्होंने देखा कि युवक के संगीत का एक नीरव श्रोता भी वहाँ मौजूद था। यह एक स्त्री थी, जो कोच पर चित्त लेटी हुई थी और जिसके दोनों हाथ पेट के ऊपर रखे हुए थे। उसकी आँख खुली थी, मगर वह एकदम हिल नहीं रही थी, मानों वह युवक के संगीत के प्रभाव से समाधि की अवस्था में जा पहुँची हो।

अफ़सरों में से एक ने दरवाजा बन्द कर दिया और मोमबत्तियों की शिखाओं ने काँपना बन्द कर दिया। अब वे सीधी, लम्बी और उज्ज्वल होकर जलने लगीं और उनकी रोशनी उस स्त्री के चेहरे पर पड़ने लगी।

"ओह, माई गॉड !" एक अफसर के मुँह से आप ही आप निकल गया।

स्त्री का चेहरा मृत्यु की विभीषिका से विकृत हो गया था। उसके फूले हुए और काले पड़े हुए होंठों के बीच से जीभ बाहर निकली हुई थी। स्पष्ट ही उसे गला घोंट कर मारा गया था। उसके मुड़े हुए हाथों के ऊपर छाती पर एक बाइबिल रखा हुआ था।

राबर्ट विलर्ड लिबर्टी, जो जून की उस रात को बीस वर्ष का था, गिटार पर डरावना मृत्यु संगीत बजाता रहा। उसकी आँखें पुलिस अफसरों की ओर घूमीं, मगर उसकी दृष्टि वेस्ट मिन्स्टर (कैलिफोर्निया) के उस छोटे से कमरे को पार करती हुई किसी लक्ष्य पर केन्द्रित थी, जब कि उसके हाथ एक अद्भुत भयावह अंत्येष्टि संगीत बजा रहे थे।

वेस्ट मिस्टर, जो कि वृहत्तर लॉस एंजेलस के शहरी क्षेत्र के दक्षिण-पूर्वी किनारे पर स्थित आरंज काउंटी का एक समाज है, अपराधों से अपरिचित नहीं है। मगर इस छोटे-से शहर में होने वाले अपराध प्रायः शान्त किस्म के होते हैं, और कभी-कभार होने वाले हत्या के मामलों के पीछे क्रोध, लोभ या भय जैसे अपेक्षाकृत सहज कारण हुआ करते हैं। मगर इकत्तीस वर्षीया मिसेज़ मरसेला लैंडिस की अपने ही फ्लैट में अंत्येष्टि के सभी उपकरणों के बीच संस्कार सहित की गयी हत्या ने वेस्टमिस्टर में एक भारी उथल-पुथल मचा दी और उससे कुछ ही कम पूरे प्रदेश भर में।

राबर्ट विलर्ड लिबर्टी को उस मृत्यु के कमरे से जब पुलिस अफसर ले जाने लगे, तब उसने कोई प्रतिरोध नहीं किया और उसकी आँखें अभी

थी साधारण मनुष्य की सीमारेखा के बाहर किसी सुदूर लक्ष्य की ओर जमी थीं और अन्य कोई चीज़ वे नहीं देख रही थीं। पुलिस ने बताया कि लिबर्टी ने खुद ही मिसेज़ लैंडिस के घर से उन्हें फोन किया था, जिसे सुन कर वे वहाँ आये थे; उसने इतना ही कहा था, 'बेहतर हो कि आप लोग यहाँ चले आयें। इस कमरे में एक स्त्री मरी पड़ी है।'

पुलिस ने यह भी बताया कि बाद में यह पता चला है कि लिबर्टी और मिसेज़ लैंडिस प्रेमी-प्रेमिका थे और उनका एक दूसरे से एक अस्पताल में परिचय हुआ था, जहाँ वे दोनों आत्महत्या की असफल चेष्टा के बाद इलाज के लिए रखे गये थे।

गिरफ्तारी के बाद घंटों तक चलने वाली जिरह के समय लिबर्टी की समाधि की-सी मुद्रा एक क्षण को भी भंग नहीं हुई। उसे पागल क़रार दिया गया और हत्या के तीन महीने बाद अटस्कडेरो स्टेट हास्पिटल में भर्ती कर दिया गया। कुछ दिनों बाद वह वहाँ से नार्वाक के मेट्रोपोलिटन स्टेट हास्पिटल को भेज दिया गया। यह जगह उसके अपने शहर वेस्ट मिंस्टर के पास ही थी।

नार्वाक के इस अस्पताल में तीन साल तक बन्द रहने के बाद जब लिबर्टी 'बाहरी रोगी' की हैसियत से रह रहा था, तब एक दिन वह वहाँ से चल दिया, और एक क्लर्क ने गलती से 'डिसचार्जड' रोगियों की सूची में उसका नाम लिख दिया। जब यह गलती पकड़ी गयी, तब उसकी गिरफ्तारी के लिए वारंट जारी हुआ। मगर लिबर्टी २३ जून, १९६९ को अपने वकील के माध्यम से हाज़िर हो गया। उसके वकील ने दावा किया कि उसका मुवक्किल 'पूरी तरह से नम्र और नरम है, इस समय।'

१५ सितंबर १९६९ के दिन सांटा आना, कैलिफोर्निया के एक जज ने लिबर्टी को नार्वाक के अस्पताल से मुक्त करने का आदेश दे दिया। यह फ़ैसला कोर्ट के द्वारा नियुक्त छः मानसिक रोग चिकित्सकों के इस निर्णय पर आधारित था कि लिबर्टी पूरी तरह से स्वस्थ मस्तिष्क वाला है। मगर इन डाक्टरों ने एक चेतावनी भी दी थी कि अगर लिबर्टी

नशा करेगा या शराब पियेगा तो खतरनाक भी हो सकता है। इस पर एक सरकारी वकील ने दलील पेश की कि डाक्टरों की इस राय के मुताबिक लिबर्टी को बन्द रखना ही उचित होगा, मगर जज ने कहा कि यह केवल कल्पना की बात है, जिसका आधार काफी मजबूत नहीं है।

इस तरह राबर्ट विलर्ड लिबर्टी मुक्त हो गया। और अब मृत्यु और संत्रास का एक रक्तरंजित रंगमंच तैयार हुआ, जिसके नाटक की ध्वनि-प्रतिध्वनि केवल राज्य में ही नहीं बल्कि प्रायः सारे देश में सुनायी पड़ने लगी।

लिबर्टी की मुक्ति की पहली झंकार १२ मार्च १९७० को सुनाई दी, जब वेस्टमिंस्टर से कुछ ही दूर आरेंज काउंटी में 'हंटिंग्टन बीच' के एक खेत में पच्चीस वर्षीय टामस एस्टोरिना की लाश पायी गयी--उसे गोली से मारा गया था। 'हंटिंग्टन बीच' की पुलिस ने बताया कि इस मामले की कुछ बातें चक्कर में डालने वाली हैं, और जब उसे पता चला कि एस्टोरिना और लिबर्टी अन्य दो आदमियों के साथ एक ही फ्लैट में रहते थे, तब उसने हत्या के अपराध में लिबर्टी की तलाश शुरू कर दी। मगर लिबर्टी का पता नहीं चला। तब केन्द्रीय सरकार ने लिबर्टी के ऊपर हत्या के जुर्म से बचने के लिए फरार होने का अभियोग लगाया और एफ० बी० आई० ने भी उसकी तलाश शुरू कर दी।

पॉल मूर एक १७ साल का युवक था, जो लांग बीच, कैलिफोर्निया का निवासी था। लिबर्टी की तलाश का उसे पता नहीं था। शनिवार, ६ जून को वह लांग, बीच में प्रशान्त महासागर के तटवर्ती बड़ी सड़क पर अपनी कार लिये जा रहा था। यह जगह 'हंटिंग्टन बीच' से अधिक दूर नहीं थी। जब उसने सड़क पर पैदल जाते हुए एक जोड़े को देखा तो यकायक उसे लगा कि उन्हें कार में बिठा ले और उसने वही किया। उसने देखा कि वह लम्बा, दुबला-सा युवक और वह सुनहले भूरे बालों वाली युवती दोनों ही साफ-सुथरे, भद्र और निरापद हैं।

"किधर जा रहे हैं आप लोग?" युवक ड्राइवर ने पूछा।

"हम वेस्टमिंस्टर की ओर जा रहे हैं। तुम भी तो वहीं जा रहे हो।" पतले दुबले युवक ने कहा।

उसकी आवाज़ में कुछ ऐसा था, जिसने मूर को पीछे घूम कर देखने को बाध्य कर दिया। तब उसने देखा कि वह आदमी अपनी गोद में एक पिस्तौल रखे है।

अपने सशस्त्र यात्री राबर्ट विलर्ड लिबर्टी के हुक्म से युवक मूर वेस्टमिंस्टर में लिबर्टी की मा के घर गया और उसके साथ उसे घर के अन्दर भी जाना पड़ा। युवक ने बाद में पुलिस को बताया कि घर में जाकर लिबर्टी अपने सौतेले बाप के विरुद्ध उटपटांग बकता और घृणा प्रकट करता रहा और कहने लगा कि उसकी मा ने उससे रुपया उधार लिया है, और उसने पिस्तौल दिखाकर अपनी मा से ४५ डालर छीन लिये।

घर से निकल कर लिबर्टी ने पिस्तौल दिखा कर मूर को धमकाया और हुक्म दिया, "अब सैनडीगो चलो, उसके बाद कहाँ जाना है, सो वहीं जाकर बताया जायेगा।"

दूसरे दिन रविवार ७ जून को सैनडीगो की पुलिस को एक युवक का फोन मिला। आतंक, भय और सदमे से काँपती-लड़खड़ाती आवाज में युवक ने एक हत्या की खबर दी। साथ-ही-साथ लेफ्टिनेंट स्टीवेन्स तथा खुफिया विभाग के अन्य अफसर सैनडीगो के एक फ्लैट में पहुँचे, जहाँ उन्हें मूर मिला—उसने काँपती उँगली से बेडरूम की ओर इशारा किया।

वे लोग बेडरूम की ओर दौड़े और वहाँ उन्हें ५३ वर्षीय पुरुष नर्स रावर्ट जे० इरियन का मृत शरीर मिला। उसे नेकटाइयों से बाँधा गया था, फिर उसे पीटा गया था, छुरा मारा गया था और उसका गला काट दिया गया था। दो जलती हुई मोमबत्तियाँ लाश के सिर के पास रखी थीं, जिनकी रोशनी मृत्यु के रक्तिम दृश्य के ऊपर काँप रही थी।

लाश के पास ही एक बन्द दरवाजे पर पेन्सिल से लिखा था।

'मोमबत्ती की रोशनी वाले हत्यारे ने फिर काम शुरू कर दिया है।' दरवाजे के पास ही दीवार पर लिखा था, 'मुझे पकड़ो तो जानूँ।'

लेफ्टिनेंट स्टीवेन्स को बाद में मालूम हुआ कि इरियन वह अन्तिम शिकार था, जिसे राबर्ट विलर्ड लिबर्टी के 'दोस्तों' का भाग्य प्राप्त हुआ था। इन दोनों की दोस्ती तब हुई थी जब वे नार्वाक के सरकारी पागलखाने में इलाज के लिए रहे थे।

मूर ने लेफ्टिनेंट से बताया कि जब वह लिबर्टी और उसकी साथिन के साथ इरियन के घर पहुँचा, तब उसे और इरियन दोनों को नेकटाइयों से बाँध दिया गया। उसके बाद जब कि मूर भयभीत होकर यह दृश्य देखता रहा, तब लिबर्टी ने इरियन को खूब पीटा, उसके छुरा भोंक दिया और उसका गला घोंट दिया। आधी रात के करीब इरियन मरा। इस हत्या के सात घंटे बाद तक लिबर्टी और वह लड़की, जिसकी उम्र २४ साल की थी और जिसके बारे में बाद में मालूम हुआ कि वह यूजिनो की रहने वाली है और उसका नाम कैंडल ऐन बर्ली है, उसी मकान में थे। मूर ने बताया कि इसी बीच लिबर्टी ने इरियन की लाश को अन्तिम विश्राम की मुद्रा में लिटाया और उसके सिरहाने मोमबत्तियाँ जलायीं। उसके बाद इरियन का कुछ सामान अपने साथ लेकर वह और लड़की सुबह ७ बजे कहीं चले गये। उनके जाने के बाद मूर ने अपने बन्धन धीरे-धीरे खोले और इरियन के टेलिफोन पर पुलिस को खबर दी।

जिस समय सारे राज्य में लिबर्टी की खोज जारी थी, उसी समय लांग बीच के एक होटल के मैनेजर ने पुलिस को टेलीफोन किया। उसने कहा, "यह जो लिबर्टी है, जिसे लोग 'मोमबत्ती की रोशनी वाला हत्यारा' कह कर पुकारते हैं, वह यहाँ अपनी कुछ चीजें छोड़ गया है।"

फोन पाते ही सार्जेण्ट डोग बोस्टर्ड अन्य कई गुप्तचरों के साथ उस होटल में पहुँचे, जहाँ उन्हें यह सामान मिला––एक छोटी-सी प्लास्टिक

की शीशी, जिसमें मारिजुआना के बीज थे, एक बिस्तर का पुलिन्दा, एक छोटी-सी कुल्हाड़ी, कई नोटबुकें, पहनने के कपड़े तथा कुछ और व्यक्तिगत चीजें। एक गुप्तचर ने कविता की एक किताब उठा कर देखी, जिसके कवर पेज पर कैंडल बर्ली का नाम लिखा था। "इसे देखिये," उसने कहा।

सार्जेंट बोस्टर्ड ने किताब लेकर जल्दी-जल्दी उसके पन्ने उलटे। "सुन्दर कविता है," अपने दबे हुए होंठों के बीच से वह बोला, "मृत्यु के और मरने के बारे में बड़े आदर और प्यार भरी बातें हैं इनमें।"

होटल के मैनेजर ने पुलिस से बताया कि लिबर्टी और मिस बर्ली २८ मई को मिस्टर और मिसेज़ राबर्ट हिण्टन, सियाटिल के नाम से होटल में दाखिल हुए थे। वे शुक्रवार ५ जून को होटल से चले गये थे। इरियन की हत्या ६ जून को हुई थी।

मैनेजर ने कहा, "उस आदमी ने मुझ से एक बार कहा कि उसका असली नाम लिबर्टी है, और यह बात गोपनीय है। लेकिन मेरे निकट इस नाम का कोई महत्व नहीं था। लेकिन जब सैनडीगो में वह आदमी मारा गया और लिबर्टी का फ़ोटो अखबार में निकला तब मैं समझा।"

इरियन की हत्या के बाद ऑरेंज काउंटी के कई शहरों के गुप्तचरों ने इस डर से कि अन्त्येष्टि संस्कार वाला यह हत्यारा फिर अपना कार्य-क्रम शुरू करेगा, उन सभी यात्री-निवासों तथा अन्य स्थानों की पूरी तलाशी लेनी शुरू कर दी, जहाँ लिबर्टी के ठहरने की रिपोर्ट मिली थी। उन्होंने उसके परिचित लोगों पर भी निगरानी रखना शुरू कर दिया।

"इस आदमी को सचमुच ही अपने मित्रों और प्रेमिकाओं की हत्या करने का भारी शौक है।" एक गुप्तचर का कहना था।

मगर अफसरों की जानकारी के बाहर ही लिबर्टी राज्य के बाहर चला गया था, जहाँ उसका रहस्य बड़े ही नाटकीय रूप से खुलता गया।

९ जून को रात के साढ़े ग्यारह बजे कोलोरेडो स्प्रिंग्स के एक होटल के मैनेजर रूडोल्फ़ डब्लू ब्रेनेक ने रजिस्ट्रेशन डेस्क से सिर उठा कर देखा

कि दो युवकों और एक युवती ने सहन में प्रवेश किया। ये लोग कुछ ही देर पहले वहाँ आये थे और दो रातों का किराया पहले ही दे चुके थे।

"क्या ज़रूरत है आपको? मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ?" ब्रेनेक ने प्रसन्नतापूर्वक पूछा।

"हाँ," उनमें से एक आदमी ने यकायक कहा और पिस्तौल दिखाया। "सारा रुपया इधर दे दो। जल्दी करो।"

होटल के मालिक ने कैश ड्राअर की कुल रक़म निकाल कर बढ़ा दी। कुल १०९ डालर थे। पिस्तौल वाले ने इस पर काफी असन्तोष प्रकट किया और कहा, "अपने घर वालों को बुलाओ। जगा दो उन्हें, सभी को।"

ब्रेनेक पहले हिचकिचाया, पर जब पिस्तौल उसकी छाती पर लगा दिया गया तो उसने अपनी पत्नी एडना, अपनी बेटी रोज़ और एक बच्ची नातिन को जगाया। तब उन तीनों ने मिल कर मिसेज़ ब्रेनेक और उसकी लड़की को पीठ से पीठ मिली हुई दो कुर्सियों पर बिठा कर बाँध दिया। उनका क्वार्टर होटल के दफ्तर के पीछे ही सटा हुआ था। इसके बाद उन लोगों ने दोनों औरतों की पर्सें खाली कर लीं और घर की तलाशी शुरू कर दी। जब एक बार ब्रेनेक ने आपत्ति की तब पिस्तौल वाले लम्बे दुबले आदमी ने कहा, "देखो जी, तंग मत करो। मैं अभी एक को खत्म करके आया हूँ। मारने में मुझे तनिक भी संकोच नहीं होता।"

मगर जब लुटेरे घर की तलाशी ले रहे थे, तब उन्होंने ब्रेनेक की ओर पीठ कर रखी थी। अवसर पाकर ब्रेनेक भाग खड़ा हुआ और पास ही एक टेलिफोन पर उसने पुलिस को सूचना दे दी। इसके बाद इस डर से कि उसके भाग जाने से वे लोग और ज्यादा उत्पात करेंगे और अपनी पत्नी और लड़की को इस विपत्ति में छोड़ कर न जा सकने के कारण वह होटल लौट आया और उसने देखा कि तीनों बदमाश और उसकी पत्नी ग़ायब हैं।

ठीक इसी समय ब्रेनेक का फोन पाकर कोलोरेडो स्प्रिंग्स की पुलिस का गुप्तचर बर्नार्ड कार्टर और उसका साथी गुप्तचर नील स्ट्रेटन होटल की ओर कार में दौड़े जा रहे थे। रास्ते में उन्हें १९६१ के माडेल की एक सफेद प्लाईमाउथ कार मिली, जिसमें दो मर्द और दो स्त्रियाँ थीं और जो उल्टी दिशा में जा रही थी।

दोनों गुप्तचर जब होटल पहुँचे तब ब्रेनेक ने उन्हें बताया कि जो सफेद प्लाईमाउथ कार उन्हें रास्ते में मिली थी, उसे लुटेरे होटल के बाहर अड्डे पर खड़ी गाड़ियों में से लेकर चम्पत हो गये हैं और जिस कार में वे लोग आये थे, उसे वहीं छोड़ गये हैं। वह किसी विदेशी कम्पनी की गाड़ी है और उस पर कैलिफोर्निया का नम्बर प्लेट लगा है।

गुप्तचर स्ट्रेटन ब्रेनेक के बयान लेने के लिए और लुटेरों की कार को चेक करने के लिए होटल में रह गया और कार्टर अकेले ही गाड़ी लेकर सफेद प्लाईमाउथ का पीछा करने तेजी से चल पड़ा।

शहर को प्रायः आधा पार करने के बाद कार्टर को सफेद कार दिखाई दी और वह उसका पीछा करते-करते बाजार के एक अड्डे से गुजर कर एक चौराहा पार करता हुआ यू० एस० हाईवे ८५-८७ पर आ निकला। इसके बाद जो दौड़ शुरू हुई, उसकी रफ्तार १०० मील प्रति घंटे तक थी और धीरे-धीरे कार्टर सफेद कार के निकट पहुँच रहा था।

मगर जैसे ही वह सफेद कार की बगल में पहुँचा वैसे ही पीछे की सीट पर बैठे एक आदमी ने पिस्तौल दिखायी, फिर उसकी नली उस औरत के सिर पर लगायी, जिसे वह पकड़े हुए था; यह होटल वाले की स्त्री थी। उसने कार्टर को लौट जाने के लिए धमकी देने का इशारा किया।

अब कार्टर पिस्तौल वाले को पहचान चुका था। साथ ही कैलीफोर्निया वाली कार के लाइसेन्स नम्बर की रिपोर्ट भी उसे रेडियो पर मिल गयी थी, जो उसी कार में लगा हुआ था। जो आदमी मिसेज

ब्रेनेक के सिर पर पिस्तौल ताने हुए था, वह राबर्ट विलर्ड लिबर्टी था, जो उन दिनों कार्टर के अपने देश कोलोरेडो और प्रशान्त महासागर के बीच सबसे अधिक खोजा जाने वाला आदमी था।

यह कार्टर के नौकरी के जीवन में सबसे कठिन निर्णय वाले क्षणों में से एक था। उसने पुलिस की कार को सफेद कार से थोड़ा-सा पीछे चलाते रखा और केवल दो सेकेण्ड के मौक़े की प्रतीक्षा करता रहा। तभी उसने अपना निर्णय लिया और लुटेरों की कार को पकड़ने की गरज से पुलिस कार के एक्सीलरेटर को पूरी ताकत से दबा दिया, और जब लिबर्टी ने फिर उसे लौट जाने का इशारा किया, तो उसने जोर से अस्वीकृतिसूचक सिर हिलाथा।

"चूँकि तब तक मुझे मालूम हो गया था कि वह आदमी कौन है और उसका क्या रेकार्ड है, इसलिए मैंने सोचा कि मैं अगर उसका पीछा करना छोड़ भी दूँ तो भी वह मिसेज़ ब्रेनेक को मार डालेगा।" बाद में इस ३३ वर्षीय गुप्तचर ने बताया। "यह उन निर्णयों में से एक था, जो हमें अक्सर ही लेने पड़ते हैं और निर्णय लेने के बाद हम मन-ही-मन प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर करे यह निर्णय ठीक हो जाय।"

जब पुलिस की कार लिबर्टी के निकट पहुँची तब उसने खिड़की से पिस्तौल वाला हाथ बाहर निकाला और एक के बाद एक करके छः फायर किये।

"मैंने छहों फायर गिने थे," कार्टर ने बाद में बताया, "फिर उसने पिस्तौल में गोलियाँ भरीं और तीन बार और फायर किया। प्रत्येक बार गोली चलने के बाद मुझे लगता था कि इस बार सामने का शीशा तोड़ कर गोली लगेगी। मगर वह जल्दी में ऊटपटांग चला रहा था और उसका हर बार खाली जाता रहा।"

जब लिबर्टी का नौवाँ फायर पुलिस कार के पास से होता निकल गया, तब कार्टर ने अपना पिस्तौल निकाला। एक हाथ से कार चलाते हुए दूसरे से फायर करना शुरू किया और चेतावनी के रूप में

पहले तीन गोलियाँ सफेद कार की दिशा में चलायीं। उसने देखा कि हर बार लिबर्टी कार के अन्दर अपना सिर नीचा कर लेता था। और जब लिबर्टी ने फिर एक बार अपना पीछा करने वाले पर गोली चलाने के लिए बाहर सिर निकाला था, कार्टर ने फिर तीन फायर किये।

"इस बार मेरी गोलियाँ उसके कुछ अधिक पास से गुजरीं। आप कह सकते हैं कि उनसे कार में साधारण खरोंच लगी," कार्टन ने बाद में सुनाया, "यकायक उसने अपना पिस्तौल बाहर फेंक दिया। सब समाप्त हो गया।"

लुटेरों की कार तुरन्त ही धीमी पड़ गयी और सड़क के एक ओर कुछ दूर पर रुक गयी। कार्टर ने अपनी गाड़ी उसके पीछे लगा कर खड़ी कर दी, फिर वह तुरन्त ही कार से उतर कर प्रतीक्षा करने लगा कि शायद लड़ना पड़ेगा।

मगर लिबर्टी अपनी कार से जब उतरा तब उसके दोनों हाथ समर्पण की मुद्रा में ऊपर उठे हुए थे। उसके पीछे-पीछे कैंडल ऐन बर्ली और कार का ड्राइवर दोनों उतर आये। बाद में पता चला कि यह ड्राइवर टेक्सास का रहने वाला १७ वर्ष का युवक है, जो लिबर्टी और उसकी साथिन के कैलिफोर्निया से भागने के समय उनके साथ हो लिया था।

गुप्तचर कार्टर के मन में सबसे ऊपर जो प्रश्न था उसे स्पष्टतः समझते हुए लिबर्टी हलके ढंग से लापरवाही के साथ बोला, "मैंने देखा कि तुम सख्ती से मुकाबला करोगे और तुम मैदान छोड़ने वाले नहीं हो-- इसलिए हमने रुक जाने का निश्चय किया।"

इसी बीच वहाँ दो कारें और जा पहुँचीं। एक थी स्क्वैड कार, जिसमें शहर के दो अफसर थे और दूसरी शेरिफ़ की गश्ती कार थी। अपराधियों को गिरफ्तार करने में मदद की इन लोगों ने। इस प्रकार १० जून की रात के १२ बज कर १५ मिनट पर, याने ब्रेनेक के पुलिस

को फोन करने के ठीक १७ मिनट के अन्दर लिबर्टी और उसके साथी पकड़े गये।

उसी दिन वे तीनों काउंटी जज जैक एल० रोजर की अदालत में हाजिर किये गये। दूसरे दिन कोलोरेडो के ग्रैण्ड जूरी ने लिबर्टी को चार अपराधों से दंडित किया---डकैती, स्त्री को भगाना, पुलिस अफसर पर घातक अस्त्र से आक्रमण और कार की चोरी। उसके साथ की लड़की और १७ वर्षीय युवक पर भी डकैती और भगाने के अपराध लगाये गये।

कोलोरेडो में लिबर्टी पर लगाये गये अपराधों का दण्ड देने में काफी दिन प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है। कारण सैनडीगो की पुलिस इरियन की हत्या के मामले में उसकी माँग कर रही है, और वहाँ से अगर वह किसी तरह बच जाय तो 'हंटिंग्टन बीच' के अधिकारी उसे एस्टोरिना की हत्या के अपराध में पकड़ने को बैठे हैं।

कोलोरेडो स्प्रिंग पुलिस के चीफ कार्ल ई० पेट्री के कथनानुसार कैलीफोर्निया के गुप्तचर पुलिस वालों ने बताया है कि पश्चिमी तटवर्ती इलाकों में लिबर्टी पर सात आदमियों की हत्या का संदेह किया जाता है--इन सभी हत्याओं का ढंग प्रायः एक-सा है, सभी के अंत्येष्टि संस्कार की क्रियायें बाकायदे की गयी हैं जो इरियन के मामले में पायी गयी थी। एस्टोरिना की मृत्यु के मामले में ऑरेंज काउंटी से निकले वारंट में मिस बर्ली का भी नाम है।

बृहस्पतिवार ११ जून को लिबर्टी और मिस बर्ली की ओर से डकैती और भगाने के मामले में पागलपन के आधार पर निर्दोष होने की बात कही गयी, और तब उन्हें मस्तिष्क विकृति सम्बन्धी जाँच के लिए ३० दिन के लिए प्यूब्लो के थेरारे हास्पिटल में रखे जाने का आदेश दिया गया। दूसरे दिन लिबर्टी के तबादले के मामले की सुनवाई थी, मगर कैलिफोर्निया के अधिकारियों को केस तैयार करने का समय देने के कारण १७ जून तक इसकी कार्रवाई स्थगित रही।

लिबर्टी की जमानत की रकम दो लाख डालर रखी गयी और मिस बर्ली की एक लाख।

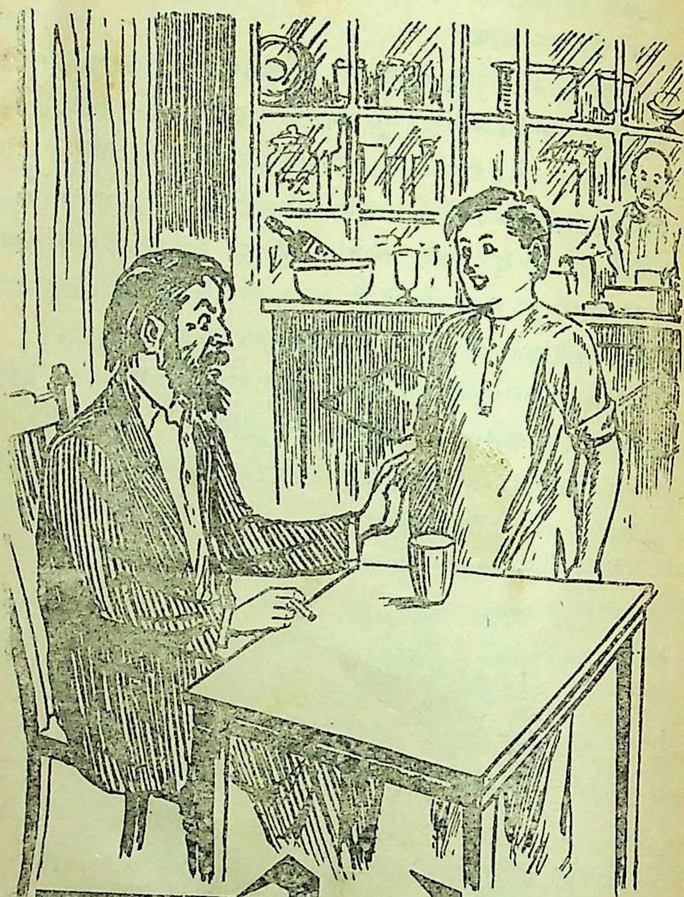
१४ जून को कोलोरेडो स्प्रिंग्स के अधिकारियों ने घोषणा की कि लिबर्टी और २४ वर्षीया जैकसन जूनियर, जो कि नीलसन नामक महाजन की फ़रवरी १९७० में हुई हत्या के सन्देह में बन्दी थे, इन दोनों ने मिल कर जेल से भाग निकलने की चेष्टा की, जो असफल रही। बताया गया कि ये दोनों जेल के एक नये बने भाग में रखे गये थे और वे मोटी दीवार को आधी दूर तक खोदने में सफल हो गये थे, पर उसके बाद फ़ौलाद की मोटी छड़ें आ जाने के कारण उनका प्रयास व्यर्थ हुआ।

मोमबत्तियों की रोशनी वाले हत्यारे ने कानून को चुनौती देकर लिखा था : 'मुझे पकड़ो तो जानूँ।' और कानून ने उस चुनौती को स्वीकार किया और साबित कर दिया कि वह ठीक वही काम कर सकती है--केवल ७२ घंटे के अन्दर।





"यह भी कोई बात है, कि मैं इतना बड़ा कलाकार होकर भी इस जीवन में कोई मधुबाला प्राप्त न कर सकूँ।"



दूसरी बोतल

सरदार सन्तोष सिंह

मैंने जब होश सम्भाला तो अपने आपको लन्दन के एक अनाथाश्रम में पाया। उस ज़माने में इंग्लैंड के अनाथाश्रमों का प्रबन्ध कोई अच्छा नहीं था। अनाथों के लिए जो चन्दा मिलता था वह प्रबन्धकों के पेट में पहुँच जाता था। वहाँ के दुःखों से छुटकारा पाने के लिए अक्सर लड़के अनाथालय से भाग निकलते थे। मैं भी उनमें से एक था।

बाहर की दुनिया में ठोकरों के सिवा कुछ नहीं था, फिर भी मैंने अनाथालय को लौट जाने की बात कभी नहीं सोची। मेरा लड़कपन बड़ी ही मुसीबतों में गुजरा। कई अनोखी घटनाएँ घटीं। उन्हीं में से एक घटना आप भी सुनिए।



रात के सन्नाटे में एक भयंकर बूढ़ा रेस्तराँ में पहुँच गया। क्या सचमुच उसने अपनी पत्नी की हत्या की थी या वह कोई प्रेत था ?



उस वर्ष इंग्लैंड में बड़े कड़ाके की सर्दी पड़ी थी। मेरी उम्र चौदह-पन्द्रह वर्ष के लगभग थी। एक नौकरी से जवाब मिल जाने पर कई दिनों तक नौकरी की तलाश में जगह-जगह की धूल फाँकता रहा। यहाँ तक कि मुझे अपना पुराना कोट भी बेचना पड़ा। ऐसी तीक्ष्ण सर्दी में कोट के बिना मैं निश्चय ही अकड़ कर मर जाता, यदि एक दयालु को मुझ पर दया न आ जाती।

छोटे से बन्दरगाह के निकट एक घटिया-सा रेस्तराँ था। घूमते-फिरते मैं उस रेस्तराँ के दरवाजे तक जा पहुँचा। इत्तफाक से मालिक की मुझ पर नजर पड़ी, बातों-बातों में उसे मेरी मुसीबतों का पता चला तो उसने कहा, "देखो बेटा, तुम बेहद दुखी और ईमानदार लड़के नजर आते हो। मैं तुम्हें अपने रेस्तराँ में नौकरी दे सकता हूँ।

यहाँ भोजन भी मिलेगा और तनख्वाह भी। लेकिन ड्यूटी जरा कठिन होगी।"

उसकी बात सुन कर मैं गद्गद् हो उठा। मैंने कहा, "मेरे लिए कोई ड्यूटी कठिन नहीं होगी। आप जो काम कहेंगे सो मैं बड़ी लगन और ईमानदारी के साथ करूँगा।"

उसने कहा, "मैं अपना रेस्तराँ दस बजे बन्द कर देता हूँ। फिर मैं सुबह चार बजे लौट कर आता हूँ। मेरे पास एक नौकर भी है, जो रेस्तराँ खुलने पर मेरे साथ काम करता है, रेस्तराँ बन्द होने पर मेरे साथ ही चला जाता है। ग्राहक दस बजे के बाद रात भर आते रहते हैं। यह बन्दरगाह है। बाज भूले-भटके मल्लाह कॉफी पीने और छोटी-मोटी चीज खाने के लिए आ टपकते हैं। मैं सोचता हूँ कि रात के दस बजे से सुबह चार बजे तक तुम्हारी यहाँ ड्यूटी लगा दूँ। दिन की अपेक्षा रात को बहुत कम काम होता है। इसलिए मुझे विश्वास है कि तुम अकेले इसे निभा सकोगे। बोलो, तुम्हें यह काम मंजूर है?"

"मंजूर है। मैं रात को जाग कर काम किया करूँगा और दिन में सो लिया करूँगा।"

"शाबास! मैं सोचता हूँ कि रात की आमदनी भी क्यों छोड़ी जाए। खाने-पीने की छोटी-मोटी चीजें तुम्हें यहाँ तैयार मिलेंगी। जब कोई ग्राहक आ जाए तो तुम्हें उसके आर्डर के अनुसार जो कुछ वह चाहे उसे वह गर्म करके देना होगा। इसके अलावा गर्मागर्म कॉफी तो हर समय तैयार रखनी होगी, क्योंकि अधिकतर मल्लाह कॉफी पीने ही आते हैं।"

मैंने वह नौकरी कर ली, और मेरा जीवन मजे में कटने लगा। रात के समय ग्राहकों की रेल-पेल नहीं होती थी। लेकिन एकाध ग्राहक बैठा ही रहता था। यह भी मेरे लिए अच्छा था, क्योंकि अकेले में निश्चय ही मेरी तबियत घबराने लगती। मैं ग्राहकों को कॉफी देता, मजे-मजे की बातें करता, और फिर उनसे पैसे लेकर गुल्लक में डाल

देता। सुबह को रात भर की कमाई मैं मालिक के हवाले कर देता।

एक रात ढाई बजे के करीब दो मल्लाह खा-पीकर चले गये तो रेस्तराँ बिल्कुल खाली हो गया। इलाका रात के समय लगभग सुनसान हो जाता था और मुझे अकेले में डर महसूस होने लगता। मैं बार-बार खिड़की की ओर जाकर झाँकता था, यह जानने के लिए कि कोई नया ग्राहक आ रहा है या नहीं। आखिर जब रेस्तराँ के बाहर किसी के चलने की आवाज सुनाई दी तो मुझे इत्मीनान हुआ।

कुछ ही पलों के बाद मैंने देखा कि चीथड़े लटकाये एक भयंकर बूढ़ा भीतर आया। उसकी आँखें लाल थीं और बाल बुरी तरह उलझे हुए थे। काउन्टर के पास वाले ऊँचे स्टूल पर बूढ़े ने बैठते हुए कहा—"कॉफी लाओ।"

मुझे उस बूढ़े की शक्ल बड़ी भयंकर लग रही थी। मेरे मन की शान्ति भंग हो गई। मेरा जी चाहता था कि काश कोई और ग्राहक भी वहाँ मौजूद होता।

मुझे इस तरह गुमसुम पाकर बूढ़े ने अपनी लाल-लाल आँखें मेरे चेहरे पर गाड़ दीं और दहाड़ कर बोला, "काफी लाओ।"

मैं बिदक कर रसोई-घर में चला गया। थोड़ी ही देर बाद कॉफी का मग लाकर उसके आगे रख दिया। वह धीरे-धीरे गर्म कॉफी की चुस्कियाँ लेने लगा। अब फिर मैंने बार-बार खिड़की के पास जाकर बाहर की ओर झाँकना शुरू कर दिया। मैं भगवान से मना रहा था कि काश कोई और ग्राहक वहाँ आ जाए।

बूढ़े ने गुर्रा कर पूछा, "तुम बार-बार खिड़की की ओर क्यों जाते हो?"

मैंने हड़बड़ा कर उत्तर दिया, "मैं यह देखने जाता हूँ कि बारिश हो रही है या नहीं।"

वह बिना कारण ही गन्दे-गन्दे टूटे-फूटे दाँत दिखा कर जोर-जोर से हँसने लगा। उसकी हँसी और भी भयंकर थी। मैं उससे परे हट जाना

चाहता था, लेकिन उसने अपना पंजा बढ़ा कर मेरे कन्धे पर रख दिया। बूढ़ा होने पर भी वह बड़ा शक्तिशाली था, क्योंकि उसकी उँगलियों के दबाव से मेरा कन्धा दुखने लगा। उसके मुँह से शराब की बदबू भी आ रही थी। वह मुँह फैला कर बोला--"आज मैं उसे ठिकाने लगा आया हूँ।"

मैंने सहमी हुई आवाज में पूछा, "किसे ?"

"अपनी पत्नी को।"

"क्यों ?"

"बड़ी बकबकनी थी। जब मैं घर लौटता तो वह टैं-टैं करने लगती। उसे मेरी हर बात पर आपत्ति थी। मेरा शराब पीना, जुआ खेलना, आवारा घूमना, यह सब उसे बिल्कुल पसन्द नहीं था। आखिर मैंने निश्चय कर लिया कि इस चुड़ैल से पीछा छुड़ा लेना ही बेहतर है। आज मैंने पिस्तौल निकाला और धड़ाधड़ चार-पाँच गोलियाँ उसकी खोपड़ी में मार दी। अब वह फर्श पर चित्त लेटी है। अब उसके मुँह से आवाज नहीं निकलेगी..."

इतना कह कर बूढ़ा रोने लगा। बाप रे! उसकी यह हालत देख कर मेरी हालत पतली हो गयी। अब मेरा ध्यान उसके कोट के नीचे बायीं ओर को गया। वहाँ से कोट ऊपर को उठा हुआ था। मुझे यह समझने में देर नहीं लगी कि उसने अपने मैले कोट के भीतर पिस्तौल छिपा रखा है। पिस्तौल के खयाल से मुझे कँपकँपी होने लगी। बूढ़ा बिलकुल सनकी लग रहा था। ऐसे आदमी का क्या ठिकाना। न जाने कब पिस्तौल निकाल कर मुझ ही पर गोलियाँ चलानी शुरू कर दे। मौत के डर से मेरा दिल बैठने लगा। मैंने सोचा कि अगर आज बच गया तो फिर मैं रात की ड्यूटी कभी नहीं करूँगा।

इतने में ही मुझे भारी बूटों की आवाज सुनाई दी। नजर उठाई तो दरवाजे में पुलिस का एक आदमी खड़ा दिखाई दिया। मेरा दिल नाच उठा। मैं लपक कर उसके पास पहुँचा और बोला, "आइए,

...इए, क्या चाहिए आपको ?"

पुलिस-मैन निकट की कुर्सी पर बैठ गया और उसने दोनों कोहनियाँ ...ज पर टेकते हुए भारी स्वर में कहा, "बड़ी सर्दी है, एक मग कॉफी ...ाओ।"

आॅर्डर लेते समय मैं भी मेज पर झुका हुआ था। मैं बूढ़े के डर के ...ारे खुल्लमखुल्ला तो कुछ नहीं कहना चाहता था, लेकिन मैंने पुलिस-...ैन की ओर देख कर अपने सिर से बूढ़े की ओर संकेत करते हुए आँख ...ार दी।

पुलिसमैन ने भी बूढ़े की ओर एक नजर डाली और मुझे आँख मार ...ी।

इसका क्या मतलब ?

मैं दौड़ कर रसोईघर में गया, और गर्मागर्म कॉफी ले आया।

मग पुलिसमैन के सामने रख कर मैं सोचने लगा कि उसे बूढ़े के ...ारे में कैसे समझाऊँ। बूढ़ा हम दोनों की तरफ ही देख रहा था। मैं ...ह भी जानता था कि बूढ़े ने कोट के नीचे पिस्तौल छिपा रखी है। ...गर उसे शक हो गया कि मैंने ही उसे गिरफ्तार कराया है तो निश्चय ...ी वह मेरी जान ले लेगा। वह अपनी पत्नी को तो कत्ल कर ही चुका ...ा। भला एक की बजाय दो व्यक्तियों की जान लेने से उसे क्या फर्क ...ड़ेगा। उसे तो एक ही बार मृत्यु-दण्ड भुगतना पड़ेगा।

बूढ़े की ओर मेरी पीठ थी। अब के मैंने बूढ़े की ओर उँगली से ...शारा किया और अपने कन्धे हिला दिए।

पुलिसमैन ने भी केवल कन्धे हिला दिए और फिर बड़े इत्मीनान ...े कॉफी पीने लगा।

मेरी हालत और भी खराब होती जा रही थी, क्योंकि बूढ़ा मुझे ...ुरी तरह घूर रहा था। अब मुझे इस बात का भी डर लगा कि पुलिस-...ैन के चले जाने के बाद यह बूढ़ा मुझे जिन्दा नहीं छोड़ेगा। समझ में नहीं ...ा रहा था कि क्या करूँ, कैसे पुलिसमैन को समझाऊँ।

बूढ़े ने काउन्टर पर कॉफी के पैसे फेंके और लड़खड़ाता हुआ बाहर निकल गया।

अब मैंने पुलिसमैन को बताया, "इस बूढ़े ने अपनी पत्नी की गोली मार कर हत्या कर दी है।"

"मैं जानता हूँ।" पुलिस मैन ने बड़े इत्मीनान से उत्तर दिया।

मैं चिल्ला कर बोला, "तो फिर आपने उसे पकड़ा क्यों नहीं?"

पुलिसमैन मुस्करा कर बोला "उसने यह हत्या बीस साल पहले की थी। वह पकड़ा गया, और उसे चौदह वर्ष कैद की सजा मिली थी। वह अपनी पूरी कैद भुगत चुका है। अब वह पागल हो चुका है। हर रोज शराब की दो बोतलें पीता है। पहली बोतल पीने के बाद लोगों से कहता फिरता है कि उसने अभी-अभी अपनी पत्नी को गोली से उड़ा दिया है। यह कह कर वह खूब रोता है। लेकिन दूसरी बोतल लेने के बाद वह शान्त हो जाता है। तब वह इत्मीनान से लड़खड़ाते हुए चलता है या सो जाता है।"

मैंने जल्दी से कहा, "अजी, वह तो अब भी अपने कोट के नीचे पिस्तौल छिपाए हुए था।"

पुलिसमैन कॉफी खतम कर चुका था। उसने पैसे मेरे हाथ पर रखते हुए कहा, "वह पिस्तौल नहीं, शराब की दूसरी बोतल थी, जिसे उसने कोट के भीतर दबा रखा था।"

●●

— हमें पुनः जीवन मिला —

(पृष्ठ ८५ से आगे)

कनस्तर को तिरछाकर के उसकी ऊपरी सतह से तेल को नीचे गिराया गया। अब पीले रंग का ज़ंग भरा पानी आधे कनस्तर की मात्रा में हमारे पास था, पर बोतलें नहीं थीं, जिनमें उसे भरा जाता। बोतलें हम रात ही को फेंक चुके थे। बहरहाल, सब ने जी भर कर पानी पिया और रोटी का एक-एक टुकड़ा उसी पानी में भिगो कर खा लेने से हम में दिन भर तक जीवित रहने की शक्ति आ चुकी थी।

मेरी घड़ी उस समय सुबह के आठ बजा रही थी। मौत के खतरे से निश्चित हो कर हम फिर यात्रा पर चल पड़े। दो घण्टे बाद सहसा हमें दो विमान दूर क्षितिज में उड़ते हुए दिखाई दिये। जर्गन ने एक बार फिर पिस्तौल के चैम्बर से दो आखिरी फायर वायुमंडल में झोंक दिये। थोड़ी देर बाद दो रेगिस्तानी सहायता-विमान हमारे सिरों से गुज़र गये। इनमें से एक यान चालक ने हमें देख लिया था। इसीलिए वह दूसरे का पीछा करके उसे अपने साथ वापस ले आया। यह विमान हैलीकाप्टर की तरह बिना किसी कठिनाई के रेत के ढेर पर उतर गये।

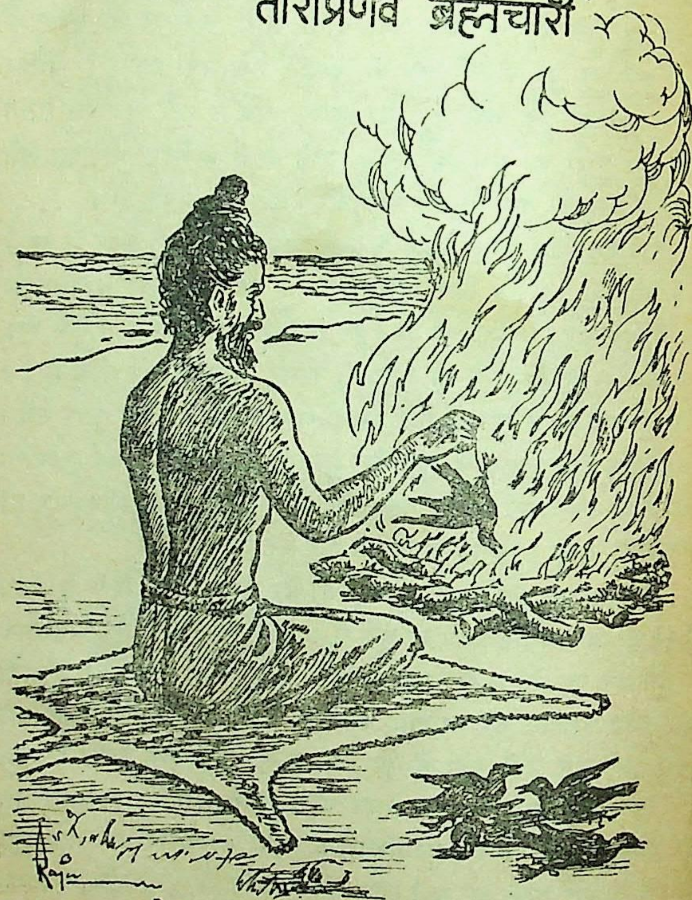
रोटी का एक टुकड़ा खा कर और जी भर कर पानी पी लेने से जर्गन में नये जीवन के चिन्ह प्रकट हो चुके थे, पर सहायता-दस्तों के स्वयंसेवक को देख कर वह बेहोश हो गया। उसे होश में लाने के लिए हमारी खुशी और उल्लास की भावनाएं शीत हो चुकी थीं। समय नष्ट किये बिना हमने उसे उसी दशा में एक विमान में अपने साथ लिटा दिया।

तबरोक पहुँचने के बहुत समय पहले जर्गन होश में आ चुका था, पर उसने गत दिनों की हृदयविदारक यात्रा की कहानी को मनगढ़न्त कहानी घोषित करते हुए यही कहा कि उसे किसी लम्बे और भयानक सपने ने नींद से जगा दिया है। ●●

—अनुवादक : सुरजीत

तंत्र-मंत्र-शक्ति

ताराप्रणव ब्रह्मचारी



इतनी दूर से भी आँच शरीर में लग रही है। आग की लपलपाती लपटें आकाश को छूना चाहती हैं। धुआँ उमड़-घुमड़ कर ऊपर की ओर उठता है, फिर टुकड़े-टुकड़े हो कर चारो ओर फैल जाता है। आग की कैसी भयानक दौड़-धूप, कैसा प्रखर तेज़ है। श्मशान बनर्जी परिवार का अपना ही है।

चिता में आम के बड़े-बड़े लक्कड़ जल रहे हैं। लाल कम्बल के आसन पर लाल वस्त्र पहने उत्तर की ओर मुँह करके चिता के सामने बैठा है सुखरंजन। दाहिनी ओर कोई सात-आठ कौए निर्जीव से पड़े हैं। सभी के दोनों पैर एक करके लाल धागे से बँधे हैं। बीच-बीच में

●

चिता के सामने बैठा था सुखरंजन। बगल में पड़े थे सात-आठ
निर्जीव कौए। वह उन कौओं को बारी-बारी से चिता में
फेंक कर मंत्रोच्चारण करता गया। इसके बाद
क्या हुआ? साधु पराशर की साधना
कैसे सार्थक हुई?

●

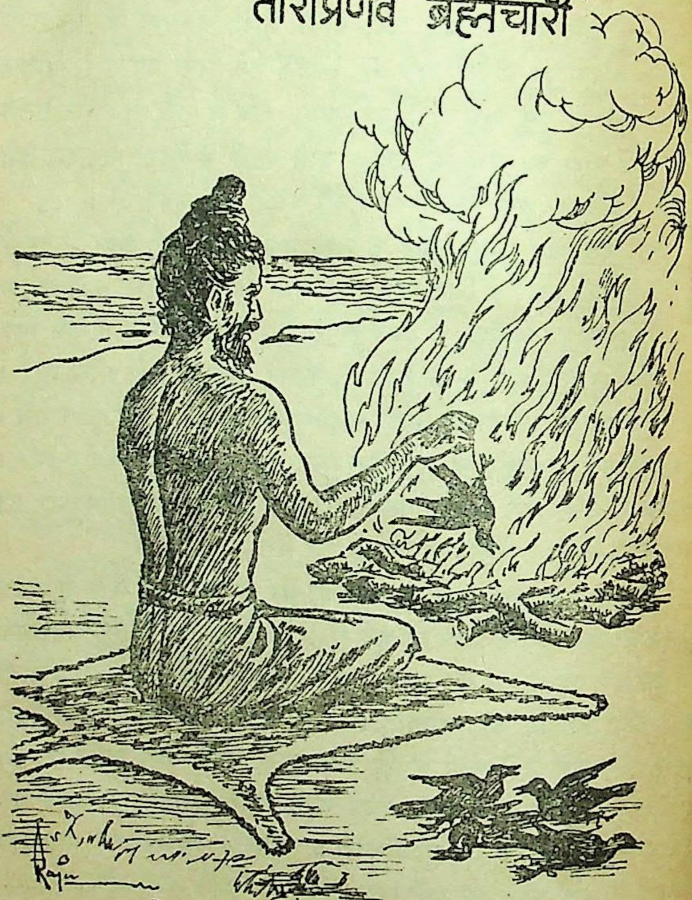
उनके पंख फड़फड़ाने की आवाज़ होती है। उड़ने की व्यर्थ चेष्टा।

पशु-पक्षी भी आती हुई मृत्यु को शायद समझ जाते हैं। कौओं की हालत देख कर ऐसा ही लगता है। उन्हें लेकर एक पैशाचिक काँड होने जा रहा है, यह बात मानो वे ठीक समझ पा रहे हैं। कुछ दूर पर सब से मोटे तने वाले आम के पेड़ के पीछे खड़ा-खड़ा पराशर यह सब देख रहा है। सुखरंजन को कहीं पता न लग जाय, इसलिए वह दबे पाँव छिप कर आया है। श्मशान में।

महीने में एक बार कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी आती है। इस बार यह तीसरी है। पहले की दो चतुर्दशियों में वह नहीं आया था। इसी बार

तंत्र-मंत्र-शक्ति

ताराप्रणव ब्रह्मचारी



तनी दूर से भी आँच शरीर में लग रही है। आग की लपलपाती लपटें आकाश को छूना चाहती हैं। धुआँ उमड़-घुमड़ कर ऊपर की ोर उठता है, फिर टुकड़े-टुकड़े हो कर चारो ओर फैल जाता है। ाग की कैसी भयानक दौड़-धूप, कैसा प्रखर तेज है। श्मशान बनर्जी रिवार का अपना ही है।

चिता में आम के बड़े-बड़े लक्कड़ जल रहे हैं। लाल कम्बल के ासन पर लाल वस्त्र पहने उत्तर की ओर मुँह करके चिता के सामने ठा है सुखरंजन। दाहिनी ओर कोई सात-आठ कौए निर्जीव से पड़े ं। सभी के दोनों पैर एक करके लाल धागे से बँधे हैं। बीच-बीच में

●

चिता के सामने बैठा था सुखरंजन। बगल में पड़े थे सात-आठ
निर्जीव कौए। वह उन कौओं को बारी-बारी से चिता में
फेंक कर मंत्रोच्चारण करता गया। इसके बाद
क्या हुआ? साधु पराशर की साधना
कैसे सार्थक हुई?

●

नके पंख फड़फड़ाने की आवाज़ होती है। उड़ने की व्यर्थ चेष्टा।

पशु-पक्षी भी आती हुई मृत्यु को शायद समझ जाते हैं। कौओं ी हालत देख कर ऐसा ही लगता है। उन्हें लेकर एक पैशाचिक काँड ोने जा रहा है, यह बात मानो वे ठीक समझ पा रहे हैं। कुछ दूर पर ब से मोटे तने वाले आम के पेड़ के पीछे खड़ा-खड़ा पराशर यह सब ेख रहा है। सुखरंजन को कहीं पता न लग जाय, इसलिए वह दबे पाँव छप कर आया है। श्मशान में।

महीने में एक बार कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी आती है। इस बार यह ीसरी है। पहले की दो चतुर्दशियों में वह नहीं आया था। इसी बार

आया है । आने को बाध्य हो गया है । पहले के दो महीनों की इन्हीं तिथियों में घर में लोमहर्षक काँड हो गये हैं । क्यों ये काँड हुए, कैसे हुए, सो किसी को कुछ पता नहीं चला । दो-दो निष्पाप, निर्दोष प्राणियों का करुण आर्तनाद लोगों ने गहरी अँधेरी रात में सुना है। सोते हुए पराशर की छाती में जोर से घूँसा मार कर जाने किसने उसे जगा दिया है और वह हड़बड़ा कर बिछौने पर उठ कर बैठ गया है। अपने भीतर उसने असह्य यंत्रणा का अनुभव किया है । फिर किसी तरह अपने को सम्हाल कर बाहर निकल कर उसने जो सुना है, उससे उसका रक्त मानों जम गया है ।

और यह एक बार नहीं, दो-दो बार हुआ है । फिर तीसरी बार भी यह होगा यह बात पराशर का मन प्रायः हफ्ते भर से ही कह रहा था। फुरसत के समय बार-बार ख्याल आ जाता था। वह एक काली छाया को मानो घर भर में घूमते देख रहा था। उसकी यह हालत पहले की घटनाओं से मन दुर्बल हो जाने के कारण या डर जाने के कारण तो नहीं है यह समझने की वह चेष्टा कर रहा था। पर उसके भीतर से कोई बार-बार कहता था कि जो भी हो, इस बार फिर उस घटना की पुनरावृत्ति होने जा रही है--यह निश्चित है। और उसे किस तरह रोका जाय, इसी चिन्ता में पागल होकर दिन-पर-दिन पराशर घूमता रहा है। त्रिपुरा राज्य के इस गाँव में इस विषय में सलाह लेने के लिए उसने कोई भी घर बाकी नहीं छोड़ा है । मगर नाना मुनियों के नाना प्रकार के मतामत सुन कर वह और भी विभ्रान्त हो पड़ा है। किसी ने हिम्मत नहीं बँधायी। बल्कि बहुतेरों ने उल्टा भय ही दिखाया है। कहा है कि यह सब काँड, जो उस घर में हुआ है, वह सब तांत्रिक अभिचार क्रिया का फल है, इस विषय में किसी प्रकार की खोज-खबर लेने जाना कोरी मूर्खता होगी--इसका फल बुरा हो सकता है, जान के लाले पड़ जा सकते हैं, धन-मान की हानि भी होगी। किसी-न-किसी तांत्रिक का कोप इस वंश पर पड़ा है । उसके क्रिया-कलाप में बाधा देकर कोई

अपने सर्वनाश को वरण करके उसका आह्वान करता है कभी ?

पर जो होना है, वह तो हुआ ही जा रहा है। सर्वनाश होने को अब बाकी क्या रह जाता है ? मगर जो भी बाकी है, उसकी रक्षा करने की चेष्टा पाकर क्यों न करें ? अहमक की तरह हाथ-पैर सिकोड़ कर वह किसी तरह बैठा नहीं रह सकेगा।

सो पराशर अपने को ही संबल मान कर अकेला ही आया है। किसी को उसने साथ नहीं लिया, किसी से कहा तक नहीं। काफी रात होने पर चुपचाप घर से निकल कर चला आया है। उसे जाने किस शक्ति ने धक्का दे-देकर श्मशान की ओर भेज दिया है। लोगों के मुँह से उसने सुना था कि तांत्रिक लोग श्मशान में ही अभिचार क्रिया करते हैं।

जो पराशर ने सुना था, वही वह देख रहा है अपनी आँखों से। आँख कान का विवाद उसका मिट गया है। मगर एक बात है--आश्चर्य भी उसे कम नहीं हुआ है। आश्चर्य हुआ है सुखरंजन को देख कर।

चिता में कोई मुर्दा नहीं जल रहा है, खाली मोटी-मोटी लकड़ियाँ जल रही हैं। चारों ओर निर्जन निस्तब्ध है। सब। दूर या पास कहीं कोई नहीं है। निविष्ट मन से सुखरंजन क्रिया कर रहा है। पराशर सिहर उठा। सुखरंजन मंत्र उच्चारण के साथ-साथ एक-एक कौए की आग में आहुति दे रहा है। मृत्यु की यंत्रणा से उन पक्षियों के गले से एक अजीब तरह की हृदय-विदारक आवाज खाली निकल जाती है, उसके बाद वह सदा के लिए स्तब्ध हो जाती है। साथ ही वह जगह भी पहले से भी अधिक निस्तब्ध हो जाती है। इस प्रकार सातों कौए आग के गर्भ में निक्षिप्त हो गये।

पराशर पत्थर बना खड़ा है।

यकायक वह चौंक उठता है, उसका हृदय काँप उठता है, सुखरंजन के मुँह से मंत्र उच्चारण के साथ और एक नाम सुनते ही पराशर के भीतर धक्-धक् कर उठता है। 'धूँ-धूँ अमरेश्वर....!' तो सुखरंजन के

मंत्र की बलि इस बार अमरेश्वर है ।

अब सुखरंजन चिता में लकड़ी नहीं डाल रहा है । शायद अग्नि को प्रज्वलित करने का कार्य समाप्त हो गया है । आग बुझने लगी है । सुखरंजन ज़ोर-ज़ोर से मुँह से साँस खींच रहा है। मानो एक वात्याचक्र को मुँह के रास्ते भीतर खींचे ले रहा है । इसी आँधी के साथ भी अमरेश्वर का नाम मंत्र उच्चारण के साथ फिसफिसा कर सुनाई दे रहा है । और उससे दूने ज़ोर से वह नाक से साँस छोड़ रहा है । साथ-साथ वही मंत्र, वही नाम । चिता की आग बुझ गयी है ।

जहाँ पर कौए जल कर राख हो गये थे, वहाँ की भस्म सुखरंजन ने एक खोपड़ी में उठा ली । फिर उठ कर वह उस भस्म को मंत्र और नाम उच्चारण करता हुआ चारों ओर छितराने लगा ।

पराशर को लगा कि यह नाम हवा में तैरता हुआ उसी नाम के आदमी के पास जायेगा । उसके बाद वह उसे बुला कर, जगा कर खींचता हुआ ले जायेगा जहाँ सुखरंजन उसे ले जाना चाहेगा । उसका उद्देश्य पूरा होगा । अँधेरी रात में आकाश के प्रकाश में पराशर देख रहा है । मरे हुए कौओं के शरीर की भस्म से असंख्य जीवित कौए निकल कर हवा में तैरते फिर रहे हैं । कैसे भयानक लग रहे हैं वे । सामने किसी को पा जायें तो चोंच की ठोकरें मार-मार कर क्षण भर में मानों उसे ख़त्म कर देंगे ।

सुखरंजन जिस ओर हाथ से इशारा करता है, उसी ओर कौए उड़ जाते हैं । उसी ओर बनर्जी परिवार का मकान है, उधर ही अमरेश्वर के सोने का कमरा है ।

पराशर चौंका, सुखरंजन के अट्टहास से उसकी चेतना लौट आयी । सुखरंजन हँस रहा है, जी खोल कर हँस रहा है । शायद वह समझ गया है कि उसकी मनोकामना पूरी होगी। पराशर का सारा शरीर काँप उठा । देरी करने से सामूहिक विपत्ति आयेगी। अमरेश्वर भी पहले के दो जनों का अनुसरण करेगा निश्चय ही, अभी इसी वक्त । निःशब्द

होकर वह मृत्यु के पाताल-घर की ओर चला जायेगा।

पराशर जिस ओर से आया था, उसी ओर चला। जिस तरह से हो, अमरेश्वर को रोकना ही होगा। अपनी जान देकर भी वह इस काम में पीछे नहीं हटेगा। उसके पहले पराशर स्वयं पाताल-घर जायेगा। सुखरंजन को अपने इस क्रिया-कलाप का फल ज़रूर भोगना होगा।

पराशर हवा की तेज़ी से बढ़ा जा रहा था।

वह घर आया। जो सोचा था, वही उसने देखा। अमरेश्वर अपने कमरे से नशे की सी हालत में निकल कर बाहर आया और चलने लगा। उसका शरीर मानो उसका अपना नहीं है, दूसरे का है। वही दूसरा कोई हवा में तैरता हुआ जा रहा है मानो। दोनों आँखें बन्द हैं। तब भी पाताल-घर की ओर ठीक ही जा रहा है वह। एकदम सीधा जा रहा है। आश्चर्य है। उसके पैर तनिक भी इधर-उधर नहीं पड़ रहे हैं।

पराशर स्थिर न रह सका। दौड़ कर उसने अमरेश्वर को बाँहों में लपेट लिया। उसे लगा जैसे एक लोहे के आदमी को उसने लपेटा हो। वह उसे रोक नहीं सका। लोहे का आदमी पराशर को एक ओर ठेल कर फिर अपने गन्तव्य की ओर चलने लगा। पराशर निरुपाय होकर उस धक्के की बात भूल गया। समय बिल्कुल नहीं है। चटपट उठ कर वह अमरेश्वर के पास-पास चलने लगा और उसके कान के पास मुँह लाकर बार-बार उसका नाम पुकारने लगा कि चेतना लौट आये किसी तरह। 'अमरेश्वर लौट आओ। उधर मत आओ। मैं हूँ पराशर, पराशर...।'

कौन सुनता है भला! अमरेश्वर के कानों में कोई बात नहीं पहुँच रही। पराशर की आवाज़ को दबा कर श्मशान की साँस की पुकार ही प्रबल हो रही है। पराशर को भी श्मशान की वह पुकार सुनाई दे रही है—सुखरंजन की हर साँस में अमरेश्वर के नाम की पुकार। वह स्पष्ट सुन पा रहा है। अमरेश्वर भी केवल वही पुकार सुन रहा है।

वह इस पुकार के मोह से आविष्ट है। इस मोह में पड़ कर वह आत्म-ज्ञान शून्य हो गया है। इस मोह के कठिन आकर्षण से उसका किसी तरह निस्तार नहीं है।

सब कुछ समझने पर भी पराशर हिम्मत नहीं छोड़ रहा है। घर में बूढ़े-बूढ़ियों के मुँह उसने एक बात कई बार सुनी है--जब तक साँस तब तक आस। वही बात उसे बार-बार याद आ रही है, इसी लिए वह अमरेश्वर का साथ नहीं छोड़ रहा है। न उसे पुकारना बन्द कर रहा है। बल्कि गले की आवाज़ को और भी चढ़ाता जा रहा है वह। अन्तिम चेष्टा है--शायद अमरेश्वर सुन ले और उसे होश आ जाय।

मगर अमरेश्वर के होश में आने के पहले पराशर के ही होश-हवास गायब होने की नौबत आ रही है। वह जितनी जोर से चीख़ कर पुकार रहा है, उतनी ही जोर से झुण्ड के झुण्ड कौओं का आर्तनाद भयानक रूप से उसके कानों में आ रहा है। उसका सिर जाने कैसा हुआ जा रहा है। पराशर पागलों की तरह पुकारे जा रहा है। उसकी पुकार के भीतर से भी एक आर्तनाद निकलता सुनाई देता है।

इधर ठीक इसी समय नयनतारा एक भयंकर दुःस्वप्न देख रही है। पराशर के सामने कालनागिनी फन उठाये फुँफकारती हुई गर्जन कर रही है, हवा में विष उगल रही है। पराशर के गुलाबी रंग को विष के प्रभाव से नीला किये दे रही है। खाली उसके मरने की देर है। पराशर जाने किसे बुला रहा है। उसका स्वर अस्पष्ट और असहाय है। असहनीय यंत्रणा से नयनतारा की नींद टूट गयी। सचमुच ही पराशर की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी।

वह खाट पर से कूद कर ज़मीन पर खड़ी हो गयी। फिर आवाज़ जिधर से आ रही थी, उधर दौड़ पड़ी, वही पातालघर की ओर। वहाँ आँखों से जो दृश्य देखा, उससे उसका हृदय काँप उठा। उसने दोनों की अवस्था देखी, पराशर और अमरेश्वर की। पराशर के मुँह से सुखरंजन के क्रियाकांड की बात सुनी। सुन कर नयनतारा स्तंभित

अवाक् हो गयी। सुखरंजन का यह क्रिया-कलाप तुरन्त बन्द न हो तो महाविपत्ति आयेगी। दो-दो प्राण दुनिया का बन्धन तोड़ कर वायु में मिल जायेंगे।

नयनतारा श्मशान की ओर तेज़ी से दौड़ने लगी। वहाँ पहुँच कर हाँफती हुई वह सुखरंजन के पैरों पर पछाड़ खाकर गिर पड़ी--"बन्द करो यह काम। नहीं तो इस बार पराशर को भी नहीं लौटा पाओगे।" नयनतारा फूट-फूट कर रो रही थी।

सुखरंजन का ध्यान भंग हुआ। वह पातालघर का ध्यान कर रहा था और उसी घर की ओर अमरेश्वर तेज़ी के साथ बढ़ा आ रहा था। अब साँस के साथ मंत्र उच्चारण और अमरेश्वर का नाम पुकारना बन्द हुआ। यह सम्मोहन उच्चाटन की पुकार है। इस पुकार का ऐसा मोह है, ऐसा एक आकर्षण है कि उस समय अन्य कोई पुकार कानों में प्रवेश नहीं करती। यह पुकार बन्द न होने तक चेतना होना असंभव है। तांत्रिक की इच्छानुसार गन्तव्य स्थान पर न पहुंचने तक क्रिया के प्रभाव से प्रभावित व्यक्ति नहीं रुकेगा, एक बार ठिठकेगा भी नहीं। न पल भर को घर में ठहर सकेगा, न बाहर। विवेकहीन होकर अपने अगोचर में ही चलता रहेगा, चलता ही रहेगा।

नयनतारा के कारण सुखरंजन की उद्देश्य-सिद्धि का यज्ञ व्यर्थ हो गया। क्रिया का परिश्रम व्यर्थ हुआ। सुखरंजन ने लाल कम्बल के आसन से दोनों पैर हटा लिये। अमरेश्वर जहाँ तक आ गया था, वहीं पर उसका चलना बन्द हो गया। होश में आते ही वह अवाक् हो गया। पातालघर के एकदम पास तक अपने को आया देख वह चौंक उठा। शरीर का सारा रक्त सिहर उठा। उसने देखा कि बड़े भाई और मझले भाई की दशा उसकी भी होने जा रही थी।

इसके बाद की घटना--सुखरंजन पहले की तरह फिर कहीं निरुद्देश्य हो कर चला गया था अर्थात् बारह वर्ष पहले तीस वर्ष की उम्र में जैसे वह घर छोड़ कर, देश छोड़ कर चला गया था वैसे ही। उस समय

पराशर दस बरस का था। वह सुखरंजन का एकमात्र लड़का था।

बनर्जी परिवार एक का विचित्र इतिहास है। हर दो पीढ़ियों के बाद घर का एक लड़का तांत्रिक संन्यासी होकर निकल जाता है। सुखरंजन के मामले में यही हुआ था। परिवार में वह सबसे छोटा था। बचपन से ही अपने परिवार की यह विशेषता सुन-सुन कर, उसके मन में तांत्रिक संन्यासी बनने की भावना ने घर कर लिया था। तीस वर्ष की उम्र में उसकी यह भावना प्रबल हो उठी। उसने गृहत्याग कर दिया और बारह वर्ष तक वह देश भर में घूमता रहा और तांत्रिकों और संन्यासियों की खोज कर-कर के उनसे बहुत कुछ सीखता रहा। तब भी बाद में घर के आकर्षण ने उसे खींचा। उसे लगा, स्त्री और पुत्र को एक बार बगैर देखे उसकी साधना की बाधा नहीं कटेगी। कारण उसकी याद उसे हमेशा आती रहती और साधना करते समय उनके चेहरे सामने आ जाते।

घर आकर स्त्री के मुँह से सुखरंजन ने जो सुना, उससे उसके हृदय में प्रतिहिंसा की आग जल उठी और सिर पर खून सवार हो गया। नयनतारा ने रो-रोकर प्रतिकार का रास्ता भी दिखा दिया, "रास्ते-के काँटों को दूर कर जाओ।"

नयनतारा ने बताया था कि घर के सभी लोग उसे और उसके लड़के को भिखारी से बदतर समझते हैं, जिठानी और उसके लड़के उन दोनों के साथ नौकरों से भी खराब व्यवहार करते हैं। विषय सम्पत्ति सब उन्हीं की है, मानो नयनतारा और पराशर का उस पर रत्ती भर अधिकार नहीं है। इसका मूल कारण है सुखरंजन का संन्यासी हो कर बाहर-बाहर रहना। नयनतारा का कहना था कि जब उसका कोई ठीक ही नहीं है कि कब अन्तर्धान हो जायेगा, तब उसे उन लोगों की कुछ व्यवस्था करके जाना चाहिए। या तो नयनतारा और उसके लड़के को गला दबा कर समाप्त करके वह चाहे जहाँ चला जाय या फिर उनके

सुख के रास्ते में जो सब काँटे हैं, उन्हें पूरी तरह से जड़ से उखाड़ कर जाय ।

सुखरंजन तांत्रिक संन्यासी है, श्मशानों में बैठ कर उसका क्रिया-कर्म और साधन भजन चलता है, यह बात सभी जानते हैं । नयनतारा भी जानती है । मगर स्त्री की बात मान कर, उसके रास्ते का काँटा दूर करने की साधना वह हर कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को करता है, यह बात न तो स्त्री ही जानती थी न और कोई । इस तरह की दो चतुर्दशियों की रात में जब बड़े भाई का बड़ा लड़का और मझला लड़का एक ही प्रकार से पातालघर के दरवाज़े के पास सीढ़ियों के चबूतरे पर जाकर मृत्यु की गोद में चले गये, तब भी बहुत लोगों ने समझा कि उस पातालघर में बहुत बड़ा ज़मीदोज़ ख़ज़ाना है, जिस पर कालनागिनी पहरा देती है--उधर जाने पर उसके फुफकारने की आवाज़ सुनाई पड़ती है। जिसका सचमुच उस धन पर हक है; वह जायेगा तब कालनागिनी हट जायेगी । दोनों लड़के शायद लोभ में आकर वहाँ गये थे--मगर उनका हक़ नहीं है, इसी लिए वे कालनागिनी के विष से नहीं बच सके, प्राण खो बैठे । मगर कुछ लोगों को दूसरी तरह का ख्याल भी आया, खास तौर से एक ही तिथि में मृत्यु होने के कारण। परिवार का कोई शत्रु किसी तांत्रिक से अभिचार क्रिया करा रहा है शायद। पर सुखरंजन पर किसी का संदेह नहीं गया ।

तीसरी बार पराशर के भीतर से जाने किसने कहा था कि श्मशान की ओर, श्मशान के भीतर चलो ।

सुखरंजन की एक कापी थी, कत्थई रंग की, बँधी हुई, जिसमें तंत्र के अन्यान्य क्रिया-कलापों के अलावा सम्मोहन-उच्चाटन की क्रिया का विशद वर्णन लिखा था ।

घर से जाने के पहले सुखरंजन यह सब लिख कर रख गया था कि किस तरह उसने उन दोनों नवयुवकों को समाप्त किया था । पराशर ने जाने कितनी बार वह कापी पढ़ी थी। सारी बात उसे कंठस्थ

हो गयी थी ।

कापी के अन्तिम पृष्ठों में काफ़ी अनुताप भरे शब्दों में आत्म-भर्त्सना की गयी थी । लिखा था...'यावन्न क्षीयते कर्म शुभांशुभमेव वा, तावन्न जायते मोक्षं नृणां कल्पशतैरपि ।' महानिर्वाण तंत्र के इस श्लोक का तात्पर्य सुखरंजन के गुरु ने उसे कितनी ही बार समझाया था । शुभ-अशुभ का क्षय बिना हुए मनुष्य की मुक्ति नहीं है । लोहे की जंजीर हो चाहे सोने की, दोनों ही बन्धन हैं । इन दोनों बन्धनों के ऊर्ध्व में जो है, वही सचमुच स्वार्थ शून्य मुक्त पुरुष है, केवल वही तंत्र की गुप्त क्रिया का अधिकारी है । उसकी क्रिया से लोगों का हित ही होता है, किसी का अनिष्ट नहीं होता कभी । सुखरंजन मन की ओर से स्वार्थ-शून्य नहीं था । इसीलिए वंश का हित न करके सर्वनाश ही कर रहा था वह । उस पातालघर में महाविषैले साँपों के अड्डे के सिवाय कोई खजाना या रत्नभंडार नहीं है, यह बात सर्वविदित थी । सुखरंजन लोगों की आँखों में धूल झोंक कर अपने आप को निर्दोष रखने के लिए दो निर्दोष युवकों को क्रिया के प्रभाव से उस मृत्यु गह्वर की देहरी पर खींच लाया था । इस अन्याय से सुखरंजन कैसे मुक्ति पायेगा, वह नहीं जानता था । इसका प्रायश्चित क्या है सो भी वह नहीं जानता ।

वृद्ध पराशर साधु सब के सामने इस घटना का वर्णन करके हँसे, फिर मेरी ओर देख कर बोले—"वह जगह अभिशप्त है, पिता जी के इस कर्म के ही कारण । इसी लिए घटना के साथ मेल रख कर मैंने जगह का नाम रखा है मनसातली।"

वे फिर बोले, "कोई कुछ भी कहे—मेरा शरीर जितना भी ख़राब क्यों न हो, तब भी मैं यह काम करूँगा ही । पिता जी के पाप का प्रायश्चित मुझे ही करना होगा, उसमें मृत्यु होने पर भी वह शान्ति की मृत्यु होगी, मुक्ति की मृत्यु होगी ।"

वृद्धा स्त्री मृत्यु शय्या पर थी । अपने बेटे को देखने के लिए दोनों आँखों से आँसुओं की धार दोनों सूखे गालों पर बही जा रही थी ।

सिरहाने की ओर पराशर साधु बैठे थे। उन्होंने वचन दिया था कि विधवा माँ के उच्छृंखल लड़के को लौटा कर लायेंगे ही, माँ से बेटे को मिलायेंगे ही।

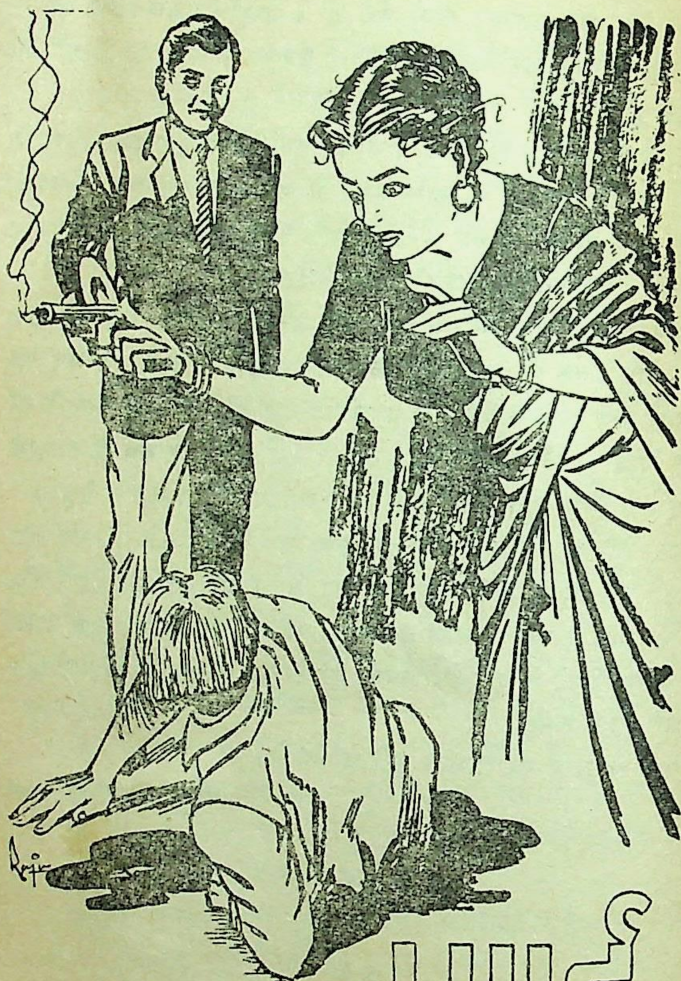
सम्मोहनी-उच्चाटनी क्रिया में साधु पराशर मग्न हो गये। उम्र के भार से वे झुके जा रहे थे, बात कहने में भी कष्ट होता था। छाती कमजोर थी। डाक्टर के मत में मृत्यु उनके दरवाज़े पर सब समय धक्का दे रही थी। कब क्या हो, कहा नहीं जा सकता।

डाक्टर का निर्देश अमान्य करके पराशर साधु क्रिया कर रहे थे। मंत्र के साथ युवक का नाम साँस लेने और छोड़ने में उच्चारण कर रहे थे। आँखें बन्द करके वे ध्यान में युवक को देख रहे थे--वह अपनी माँ के पास आया है। माँ की छाती पर सिर रख कर चार वर्ष से न आने के लिए क्षमा माँग रहा है कि क्यों उसने आकर माँ का मुँह न देखा।

साँस लेते समय उनका सीना भयानक रूप से फूल उठता था। इस तरह कब तक क्रिया चली, कब तक हम अपने को भूल कर देखते रहे, किसी को याद न रहा। ख्याल तब हुआ, जब एक बिखरे हुए रूखे बालों वाला युवक कमरे में घुस कर अपनी माँ के वक्ष में मुँह छिपा कर फूट-फूट कर रोने लगा।

साधु पराशर की साधना पूरी सार्थक हुई।

अनु०--ब्रह्मेन्द्र शर्मा



स्पाई

विमल मित्र /

हम दोनों पास-पास बैठे थे। फिर भी उनका नाम मैं नहीं जानता था, न वे मेरा नाम जानते थे। इसके अलावा नाम जानने का प्रश्न भी नहीं था। कारण, मैं ठहरा बंगाली और वे अमेरिकन। और वे अमेरिकन थे या इंग्लिशमैन या आयरिशमैन, सो भी क्या पहले जानता था? हम साथ-साथ प्लेन में चढ़े थे, पास-पास सीट पर बैठे थे। डिनर, लंच, ब्रेकफास्ट, टी सब साथ-साथ लिया था, पर आपस में बातचीत नहीं हुई थी। मैं पहले बात शुरू कर सकता था, पर मैं कुछ लजालु स्वभाव का आदमी हूँ। दूसरा अगर बात शुरू कर दे तो देखेगा कि मैं कितना



अँग्रेज गुलामी के काल में एक नौजवान ने ईर्ष्यावश कैसे आशालता
के क्रांतिकारी प्रेमी को गिरफ्तार कराया था, यह इतिहास
के पन्नों में अंकित है। पर आशालता थी एक दृढ़
आचरण की लड़की, जिसने क्रांति और
आजादी के लिये अपने प्रेम एवं
सम्पूर्ण सुख का बलिदान
कर दिया।



वाक्यवागीश हूँ। और खाली वाक्यवागीश ही हूँ, सो बात नहीं, नीरव मनोयोगी श्रोता भी हूँ।

शुरू से ही मैंने उन्हें ध्यान से देखा था। उनकी उम्र पचहत्तर या अस्सी के करीब थी। इस उम्र में देश-भ्रमण की बात हम बंगाली साधारणतः कल्पना भी नहीं कर सकते। खास तौर से मैं अपने बारे में कह सकता हूँ। एकदम ताम-जाम बना कर मुझे बिना उठाये मैं अपनी जगह तक से कभी हिल कर नहीं जाता। ऐसा आदमी विदेश आ रहा है, साथ में कोई देखने-भालने वाला तक नहीं, यह मेरे

लिए कल्पना के बाहर की बात है।

बेरूत से प्लेन में चढ़ते ही पास वाले सज्जन बोल उठे, "इंडिया ज्यादा दूर नहीं है, क्या कहते हैं मिस्टर. . . ?"

मैंने अपना नाम बताया। उन्होंने भी अपना बताया। कुछ देर में ही मन के अपरिचय का अर्थ गलने लगा। देखा, वे बड़े खुशमिजाज आदमी हैं। इतने घंटों से पास बैठ कर भी वे जो एक बात तक नहीं बोले, इसके लिए उन्हें काफी कष्ट हुआ है, ऐसा लगा कि उनका पेट फूल कर ढोल हुआ जा रहा था।

बात कहते-कहते हठात् उन्होंने पूछा, "कलकत्ते में आप नन्दलाल सरकार लेन जानते हैं?"

"जानता हूँ।" मैं बोला।

वे बोले, "मैं वहीं जाऊँगा, बारह नम्बर मकान में।"

उनकी बात सुन कर मैं कुछ अवाक् हो गया।

मेरा अवाक् होना देख कर वे बोले, "अवाक् क्यों होते हैं, यंग मैन? किसी जमाने में मैंने बीस साल कलकत्ते में गुजारे हैं। पहले मैं बँगला भाषा समझ लेता था, कुछ-कुछ बोल भी लेता था--"

यह कह कर नमूने के तौर पर उन्होंने दो-चार बँगला शब्द बोले। मैंने कानों में उँगली लगा कर चारो ओर ताक कर देखा कि और कोई बंगाली सुन तो नहीं रहा है या आस-पास के लोगों में कोई बँगला भाषा समझने वाला वहाँ है कि नहीं। यदि कोई समझने वाला हो, तो उसका भी आँख मुँह कान लज्जा से लाल हो जायेगा।

साहब ने पूछा, "तुमने कान में उँगली क्यों दी?"

मैंने कहा--"साहब, आपने जो कहा, वह अश्लील शब्द है, कोई भी शिक्षित कल्चर्ड बंगाली ऐसी भाषा सभ्य समाज में उच्चारण भी नहीं करेगा। विशेष रूप से लेडीज़ के सामने तो कभी नहीं. . ."

साहब बोला, "देखो, मैं था उस युग के उस अँगरेजी राज के पुलिस विभाग का एक बड़ा अफसर, मेरा नाम है चार्ल्स मूर। मैं था

त दिनों कलकत्ते का टेटर, कलकत्ते शहर का आतंक--मैं कलकत्ते
ा डिपुटी पुलिस कमिश्नर था।"

ऐसा लगा जैसे मैंने भूत देख लिया हो।

बोला, "आप ही वह चार्ल्स मूर हैं?"

साहब बोले, "आपने चार्ल्स टेगर्ट का नाम निश्चय ही सुना होगा। स चार्ल्स टेगर्ट को मारने के लिए कितने बंगालियों ने चेष्टा की, मगर ोई उसे मार न सका। मैं उसी टेगर्ट का डिपुटी था। मैंने उस समय े बहुत से टेररिस्टों को पकड़ा था, जिन्हें पकड़ना बहुत कठिन था। र इसका सारा श्रेय मिला टेगर्ट को और मैं बराबर आड़ में ही बना ा।"

मैं साहब के चेहरे की ओर गौर से देखने लगा।

मैंने पूछा, "तो बारह नम्बर नन्दलाल सरकार लेन में आप किससे ंगे? आपका वहाँ कौन है?"

साहब ने उत्तर दिया, 'मेरा अपना कहने को कोई नहीं है, वह बंगाली लेडी हैं--"

बंगाली लेडी! एक बंगाली लेडी से भेंट करेगा अस्सी बरस का अँगरेज? बात बड़े कौतूहल की थी, सो पूछा, "उनके साथ आपका सम्पर्क है?"

साहब हँसे। बोले, "सम्पर्क कुछ भी नहीं, तब भी सम्पर्क इतना रा है कि बाहर का आदमी कल्पना भी नहीं कर सकेगा।"

मेरा कौतूहल और भी बढ़ गया। पूछा, "क्या कोई लव एफेयर ?"

साहब हँसने लगे। बोले, "लव एफ़ेयर ही तो। मगर मेरे साथ , और एक आदमी के साथ। मगर इसी लव एफेयर के कारण नौकरी चली गयी थी।"

यह कह कर पुलिस अफसर ने सिगरेट सुलगायी।

सारा मामला मुझे एक रहस्य-सा लगा। पचहत्तर अस्सी बरस के

इस वृद्ध के साथ नन्दलाल सरकार लेन की एक महिला का संपर्क होना सचमुच आश्चर्य की बात थी।

मिस्टर चार्ल्स मूर! यह नाम तो कभी सुना नहीं। इतिहास के पृष्ठ उलटने से या पुराने सरकारी गजट की फाइल देखने से शायद नाम मिल जाता। मगर कौन वह सब खोजेगा? और वह सब मिलेगा भी कहाँ? इसके अलावा इसे लेकर सर खपाने से मुझे फायदा ही क्या है? मैं तो एक कहानी का रस पाने में ही खुश हूँ। कहानी में जो अनिर्वचनीय अनुभूति छिपी रहती है, वह तो सभी लोग भोग कर नहीं पाते। जिसके दाँत नहीं हैं, वह क्या जाने कि गन्ना चूस-चूस कर खाने में क्या मजा है।

प्लेन जब दमदम हवाई अड्डे पर उतरा, तब रात के दस बजे थे। उतरने के पहले उन्होंने अपने होटल का पता मुझे दिया। मैंने भी अपना नाम-धाम दिया।

मैंने पूछा, "मगर आप इतने हजार मील से आये हैं उन्हीं आशालता देवी से मुलाकात करने?"

मिस्टर मूर बोले, "हाँ।"

मैंने कहा, "मगर आपने उनके बारे में इतना कांड जाना कैसे? उन्होंने क्या आपको चिट्ठी लिखी थी?"

मि० मूर हँसे। बोले, "वे मुझे चिट्ठी लिखेंगी? तब आप मिस आशालता देवी के बारे में कुछ भी नहीं समझ सके। या शायद मैं ही आपको ठीक तरह समझा नहीं सका। सचमुच दोष मेरा ही है। नहीं तो आप कैसे कह सके कि आशालता देवी मुझे चिट्ठी लिखेंगी। वे क्या उस श्रेणी की महिला हैं? वे मुझे चिट्ठी लिखेंगी? जानते हैं, मैं अँगरेज हूँ, इसलिए उन्होंने कभी मुझे क्षमा ही नहीं किया?"

मैं और भी अवाक् हो गया। बोला, "क्यों?"

मि० मूर बोले, "क्योंकि मैं ऐसे देश का आदमी हूँ जिसने दो सौ बरस तक इंडिया को पराधीन करके रखा था।"

मैं बोला, "मगर तब फिर आपको किस तरह पता चला कि

ाशालता देवी के साथ अन्याय हुआ है ?"

मि० मूर बोले, "मैंने इंडिया गवर्नमेन्ट को चिट्ठी लिखी थी। स्ट बेंगाल गवर्नमेन्ट को भी लिखी थी। मैंने जानना चाहा था कि ारह नम्बर नन्दलाल सरकार लेन की बाशिन्दा मिस आशालता वी को सरकार से कुछ इनाम मिला है या नहीं और उन्हें सरकार से ासिक भत्ता दिया जाता है या नहीं। यदि नहीं दिया जाता हो, तो वे सी हैं, उनका स्वास्थ्य कैसा है, उनकी गुजर कैसे होती है ? मैंने ह भी लिखा था कि मिस आशालता देवी के साथ भेंट कर के उनकी विधा-असुविधा की सब बात मुझे बतायी जाय।"

मैंने पूछा, "इंडिया गवर्नमेन्ट ने आपको क्या उत्तर दिया ?"

मि० मूर बोले, "इंडिया गवर्नमेन्ट अगर मेरे सब प्रश्नों का उत्तर ी तो क्या मुझे इतना कष्ट उठा कर इतना रुपया खर्च करके इतनी : से यहाँ आना पड़ता ?"

मि० मूर कभी कलकत्ते की पुलिस के डिपुटी कमिश्नर थे और उन नों की गवर्नमेन्ट का हाल-चाल खूब जानते थे। पर सरकारी दफ्तर में ट्ठी लिखने पर उत्तर नहीं मिलता, यह बात कल्पना नहीं कर सके। थच काम ऐसा कठिन नहीं था। भारत स्वतंत्र होने के बाद देश सेवकों पद्मश्री, पद्मभूषण आदि पदवी देकर गवर्नमेन्ट ने सम्मानित किया , किसी-किसी को मासिक भत्ते की भी व्यवस्था की है, खास तौर से नकी बुढ़ौती आ गयी है, जो उसके कारण काम करने में अक्षम ौर पराधीन हो गये हैं, उन सब की देख भाल का भार सुना है कि वर्नमेन्ट ने लिया है। यही स्वाभाविक है। हर स्वाधीन देश की रकार ऐसा ही करती है; और करे या न करे, पर करना चाहिए। हले तो भारत सरकार जानती ही नहीं थी कि आशालता देवी कौन हैं ौर उनका अवदान क्या है, देश के लिए उन्होंने क्या और कितना याग किया है। आश्चर्य की बात है।

मि० मूर बोले, "सचमुच आश्चर्य की बात है, जिस मामले में मेरे

जैसे पुलिस आफिसर की नौकरी तक चली गयी, उस विषय में इंडिया गवर्नमेन्ट कुछ भी नहीं जानती। यह भी कभी संभव है ? ब्रिटिश शासन-काल की सभी फाइलें क्या नष्ट कर दी गयी हैं ?"

मि० मूर इंग्लैंड के एक गाँव में रहते थे। बाल-बच्चे बड़े हो चुके थे, नाती-पोते हो गये थे। जीवन में कोई झमेला नहीं था। मगर उनके मन में जाने कहाँ एक कुछ कुरेदन बनी हुई थी। कितना दूर भारत का एक कोना पश्चिम बंगाल, उसी की राजधानी कलकत्ते का सबसे घना बसा इलाका बऊबाजार। उसी बऊबाजार के बारह नम्बर नन्दलाल सरकार लेन के टूटे-फूटे मकान में जाकर उनका मन कुछ देर के लिए आश्रय खोजा करता। कहना चाहता, 'मुझे क्षमा कीजिए आशालता देवी, मैंने आपको बचाना चाहा था। अपनी चरम क्षति करके भी मैंने आपको बचाना चाहा था, आपकी इज्ज़त, आपका धर्म, आपकी आबरू सब चीजों की रक्षा करना चाहा था, मगर मैं हार गया, आप मुझे क्षमा कीजिये--

मगर कहाँ हो पाया वह ? कौन मि० मूर की चिट्ठी का उत्तर देगा ? उत्तर देने पर भी तो मि० मूर उत्तर नहीं पाते।

इसके बाद इंडिया गवर्नमेन्ट ने चिट्ठी का उत्तर दिया। लिखा, "मिस आशालता देवी, १२ नं० नन्दलाल सरकार लेन खूब अच्छी तरह हैं। उन्हें आपकी चिट्ठी मिली है। आपकी चिट्ठी का उत्तर लिखने के लिए उनके पास कोई नहीं है, इसीलिए वे उत्तर नहीं दे सकीं। आपकी चिट्ठी के और सब विषयों के बारे में हम आपको सूचित करते हैं कि सरकार इस विषय में विशेष रूप से विचार कर रही है। इति..."

मगर असल प्रश्न का उत्तर उन्होंने कुछ भी नहीं दिया। असल प्रश्न यह था कि भारत सरकार मिस आशालता देवी को किसी विशेष सन्मान से विभूषित क्यों नहीं करती ? इस सम्बंध में सरकार बराबर चुप रही।

मैंने पूछा, "मगर आशालता देवी ने देश के लिए क्या किया था?"

मि० मूर ने अपने पोर्टफोलियो से कुछ कागजात निकाले। उन्हें मुझे दिखा कर वे बोले, "ये कागजात इसी लिए निकाल कर लाया हूँ। मैं इन्हें वेस्ट बंगाल गवर्नमेन्ट के होम मिनिस्टर को दिखाऊँगा।"

मैंने कागजात की ओर दृष्टि डाली, मगर उन्हें हाथ में नहीं लिया। मि० मूर उन्हें एक अमूल्य संपत्ति की तरह अपने हाथ में कस कर पकड़े हुए थे।

वे बोले, "देखिए, इंडिया में आजकल राम, श्याम, यदु, मधु, टॉम, डिक, हैरी सभी नाना प्रकार का बेनिफिट पा रहे हैं, अथच जो सचमुच दुर्दशा में हैं, उन्हें गवर्नमेन्ट एकदम नेगलेक्ट कर रही है, यह बात कई लोगों के साथ पत्र-व्यवहार कर मुझे मालूम हुई है।"

मैंने कहा, "आपकी बात झूठ नहीं है--मगर यह हालत तो सभी जगह है, दुनिया भर में है, आपके देश में भी है मि० मूर। अखबारों में मैंने पढ़ा है--"

मि० मूर बोले, "अखबार में आप जो पढ़ते हैं, असल में हमारे यहाँ की भीतर की खबर और भी खराब है। वे सब खबरें अखबार में निकलें तो दुनिया चौंक उठेगी। मगर आशालता देवी का केस एकदम अलग है। मेरी इतनी बड़ी नौकरी का उनके जीवन के साथ इतना घनिष्ठ संबन्ध हो गया था, इसीलिए मैं उनके मामले में इतना उत्साही हूँ।"

मैंने कहा, "आप जब बंगाल में डिपुटी पुलिस कमिश्नर थे, तब आपकी उम्र कितनी थी? और आशालता देवी की उम्र कितनी थी?"

वे बोले, "जहाँ तक मुझे याद है, तब मेरी उम्र चौबीस-पच्चीस बरस रही होगी, और मिस आशालता देवी की यही कोई पन्द्रह या सोलह बरस--"

पचहत्तर बरस के वृद्ध अँगरेज मि० मूर अपने प्रथम यौवन की बात याद करते-करते कुछ दुर्बल हो पड़े। कहने लगे, "मैं था बड़े आदमी का

लड़का, ऊपर से अँगरेज जाति का, इसी लिए इतनी कम उम्र में इतनी बड़ी नौकरी मुझे मिल गयी थी।"

मि० मूर को अब भी कलकत्ते के उन दिनों की याद ताजा थी। "तब बंगाली मात्र ही टेररिस्ट माने जाते थे। बंगाली लड़कों के पीछे पुलिस बराबर लगी रहती थी। आजकल कलकत्ते की जो हालत है तब भी वैसी ही थी। तब भी अठारह-बीस बरस के लड़के को देखते ही हम उसके पीछे आदमी लगा देते थे। मगर असल अपराधी को पकड़ना अभी जितना कठिन है, तब भी उतना ही कठिन था। कारण, बंगालियों के जैसी धूर्त और चालाक जाति इंडिया में दूसरी नहीं थी। मैं कलकत्ता शहर में कभी पंजाबी, कभी बंगाली और कभी अंगरेज का वेश बना कर घूमता रहता। मुझे लगता था कि ये बंगाली लड़के राजनीति के चक्कर में मतवाले न हो जायँ तो इनके द्वारा बहुत काम कराया जा सकता है। मगर मेरी बात कौन सुनेगा? मैं तो बंगालियों का शत्रु था। मैं अँगरेज था, केवल इसी लिए नहीं, पुलिस का आदमी होने के कारण भी मैं अस्पृश्य था। उन दिनों बंगाली लड़कों ने हर मुहल्ले में कुश्ती के अखाड़े खोल रखे थे। वहाँ वे गदा फिराते, लाठी चलाना सीखते, कुश्ती लड़ते और शरीर बनाते। पर यह उनका बाहरी रूप था। अन्दर-ही-अन्दर वे बम बनाते, पिस्तौल चलाना सीखते, यही सब। उन सब का उद्देश्य था अँगरेजों को मारना।

"वह एक अजीब नौकरी थी मेरी। कई गोरे चमड़े वाले मारे गये थे। मेदिनीपुर के कई मजिस्ट्रेट भी इनमें थे। ढाका में कई अँगरेज मजिस्ट्रेट इनकी गोलियों के शिकार हो चुके थे।

"इन्हीं दिनों मेरी इंटेलिजेन्स ब्रांच के एक लड़के ने एक दिन एक खबर दी। यह लड़का स्पाई था। असल में मैंने ही उसे नौकरी दी थी। वह बंगाली ही था। बहुत ही गरीब। माता-पिता कोई नहीं। सच कहें तो उसके आगे-पीछे कोई भी नहीं था। मेरा ड्राइवर छोकरा ही एक दिन उसे मेरे पास लाया था।

"मैंने पूछा, 'क्या नाम है तुम्हारा?'

"वह बोला, 'निर्मलचन्द्र सरकार।'

"मैंने उसे गौर से देखा। तगड़ा जवान था। देखने में भी सुन्दर, रंग गोरा। किसी अच्छे वंश का मालूम होता था।

"मैंने पूछा, 'तुम पुलिस के इन्फार्मर क्यों होना चाहते हो?'

"निर्मल बोला, 'रुपये के लिए।'

"मैंने कहा, 'देखता हूँ, तुम तो एक डैंजरस ब्वाय हो। रुपये के लिए तुम देश के साथ शत्रुता करना चाहते हो?'

"निर्मल बोला, 'मगर पेट बड़ा है या देश?'

"मैंने कहा, 'तुम्हें ऐसा क्या अभाव है, जिसके कारण तुम अपने भाइयों को फाँसी पर लटकवा देना चाहते हो?'

"इसके उत्तर में उसने जो कहा उसे सुन कर मैं और भी अवाक हो गया। सोचा, खुदीराम, कानाई दत्त और बड़े-बड़े विप्लवियों के देश में यह कैसा लड़का पैदा हुआ है!

"निर्मल बोला, 'मेरे लिए रुपया ही सबसे बड़ी चीज है।'

"मैंने पूछा, 'क्यों? तुम्हारी यह धारणा कैसे हुई?'

"वह बोला, 'रुपये के लिए मेरे पिता की एक बार दो महीने की जेल हुई थी। रुपये के लिए मेरी अपनी माँ ने मुझे आदमी बनाने की आशा से अपना शरीर बेच दिया था, यह बात मैं नहीं भूल सकता। आप लोग एक-एक विप्लवी को पकड़वाने के लिए पाँच हजार-दस हजार तक रुपया देते हैं। उसी रुपये के लोभ से आपके पास नौकरी के लिए आया हूँ।'

" 'मगर तुम तो जानते हो, इस काम में कितना रिस्क है।'

"वह बोला, 'जानता हूँ।'

"मैंने कहा, 'अपना नाम-पता एक कागज पर लिखा कर दे जाओ। हम लोग पहले तुम्हारे बारे में एनक्वायरी करके देखेंगे। रिपोर्ट मिलने पर हमारा आदमी तुम्हें खबर देगा।'

"लड़का अपना नाम-धाम लिख कर चला गया। मैंने तुरन्त ही एक इन्फार्मर को उसके पीछे-पीछे भेजा। उन दिनों हमारा यही तरीका था। एक इन्फार्मर के खिलाफ और एक इन्फार्मर लगा दिया जाता था।

"अन्त में निर्मल को नौकरी देने के पहले उसके विषय में मेरे पास पूरी रिपोर्ट आ गयी। इन सब मामलों में हम लोग दो तरफ से रिपोर्ट जुगाड़ करके उन्हें मिला कर देखते थे। इस बार भी वही किया। दोनों रिपोर्टें एक-सी थीं, लड़का सचमुच ही गरीब था। उसके माता-पिता दोनों ही मर चुके थे। निर्मल ने जो-जो बताया था, सब अक्षरशः सत्य निकला। और तो क्या, अपनी माँ के संबन्ध में उसने जो बताया था, उसमें कुछ भी झूठ नहीं था। विधवा होने के बाद बच्चे को गोद में लेकर उसने पहले नाते-रिश्तेदारों के यहाँ आश्रय लिया था। पर किसी ने दिल से उन्हें स्वीकार नहीं किया। सभी ने उस स्त्री के साथ मुफ्त की नौकरानी का-सा व्यवहार किया, ममता करके अपना नहीं बनाया। अन्त में जिसने उसे अपनाया, वह एक पर-पुरुष था। उसका नाम था नवीनचन्द्र सरकार। उसी के वंशनाम पर निर्मल का नाम हुआ निर्मल-चन्द्र सरकार।

"सो एक कलंकमय कहानी का नायक हुआ निर्मल। यही स्पाई निर्मलचन्द्र सरकार। कुछ बड़ा होते ही निर्मल जान गया कि जिस आदमी को वह पिता के रूप में जानता है, वह उसका पिता नहीं है। माँ के अर्थाभाव का सुयोग लेकर उसने पिता होने का अधिकार पाया है। जितने दिन नवीनचन्द्र सरकार जीवित था, उतने दिन तक निर्मल ने उससे अपने खर्च का सारा रुपया लिया। किसी दिन कोई कंजूसी करने का मौका नहीं आया। निर्मल मन-ही-मन उससे घृणा करता था, मगर हाथ फैला कर रुपया भी लेता था।

"उसके बाद जब नवीन सरकार मरा तब निर्मल ने शान्ति की साँस ली। मगर रुपये की असुविधा होने लगी। रुपया देने वाला कोई

नहीं था अब। तभी से रुपये के चक्कर में वह निकल पड़ा। जहाँ से भी हो, जैसे भी हो, रुपया तो चाहिए ही। मगर रुपया पाना क्या इतना सहज है? रुपए के लिए, नौकरी के लिए, सिर घुसाने लायक आश्रय के लिए सरकार दिन-रात दौड़ने लगा। अन्त में कहीं कुछ न पाकर पुलिस के दरबार में हाजिर हुआ।

"आजकल कैसा है, मैं नहीं जानता, मगर उस ज़माने में पुलिस की नौकरी का अर्थ होता था समाज और दुनिया के लिए बेकार हो जाना। पुलिस के आदमी के साथ कोई शरीफ आदमी अपनी लड़की नहीं ब्याहना चाहता था। उसके साथ कोई आदमी मेल-जोल नहीं रखता था। याने बंगाली समाज में वह एकदम बहिष्कृत-सा हो जाता था। इसीलिए हमारे विभाग में जो लोग इन्फार्मर का काम करते थे, वे प्रायः सभी जगह छिप-छिप कर आते-जाते थे। किसी से बताते नहीं थे कि वे पुलिस की नौकरी कर रहे हैं।

"जो हो, मैंने सरकार को नौकरी दी। उससे कह दिया कि वह बीस रुपये महीने में पायेगा। उन दिनों बीस रुपये की सरकारी नौकरी पाने का अर्थ होता था स्वर्ग पा जाना। निर्मल से मैंने यह भी बता दिया कि अगर वह कोई अच्छा केस दे सके तो अलग से इनाम भी दिया जायेगा। साधारण केस के लिए भी उसे सौ रुपये तक का इनाम देने का मैंने वचन दे दिया।

"उसी दिन से निर्मल काम करने लगा।"

मि० मूर फिर कहने लगे, "बुरा न मानियेगा, मैंने बहुत दिन बंगाल का नमक खाया है, बहुत से बंगालियों के साथ घनिष्ठता की है। मेरे नीचे बहुत से बंगालियों ने नौकरी भी की है। बंगालियों में बहुत से गुण हैं, यह मैं जानता हूँ। मगर ऐसी जघन्य जाति भी मैंने नहीं देखी। किसी का सर्वनाश करने के लिए अपनी नाक काटने में भी शायद इनकी जोड़ी न मिले। नहीं जानता, इंडिया इंडिपेंडेंट होने के बाद अब क्या हालत है। मगर अखबारों की खबरें पढ़ कर मेरी धारणा यही हुई है कि हालत

में कोई ज्यादा सुधार नहीं हुआ है।"

मैंने पूछा, "मगर वह आशालता देवी? उनकी बात कहिए।"

मि० सूर बोले, "कहता हूँ। वही कहानी तो कहने जा रहा हूँ। उन्हीं आशालता देवी के कारण तो इतनी दूर से इतना रुपया खर्च करके आया हूँ। इसके अलावा निर्मल की बात पहले न बताने पर तो आप आशालता देवी की बात समझ नहीं सकेंगे।"

कुछ रुक कर वे फिर कहने लगे, "और भी बहुत से इन्फार्मरों की तरह निर्मल सरकार भी मुझे केस देने लगा। मगर इनमें कोई भी केस जोरदार नहीं था। कौन किसके साथ मेल रखता है, कौन बमबाजी करता है यही सब। इससे तो गवर्नमेंट खुश नहीं होती। वह चाहती है कांक्रीट केस। मेरे पुलिस कमिश्नर भी कांक्रीट केस न होने पर खुश नहीं होते थे। कितने टेररिस्ट पकड़े गये और कितनों को फाँसी हुई। इसी मापदण्ड से वे लोग काम का नाप-तौल करते थे। इसी के लिए पुलिस कमिश्नर मेरे ऊपर दबाव डालते और मैं अपने स्टाफ के ऊपर दबाव डालता। बीच-बीच में मैं स्टाफ के लोगों को अपने कमरे में बुला कर खरी-खोटी सुनाता। किसी-किसी को बरखास्त करने का भय भी दिखाता। कभी-कभी इससे खूब काम भी होता। उनका लोभ रहता इनाम के ऊपर। इसी लोभ में कभी-कभी वे अपने जीवन को खतरे में डाल देते थे। उनके परिवारों का जीवन भी खतरे में पड़ जाता। मगर रुपया ऐसी चीज़ है, जिसके लिए आदमी क्या नहीं कर सकता?

"मगर सरकार के लिए मुझे दुःख होता। वह प्रायः ही मेरे पास आता। दो-एक केस देने की चेष्टा करता और देता भी, मगर सब ऐसे ही छोटे-मोटे। कहता, 'सर, मैं खूब चेष्टा कर रहा हूँ।'

"मैं कहता, 'चेष्टा करने से तो काम नहीं चलेगा, सरकार। तुम्हें केस देना ही होगा। न दे सकने पर तुम्हारी नौकरी भी जा सकती है, याद रखो।'

"वह कुछ न कहता। सिर नीचा किये रहता। कभी कहता,

'सर, कुछ रुपया दे देते तो बड़ा उपकार होता...'

"मैं कहता, 'क्यों, अभी उसी दिन तो दस रुपये ले गये हो। इतनी जल्दी खर्च हो गया?'

"सरकार कहता, 'खर्च क्या कम करना पड़ता है, सर? उस दिन एक केस के लिए नैहाटी गया था, पार्टी से भेंट करने के लिए बारह बजे रात तक वेट किया, उसके बाद लौटने के लिए कोई ट्रेन नहीं थी, टैक्सी से ही आना पड़ा, सात रुपये लग गये...'

"यह सरकार की रोजाना की बहानेबाजी थी। रोज़ नये नये कारण बता देता था। सभी लोग ऐसा करते थे, पुलिस की नौकरी का यह एक नियम-सा था।

"मगर इसी सरकार ने एक दिन मुझे चकित कर दिया। मेरे पास आकर बोला, 'सर, एक केस मिला है...'

"'कैसा केस?' मैंने पूछा।

"सरकार बोला, 'मोचीपाड़ा बम केस के फ़रार आसामी धीरज बोस को आज पकड़वा दूँगा। सब इन्तजाम ठीक कर लिया है...'

"धीरज बोस! धीरज बोस को पकड़ने के लिए पुलिस विभाग बहुत अर्से से बहुत रुपया खर्च करता आ रहा है। उसे अगर पकड़ा जा सके तो गवर्नमेंट बहुत खुश होगी। गवर्नर साहब तक मेरे काम से खुश हो जायेंगे।

"तब भी मुझे सन्देह हुआ। मैंने कहा, 'ब्लफ तो नहीं दे रहे हो, सरकार?'

"सरकार प्रतिवाद करके बोला, 'नहीं सर, ब्लफ़ नहीं दे रहा हूँ। आप बताइए, कितना इनाम देंगे? मुझे सर, बहुत रुपये की ज़रूरत आ पड़ी है। देखिए न, जूता टूट गया है, पैंट भी फट गयी है, शर्ट भी लेना होगी...'

"यह सब उसकी पुरानी युक्ति थी। जो हो, मैंने ठीक किया कि मैं स्वयं ही जाऊँगा। सरकार से पूछा, 'किस थाने के एरिया में है?'

"सरकार बोला, 'बऊबाजार में, नन्दलाल सरकार लेन में, बारह नम्बर मकान है।'

"पता मैंने नोट कर लिया। उसके बाद इन मामलों में जो सब व्यवस्था की जाती है, वह की। बारह नम्बर, नन्दलाल सरकार लेन, बऊबाजार। एक बार जाकर जगह देख आया। गली के अन्दर गली, उसके अन्दर और एक गली। पुराने मकानों की नोनी लगी हुई दीवारें, ईंटें निकली हुई। शाम के अँधेरे में खद्दर की धोती-कुर्ता पहन कर मैं चक्कर लगा आया। जगह देखी। सरकर ने जैसा नक्शा दिया था ठीक वैसा ही था सब।

"प्लान ठीक करके रात के तीन बजे दलबल लेकर मैं वहाँ पहुँचा। सारा शहर सो रहा था। मैं जानता था कि मकान में एक स्त्री रहती है अकेली। उसका नाम है आशालता। और है उसकी बूढ़ी माँ। रात को धीरज बोस वहाँ आता है, वहीं खाता है, सोता है, दूसरे दिन भोर में उठ कर अपने अड्डे पर चला जाता है।

"चारों ओर से प्लेन ड्रेस पहने पुलिस से घिराव कर हम लोगों ने दरवाजा खटखटाया। कई बार खटखटाने के बाद एक बूढ़ी ने दरवाजा खोला। बोली, 'कौन हैं आप लोग?'

"उस बात का जवाब देने की हमें गरज़ नहीं थी। हम लोग सीधे आशालता के कमरे की ओर चले गये। सरकार ने मकान के अन्दर का प्लान हमें बता रखा था। दो कमरे पास पास थे, एक में आशालता रहती थी, दूसरे में धीरज बोस। हम लोगों की आहट पाकर वे दोनों जाग गये थे। हम लोगों के धक्कों से जब किवाड़ टूटने की नौबत आ गयी तब दरवाजा खोला आशालता ने।

"बोली, 'किसे चाहते हैं?'

"मैंने कहा, 'धीरज बोस को, वह यहीं है।'

"'कौन धीरज बोस? इस नाम के किसी आदमी को मैं नहीं पहचानती।' कह कर लड़की दरवाजा बन्द करने ही वाली थी, मगर

हम तब तक सदलबल भीतर दाखिल हो गये और फौरन ही पोजीशन लेकर तैयार हो गये। यकायक लगा कि बगल में रखी लकड़ी की आलमारी के पीछे से कोई चुपचाप हमें देख रहा है। मैंने ऐसा भान किया मानो उसे देखा ही नहीं, मानो हम धीरज बोस को न पाकर लौटे जा रहे हैं।

"मगर नहीं, हम ऐसा मौका छोड़ देंगे, यह समझना धीरज बोस की भूल थी नहीं तो वह और भी सावधान होता। जैसे ही हम लोग कमरे से बाहर जाने लगे, वैसे ही मैं घूम कर खड़ा हो गया। और एक क्षण का भी समय मैंने धीरज बोस को नहीं दिया।

"धीरज बोस के पकड़े जाने का मतलब था उसकी फाँसी होना। यह धीरज बोस भी जानता था और उसकी पार्टी के लोग भी जानते थे, आशालता भी जानती थी। सरकार ने यह बात मुझे पहले ही बता दी थी। बताया था कि आशालता और धीरज बोस परस्पर प्रेम करते हैं।

"मैंने सरकार से पूछा था, 'मगर तुम ? तुम क्यों धीरज बोस को पकड़वाना चाहते हो ? तुम्हारे साथ क्या लड़की का परिचय है ?'

"सरकार बोला, 'जी नहीं, सर, मेरा भला क्या स्वार्थ हो सकता है ? हाँ, मैं उसे जानता ज़रूर हूँ, पर इससे अधिक कुछ नहीं। मेरा एक मात्र स्वार्थ है रुपया।'

"मैं जब धीरज बोस की ओर पिस्तौल ताने खड़ा था, तभी एक घटना हुई। लड़की ने एक पिस्तौल उठा कर धीरज बोस को गोली मार दी। मैं स्तम्भित रह गया। फिर हठात् लड़की मेरी ओर घूम कर बोली, 'आप लोग उसे फाँसी देंगे, यह मैं नहीं होने दूँगी। वह पकड़ जाने से और भी कई पकड़े जायेंगे, इसी लिए मैंने उसे मारा है, अब मुझे पकड़िये. . .' यह कह कर उसने मेरी ओर अपने हाथ बढ़ा दिये। मैंने घूम कर देखा कि धीरज बोस फर्श पर खून में लथपथ पड़ा था। लड़की अभी मेरी ओर हाथ बढ़ाये खड़ी थी। बोली, 'लीजिए, मुझे एरेस्ट कीजिए। मुझे फाँसी देने से मेरी पार्टी की कोई क्षति नहीं होगी।

हजारों अत्याचार करने से भी मैं कोई भेद नहीं खोलूँगी। मगर धीरज के कारण मुझे चिन्ता थी इसी लिए उसे खत्म कर दिया।'

"मैंने पूछा, 'उसे मर्डर करने में आपको तनिक भी संकोच नहीं लगा?' मेरी बात सुन कर उसने क्या कहा, जानते हैं? कहा, 'वह तो एक-न-एक दिन पुलिस के हाथों मारा ही जाता। और जब मैं धीरज को प्यार करती हूँ तब कैसे चाहूँगी कि पुलिस उसकी हत्या करे? करना हो तो मैं ही करूँगी, ताकि पुलिस की गोली उसके शरीर को कभी कलंकित न कर पाये....।'

"मैंने कहा, 'मगर इसका फल क्या होगा, जानती हैं?'

"वह बोली, 'इसी लिए तो आपकी ओर हाथ बढ़ाये हूँ। मुझे एरेस्ट कीजिए, फाँसी दीजिए।'

"मैंने कहा, 'मगर आपकी बूढ़ी माँ? आपको फाँसी होने पर उन्हें कौन देखेगा?'

"वह बोली, 'वह देखना मेरा काम नहीं है। आप लोग सोचियेगा।'

" 'मगर आपकी पार्टी के और मेम्बरों के नाम नहीं बताइएगा?'

" 'नहीं, फाँसी का डर दिखा कर भी मेरे मुँह से उनके नाम नहीं निकलवा सकेंगे।'

"मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ? इसी बीच धीरज बोस का रक्त बहते-बहते बहुत दूर चला गया था। मैं उसी अवस्था में शव को छोड़ कर दलबल को लेकर वहाँ से चला आया।

"प्रेम की बहुत-सी किताबें मैंने पढ़ी हैं श्रीमान् जी, मगर ऐसा लव कभी नहीं देखा। सब-कुछ देख कर मैं अवाक् हो गया था। रात भर सोचता रहा, किसी तरह नींद नहीं आयी। अन्त में सुबह ही उठ कर केस की रिपोर्ट लिखी। मैंने लिखा कि मैं स्वयं केस कंडक्ट कर रहा था। परिस्थिति ऐसी थी कि और कोई उपाय न देख कर धीरज बोस को गोली मार देने को बाध्य हो गया।

"दूसरे दिन सरकार आया। बोला, 'सर, अब तो मुझे बड़ा-सा

इनाम देंगे ?'

"मैंने उसे धमका कर भगा दिया। कहा, 'वह सब बाद में देखूँगा, अभी तुम जाओ...'

"रिपोर्ट तो दे दी। मगर दो दिन बाद कमिश्नर साहब ने मुझे बुलवाया। मेरे जाते ही बोले, 'आपने जो रिपोर्ट दी है, वह सत्य है?' मैंने कहा, 'नहीं।' वे बोले, 'तब ऐसी रिपोर्ट क्यों दी?' मैंने कहा, 'सच्ची रिपोर्ट देने से तो लड़की को फाँसी हो जाती।'

"उन्होंने कहा, 'फाँसी होने में हर्ज क्या है?'

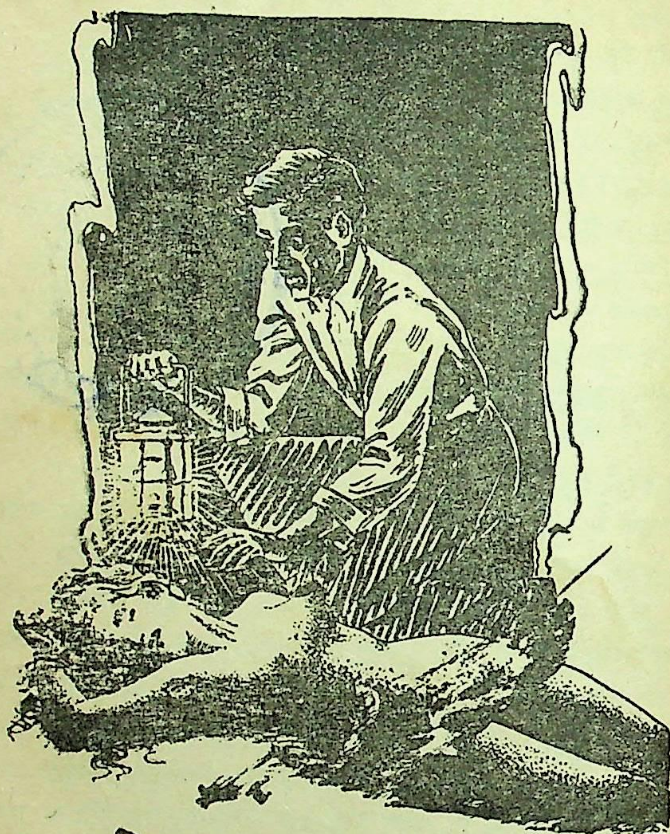
"मैंने कहा, 'हर्ज है, इसी लिए मैंने झूठी रिपोर्ट दी है। मैं जानता हूँ कि मैंने ड्यूटी के खिलाफ काम किया है। मगर ऐसे केस का अनुमोदन करने में मेरे विवेक ने बाधा दी है। इसके लिए जो भी सजा हो, वह मैं लेने को तैयार हूँ।'

"इसके बाद ही मेरी नौकरी चली गयी। मैं इंडिया से वापस चला गया। उसके बाद युद्ध शुरू हुआ। इंडिया स्वतंत्र हुआ। बहुत कुछ हुआ। उसके बाद इंडिया से निर्मल सरकार, वही मेरा स्पाई, उसने मुझे पत्र लिखा। लिखा कि उसको खूब आर्थिक कष्ट है। मैंने उसे लिखा कि अब काहे का कष्ट है? उसने उत्तर दिया कि आशालता देवी की माँ की मृत्यु हो चुकी है, आशालता की भी काफी उमर हो गयी है। मगर उसने शादी-वादी कुछ नहीं की। इंडिया गवर्नमेन्ट ने सभी को सहायता थोड़ी-बहुत की है, मगर आशालता देवी को एक पैसे की भी सहायता नहीं दी, न उसे कोई मासिक भत्ता ही दिया गया।

"बार-बार इस तरह के पत्र पाकर मैंने इंडिया गवर्नमेण्ट की होम मिनिस्ट्री को लिखा और आशालता देवी की सहायता करने का अनुरोध किया। मगर कोई ठीक उत्तर नहीं मिला। इसी से इस बार खुद आया हूँ।"

घर लौट कर एक दिन मि० मूर को उनके होटल में टेलिफोन किया। उन्होंने मुझे होटल में बुलाया। होटल में पहुच कर देखा कि

(शेष पृष्ठ २५५ पर)



प्रयोगशाला का रहस्य

— एस० प्रेमी —

मार्च, १९३१ की एक रात की बात है। क्वाइट डील पश्चिमी वर्जीनिया के उजाड़ में स्थित एक अजीब सी लगने वाली छोटी इमारत के गिर्द तेज़ शीत हवा फर्राटे भर रही थी। तूफान अपने यौवन पर आता तो लगता जैसे हवा आतंकित हो कर चीख रही हो। जरा हल्का होता तो लगता, हवा मद्धिम आवाज में शोक कर रही है। शायद हवा इसलिए विलाप कर रही थी कि कुछ ही देर पहले होने वाले एक निर्मम हत्या की वह एकमात्र चश्मदीद गवाह थी।

लोहे और सीमेंट ब्लाक से बनी हुई इस इमारत के तहखानेनुमा निचले हिस्से में हरमन डोरीथ एक लालटेन लेकर दाखिल हुआ। उसने



अपराधी जगत का ऐसा नरपिशाच शायद ही कहीं होगा। उसने पचास हत्याएँ की थीं। वह पहला हत्यारा था, जिसने व्यापक स्तर पर मनुष्यों को मारने के लिये गैस का प्रयोग किया था।



नथुने सिकोड़ कर साउंड-प्रूफ कमरे के वातावरण को सूँघा। कमरे में गैस की बहुत हलकी बू थी। उसने एक घंटा पूर्व ऊपर वाले कमरे में स्थित कंट्रोल-बोर्ड का एक बटन दबा कर स्वचालित सिस्टम के द्वारा उसके कमरे में गैस भरी थी और कुछ देर पहले ही एक अन्य बटन दबा कर कमरे के दरवाजों को खोल दिया था, जिनसे गैस बाहर निकल गयी थी।

हरमन डरींथ। मध्यम कद का वेल्सवासी, जिसके अतीत से कोई परिचित नहीं था। बीस साल पहले अमरीका आया था और उसने यहीं ख्याति प्राप्त की थी। हरमन डोरीथ संभवतः अमरीकी अपराध-जगत के इतिहास का पैशाचिक अपराधी था। वह पचास से अधिक इंसानों

का हत्यारा था, किन्तु अपराध-जगत के इतिहास में उसका नाम एक अन्य कारनामे के कारण उच्च है। वह पहला हत्यारा था, जिसने व्यापक स्तर पर इंसानों को मारने के लिए गैस का उपयोग किया।

लालटेन का प्रकाश कंक्रीट के ठंडे फर्श पर पड़ी एक निरावरण स्त्री के शरीर को स्पष्ट कर रहा था। हरमन ने झुक कर अपना एक कान स्त्री के सीने पर रख दिया। जब उसे जीवन की ध्वनि नहीं सुनाई दी, तो उसके विकृत-घृणित चेहरे पर एक यातना-प्रिय मुस्कराहट उभर आई, "ठीक...ठीक...ठीक..." वह अपने आप से बातें करने का आदी था––"यह भी गयी..."

उसने चार कमरों की इमारत के कमरा नम्बर दो का दरवाजा खोला और भीतर प्रवेश किया। उस कमरे में हवा साफ और ताजा थी, क्योंकि उसमें अभी गैस नहीं भरी गयी थी। लालटेन के प्रकाश में यहाँ भी एक बूढ़ी स्त्री खड़ी नजर आई। बूढ़ी स्त्री ने डरींथ को देख कर एक भयानक चीख मारी।

"चिल्लाओ, जितना चिल्ला सकती हो।" डरींथ ने धीमी रोब भरी आवाज में कहा––"यहाँ मीलों तक कोई नहीं रहता और...कमरा भी साउंड-प्रूफ है..."

वह हँसता हुआ कमरे से बाहर आया। दरवाजा बंद करके ताला लगाया, और सीढ़ियाँ चढ़ कर मंजिल पर स्थित उस गैस-कंट्रोल-बोर्ड के पास आया, जहाँ से नीचे चारों कमरों में जो वास्तव में मृत्युशालाएँ थीं, गैस पहुँचाई जाती थी।

उसने उस भयानक इमारत का निर्माण स्वयं किया था, नहीं तो इमारत के इस असाधारण निर्माण और बनावट में वह कारीगरों को क्या प्रयोजन बताता? गैस-कम्पनी वालों को उसने यह कह कर आश्वास्त कर दिया था कि वह एक वैज्ञानिक है और प्रयोगों के लिए उसे गैस की आवश्यकता पड़ती है।

"तुम प्रथम श्रेणी के काइयाँ हो हरमन।" आदत के अनुसार वह

स्वयं से बात कर रहा था। उसने एक बटन दबाया, जिससे गैस निकलने लगी। यह गैस मौत बन कर उस कमरे की ओर बढ़ रही थी जिसमें अभागी बूढ़ी स्त्री बंदी थी।

कमरे में एक बड़ी-सी मेज़ पर मूल्यवान कपड़े, कुछ गहने और दैनिक उपयोग की बहुत-सी वस्तुएँ पड़ी थीं। यह सब हरमन डरींथ के शिकारों का माल था। मेज पर बहुत-सी पत्र-पत्रिकाएँ भी पड़ी थीं। शादी के विज्ञापन पढ़ना डरींथ का एक प्रिय मनोविनोद था। रिश्ते की आवश्यकता के कालमों में प्रकाशित होने वाले अधेड़ विधवाओं के विज्ञापन सदा उसकी दिलचस्पी का केन्द्र बनते थे।

क्वाइट-डील में आ कर शिकार होने वाली वास्तव में यही स्त्रियाँ होती थीं, जो विज्ञापन के द्वारा अपना जीवन-साथी ढूँढ़ती थीं। डरींथ पत्र-व्यवहार के द्वारा इन जरूरतमंदों से पत्र-व्यवहार शुरू करता। वह स्वयं को मालदार, रंडवा या क्वारां बताता, और बहला-फुसला कर उन्हें इसी मृत्युशाला में लाता। पहले उनकी नकदी और माल अपने कब्जे में करता। फिर वह शिकार गैस-चेम्बर्स में पहुँचाए जाते, जहाँ से उन अभागिनों की लाशें कहाँ जातीं, यह आज तक किसी को पता नहीं लग सका। वह दो स्त्रियाँ जिन में एक गैस-चेम्बर में मुरदा पड़ी थी और दूसरी कमरा नम्बर दो में मुरदा होने वाली थी, इन्हीं विज्ञापन देने वालियों में से थीं, जो उसका ताजा-ताजा शिकार थीं।

अब डरींथ भी एक कुर्सी खींच कर बैठ गया था। शादी के विज्ञापनों को गौर से अध्ययन करते हुए वह स्वयं को चेतावनी भी देता जाता था —"होशियार, बेटे ! कोई गलती न होने पाए।" लेकिन उससे एक गलती होने वाली थी।

अखबार के पन्ने उलटता हुआ उसका हाथ रुक गया। उसकी खोजी नजरें एक 'शिकार' पर केंद्रित हो रही थीं, 'हाँ। यह है. . .' यह किसी मिसेज़ अलेस्ता एचर का विज्ञापन था, जो अलेनोई के एक गाँव पार्क-रिज की रहने वाली थी। उससे लिखा था कि वह एक स्विस

सुनार की विधवा है। खूबसूरत, अच्छा स्वास्थ्य, और सम्पत्ति-स्वामिनी भी। उत्तर में डरींथ ने अपने अपार धन का वर्णन करते हुए लिखा था कि उसका व्यवसाय बहुत व्यापक है, और पत्र के जिस भाग में उसने अपने व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला था, वह कुछ यों था--विनम्रता मुझे अपने बारे में कुछ कहने से रोकती है। मैं बस अपने कुछ मित्रों के मत, जो वह मेरे बारे में रखते हैं, पेश कर रहा हूँ। एक मित्र मुझे भगवान का दूसरा रूप समझता है। दूसरे मित्र का कथन है कि मैं इस संसार की सजावट हूँ, और तीसरा...एक स्वर्गीय मित्र कहा करता था--'इतना धनी होने पर भी हरमन कितना विनम्र और सादा आदमी है।'

डरींथ बहुत से काल्पनिक नाम अपना चुका था। इसलिए वह इस बारे में बहुत सावधान रहा करता था कि एक बार अपनाया हुआ नाम कहीं दूसरी बार न इस्तेमाल हो जाये, क्योंकि कई प्रांतों की पुलिस उन दर्जनों अधेड़ उमर की अन्य विधवाओं के बारे में परेशान थी, जो रहस्यपूर्ण तौर पर विलीन हो गयी थीं और जिन्हें आखिरी बार शादी के संबंध में एक ठिगने, मोटे और ऐनक वाले व्यक्ति के साथ देखा गया था। अलेस्ता एचर को भेजे जाने वाले पत्र में उसने अपना नाम कारनीलिस ओ' पीटरसन लिखा।

जब कुछ दिन बाद यह पत्र अलेस्ता एचर के हाथ में पहुँचा तो वह उसे जल्दी नहीं पढ़ सकी। वह उम्मीदवार की तस्वीर की आशा में थी, जो लिफाफे में नहीं थी। क्षणिक निराशा के बाद जब उसने वह पत्र पढ़ना शुरू किया तो उसे यह समझते देर नहीं लगी कि डरींथ एक कुरूप आदमी है, लेकिन उसने स्वयं को यह कर सांत्वना दी कि शक्ल ही सब कुछ नहीं होती और जब यह पत्र का शेष भाग पढ़ते हुए आर्थिक पक्ष पर पहुँची तो डरींथ की चाल अपना रंग दिखाने लगी--"इतना अधिक धनी होने पर भी..." वह धन और उससे प्राप्त होने वाली खुशी और शान-शौकत के सपने देखने लगी।

वास्तव में स्वयं अलेस्ता ने अपने विज्ञापन में खासे झूठ से काम

लिया था। वह कोई खास धनी नहीं थी, और जो तस्वीर उसने भेजी थी, वह बीस साल पुरानी थी, वह निश्चय ही कुरूप नहीं थी, लेकिन मार्लिन मेनरो भी नहीं थी। इसके अतिरिक्त वह एक अन्य बड़े सत्य को गोल कर गयी थी। वह यह कि वह चौदह और नौ वर्षीया दो लड़कियों और एक बारह वर्षीय लड़के अर्थात् तीन बच्चों की माँ थी।

अलेस्ता पत्र पढ़ ही रही थी कि तीनों बच्चे उसके पास पहुँच गये। उसने खुशी से चहकते हुए कहा--"बच्चो! मम्मी के साथ एक बहुत शानदार बात होने वाली है।"

"क्या?" लड़के ने पूछा।

"मम्मी को एक नया पति मिलने वाला है।"

"तो क्यों हुआ?"

"इसका मतलब है, तुम बच्चों को एक डैडी मिल जायेगा।"

"क्या वह हमें फुटबाल का मैच दिखाने ले जाया करेगा?"

"हाँ, हाँ। क्यों नहीं!"

खुशी और भविष्य के सपनों में डूबी हुई अलेस्ता अपने नये पति से मिलने के लिए उत्सुक थी। उसने तुरंत कारनीलिस, ओ पीटरसन को जवाब देने के लिए अपनी व्याकुलता प्रकट करते हुए आमंत्रित किया था। कुछ समय दोनों ओर से पत्र आते रहे जो प्रेम-पत्रों के उच्चतम नमूने थे।

अतः मई १९३१ की एक सुखद सुबह जब चिड़ियाँ चहचहा रही थीं और हवा अठखेलियाँ करती हुई बह रही थीं, एक टूटी-फूटी शेवरलेट, जो किसी कबाड़खाने से लाई गई लगती थी, अलस्ता के घर के सामने आ कर रुकी, तो अलस्ता जो गत कई दिनों से दरवाजे से नजरें लगाए थी, आगे बढ़ी।

अलस्ता ने देखा, वह छोटा-मोटा-सा आदमी, जिसके शरीर पर एक पुराना ब्राउन सूट, पाँव में काले जूते और मुँह में बुझा सिगार था, एक अस्त-व्यस्त-सी चाल चलता हुआ उसके घर के दरवाजे की ओर बढ़

रहा था। वह बहरहाल स्वागत करने के लिए उठी, लेकिन उसे हरगिज यह विचार नहीं था कि यही मिस्टर कारनीलिस हैं। दरवाजा खुला तो वह नवागत मुस्करा रहा था।

"ए प्राण-प्यारी ! मैं आ गया हूँ।"

अलस्ता को अब भी विश्वास नहीं हुआ था कि यही उसका रोमानी लखपति है। उसने झिझकते हुए पूछा—"आप. . . .मिस्टर. . . . पीटरसन हैं ?"

"निस्संदेह।" डरींथ ने कहा—"और तुम. . .निश्चय ही मेरी जीवन-साथिन अलस्ता हो।"

अलस्ता ने उसे घर के भीतर आमंत्रित करते हुए कहा—"आप भूखे होंगे। मैं आपके लिए खाना तैयार करूँ ?"

"नहीं, ए जाने-आरजू।" लगता था, हरमन डरींथ के सारे रोमांटिक सम्बोधन रटे हुए थे—"मैं तुम्हारे सामने बैठ कर तुम्हें देखते रहना चाहता हूँ कि एक दिलरुबा, तुम्हीं हो वह, जिसकी मेरी आत्मा को सदियों से तलाश थी। मेरी आँखें जिसके दर्शन को जन्म-जन्म से प्यासी थी. . ."

किन्तु उसकी प्यासी आँखें उस समय घर के सामान को निहार रही थीं। और वह सोच रहा था कि कौन-सी वस्तु कितने में बिक सकती है, और कुछ देर बाद जब अलस्ता के ड्राइंग-रूम में सामने बैठा तो डरींथ खूबसूरत शब्दों का एक जाल बुन रहा था, जिसमें बेवकूफ औरत फंसती जा रही थी। जब उसने होने वाले पति से पूछा कि वह अब तक क्वांरा क्यों है, तो डरींथ अपने विशिष्ट अंदाज में कुरसी पर आगे को झुका। अपने दोनों हाथ घुटनों पर रखे। उसने सामने बैठी अधेड़ उमर की औरत की ओर गौर से देखा, और फिर अपनी वाक्पटुता के साथ शुरू हो गया प्रेमपूर्ण सम्बोधनों से भरा उसका भाषण, जो लगभग घंटा भर जारी रहा। जिसका सारांश यह था कि वह दुनिया भर में घूम चुका है, और इस संसार-भ्रमण की प्रेरक यह

भावना थी जिससे प्रभावित हो कर वह 'किसी अलस्ता' को ढूँढ़ता रहा था। अपने इस संसार-यात्रा में उसने अपनी प्रेमिका की भी खोज की थी और धन भी कमाया था। अन्त में उसकी लम्बी और प्राणांतक खोज की प्राप्ति अब उसके सामने थी--अलस्ता जो संसार की सुन्दरतम स्त्री थी।

शाम चार बजे तक बच्चों के घर पहुँचने से पहले अलस्ता डरींथ की धूर्त चालों से मात खा चुकी थी। स्कूल से घर लौटने के बाद बच्चों ने डरींथ को देखा तो वह उन्हें बिलकुल पसन्द न आया, जिसकी अभिव्यक्ति उनके चेहरों से हो रही थी।

डरींथ समय नष्ट करने में विश्वास नहीं रखता था। डिनर की मेज़ पर इधर-उधर की बातें शुरू करने के बजाय उसने तुरंत शादी का प्रस्ताव रखा, और कहा हनीमून नगर से दूर कहीं रोमानी जगह मनाया जाये। उसने बताया, कि शिकागो के एक बड़े होटल में एक पूरा फ्लोर उसके लिए सुरक्षित है। तय हुआ कि बच्चों को घर पर अलस्ता की एक सहेली की निगरानी में छोड़ कर वे दोनों हनीमून पूरे ढंग से मनाने के लिए कुछ सप्ताह अकेले बाहर बितायेंगे।

सन्देश मिलते ही अलस्ता की एक सहेली एलजाबेथ दूसरे ही दिन वहाँ पहुँच गयी। डरींथ जो ऐसे काम शीघ्रातिशीघ्र सम्पन्न कर देना चाहता था, अपनी प्रेमिका को ले कर अपनी शैतानी यात्रा पर चल दिया।

किन्तु एक सप्ताह तक एलिजाबेथ को किसी प्रकार का कोई फोन नहीं मिला। आखिर एक दिन उसे एक पोस्ट-कार्ड मिला--'हनीमून आनन्दपूर्ण है। पीटरसन फरिश्ता है। शीघ्र ही तुमसे मुलाकात होगी ...अलस्ता!' किन्तु एलिजाबेथ पहचान गयी कि पत्र की लिखित उसकी सहेली की लिखी हुई नहीं थी। अब एलिजाबेथ के मस्तिष्क में आशंकाएँ सिर उठाने लगीं। वह अलस्ता का पत्र सामने रखे सोच-विचार में खो गयी थी कि घर के बाहर एक बेहूदा-सा शोर सुनाई दिया। उसने खिड़की से देखा। हरमन डरींथ की खटारा कार घर के अहाते में

प्रवेश कर रही थी। कार रुकी तो उसमें से अलस्ता का नया लखपति पति अकेला बाहर निकल कर घर की ओर बढ़ने लगा। वही घृणित चेहरा, वही बेढब चाल। अलस्ता को डरींथ के साथ न देख कर एलिजाबेथ की आशंकाएँ फिर जाग उठी थीं, लेकिन...स्त्रियों के मामले में डरींथ की स्कीमें कभी फेल नहीं हुई थीं, इसलिए वह स्कीम के अनुसार बेतरह हँसता हुआ अलस्ता के घर में प्रविष्ट हुआ था। एलिजाबेथ की जिज्ञासा पर बिना घबराए उसने स्वयं स्वीकार कर लिया था कि वह पत्र स्वयं उसका लिखा हुआ था। कल रात अलस्ता ने इतनी शैम्पियन पी ली थी कि उसकी तबीयत खराब हो गयी। इतनी कि वह न यात्रा कर सकती थी, न स्वयं पत्र ही लिख सकती थी। सोची-समझी स्कीम के अनुसार डरींथ ने एलिजाबेथ को उसकी सेवाओं के बदले धन्यवाद देने के अलावा पाँच सौ डालर का चैक पेश किया। एलिजाबेथ एक स्त्री थी। इतनी बड़ी रकम के झांसे में आ गयी। हरसन बच्चों को साथ ले कर शिकागो चल दिया।

एलिजाबेथ अपने घर ओहियो चली गयी तो डरींथ फिर अलस्ता के घर पहुँच गया। चाबी उसके पास थी। सामान उलट-पुलट करने की उसे ज़रूरत नहीं थी। वह घर की बिकने वाली वस्तुओं को पहले ही ताड़ चुका था। उसने मोटर में मूल्यवान सामान भरा और चल दिया।

एलिजाबेथ जब मिस्टर पीटरसन (डरींथ) के दिये हुए चैक को लेकर बैंक पहुँची तो वह जाली साबित हुआ। यह मानों एलिजाबेथ की आशंकाओं की पुष्टि थी। उसने रिच-पार्क के पुलिस-अधिकारी जॉनसन के सामने अलस्ता के विज्ञापन, डरींथ से मिलने और फिर उसके गायब हो जाने की सब कहानी सुना दी।

पार्क-रिच की पुलिस का चीफ जॉनसन बहुत मुस्तैदी से मिसेज अलस्ता एचर को भगा ले जाने वाले की खोज में था और पुलिस इस नतीजे पर पहुँच चुकी थी कि विधवा और उसके तीनों बच्चों की हत्या

कर दी गयी है।

हरमन डरींथ, क्लार्कसबर्ग पोस्ट आफिस के द्वारा अपना पत्र-व्यवहार करता था किन्तु अपने नाम से नहीं, पोस्ट बाक्स नम्बर २७७ के नम्बर से। अब जब कि अलस्ता और उसके तीन बच्चों से छुटकारा पाया जा चुका था, वह नये शिकार की तलाश में पोस्ट-आफिस पहुँचा। उस समय भी वह शादी के संबंध में एक ही समय छह स्त्रियों से पत्र-व्यवहार कर रहा था। काफी सोच-विचार के बाद उसे उन छह उम्मीदवारों में से किसी उपयुक्ततम को ही चुनना था। इस बार उसकी चुनाव-दृष्टि प्लाटो की डोरथी लेमके पर पड़ी।

कुछ समय के पत्र-व्यवहार के बाद आखिर डरींथ (जो इस बार डेविड लाउथर बना हुआ था) एक दिन डोरथी के दरवाजे पर पहुँचा। दरवाजा खोलने वाली ने देखा कि नये पति के चेहरे पर बेपनाह मुस्कराहट थी।

"जाने-बहार।" वह दोनों हाथ सीने पर बाँधे आदरपूर्वक झुकते हुए कह रहा था—"मैं आ गया हूँ।" और उसके बाद वही हुआ, जो अब तक होता आया था।

उधर रिच-पार्क की पुलिस जानसन के नेतृत्व में अपराधी को पकड़ने पर तुली हुई थी। अलस्ता एचर के घर की बड़ी बारीकी से तलाशी ली जा रही थी। आखिर एक सुराग पुलिस के हाथ लगा। यह पत्रों का एक बंडल था। यह पत्र किसी मजनूँ ने अपनी लैला अलस्ता को लिखे थे। पुलिस ने जो बातें नोट कीं, वह यह थीं :

१—पत्र किसी आरनीलिस ओ' पीटरसन ने लिखे थे।

२—पत्र का विषय प्रेमपूर्ण था, लेकिन बाद के पत्रों में शादी के प्रोग्राम तय किये गये थे।

३—लिखने वाले का पता था—पोस्ट बाक्स नम्बर २७७, क्लार्कसबर्ग, पश्चिमी वर्जनिया।

जानसन ने क्लार्कसबर्ग की पुलिस के अधिकारी डिकवर्थ से फोन पर

संबंध स्थापित किया। मिसेज अलस्ता एचर के केस के बारे में अपनी खोज का निष्कर्ष बताते हुए उसने कहा--"मैं सोचता हूँ, हत्यारा हमारी पहुँच से बहुत दूर नहीं है।"

"शीघ्र ही पता लग जाता है।" डिकबर्थ का उत्तर था--"आपने पोस्ट-बाक्स का क्या नम्बर बताया था?"

"दो सौ सत्तर।"

अगले दिन चीफ डिकबर्थ अपने कुछ साथियों के साथ कुछ दूरी से क्लार्कसबर्ग के पोस्ट-आफिस पर नजरें जमाए था। आखिर कई घण्टे बाद एक घरेलू किस्म का आदमी पोस्ट आफिस के बाक्सों की ओर बढ़ता नजर आया।

"मैं इसे जानता हू," एक सिपाही ने कहा--"यह डरींथ है--एक ट्रेवलिंग-सेलसमैन।"

"तब यह बाक्स नम्बर २७७ की ओर नहीं जायेगा।"

लेकिन उस ठिगने कुरूप आदमी ने पुलिस के अनुमान बल्कि विश्वास को गलत साबित किया। वह सीधा बाक्स नम्बर २७७ की ओर गया। उसने चाबी से बाक्स खोला और उसमें से कुछ पत्र निकाल कर अपने कोट की जेब में डाल लिये।

"ठीक..." डिकबर्थ ने कहा--"आओ इसका पीछा करें।"

पुलिस वाले पीछा करते हुए उसके घर तक पहुँच गये। कुछ देर के बाद वह डरींथ के घर में प्रविष्ट हुए तो वह उन्हें चकमा देकर पिछले दरवाजे से बाहर निकल गया, लेकिन पुलिस ने उसे शीघ्र ही घर लिया।

कुछ ही देर बाद वह क्लार्कसबर्ग के पुलिस-हेडक्वार्टर में जानसन के सामने बैठा था।

"हजरत, आखिर आप चाहते क्या हैं?" डरींथ ने जानसन और उसके साथियों की ओर देख कर कहा।

"हम जानना चाहते हैं, कि अलस्ता एचर नामक स्त्री और उसके बच्चों का क्या बना?"

"कौन ?"

"मिसेज़ एचर और उसके तीन बच्चे।"

"कभी सुना नहीं उनके बारे में।"

डिकबर्थ के साथी पोस्ट-बाक्स नम्बर २७७ के नाम आने वाले पत्रों की जाँच कर चुके थे, और यह बात उनके सामने स्पष्ट हो चुकी थी कि डरींथ एक ही समय कई नाम अपना कर अधेड़ उम्र की औरतों से पत्र-व्यवहार करता था और पते में अपने नाम की जगह नम्बर २७७ का उपयोग करता था।

"हाँ डरींथ, कहाँ हैं मिसेज़ एचर और उसके बच्चे ?" इस बार डिकबर्थ का स्वर कठोर था।

डरींथ ने कोई उत्तर नहीं दिया। अब घृणा और क्रोध की झलक डिकबर्थ के चेहरे पर स्पष्ट नजर आ रही थी। उसने डरींथ की आँखों में झाँकते हुए धिक्कारपूर्ण स्वर में कहा—"डोरीथ, तुम एक सब से बुरे धूर्त हो। धोखेबाज हो। तुम एक हत्यारे हो। बताओ, उस औरत और बच्चों की लाशें कहाँ हैं ?" डरींथ चुप रहा।

अगले दिन क्वाइट डील के करीब में रहने वाला एक किसान स्थानीय अखबार पढ़ रहा था। अखबार में डरींथ की तस्वीर के साथ यह समाचार भी छपा था कि पुलिस के अनुमान के अनुसार वह एक मिसेज़ एचर और उसके तीन बच्चों का हत्यारा है। किसान यह समाचार पढ़ने के बाद कुछ देर शून्यता से घूरता रहा। फिर उसने फोन पर पुलिस के अधिकारी को सूचना दी, "चीफ, तुमने एक शख्स डरींथ को पकड़ा हुआ है। मैं सोचता हूँ, मैं उसके बारे में कुछ बता सकता हूँ।"

"जल्दी से कहो।" डिकबर्थ की आवाज में बेचैनी थी।

"मैं अगर गलती नहीं कर रहा," किसान ने कहना शुरू किया —"तो उस व्यक्ति की क्लाइट-डील के उजाड़ इलाके में एक इमारत है। एक अजीब रहस्यपूर्ण-सी इमारत जिसमें बिलकुल कोई खिड़की या रोशनदान नहीं है।"

इसी समय मिस्टर डिकवर्थ अपने कुछ साथियों के साथ किसान के बताए हुए पते पर डरींथ की प्रयोगशाला में पहुँच गया। वे लोग उस भयानक इमारत का दरवाजा तोड़ कर भीतर दाखिल हुए। पहले कमरे में उन्हें नाना प्रकार का वह सामान मिला, जो डरींथ ने औरतों से हथियाया था। डिकबर्थ ने जब उन चार गैस-चेम्बर्स को देखा तो पहले उसकी समझ में कुछ नहीं आया, लेकिन जब उसकी नजरें गैस-पाइप लाइन और उसके कंट्रोलर के साथ कमरों के साउंड-प्रूफ होने पर गयीं तो उसके अनुभवी दिमाग को डरींथ के व्यक्तित्व, उसके बिज़नेस और कार्य-ढंग को समझने में देर नहीं लगी। इमारत के दालान में एक जगह सन्देह होने पर ज़मीन को खोदा तो वहाँ से दो अधेड़ उमर औरतों और तीन बच्चों की लाशें निकलीं।

अपने सिर पाँच इंसानों की हत्या का आरोप लिए अपने विशिष्ट अंदाज में आगे को झुका, दोनों हाथ घुटनों पर रखे, पीले दाँतों में बुझे सिगार दबाए डरींथ, पुलिस के चीफ इंसपेक्टर के प्रश्नों का उत्तर दे रहा था--"हाँ, मैंने उनकी हत्या की है।"

उसके बाद डरींथ ने अपना मुख बंद कर लिया। पुलिस ने लाख प्रयत्न किये, कि डरींथ और पैंतालीस हत्याओं को भी स्वीकार कर ले और बताये कि उनकी लाशें कहाँ हैं, लेकन डरींथ ने मुख नहीं खोला।

जब डरींथ की कहानी उसकी तस्वीर सहित देश के सभी अखबारों में छपी तो अमरीका भर में कुहराम मच गया। कुछ अभागे घरानों में उसकी प्रतिक्रिया कुछ इस प्रकार हुई--वाशिंगटन में एक औरत अखबार में डरींथ की तस्वीर को देखते हुए अपनी पड़ोसिन से कह रही थी--"यही है वह व्यक्ति, जिसके साथ आज से दो साल पहले मेरी बहन शादी करने गयी थी, लेकिन उसके बाद न कभी आयी, न उसकी कोई खबर।" डालास में एक स्त्री अपने पति का ध्यान अखबार की ओर केंद्रित करते हुए कह रही थी--"देखो यह उसी लखपति की तस्वीर है जिसके साथ तुम्हारी बहन शादी करने गयी थी, लेकिन आज

तक उसके बारे में कुछ पता नहीं चला।"

सेंट लुइस में एक चौदह वर्षीय लड़का अपने भाई से कह रहा था --"देखो, यही है वह मोटा गन्दे दाँतवाला अमीर आदमी, जिसके साथ मामा पिछले साल..."

क्लार्कसबर्ग में उन पचास औरतों के रिश्तेदारों और मित्रों के पत्र और टेलीफोन का तांता लग गया जो गत दो वर्ष के समय में रस्यपूर्ण ढंग से गायब हो गयी थीं। पुलिस को विश्वास था कि इन गुमशुदाओं का ज़िम्मेदार डरींथ ही था, लेकिन प्रश्न यह था कि उनकी लाशें कहाँ थीं? महीनों तक पश्चिमी वर्जनिया के आस-पास के दरिया खंगाले जाते रहे। वीरान इमारतों में खोज की गयी। सैकड़ों जगह ज़मीन खोदी गयी, लेकिन कहीं से किसी अधेड़ उमर औरत की लाश बरामद नहीं हुई।

"लाशें कहाँ हैं, या कहाँ हो सकती हैं?" अपराध-जगत के इस बहुत बड़े प्रश्न का उत्तर केवल--डरींथ दे सकता था, लेकिन वह मुख बंद रखे, इस रहस्य को अपने सीने में दफन किये १८ मार्च, १९३२ को फाँसी पर चढ़ गया।

वह संसार के उन कुछ इंसानों में एक था, जिसके मरने पर भी किसी को उससे सहानुभूति नहीं थी और उसके बारे में पुलिस के क्या विचार थे, वह इससे पता चलता है कि अब उसे फांसी दी जाचु की, तो एक पुलिस अफसर दूसरे से कह रहा था--

"क्या यह लज्जा की बात नहीं है कि ऐसे अपराधी को केवल एक बार फांसी पर लटकाया जाये?"

●●

— स्पाई —

(पृष्ठ २४१ से आगे)

वहाँ एक वृद्ध सज्जन भी मौजूद हैं। मि० मूर उनसे कह रहे थे, "मगर इसमें मैं कर ही क्या सकता हूँ, तुम्हीं कहो। मेरे द्वारा जो भी संभव था, वह मैंने किया। अब दिल्ली जाऊँगा, वहाँ जाकर देखूँगा कि क्या कर सकता हूँ।"

वे सज्जन चले गये। मि० मूर मेरी ओर मुड़े।

मैंने पूछा, "आशालता देवी से भेंट की आपने?"

मि० मूर बोले, "हाँ, बारह नम्बर नन्दलाल सरकार लेन में इतने बरस

बाद फिर एक बार गया था। बड़ी दुर्दशा देखी। उन्होंने ब्याह तो किया ही नहीं न। उम्र भी काफ़ी हो गयी है। मुझे ठीक से पहचान भी नहीं सकीं।"

मैंने पूछा, "कौन उनकी देख-भाल करता है?"

"यही सरकार। यही निर्मल सरकार। पहचाना नहीं?"

मैंने कहा, "यही है आपका स्पाई निर्मलचन्द्र सरकार?"

मि० मूर बोले, "हाँ, यही निर्मल सरकार इतने बरस से उनके खाने-पहनने का खर्च चलाता है। असल में यही सरकार तो उनसे प्रेम करने लगा था। उसने सोचा था कि धीरज बोस को पकड़वा देने से रास्ते का काँटा दूर हो जायेगा, तब वह आशालता से ब्याह करेगा। मगर आशालता तो उस जात की लड़की नहीं थी।"

यह सुनकर मैं चौंक उठा। मि० मूर बोले, 'मैं भी पहले चौंक उठा था। मगर पुलिस की नौकरी में सभी कुछ सहना पड़ता था। मैंने उस दिन आशालता को हत्या के अपराध से बचाया था, इसलिए उसके भरण-पोषण का मेरा भी तो कुछ दायित्व है।"

सो तो है ही। कुछ देर हम दोनों चुप रहे। उसके बाद हठात् मि० मूर उठ खड़े हुए। मन-ही-मन वे मानों छटपटाने लगे। कमरे में टहलते-टहलते कहने लगे, "नहीं नहीं, यह बड़ा अन्याय है। एक महिला ने देश के लिए इतना बड़ा सेक्रिफाइस किया, जीवन भर ब्याह नहीं किया और गवर्नमेन्ट उसके मासिक भत्ते की भी व्यवस्था नहीं कर रही है!"

फिर कुछ रुक कर बोले, "मैं आज ही दिल्ली जा रहा हूँ। वहाँ होम मिनिस्टर से मिलूँगा। नहीं तो मेरा स्पाई भी तो बूढ़ा हो चला है। उसने भी इसी आशालता के लिए अपना जीवन नष्ट किया है। उसने भी तो ब्या[illegible] नहीं किया। अकेला वह और कितने दिन उसका खर्च चलायेगा?"

संस्थापक : स्वर्गीय श्री क्षितीन्द्रमोहन मित्र।
संपादक : राजेश्वर प्रसाद सिंह : आलोक मित्र।
प्रकाशक : मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद।
मूल्य : दो रुपये।
मुद्रक : वीरेन्द्रनाथ घोष,
माया प्रेस प्राइवेट लिमिटेड,
इलाहाबाद।